वेवप्रिय वसीसिह मंत्री महाबोबि समा कसकत्ता

प्रकासक

महाबाजसमा करूकता • • •

मूल्य--सात स्पर्ये

. . .

नोहरानाम महर राष्ट्रमाया प्रेस, वर्गा

# गोरवाई विद्यालंकारपरिवेणाधिपति किरिवन्तुढुवे पञ्जासार नायकमहास्थविरपादयन्वहंसे वेतटीय



### प्रकाशकीय

पवित्र पालि-त्रिपिटक के सुत्तपिटक के पाच निकायो में

अनूदित हो चुकने पर भी अगुत्तर-निकाय अभी तक हिन्दी में अनू ही हुआ था। हम भदन्त आनन्द कौसल्यायन के चिर-कृतज्ञ है वि 'जातक' जैसे महान अनुवाद-कार्य को समाप्त कर अब अगुत्तर-

निकाय का विशिष्ट-स्थान है । शेष चार निकायो का अधिव

अनुवाद-कार्य को हाथ में लिया है और हमें यह सूचना देते होता है कि अपेक्षाकृत कम ही समय में उन्होने हमें इस योग है कि हम अगुत्तर-निकाय के प्रथम-भाग का हिन्दी अनुवा प्रेमी पाठको की भेट कर सके।

हम केन्द्रीय सरकार के भी कृतज्ञ है जिसकी कृपा शास्त्रीय ग्रन्थों के मूल तथा अनुवाद छापने के लिये चार ह वार्षिक का अनुदान प्राप्त है।

यदि हमें यह सरकारी अनुदान प्राप्त न हो तो हमे इ सन्देह है कि हम इस पवित्र-कार्य्य को करने में समर्थ सिद्ध हो

४ ए. बिकस चटर्जी स्टीट । मधी

४ ए, बिकम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता-१२ महाबोधि सभा

#### नमो तस्स नगक्तो अरहतो सम्मा सम्बद्धस्त ।

#### प्रस्तावना

सूक-पिटक विशय-पिटक तथा लिखिमे-पिटक ही बौद्धधमें के प्रामाणिक विपिटक है। इनकी भावा इनका रचना-काल इनका धम्मादन इनमें विद्यमान् धगवान् के तपत्रेख विद्यानों की कक्षापोह के विश्व हैं ही।

तुम-पिटक वीर्थ-निकास सिकास निकास धंपूक्त-निकास कंगार रिकास तथा बूहर-निकास नामक पांच निकासों में निकास नामक पांच है। से स्वार-निकास की एका-सीकी छात्री हुएते निकासों में निकास मात्रा बाता है। से सुप्तर-निकास की एका हो एक प्रमं (= विकास) का वर्षने हैं, कुक निवास में वो वो समी (= निकासों) का एसी मकार सिक-निवास में तीन तीन निकासों का। सही कम पूरे भारवह निवासों तक कवा जाता है। प्रसंक निवास में मोलोर नृत्वि होती वर्षों निकास निकास निवास में सीका तीन निकासों का।

धीर्य-निष्याय, मन्त्रिम निष्यान संयुक्त-निष्याय तथा बृह्य-निष्याय के भी कुछ मन्त्री का हिस्सी क्यान्तर हो चुकने के बाद अंगुक्त-निष्याय ही सुक-पिटक का बहु सहस्युक्त-निष्याय धेप रहां का विष्यात अनुवाद बात से बहुत पहुँचे होगा व्यक्तिय था। खेद है कि वर्तमान अनुवादक को भी दश्ये पहुचे दश पुष्य-कार्य को हात में बेली का त्रीयास्य न मात्र हो तका।

विश काकामा-मून्त की बीज वाक्मन में ही नहीं विश्वपर के बादमय में इतनी बाक है जो एक प्रकार थे मानव-बनाव के स्वतन्त-विश्वन तथा स्वतन्त्र ज्ञावरण का वापवा-पत्र मात्रा बाता है, वह वाकामा-मून्त रही बेंपूत स्वतन्त्र के विक-विश्वत के बेतर्गंत है। मगवान ने बच बुन्त में कालामानों को बारवस्त्र विकादि--

"हे कालामो जानो । तुम निवी बान को केनक हछ किसे मत स्वीकार करों कि नह बात अनुष्युत्र है केनल इक किसे मत स्वीकार करों कि यह बात परम्पायनत है केनल इक किसे नत स्वीकार करों कि यह बात हतो प्रकार नहीं गई है नेकब इत किसे मत स्वीकार करों कि नह हुगारी अस्थानल (शिव्छ) के अनुसूख है केनल इस किसे नत स्वीकार करों कि यह एकं-सम्बत्त है, केनल इन लिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (-शास्त्र) सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि आकार-प्रकार सुन्दर हैं, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मत के अनुकूल हैं, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि कहने वाले का व्यक्तित्व आकर्षक हैं, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि कहने वाले श्रमण हमारा पूज्य है। हे कालामो ! जब तुम आत्मानुभव से अपने आप ही यह जानो कि ये बाते अकुशल हैं, ये बाते सदोप हैं, ये बाते विज्ञ पुरुषों द्वारा निन्दित हैं, इन बातो के अनुसार चलने से अहित होता हैं, दु ख होता हैं—तो हे कालामो ! तुम उन बातों को छोड दो। (पृष्ठ १९२)

इन पिक्तियों का लेखक तो इस सूक्त का विशेष ऋणी है, क्योंकि आज से पूरे ३० वर्ष पूर्व, भगवान् का जो उपदेश विशेष रूप से उसके त्रिशरणागमन का निमित्त कारण हुआ था, वह यही कालामा-सूक्त ही था।

उसके तीन वर्ष वाद लदन में रहते समय उसे एक वयो-वृद्ध अग्रेज द्वारा लिखित एक ग्रन्थ पढने को मिला। नाम था—ससार का भावी-धर्म। देखा, उसके मुख-पृष्ठ पर भी यही कालामा-सूक्त ही उद्धृत है।

जहाँ तक अगुत्तर-निकाय के मूल पालि-पाठ की वात है अनुवादक ने यह अनुवाद काय्य मुख्य रूप से रैवरैण्ड रिचर्ड मारिस एम ए, एल एल डी द्वारा सम्पादित तथा सन १८८५ में पाली टैक्सर सोसाइटी, लदन द्वारा प्रकाशित पालि-सस्करण से ही किया है। यूँ वीच-वीच में वह सिहल-सस्करण तथा स्यामी सस्करण को भी देख लेता ही रहा है।

निस्मन्देह विनम्र अनुवादक की प्रवृत्ति अर्थकथाओं को मूल के प्रकाश में ही समझने की है, तो भी आचार्य्य वृद्धघोषकृत अगुत्तर-निकाय की मनोरथ-पूर्णी अट्ठकया का भी उस पर अनल्प उपकार है।

इस पहले भाग में अगुत्तर-निकाय के प्रथम तीन निपातो का ही समावेश हो सका है। शेष आठ निपातो के लिये अनुमानतः पौंच अन्य भाग अपेक्षित होंगे। किसी भी प्रस्तावना में अगुत्तर-निकाय के विस्तृत अध्ययन का समय तो कदाचित् उसका अनुवाद-कार्य पूरा होने पर ही आयेगा।

महाबोधि सभा के मन्त्री श्री देवप्रिय बलीसिंह का मैं चिर-कृतज्ञ रहूँगा जिन्होने अगुत्तर-निकाय के प्रकाशन का भार ग्रहण कर मुझे इस ओर से निश्चिन्त किया। मोड़ कर संगुक्त-निकास तथा विसुद्धि-मार्थ सब्त महाव क्रव्यों के बनुवाद की कोर मोड दिया। वर्षों पूर्व भिन्नु धर्म रिजल की केसकी से को बाधार्ये बंधी वी के सबीय में पूरी हो रही है। बमाई। राष्ट्रमापा प्रेस (वर्षा) के सम्पूर्ण सङ्गोन के विना भी यह 'स्वान्सारम्भ'

अपने स्वेह-मायन भिन्नु धर्म रक्षित का भी में आमारी हूं कि जिन्हें जब बढ़ माख्य हजा कि मैं ने अंपुतार-निकास के बतुवाद-कार्य को द्वाव में किया है, यो बन्होने अपनी नजल सेवनी को अंगुत्तर-निकाय के जनुवाद-कार्यकी जोर से

इतना क्षेत्रकर न होता जितके किये में चटुभाषा प्रकार शमिति के मन्त्री साई मोक्रताकती यह तथा प्रेस के सभी सम्बन्धित कर्नेचारियों का विश्वेप भाषी है।

राजेना-भारत वर्षा | २८-१-५७ कातन्त्र कीसस्यायन

# अंग्रत्तर निकाय

उन भगवान अरहत सम्यक सम्बुद्धको नमस्कार है।

# पहला-निपात

(१)

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान श्रवावस्ती में अनाथपिण्डिक के भाराम जेतवन में विहार करते थे।

उस समय भगवान ने भिक्षुओ को सम्बोधित किया---

"भिक्षुओ।"

"भदन्त" कह कर भिक्षुओ ने प्रति-वचन दिया।

भगवान ने ऐसा कहा---

"भिक्षुओ, मैं और किसी दूसरे रूप को नहीं देखता जो पुरुष के चित्त को इस प्रकार दवोच कर बैठ जाता है, जैसे स्त्री का रूप।

"स्त्री का रूप, भिक्षुओ । पुरुष के चित्त को दवोचकर वैठ जाता है।

"भिक्षुओ, में और किसी दूसरे शब्दको नही देखता जो पुरुष के चित्त को इस प्रकार दवोच कर बैठ जाता है जैसे स्त्री का शब्द।

> १ भगवा ति वचन सेट्ठ, भगवा ति वचनमुत्तमं, गरुगारवयुत्तो सो भगवा तेन वुच्चति ।।

['भगवान 'श्रेष्ठ वचन है, 'भगवान ' उत्तम वचन है, गौरव-युक्त होने से वे (तथागत) भगवान कहलाते हैं।] स्त्री का शब्द जिल्लामी ! पुत्रम के जिल्ला को यदीण कर दैक जाता है। भिन्नुजो में और किसी दुस्सी नन्स को नही देखता को दुस्स के जिल्ला की

इस प्रकार देवोच कर बैठ बाती है जैसे स्त्री की यन्छ।

स्त्रीकी शत्क शिश्रुकी । पुस्त्र के चित्र को दबीण कर बैठ मात्री है।

नाता है। भिश्वनी में और किसी दूसरे रख को नहीं देखताओं पुरूप के पित को इस प्रकार देशोंच कर देंठ बाता है जैसे स्त्रीकारत।

स्त्री कारस मिल्लुओं ! पुत्रव के चित्त को बबोच कर बैठ जाता है।

मिल्लुको भें जीर फिटी दूसरे स्पर्ध को शही देखता जो पुस्य के जिल्ला को इस मकार स्वीच कर बैठ जाता है जैसे स्वी कर स्पर्ध ।

रनीका स्पर्ध पिसुनों पुस्त के चित्त को दबोच कर बैठ जाता है। पिसुनों में नौर किसी इसरे रूप को नहीं देखता जो रनी के सित्त को

इस प्रकार रमोच कर बैठ माठा है मैसे पुरम का रूप।

पुरुष का कथ पिरुपूर्ता ! स्त्री के किस को दशोषकर मैठ माता है।
"मिस्त्रों में बीर किसी दूसरे सक्त को नहीं देखता जो स्त्री के किस को

इस प्रकार वर्गोण कर बैठ जाता है जैसे पूच्य का सम्ब।

"पुरम का प्रज्ञ पित्रुजो दिनी के जिल्ला विशेष कर बैठ जाता है। पिस्रजो में और किसी इसरी मन्द्र को नहीं देखता जो स्त्रों के जिस को

इस प्रकार बनोच कर बैठ वाली है जैसे पुरुष की यन्त्र । "पुरुष की बन्ता पिछलों ! स्त्री के चिल को बनोच कर बैठ वाली है ।

पिसूको भी बीर किसी दूसरे रख को नहीं देखता जो स्वी के जिल की इस प्रकार रबोलकर बैठ बाता है बैसे पूरत का रस :

पुरुष का एस फिल्लुनों। स्पीके पित्त को दशीप कर बैठ बाता है।

भिसूत्रों में और किसी हुधरे स्पर्ध को नहीं वेषता जो स्नी के भिक्त को इस मकार बहोच कर बैठ बाता है जैसे दुवन का स्पर्ध !

"पुरूष का स्पर्ध मिसूबो ! स्त्री के चित्र को प्रशेषकर बैठ बाता है।"

"भिक्षुओ, में और कोई ऐसी दूसरी बात नही देखता जिसके फलस्वरूप अनुत्पन्न काम-चेतना उत्पन्न होती है और उत्पन्न काम-चेतना बार वार उत्पन्न होती तथा बढती है, जैसे यह भिक्षुओ, शुभ-निमित्त ।

"शुभ-निमित्त का ही भिक्षुओ, बेढगा विचार करने से अनुत्पन्न काम-चेतना उत्पन्न होती है और उत्पन्न काम-चेतना बारवार उत्पन्न होती तथा बढती है।

"भिक्षुओ, में और कोई ऐसी दूसरी वात नहीं देखता जिसके फलस्वरूप अनुत्पन्न कोछ उत्पन्न होता है, और उत्पन्न कोछ वार वार उत्पन्न होता तथा वृद्धि को प्राप्त होता है जैसे यह भिक्षुओ विरोधी-भाव।

"विरोधी-भाव का ही भिक्षुओ, वेढगा विचार करने से अनुत्पन्न कोछ उत्पन्न होता है, उत्पन्न कोछ वार बार उत्पन्न होता तथा वढ़ता है।

"भिक्षुओ, में और कोई ऐसी दूसरी बात नहीं देखता जिसके फलस्वरूप अनुत्पन्न मानिसक तथा गारीरिक आलस्य उत्पन्न होता है और अत्पन्न आलस्य वार बार उत्पन्न होता तथा बढता है, जैसे यह भिक्षुओं अरुचि, अहदी-पन, जम्हाई लेना, मोजनान्तर प्रमाद तथा चित्त की तन्द्रा।

"जिसका चित्त तन्द्रा-ग्रस्त है, भिक्षुओ, उसीमें अनुत्पन्न आलस्य उत्पन्न होता है, उत्पन्न आलस्य बार वार उत्पन्न होता तथा बढता है।

"भिक्षुओ, में और कोई ऐसी दूसरी वात नहीं देखता जिसके फलस्वरूप अनुत्पन्न उद्धतपन तथा अनुताप उत्पन्न होता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा अनुताप चार वार उत्पन्न होता तथा वढ़ता है, जैसे यह भिक्षुओ, चित्तकी अशान्ति।

"अशान्त-चित्त में ही भिक्षुओ, अनुत्पन्न उद्धतपन तथा अनुताप उत्पन्न होता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा अनुताप बार बार उत्पन्न होता तथा बढ़ता है।

"भिक्षुओ, में और कोई ऐसी दूसरी वात नही देखता जिसके फल-स्वरूप अनुत्पन्न सशय उत्पन्न होता है और उत्पन्न सशय बार बार उत्पन्न होता तथा बढ़ता है जैसे यह भिक्षुओ बेढगेपनसे विचार।

१ पुरुष-लिंग अथवा स्त्री-लिंग का परस्पर एक दूसरे को सुन्दर करके देखना।

" मेडेनेपन से विचार करने से ही भिन्नुबो अनुस्त्रत संस्य उत्पन्न होता है और उत्पन्न संस्य बार बार उत्पन्न होता तथा बडता है। "मिछाबों में और कोई ऐसी दूसरी बात नहीं देखता विस्तत फलस्वरूप

"भिक्ष्मों में और कोई ऐसी कुसरी बात मही देखता विसक्ते फलस्वरूप अनुराध काम-नेतना बनुराल रहती है और उराम काम-नेतना का प्रहाण होता है बीसे यह निम्मों समुग्त-निमित्ते।

बयुम-निमित्त पर मिशुबो बंग्से विचार करने सं बनुत्यमं काम-चेतना बत्यम नहीं होतों और बत्यम काम-चेतनाका प्रहान होता है।

भिश्वभी में और कोई दूसरी बात गड़ी देखता विसके फलस्वरूप अनुरान्त अभेव अनुरान्त रहता है और उरतप्त कोस का प्रहाम होता है वैसे यह मिश्वभी विकाश विमुख्ति मैंगी (न्यावना) ।

" चित्र की विमुक्ति मैती-(भावता)पर इंग से विचार करने से अनुत्यन कोम उत्सन नहीं होता और उत्सव कोमका प्रहास होता है।

" भिष्नुको में बौर कोई दूसरी बात नहीं देखता जिसके फरू-दक्स मनुत्यम मानसिक तथा धारीरिक बाकस्य स्थाभ नहीं होता बौर पराम बास्स्यका महाण होता है बैसे यह भिष्नुको सार्य-सम्बन्धान अधिक-स्थल बौर सर्वाधिक-स्थल।"

को प्रयत्न-धील है, भिशुको छछ में अगुरूपम बाक्स्य उरमम नहीं होता

बीर उलाम बाकस्यका प्रहास होता है।

"मिलकों में बीर कोई दूसरी ऐसी बात नहीं देखता जिसके फूक-स्वरूप

अनुराम ध्यवपन तथा अनुवाप स्राप्त मही होता और बराम प्रवतपन तथा अनुवाप वा प्रहाच होता है, जैसे मह मिसुबी वित्त की सान्ति।

ना प्रहार हता हुन्य सह सम्भूता । चया का साल्य । " यान्य-विचार्स मिसूको सनुत्यप्र बद्धवपन बचा बनुताप अस्पप्त नहीं क्षेत्रा और अस्पप्त बद्धवपन बचा बनुवाप ना प्रहान क्षेत्रा है।

भिजुनो में और कोई दूसरी ऐनी बात नहीं देखता विसके कस-स्वरूप बनुसाम संध्यानयन बसाम नहीं होता और सराम संध्यानुपन का प्रहान होता है, जैसे

वह विश्व वो देग से विवाद करना।

१ पुषर-मिन अववा स्थी-सिन वा परस्पर एक दूसरेके निवृत्तित-कापर विचार करना। २ बारण्य-सन्, निवस्य-सातु तथा परवक्त-सातु ।

" ढग से विचार करने से भिक्षुओ, अनुत्पन्न सशयालुपन उत्पन्न नहीं होता उत्पन्न सशयालुपन का प्रहाण होता है।"

### (३)

- "भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी ऐसी वस्तु नहीं देखता जो (योग)-अम्यास न करने से इस प्रकार निकम्मी हो जाती है, जैसे यह चित्त।
  - "भिक्षुओ, अभ्यास न करने से चित्त निकम्मा हो जाता है।
- "भिक्षुओ, में और कोई दूसरी ऐसी वस्तु नही देखता जो (योग) -अम्यास करने से इतनी काम की हो जाती है, जैसे यह चित्त ।
  - "भिक्षुओ, अभ्यास करने से चित्त काम का हो जाता है।
- "भिक्षुओ, मै और कोई दूसरी ऐसी वस्तु नही देखता जो (योग)-अभ्यास न करने से इतनी महान अनर्थकारी हो जाती है, जैसे यह चित्त।
  - "भिक्षुओ, अम्यास न करने से चित्त महान अनर्थकारी हो जाता है।
  - "भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी ऐसी वस्तु नही देखता जो (योग)-अभ्यास करने से इतनी महान कल्याणकारी हो जाती है, जैसे यह चित्त।
    - "भिक्षुओ, अम्यास करने से चित्त महान कल्याणकारी हो जाता है।
  - "भिक्षुओ, में और कोई दूसरी वस्तु नही देखता जो (योग)-अभ्यास न करने से, जो अप्रकट रहने से १ इतनी महान् अनर्थ-कारी हो जाती है, जैसे यह चित्त।
  - "भिक्षुओ, अम्यास न करने से, अप्रकट रहने से चित्त महान् अनर्थकारी हो जाता है।
    - "मिक्षुओ, में और कोई दूसरी वस्तु नही देखता जो (योग)-अभ्यास करने से, जो प्रकट होने से इतनी महान् कल्याणकारी हो जाती है, जैसे यह चित्त।
    - "मिक्षुओ, अम्यास करने से, प्रकट होने से चित्त महान कल्याणकारी हो जाता है।
    - "भिक्षुओ, में और कोई दूसरी वस्तु नही देखता जो (योग)-अम्यास न करने से, इतनी महान अनर्थकारी हो जाती है, जैसे यह चित्त।

१ जिस चित्त की शक्तियाँ अप्रकट हैं, उस चित्त को भी अप्रकट ही जानना चाहिये।

मिश्रुवी कञ्चासन करमेसे बार बार कम्मासन करने से विष्य महान् सनमेकारी हो बाता है।

पियुनो में बीर कोई दूसरी वस्तु नहीं देखता जो (मोन)-सम्माध न करने हे बार बार अस्थाध करने से इतनी महान कम्याणकारी ही बाती है जैसे यह चित्र।

पहाचता "प्रिमृतो वस्पात करने ते चित्त सङ्ग्रन् कस्वाचकारी हो बाता है।

"भिमुनो, में भीर कोई दूसरी वस्तु नहीं देखता को (बोय)-वस्पास करने ते बार अस्थास न करने से इस प्रकार दुक्त-वामी हो जाती है

पैक्षे मह पिता । "भिजुको अस्थाय न करने के बार बार अस्थास न करने से पिता पहुरा

दुच-वादी हो जाता है।

भिश्वनों में नीर कोई दूध पी क्लू नहीं देखता यो (योप)-अम्मात करने ते बार बार नम्मात करने से इतनी गुळ-बायी हो बाती है, नैसे यह क्लि।

" मिसुनो, नन्याध करने से नारकार नन्याध करने से वित्त सुक्र-वायी को जाता है।

(8)

मिलुओ में और कोई बुक्त पे बस्तु नहीं देखता जिसका नदि दयन न किया काम सो ऐसी अनवंकारी हो। चैसे यह जिला।

" निसूतो वसन न किया पया चित्र महान् वनवैकारी होता है।

निस्त्रों में बीर कोई पूछरी वस्तु नहीं देखता जो दनन किने वालेपर इतनी कस्त्रापकारी हो जैसे वह भिता।

विकृतो स्थम विचा यदा चित्र महान् करवानकारी होता है।
"विकृतो में और कोई दूसरी वस्तु नहीं देखता वो अरदित रहने पर ऐसी वनकंतरों हो। वैसे नह विचा।

"निमुनो अधीरत चित्त बहुत जनवंत्रायी होता है।

"भिज्ञा में जीर कोई दूसरी वस्तु नहीं देवता यो सुरक्षित रहने पर सेवी कम्यावशारी हो जैसे यह विसा "भिक्षुओ, सुरक्षित चित्त बहुत कल्याणकारी होता है। (शब्दो की भिन्नता है, अर्य-भेद नहीं)

"भिक्षुओ, में और कोई दूसरी वस्तु नहीं देखता, जो असयत होने पर महान अनर्थकारी होती है, जैमे यह चित्त ।

" भिक्षुओ, असयत चित्त बहुत अनयंकारी होता है।

" भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी वस्तु नही देखता, जो सयत रहने पर ऐसी कल्याणकारी हो, जैसे यह चित्त ।

"भिक्षुओ, सयत चित्त बहुत कल्याणकारी होता है।

"भिक्षुओ, मै और कोई दूसरी वस्तु नहीं देखता, जो दमन न किये जाने पर, अरिक्षत रहने पर और असयत रहने पर असी अनर्थकारी हो, जैसे यह चित्त।

" मिक्षुओ, चित्त दमन न किये जाने पर, अरक्षित रहने पर और असयत रहने पर महान अनर्थकारी होता है।

"भिक्षुको, मैं और कोई दूसरी वस्तु नहीं देखता जो दमन किये जाने पर, सुरक्षित रहने पर, और सयत रहने पर ऐसी कल्याणकारी हो, जैसे यह चित्त।

"भिक्षुओ, चित्त दमन किये जाने पर, सुरक्षित रहने पर और सयत रहने पर महान् कल्याणकारी होता है।"

#### (4)

"जैसे भिक्षुओ, शालि (धान) की बालि हो अथवा जो की बालि हो और वह ठीक से न रखी गई हो तथा उस पर हाथ या पाँव पड जाय तो इसकी सम्भावना नहीं है कि उससे हाथ या पाँव विध जायगा अथवा उनमें से रक्त निकल आयेगा। यह ऐसा क्यों? भिक्षुओ, शालि की वालि के ठीक रो न रखी होने के कारण। इसी प्रकार भिक्षुओ, यह सम्भव नहीं है कि कोई भिक्षु ठीक न रखे गये चित्त से अविद्या को वीध सकेगा, विद्या को प्राप्त कर सकेगा तथा निर्वाण को साक्षात कर सकेगा। यह ऐसा क्यों? चित्त के ठीक से रखे न रहने के कारण।

" जैसे भिक्षुओ, शालि (द्यान) की वालि हो अथवा जौ की बालि हो और वह ठीक से रखी गई हो तथा उस पर हाथ या पौन पड जाय तो इसकी सम्भावना है कि उस से हाथ या पौन बिंध जायगा अथवा उनमें से रक्त निकल आयेगा। यह ऐवा क्यों ? सिक्षुओं सािक की बािक के ठीक से एसे होने के कारण । वहीं प्रकार मिजुओं यह सन्मव है कि वह मिश्रू ठीक रखें पने चल से अविधा को बीध सकेगा विधाकी प्राप्त कर सकेना तथा गिर्वाण को साबात कर सकेगा। यह ऐसा वर्षों ? विद्या के ठीक से एसे रखने के कारण।

यहाँ भिनुतों में एक होन-पुन्त जावमी के जिल की जगने जिल से पहचानका हूँ कि बीद यह स्वतिक हती असन सर जाने तो ऐसा होगा जैये कि जाकर नरक में बाल दिया गया हो। यह ऐसा क्यों ? भिनुतों हसका जिल ही होन-पुन्त है। भिनुतों जिल के होन-पुन्त होने के कारण ही यही कुछ प्राणी स्टीट भेद होनें पर मरने के कानकर काम पूर्णीत मरक पहुन्य में पैदा होने हैं।

यहाँ निक्कों में एक (सदा)-अवस-निनन आदमी के चित्र को अपने चित्र से पहचानता हूँ कि भारि यह स्पनित इसी समय भर नामे तो ऐसा होना कीरें कि स्नारू स्वर्गनें बाल दिया पया हो। यह ऐसा क्यों में तिस्तृतों हसका किस ही सबा-पुरत है। मिसूनों चित्र के अबा-पुनत होने के बारण हो यहाँ कुछ प्रभी सरीर-भोद होने पर, माने के अनावार समुद्धा क्यों-औहन में उत्पाद होने हैं।

की भिन्नुको पानी का पानाल गेंदका हो चंचल हो और कीचव-मुन्छ ही वही निगारे पर लावे कीववाने जायगी का न सीगी दिखाई दें न एक न करूर दिखाई द न पत्थर जीन न चच्ची हुई भववा दिवर मक्कियों ही दिखाई दें। मह ऐगा क्यों? मिजुलो पानी के गैंदका होने के कारण । एसी मकार मिजुलो इसकी चनावना नहीं है कि वह भिन्नु मीने चित्र से जायन-हिल को बान चनेगा पर-हिल को जान सकेना उपस-हिल को बान सकेगा और सामान्य मनुष्य-कर्न से सकरूर विस्तित को बार अग-वर्षन को बान नकेगा। यह ऐसा क्यों? मिजुलो चित्र के मैंने इतिके ही चरल।

नैसे भिनुको पानी का सालाव बनका हो राज्य हो साठ हो नहीं भिनारे पर करे बीचवाचे कारमी को सीसी थी दिलाई के खब भी दिलाई के बन्द भी दिसाई के, पावस में दिखाई के बीर चकती हुई बनवा स्विद साठिकां भी दिसाई व। नहुंसेता को ? विश्वानों गानीने साठ में ने के पाना करते हों भाग सिनुको इसकी समावाद है कि नहुंसिन निर्मात विस्त से सारा-निर्मा की बात नकेसा पर-दिन को जात सकेना जातनिर्देश को बात सकेसा नीर सामान्य मनुष्य-धर्म से वढकर विशिष्ट आर्य-ज्ञान-दर्शन को जान सकेगा। यह ऐसा क्यो ? भिक्षुओ, चित्त के निर्मल होने के ही कारण।

, "भिक्षुओ, जितने भी वृक्ष हैं उनमें कोमलता तथा कमनीयता की दृष्टि से चन्दन ही श्रेष्ठ कहलाता है, उसी प्रकार भिक्षुओ, में एक भी ऐसी वस्तु नहीं देखता जो अभ्यास से ऐसी मृदु तथा कमनीय हो जाती हो, जैसे यह चित्त।

"भिक्षुओ, चित्त (योग)-अभ्यास करने से, वार वार अभ्यास करने से मृदू हो जाता है तथा कमनीय हो जाता है।

"भिक्षुओ, में दूसरी कोई भी एक ऐसी वस्तु नही देखता जो इतनी शीघ्र परिवर्तन-शील हो जैसे कि यह चित्त। भिक्षुओ, चित्त इतना शीघ्र परिवर्तन-शील है कि इस की उपमा देना भी आसान नहीं है।

"भिक्षुओ, यह चित्त स्वाभाविक रूप से शुद्ध है। यह वाह्यमल से दूषित है।

"भिक्षुओ, यह चित्त स्वाभाविक रूप से शुद्ध है। यह वाह्यमल से निर्मल है।"

### $(\xi)$

"भिक्षुओ, यह चित्त स्वाभाविक रूप से शुद्ध है। यह वाह्यमल से दूपित है। इस बात को अज्ञानी पृथक-जन यथार्थरूप से नही जानता है। इसलिये में कहता हूँ कि अज्ञानी पृथक-जन का चित्त एकाग्र नहीं होता।

"भिक्षुओ, यह चित्त स्वाभाविक रूप से शुद्ध है। यह बाह्य मल से निर्मल है। इस बात को ज्ञानी-आर्य-श्रावक यथार्थ रूप से जानता है। इसलिये में कहता हूँ कि ज्ञानी-आर्य-श्रावक का चित्त एकाग्र होता है।

"भिक्षुओ, यदि भिक्षु चुटकी बजाने के समय भर भी मैत्री-भावना करता है तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु घ्यान से अशून्य माना जाता है, शास्ता का आज्ञाकारी माना जाता है, शास्ता के उपदेश के अनुसार चलनेवाला माना जाता है, और यही माना जाता है कि वह राष्ट्र-पिण्ड को व्यर्थ नहीं खाता। जो बार वार मैत्री-भावना करता है उसका तो कहना ही न्या?

( आमेवन करना, भावना करना, मन में करना पर्याय-बाची है।) पिस्तृयों बितने भी बहुस्तर-धर्म है वे सभी यन के पीछे पीछे यसने वाले हैं। मन तनमें पहले बलान होता है बीट सलुसक-धर्म बाद में।

"मिशुको बिउने भी कुकक-यमंगहै वे सभी मन के पीसे पीसे बकने बाके है। मन उन में पहले सल्पा होता है और कुछक-समें बाव में।

"पिश्वनों में भीर कोई हुए री बाद नहीं देखता जिए के फरस्वरूम अनुराज बकुशक-धर्म जराज होने हैं और करणा कुशक-धर्मीकी हानि होती हो जैसे कि

भिभूमो महत्रमाद। भिभूमो प्रमादी के बनुत्पन कडुशक-धर्म उत्पन्न हो वाते हैं और स्ताम

कुगल-समों की हानि होती है। "मिसूनों में और कोई दूसरी बाठ नहीं देखता बिस के फलस्वरूप अपूराव कुशल-बर्स कराम होते हैं और जरान सकुशल-समोकी हानि होती हैं और कि मिसूनो

यह सप्रमाय । "पिक्रको अप्रमारी के असायक कालक को जाते हैं और सराय

"पिस्तुको कप्रमादी के अनुरूप कुलक-सर्ग उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न अनुसक-सर्गों की हानि होती हैं:

र्णभग्नों में भीर कोई इसरी बात नहीं देखता वितके कलस्वकम ननुत्पम अकुशक-समें बराज होते हैं और उत्पम कुशक-समों की हानि होती है बैसे कि मिनुसो बहु सालस्व।

"मिश्रुको बालगी के बनुस्तम अधुस्तक-सर्व कराल हो जाते हैं और पराम पुक्त-सर्वे की हानि होती हैं।

(৩)

फिलाओं में और कोई हुत्यी ऐसी बात नही देखता निश्धे जनुत्यम कूचल-मर्ग बराज हो जाते हें और उराज अकूच-मर्ग की हानि होती हैं जैसे कि फिलाओं यह प्रमत्त ना नाराज:

१ ब्रहुपस-धर्म = बुरी वार्ते।

त्रवरि सम्बर्ग पहुने और नावम है फिन्तु समार्थ आवय साव ही इत्यम होने में हैं।

६ दूशत-धर्म = बच्छी वार्ते।

"भिक्षुओ, प्रयत्न करनेवाले के अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि होती है।

"भिक्षुओ, में और कोई दूसरी ऐसी वात नही देखता जिस से अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न कुशल-धर्मों की हानि होती हैं, जैसे कि भिक्षुओ, यह इच्छा की अधिकता।

"भिक्षुओ, अधिक इच्छा करने वाले के अनुत्पन्न अकुशल धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न कुशल-धर्मों की हानि होती है।

"भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी ऐसी बात नही देखता जिससे अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न अकुशल-धर्मो की हानि होती है, जैसे कि भिक्षुओ यह अल्पेच्छता। १

"भिक्षुओ, अल्पेच्छ ध्यक्ति के अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते और उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि होती है।

"भिक्षुओ, में और कोई दूसरी ऐसी वात नही देखता जिससे अनुत्पन्न अकुशल धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न कुशल-धर्मों की हानि होती है, जैसे कि भिक्षुओ यह सतोष ।

"भिक्षुओ, असतोषी के अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न कुशल-धर्मों की हानि होती है।

"भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी ऐसी बात नही देखता जिससे अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि होती है, जैसे कि मिक्षुओ यह सतोष।

"भिक्षुओ, सतोषी के अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि होती है।

"भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी ऐसी बात नही देखता जिससे अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न कुशल धर्मों की हानि होती है, जैसे कि भिक्षुओ यह बेढगा विचार करना। <sup>२</sup>

१ अल्पेच्छता=अलोभ

२ अयोनिसो-मनसिकार।

"भिश्वमो बेडेगा विचार करने वाले के बनुराम बङ्गासन्यमं उराज हो बाते हैं बौर उराज कुशक बर्मों को द्वानि होनी है। 'भिश्वमो में बौर कोई बूसरी ऐसी बात नहीं बैकता जिससे बनुराय

"मिसूनों में बाँद कोई दूसरी ऐसी बात नहीं देसता जिस्से ननुस्तक कुथल अमें उत्तम हो जाते हैं बीर उत्तम बुसल अमों की हानि होती हैं जैसे कि मिसूनों यह इंगरे विचार करता। "

मिस्त्रों दग संविचार करने वालं के समुत्यम मुख्य-वर्ग उत्पन्न हो पाउँ

है और उराज अद्रयन-मार्ग की हाति होती है।

"मिसूनों में और कोई पूछरी ऐसी बात नहीं देवता विससे अपूराम अपूराम-मार्ग उराम हो बाते हैं और उराज कुणक-मार्ग की हाति होती हैं। की कि

भिजुमो यह मृदता। भिजुमो, मड स्थक्ति के सनुत्तन्न बकुगल-वर्ग जलक हो वाते हैं और

उलम कुरान-बर्गों की झानि होती है।
"मिल्जों में और कोई दुक्ति ऐसी बात नहीं बेकता विक्रमें बनुसान कुरान-

कर्म उलाम हो जाते हैं और मूलक जकुतक-समीं की हानि होती है और कि शिक्षकों महमजा।

"मिञ्चमो प्रजानात के अनुसान कुछान-धर्म उसमा हो वाले है और उसमा सकुधन-धर्मों की हार्गि होती है।

"मिस्नुमों में जीर कोई बूक्ती ऐसी बात नहीं बेसता जिससे जनुराज जनुराज-सर्में उत्पाम हो चाते है और उत्पाद कुकक-समों की हानि होती है, जैसे कि विश्वकों यह कुकार्यति।

भिन्नो कुसवि म खुने बाते के अनुताम जकुसल-धर्म उत्पाम हो बाते हैं और उत्पन्न कुसल-धर्मों की क्षांनि होती हैं।

#### (6)

मिल्लुबों में भीर नोई दूसरों ऐसी बाउ नहीं देवता विस्ते सनुराज दूसल-धर्म उराम हो बात है और उराम बहुधक-धर्मों की हानि होती है और कि मिल्लुबों वह नकी सनति।

१ योगिमो भनमिकार। २ पाप-निवद्यः ३ कन्वान-मिवद्याः

"भिक्षुओ, भली-सगित करने वाले के अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि होती हैं।

"भिक्षुओ, में और कोई दूसरी ऐसी बात नहीं देखता जिस से अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं, उत्पन्न कुशल-धर्मों की हानि होती हैं, जैसे कि भिक्षुओं यह अकुशल-धर्मों में लगना और कुशल-धर्मों में न लगना।

"भिक्षुओ, अकुशल-धर्मों में लगने और कुशल-धर्मों मे न लगने से अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं, उत्पन्न कुशल धर्मों की हानि होती है।

"भिक्षुओ, में और कोई दूसरी ऐसी बात नहीं देखता जिस से अनुत्पन्न फुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं, उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि होती है, जैसे कि भिक्षुओं यह कुशल-धर्मों में लगना और अकुशल-धर्मों में न लगना।

"भिक्षुओ, कुशल-धर्मों में लगने और अकुशल-धर्मों में न लगने से अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं। उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि होती है।

"भिक्षुओ, में और कोई दूसरी ऐसी बात नहीं देखता जिस से अनुत्पन्न बोधि-अग प उत्पन्न नहीं होते और उत्पन्न वोधि-अग भावना की पूर्णता को नहीं प्राप्त होते, जैसे कि भिक्षुओं यह वेढगा विचार करना।

"भिक्षुओ, वेढगा विचार करने वाले के अनुत्पन्न वोधि-अग उत्पन्न नही होते और उत्पन्न वोधि-अग भावना की पूर्णता को नहीं प्राप्त होते।

"भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी ऐसी वात नहीं देखता जिस से अनुत्पन्न वीधि-अग उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न वोधि-अग भावना की पूर्णता को प्राप्त होते हैं, जैसे कि भिक्षुओं यह ढग से विचार करना।

"भिक्षुओ, ढग से विचार करने से अनुत्पन्न वोधि-अग उत्पन्न हो जाते हैं और उत्पन्न वोधि-अग भावना की पूर्णता को प्राप्त होते हैं।

"भिक्षुओ, यह जो सगे-सम्बन्धियों का न रहना है, यह कोई बढी हानि नहीं है। भिक्षुओ, यह जो प्रज्ञा की हानि है यही सब से बढी हानि है।

"भिक्षुओ, यह जो सगे-सम्बन्धियों की वृद्धि है, यह कोई वहीं वृद्धि नहीं है। भिक्षुओं यह जो प्रज्ञा की वृद्धि हैं यहीं सब से वहीं वृद्धि हैं। इसलिये भिक्षुओं,

१ बोज्झग अथवा वोधि-अग सात हैं-स्मृति,धर्म-विचय,वीर्यं,प्रीति, प्रश्नव्धि, समाधि तथा उपेक्षा।

मही शीचना चाहिमे कि इस प्रज्ञानृदि द्वारा चमति करेगे। ऐसा ही भिज्ञ्जो शीचनाचाहिमे। "भिज्ञ्जो सह जो मोग-सामग्री की हानि है यह कोई वजी हानि नहीं।

भिजनो यह भो प्रमा की हानि है यही सब से बड़ी हानि है।

"भिज्ञां सह थो मोच-सामबी की पृति है यह कोई बडी वृति गही है। भिज्ञां यह यो प्रज्ञ की वृति हैं यही एवं से बडी वृति है। इसकिये मिचुवों यही मौकता चाहिये कि हम प्रज्ञा-पृति द्वारा उन्नति करेंगे। ऐसा ही पिज्ञां सीधना चाहिये ह

''पिस्तुओ, यह जो ऐस्वर्य की हानि है यह कोई बड़ी हानि नहीं। पिशुओं यह जो प्रका की क्रमि है सभी सब से नहीं हानि है।

(3)

'मियानो यह जो ऐस्तर्य की नृष्टि है यह कोई नही नृष्टि नही है। मिशुको तह जो प्रजा की नृष्टि है नहीं सक से नहीं नृष्टि है। स्तातको मिशुको नहीं शीवता चाहिये कि इस प्रजान्त्रिय हारा कार्ति करेंगे। ऐसा ही मिशुको गीयता चाहिये।

नाहिये कि इस प्रजा-नृद्धि हारा काति करेगे। ऐसा ही भिक्तुको सौखना नाहिये। "सिक्तुको में और कोई दूसरी बाद नहीं देखता वो इतमी महान् जनर्पकारी

हो जैसे कि पितृको सह प्रसार।
"मिराजो प्रपाद सारान अन्तर्वकारी है।

ाभर्तुमा अपाद महान् वनवकारा है। पिसाओं में और कोर्दे दूसरी बात नहीं देखता जो इतनी सहान् वक्तामकारी हो जैसे कि पिसाओं सह अपनाद।

जिस्तुनी जप्रभाद महान् करुयानदारी है।

दनी प्रवार आकरण प्रवलाण्यः। इसी प्रवार दण्यां वी अधिकता सन्तेण्यतः। इसी प्रवार अमृतीय अंतियः। इसी प्रवार केश्ना विचार वरता अने वै विचार करता।

इनी प्रशार मुहना प्रकार इनी प्रशार पुनर्गात सभी ने ननता तथा पूराच करों व स समार.

कुरात क्षमी न तर्पना तना महुदान बमी में न समस्त :

## (१०)

"शरीर के भीतर की वातों में भिक्षुओं, में और कोई दूसरी बात नहीं देखता जो इतनी महान् अनर्थकारी हो जैसे कि भिक्षुओं, यह प्रमाद।

"भिक्षुओ, प्रमाद महान् अनयंकारी है।

"शरीर के भीतर की वातों में भिधुओ, में और कोई दूसरी बात नहीं देखता को इतनी महान् कल्याणकारी हो जैमे कि निधुओ, यह अप्रमाद।

"मिक्सो, अप्रमाद महान् कल्याणकारी है।

इसी प्रकार आलस्य

इसी प्रकार इच्छा की अधिकता

इसी प्रकार असतीप

इमी प्रकार वेढगा विचार करना इमी प्रकार मुदता प्रयत्नारम्भ

. अल्पेच्छता ।

प्रजा।

सतोप ।

ढग से विचार करना।

"शरीर से बाहर की बातो में मिक्षुओ, मै और कोई दूसरी बात नही देखता जो इतनी महान् अनर्यकारी हा जैसे कि भिक्षुओ, यह कुमगति।

"मिक्षुओ, कुसगति महान् अनर्थकारी है।

"शरीर से वाहर की वातो में भिक्षुओ, में और कोई दूसरी वात नही देखता जो इतनी महान् कल्याणकारी हो जैसे कि भिक्षुओ यह भली-सगति।

"भिक्षुओ, भली सगति महान् कल्याणकारी है।

"शरीर के भीतर की वातो में भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी वात नही देखता जो इतनी महान् अनर्यकारी हो जैसे कि भिक्षुओ, यह अकुशल-धर्मों में लगना तथा कुशल-धर्मों में न लगना।

"अकुशल धर्मों में लगना तथा कुशल-धर्मो में न लगना भिक्षुओ, बहुत अनर्थंकारी है।

"शरीर के भीतर की बातो में भिक्षुओ, मैं और कोई दूसरी वात नहीं देखता जो इतनी महान् कल्याणकारी हो जैसे कि भिक्षुओ, यह कुशल-धर्मों में लगना तथा अकुशल धर्मों में न लगना।

् "कुशल-धर्मों में लगना तथा अकुशल-धर्मों में न लगना भिक्षुओ महान् कल्याण-कारी है।

"भिज्ञों में और कोई दूसरी ऐसी बात नहीं देखता जो इस प्रकार सकर्मके माध सद्धमें के अन्तर्धात होनेका कारण हो पैसे कि भिक्षको, यह प्रमाद।

"भिक्षको प्रमाद सद्धर्म के मारा सद्धर्म के बन्तर्धान द्वोने का कारण होता है।

"मिसमी में भीर कोई दूसरी ऐसी बाद नहीं वेसदा को इस प्रकार सदर्भ की स्पिति अविनास तवा अन्तर्धान न होने का कारण हो येसे कि भिसनो यह अप्रमाद ।

भिश्नमी सप्रमाद सदर्ग की स्विति अविनाश तथा अन्तर्भात न होते का

कारन होदा है। इसी प्रकार आसस्य प्रवासारम्भ । इनी प्रकार इच्छाको अधिकता अस्पेक्टता ।

इसी प्रकार असतोप र्मतोष । इसी प्रकार बेहमा विचार करना बंद से विचार करना।

घटा ।

इसी प्रकार सबता भाषी संगतित । इसी प्रकार कुसमित

इनी बदुषक धर्मी भंकणना दवा दूरास प्रभी में न अगना।

क्यक-सर्मों में स्थाना तका श्रक्तक-धर्मों में न स्थाना।

"भिराओं को मिल अधर्म को समें बताते हैं वे मिल बहतवनों के सहित में लगे हैं, बहुत जनों के असूल में लगे हैं नहत बनों के तबा देव-मनुष्या के धनवें अधिन तथा वक्त में लगे हैं और वे भिक्ष बहुत अपन्य लाग करते हैं तथा सबसे का अन्तर्भात करते है।

जिथुओं जो निस् धर्मको जबमै बतारे हैं के क्षे 🕻 । मिल्ली को निस् अधितय को दिनय बठाते हैं के करते 🕏 ।

"बिन्जो जो जिस् वित्रम को अवित्रम बताने हैं वे

करते है।

"भिक्षुओ, जो भिक्षु तथागत द्वारा अभाषित को, तथागतद्वारा न कहे गये वचन को, तथागत द्वारा भाषित, तथागत द्वारा कहा गया वचन बताते हैं वे करते हैं।

"भिक्षुओ, जो भिक्षु तथागत द्वारा अनाचरित को, तथागत द्वारा आचरित बताते हैं . करते हैं।

"भिक्षुओ, जो भिक्षु तथागत द्वारा बनाये गये नियम को, तथागत द्वारा न बनाया गया नियम बताते हैं वे बहुत जनो के अहित में लगे हैं, बहुत जनो के असुल में लगे हैं, बहुत जनो के तथा देव-मनुष्यों के अनर्थ, हित तथा दु स में लगे हैं और वे भिक्षु बहुत अपुष्प लाभ करते हैं तथा सद्धर्म का अन्तर्धान करते हैं।"

#### ( ११ )

"मिक्षुओ,जो भिक्षु अधर्म को अधर्म बताते हैं वे बहुतजनो के हित में लगे हैं, बहुत जनोंके सुख में लगे हैं, बहुत जनो के तथा देव-मनुष्यो के अर्थ, हित तथा सुखमे लगे हैं और वे मिक्षु बहुत पुण्य-लाभ करते हैं और वे इस सद्धर्म की स्थापना करते हैं।

" भिक्षुओ, जो भिक्षु धर्म को धर्म बताते हैं वे . करते हैं।

" भिक्षुओ, जो भिक्षु अविनय को अविनय वताते हैं वे करते हैं।

" भिक्षुओ, जो भिक्षु विनय की विनय वताते हैं वे करते हैं।

"भिक्षुओ, जो भिक्षु तयागत द्वारा अभाषित को, तथागत द्वारा न कहे गये वचन को, तथागत द्वारा अभाषित, तथागत द्वारा न कहा गया वचन वताते हैं वे

" भिक्षुओं को भिक्षु, समानत हारा मापित को तमापत हारा कहें गये कवन को तमापत हारा मापित तमानत हारा कहा बसा कवन बताते हैं वे करते हैं।

" पित्रुमो जो पिसु, तमायत हारा अभाषित को तमामत हारा मनायित मताने हैं में करते हैं।

वतात हुन करत हा करत हा जिल्ला को प्रमुख को प्रमुख को प्रमुख कार्यक्षाय कार्यक्षाय कार्यक्षाय कार्यक्षाय कार्यक बताते हैं के करते हैं।

" निस्त्रों को निस्तृ, तवानत क्षास न बनामें गये निवस को तवानत क्षास न बानावा वसा निस्तृ तवानत क्षेत्र है।

"विज्ञा को मिसू तवानत हाए बनाये सबे नियम को तवायत हाए बनाया गया (= बजरूत) नियम बनाते हैं वे बहुतवनों के हित में छने हैं बहुतवनों के सुख में लगे हैं बहुत बनों के तथा देव-सनुष्यों के सर्च हित तथा सुखर्यें

करे हैं और वे जिस्सू बहुत पूष्प-साम करते हैं। ( रैं र ) मिसाबों जो मिल जगाया को बराया बाते हैं वे मिल बहुत जगों के

मिध्यों जो मित्रु जगरध्य को लगप्छ वजाते हैं वे मिश्रु बहुत जर्गों के जहिंग में छने हैं बहुत जर्गों के अधुत्त में छगे हैं बहुत जरों के तबा देव-शगुम्मीके जनवें हिंत तथा दुला में छने हैं और वे मिस्रु बहुत अधुम्ब-आभ करते हैं तथा तबर्मका जल्मार्गन करते हैं।

"मिश्रुमी थो मिश्रु मपराच को अनगरात बताते हैं ने करते हैं।

करते हैं। "जिस्त्रों यो मित्र, इंक्के-अपराद को भारी-अपराध बताते हैं वे

करते हैं। मिलुनो, नो मिशु मारी-वपराज को हरुका-वपराज बताते हैं वे

। मनुन्ध ना। मनु भाष-वयात का हरुका-वयात बतात हुन करते हैं। प्रमुखों जो निज्जु नम्मीर-वयरात को अवश्मीर-वयरात बताते हैं

र क्छे हैं।

१ आवर्षि ।

	"भिक्षुओं, जो भिक्षु, अगम्भीर-अपराध को गम्भीर-अपराध बताते हैं
वे	. करने है ।
	"भिक्षुओ, जो भिक्षु सावशेष-अपराघ को निर्विषेप-अपराध बताते हैं
वे	करते है ।
	"भिक्षुओ, जो मिक्षु, निर्विषेष-अपराध को सावशेष-अपराध बताते हैं
वे	करते हैं ।
	" भिक्षुओ, जो भिक्षु, प्रायश्चित की जा सकने वाली । आपत्ति को प्रायश्चित
न की	जा सकनेवाली आपत्ति वताते हैं वे करते हैं।
	" भिक्षुओ, जो भिक्षु प्रायञ्चित्त न की जा सकने वाली आपत्ति को प्रायश्चित्त
की ज	ा सकने वाली आपत्ति बताते हैं वे . करते हैं।
	"भिश्रुओ, जो भिक्षु, अनपराध को अनपराध वताते है वे भिक्षु वहुत
जनोवि	हित में लगे हैं, बहुत जनो के मुख में लगे हैं, बहुत जनो के तथा देव-मनष्यो
के अ स्याप	र्य, हित तथा सुख में लगे हैं और वे भिक्षु बहुत पुण्य-लाम करते हैं तथा सद्देर्में की ना करते हैं ।
	" भिक्षुओ, जो भिक्षु अपराध को अपराध वताते हैं वे करतें हैं
	"भिक्षुओ, जो भिक्षु,हलके-अपराध को हलका-अपराध वताते हैं .
•	करते हैं।
	"भिक्षुओ, जो भिक्षु भारी-अपराध को भारी-अपराध बताते हैं
•	करते हैं।
	"भिक्षुओ, जो भिक्षु, गम्भीर-अपराध को गम्भीर-अपराध वताते हैं .
••	करते हैं।
	" भिक्षुओ, जो भिक्षु अगम्भीर अपराद्य को अगम्भीर अपराद्य बताते हैं
•	करते हैं ।
	" भिक्षुओ, जो भिक्षु, सावशेष-अपराघ को सावशेष-अपराघ बताते हैं
	ਵੜਤੇ ਤੋਂ।

"भिक्षुओ, जो भिक्षु, निर्विषेप-अपराध को निर्विशेष-अपराध बताते हैं

करते हैं।

१ सप्रतिकर्म-आपत्ति ।

"पिरानुवी को विश्व प्रायश्चित की बा सकने वाली आपति को प्रायश्चित की वा सकने वाली आपति बताते हैं वे करते हैं।

भिर्मुओ को मिस्, प्राचित्वत न की वा सकने नाती जायीत को प्रावित्वत न की वा सकने वाली जायीत बताते हैं वे भिन्नु बहुत वर्गों के हित में कने हैं बहुत वर्गों के शुक्त में कने हैं, बहुत बनों के तथा देव-मनव्यक्ति अर्थ हित तथा युक्त में मने हैं और वे भिन्नु बहुत पुष्प-साम करते हैं तथा सबसे की स्थापना करते हैं।"

#### (१३)

विश्व को के में एक व्यक्ति बहुत करों के हितके किये बहुत करों के पुत्र के किये जोकों पर अनुकास करने के किये तथा देव-सनपर्यों के अर्थ हित और सुन्न के किये सराम होता है। कोनता एक व्यक्ति ? तथायत वर्षेत सम्बद्ध ।

"पिक्को यह एक व्यक्ति लोक में बहुत बनों के हित के सिये

करपम होता है। " भिज्ञुनो एक म्पस्ति का लोक में प्रायुक्ति बुर्लग है। किस एक म्पस्ति का ?

वचापत अहैत सम्भन् सम्बद्ध का । "शिक्षुको एक म्पन्ति कोक में बारवर्य-कर होता है। क्षीतसा एक व्यक्ति ?

त्रमानतः सहैतः तस्यकः धस्युद्धः। मिल्युनो यह एक स्पनित क्रोकः में सादवर्यकरः होता है।

विश्व है।

" निस्तो एक व्यक्तिका वरियत बहुत वनो के सन्तर का कारव होता है। किस एक व्यक्तिका? समावत वहुत समाव समाव का।

हु। त्रस्य एक व्यास्तकाः यमावत बहुत सन्यक् सन्युद्धकाः।
"त्रिकृतो इस एक व्यक्ति का सरीति अनुताप के

\* विक्रुमी इस एक व्यक्ति का सरीता अनुसार है सिन्ने दोता है।

"पिम्मूनों कोक में एक व्यक्ति उराज होता है को बड़ितीन होता है विश्वके समान कोई नहीं होता को अप्रतिन होता है, विश्वके बैचा कोई नहीं होता राम विश्वकी कोई बचकरों नहीं कर सकता बीर को हिएदों में औरउ होता है। जीन का एक प्यतिन ? उत्पादन बहुँठ सम्बन्ध स्थान ।

"भिज्ञो पह एक व्यक्ति कोक में विपनो में जब होता है।

"पिसूनो एक व्यक्ति के प्रकट होने से बात चुन बाती है, बालोक हो बाता है, प्रकास कैंक बाता है, का भेरू धर्म पैशा हो बाते हैं, बारों प्रसि- सिम्बद्या ज्ञानों का साक्षात हो जाता है, अनेक घातुओं का ज्ञान हो जाता है, नाना घातुओं का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, विद्या-विमुक्ति फल साक्षात हो जाता है, स्रोतापित फल साक्षात हो जाता है, सक्रदागामी फल साक्षात हो जाता है, अना-गामी फल साक्षात हो जाता है, और अर्हत्वफल साक्षात हो जाता है। किस एक व्यक्ति के? तथागत अर्हत सम्यक सम्बद्ध के।

"भिक्षुओ इस एक व्यक्ति के प्रगट होने से . अर्हत्वफल साक्षात हो जाता है।

"भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई भी एक व्यक्ति ऐसा नही देखता जो तथागत द्वारा प्रवर्तित श्रेष्ठ धर्म-चक्र को सम्यक प्रकार अनुप्रवर्तित कर सके, जैसे भिक्षुओ, यह सारिपुत्र।

"भिक्षुओ सारिपुत्र तथागत द्वारा प्रवर्तित श्रेष्ठ धर्म-चक्रको सम्यक प्रकार अनुप्रवर्तित करते हैं।"

( \$8 )

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावको में ये अग्र हैं--

(ज्ञान) रात्रि के जानकारों में अग्र अञ्जाकोण्डञ्ज । भ महाप्रज्ञावानों में अग्र सारिपुत्र भ ऋदिमानों में अग्र महामौद्गल्यायन अ धुतगधारियों में अग्र महाकादयप भ

दिव्यचक्षु वालो में अग्र अनुरुद्ध अनुरुद्ध कालिगोधा-पुत्र भिह्म कालिगोध

१ शाक्य देशमें कपिलवस्तु नगर के पास द्रोणवस्तु ग्राम में, ब्राह्मण-कुलमें जन्म।

२ मगध देशमें राजगृह नगरसे अविदूर उपतिष्य ग्राम=नालक ग्राम (=वर्तमान सारिचक, वढगाव—नालन्दाके पास, जि॰ पटनामें ब्राह्मण-कुलमें जन्म ।)

३ मगध-देशमें राजगृह से अविदूर कोलित ग्राम में, ब्राह्मण-कुल में जन्म।

४ मगध-देशमें, महातीर्थ ब्राह्मण-ग्राममें, ब्राह्मण-कुलमें जन्म।

५ शाक्य देशमें, कपिल-वस्तु नगरमें, भगवानके चचा अमृतौदन शाक्यके पुत्र, क्षत्रिय-कुलमें जन्म ।

६ शाक्य देशमें, कपिल-वस्तु नगरमें, क्षत्रिय-कुलमें जन्म ।

समूर-स्वर बाकों में बध विद्यादियों में बध बर्ग-सदिकों में बद चंकिरत कई का विस्तार करने वाको में बध "फिल्टकों मेरे फिल्ट-मावकों में बब है— सकुष्टक-नाहितः पिन्होतः भाग्हानः भन्नानीहृतः पूर्नः महाकात्पादनः

मनोयस-कार्य निर्माणकर सकनेवाकों संग्र फिल-विवर्त चतुरीमें सप प्रमास-विवर्त चतुरीमें सप

पण्डा-विवर्त-कतुरीमें अध सकेश-पुक्तीमें अध दानके पात्रीमें अध बारककीमें अध

बारप्पकींमें बद्द श्वामियोमें बद आरख-पीमों (≃ सावको ) में बद सुदक्ताबींमें बद स्रोपियोमें बद बुल्कसम्बद्धः बुल्कसम्बद्धः बुल्किः ३ बुल्किः ३ बुल्किः ३ बंबिरवनियः रेवतः ४ बोद्धिवीन सोव<sup>१</sup> ६ कृटिकर्णं मोष

सीवित १

कोत्तक देखमें भावस्ती नगरमें भनी कुळमें।

८ नवड राजगृहर्गे बाह्यन कुरुगे।

८ पास्य कपिकसरपुर्वे समीप प्रोजनस्तु बाह्यब प्राप्तने बाह्यब स्ताः।

१ जबन्दी देश जुज्बनिनीमें बाह्यच कुछमें।

११ मध्य राजभृह भेष्ठी-करवा-पुत्र ।

१२ नम्ब राजपृष्ट्, भेष्ठी-करना-पुत्र । १६ कोसल भावस्ती वैश्यकुकर्ते ।

१४ मगम नासक बाह्मच-पाममें (सारिपुतके अनुक)।

१५ कोष्ठ नानस्ती नहामीन-कुठमें।

१६ बंबकेय कम्पानगरमें मेक्टी-कुक्तमें। १७ अवन्ती देश कुरर-करमें वैदय कुक्त में।

१८ बास्य कृष्टिया (कोडीय-दृष्टिया सुप्रशासाका पुत्र) स्वतिय कुछ ।

#### श्रद्धावानोमें अग्र

" भिक्षुओ, मेरे भिक्यु-श्रावकोमें अग्र है---

शिक्याकामियोमें अग्र

श्रद्धासे प्रव्रजितोमें अग्र

प्रथमश्लाका ग्रहण करनेवालोमें अग्र प्रतिभावानों (कवियो) में अग्र

सभी प्रकारसे सुंदरोमें अग्र

षायनासन व्यवस्थापकोमें अग्र

शयनासम् व्यवस्थापमाम् अप्र

देवताओके प्रियोमें अग्र

प्रखर वृद्धियोंमें अग्र

विचित्र वक्ताओमें अग्र प्रतिसम्भिदा-ज्ञान-प्राप्तोमें अग्र वक्कलि 🤊 🦠

राहुल २ •

रट्ठपाल<sup>२</sup> •

कुण्डघान <sup>२ २</sup>

वगीश <sup>२ 3</sup>

वगत-पुत्र उपसेन १४

मल्लपुत्र दब्व २५

पिलिंदवच्छ<sup>१६</sup>

बाहिय दारुचिरिय<sup>२</sup> °

कुमार काश्यय<sup>०८</sup>

महाकोट्ठित<sup>२</sup> \*

भिनपुओ, मेरे भिनपु-श्रावकोमें ये अग्र है — बहुश्रुतोमें अग्र—आनद। स्मृतिमानोमें अग्र—आनद। गतिमानोमें अग्र—आनद। धृतिमानोमें अग्र—आनद। सेवकोमें अग्र—आनद। ३°

१९ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।

२० शाक्य, कपिलवस्तु (सिद्धार्थ कुमारके पुत्र) क्पत्रिय कुल ।

२१ कुरुदेश, थुल्लकोट्ठित, वैश्य कुल।

२२ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।

२३ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।

२४ मगघ, नालक ब्राह्मण ग्राम (सारिपुत्रके अनुज) ब्राह्मण कुल।

२५ मल्लदेश, अनूपियानगर, क्पत्रिय कु ल।

२६ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।

२७ वाहिय राष्ट्र (=सतलज व्यासका द्वावा, जलधर, होशियारपुरके जिले और कपूरयला राज्य) में उत्पन्न ।

२८ मगघ, राजगृह।

२९ कोसल,श्रावस्ती,ब्राह्मण कुल ।

३० शाक्य, कपिलवस्तु, अमृतौदन पुत्र, क्पत्रिय कुल ।

बड़ी जनाउदासों में बड़ उस्केस कारपप 31 कुर्लोको प्रशास करनेवालों में बड़ निरोत्ते में बड़ पूर्व बन्म स्मरम करनेवालों सङ्घ सोपित 31 वित्रपद्में सङ्घ स्पारम करनेवालों सङ्घ सोपित 31

पिन्युनिसीक नुपरेशकोर्मे अप नन्यन ३ । त्रितेनिसीमें अप नंद ३ । पिन्युनीक सुपरेशकोर्मे अप पहाक्तिपन ३ ।

प्रतिनावार्ती (ज्यटिभानठपको) में सक राय प्रतिनावार्ती (ज्यटिभानठपको) में सक सावराज प

पिन्तुओं मेरी पिन्तुनी-पानिकानोर्वे ये वह हैं—
(बात) राजिके वातकारोर्वे बय नहामजापति पीतमी
महाप्रजानोर्वे वह खेमा ?

\_\_\_\_\_

३१ कासी देस नारामसी नगर, नाक्षण कुछ।

३२ चाक्य कपिङ्ग्बस्तु आमात्य नेह्सँ।

३३ वरस्य देख कीग्राम्यी वैश्यकुक। ३४ कीग्रस धावस्ती बाह्यवक्तर्मे।

१४ कारण भावत्या बाह्य कुरुमा १५ कारण कपित्रवस्तु नार्दे कुल।

३६ कोसल भावस्ती कुळपूड्।

३७ कामन कपिकमस्तु (महाप्रजापतिपुत्र) नवनिय कुछ ।

३८ सीमात (त्रापत) देख कुनकुटनती ननर, राजर्पय) ।

३९ कोश्रक सामस्ती बाह्यम भूक।

४ भगम राजगृह बाह्यचकुरू।

४१ कोतक मानस्ती (बावरि सिच्य) बाह्यच श्रुकः।

४२ धान्य कवित्रवस्तु, सूब्बोबन मार्ग्या नयनिम कुल।

४२ आरचे कारणपरपु, बृद्धारण आस्या वयावय द्वारा । ४३ आरचेस मानक(स्वासकोट)मगर,शत्रमुनी मगत्रराज विविद्यारकी कार्य्या । ऋदिमतियोमें अग्र
विनय-धारियोमें अग्र
धर्म-कथा कहनेवालियोमें अग्र
ध्यान करनेवालियोमें अग्र
ध्यान करनेवालियोमें अग्र
आरव्ध-वीर्य्योमें अग्र
विवय चक्षुवालियोमें अग्र
क्पिप्र-अज्ञाओमें अग्र
पूर्वजन्म अनुश्रमणवालियोमें अग्र
महा अभिज्ञाप्राप्तोंमें अग्र
क्ष्य चीव्रद्धारिणयोमें अग्र
श्रद्धावानोमें अग्र

उत्पलवर्णा ४४
पटाचारा ४५
धम्मदिन्ना ४६
नन्दा ४७
सोणा ४८
सकुला ४९
कुडलकेशा भद्रा ४०
भद्रा कापिलायिनी ५९
भद्रा कात्यायनी ५२
कुशा गौतमी ५३
सिगाल माता ५४

"भिक्षुओ, मेरे अुपासक श्रावकोंमें ये अग्र है----सर्वप्रथम शरणमें आनेवालोमें अग्र तपस्सु प्रश्नेर भल्लुकवणिक प्र

४४ कोसल, श्रावस्ती, श्रेष्ठी कुल।

४५ कोसल, श्रावस्ती, श्रेष्ठी कुल।

४६ मगध, राजगृह, विशाख श्रेष्ठीकी भार्या।

४७ शाक्य, कपिलवस्तु, महाप्रजापित गौतमीकी पुत्री।

४८ कोसल, श्रावस्ती, कुलगृह।

४९ कोसल, श्रावस्ती, कुलगृह।

५० मगघ, राजगृह श्रेष्ठी कुल।

५१ मद्रदेश, सागलनगर, ब्राह्मण कुल, (महाकाश्यपभार्य्या)।

५२ शाक्य, कपिलवस्तु, राहुलमाता (देवदहवासी सुप्रवृद्ध शाक्यकी पुत्री) क्षत्रिय ।

५३ कोमल, श्रावस्ती, वैश्य।

५४ मगध, राजगृह, श्रेष्ठी कुल।

५५ असितञ्जन नगर, कुटुम्बिक गृहमें।

६ असितञ्जन नगर, कुटुम्बिक गृहमें।

बनावपिण्डक भुदल शामकोर्मे अध नृह्यति" धर्मकपिकोर्मे कर मन्द्रिकारकाती विश गृह्यति ।

इस्तक माध्यक "

महानाम शाक्य <sup>६</sup>

उ**प्तह मृह**पवि<sup>११</sup> वस्वय्वसूर १३

क्षीमार जुत्य जी**यक** <sup>६४</sup>

नकुरूपिता गृहपति ।

हेनानी दुहिता दुनाता 👫

विद्याचा मुपार माता है

**बृञ्जू**वरा <sup>६</sup>

वेद्यादी हा सम गृहपति <sup>६</sup>

चार संग्रह वस्तुओंसे जमातका संग्रह करनेवालीमें अग

बुत्तम राज देनेबाकॉमें बच प्रिय दायकोमें बर्व

संबर्धनकॉर्में वर

बरयन्त असन्तोमें अद काकिनगत प्रसन्तोमें अप

विश्वस्तों में मध

भिज्ञो मेरी बुपासिका सावकाजोंमें वे बह है-प्रवस सरन वानेशासियोर्ने बय

राविकाओं वर्ष बहुभुतामें अब

> ५८ मध्य मध्यकासर सेस्टी कुछ। ५९ पणार्व्यस बातनी (जनस्तत वि फर्स्बाबार) राजदुसार। ६ धान्य कपिकवस्तु (मनुबद्धका ब्लेप्ट माता) स्वतितः।

६१ वरवीरेच वैद्याली भेरते कुछ। ६२ वज्जीवैस हस्तियान भेपनी कुना।

५७ फोस्स भावस्ती सुमन सेकी पूत्र।

६३ कोतल भावस्ती ग्रेप्टी कुल।

६४ नमध राजपृह अनमभुमारसे सावदितमा ग्रीवनामें जलाना।

६५ भना (=भनेरेख) (सभुमारनिरि) शेप्टी कुन्न।

६६ सब्ब चरवेकाके सेनानी पान केनानी कुटुस्त्रिकको पूत्री। ६७ कोसस मानस्ती वैस्र । ६८ वरस्य कीमाम्बी चोमक चेप्टीकी दाई की पूर्वी ।

मैत्री विहार (=भावना) करनेवालियोमें अग्र ध्यानियोमें अग्र प्रणीत दायिकाओंमें अग्र रोगी सुश्रुपिकाओमें अग्र अतीव प्रसन्नोमें अग्र विश्वस्तोमें अग्र श्रवणमात्रसे श्रद्धावान होनेवालियोमें अग्र सामावती ६९

उत्तरा, नदमाता १९

सुप्रवासा कोलीय दुहिता १९

सुप्रिया उपामिका १२

कात्यायनी १३

नकुल माता गृहपत्नी १४

कुरर घरवाली काली

अपासिका १९

### (१५)

"भिक्षुओ, इस बातकी सम्भावना नहीं है कि (सम्यक्) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य किसी भी सस्कारको नित्य करके ग्रहण करे, इस बातकी तनिक गुजायश नहीं है।

"भिक्षुयो, इस वातकी सम्भावना है कि पृथक-जन किसी भी सस्कारको नित्य करके ग्रहण करे, इस वातकी गुजायश है।

"भिनपुओ, इस बातकी सम्भावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनृष्य किसी भी सस्कारको सुख करके ग्रहण करे, इस बातकी तनिक गुजायश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि पृथक-जन किसी भी सस्कारको सुद्ध करके ग्रहण करे, इस वातकी गुजायक्ष है।

६९ भद्रवित राप्ट्र, भिंद्या (=भिंद्रका) नगर, भद्रवितक श्रेष्ठी पुत्री, (पश्चात् वत्स, कौशाम्बी, घोषित, श्रेष्ठीकी धर्म-पुत्री), वत्सराज उदयनकी महिषी।

७० मगध, राजगृह, सुमन श्रेष्ठीके आधीन पूर्णसिहकी पुत्री।

७१ शानय, कुडिया, सीवलीमाता-मपत्रिय कुल।

७२ काशी देश, वाराणसी, कुलगृह (वैश्य कुल)।

७३ अवन्ति, क़ुरर घर, (वैदय कुल), सोण कुटीकण्ण की माता।

७४ भग्ग देश, सुसुमारिगरी, (नकुलिपता गृहपितकी भार्या)।

७५ मगध, राजगृह, कुलगृहमें पैदा हुई, अवन्ती कुरर घरमें व्याही।

"मिज्ञूबो इस बातकी सम्मावना नहीं है कि (सम्बक्त) वृष्टि-मान्य नतूम्य किसी भी सर्पको आरमा करके प्रहुप को इस बातको तनिक नुमानस नहीं। "किस्नूबो इस बातको सम्मावना है कि पुत्रक-सब किसी भी बमें

को आत्मा करके प्रदूत करे, इत बातकी मुंबाबस है।

"प्रिक्पुको इस बातको सम्भावना नहीं है कि (सम्बक्) वृष्टिन्याप्त

सनुष्य सपनी मात्ताको जान से इत बातको धनक गुजायध नही है। "मिशुस्रो इस बातको सम्बादमा है कि वृषक-जन वपनी माताको जान के

रत बातको बुंजायस 🕻।

मिश्चको इस बावको सम्भावना नहीं है कि (यतक) वृष्टि-ग्राप्त अनुष्य

अपने पिताकी जान से इस बातकी तिनक गुंबायथ नहीं है।

भिजुको इस बातको सम्भावना है कि पवक्रमन अपने पिताकी जान के इस बातको पुंचायक है।

निस्को इस बातकी सम्मापना नहीं 🛊 कि (सम्बक) दृष्टि-आप्त मनुष्य

अईतकी जान के इस बावकी विनित्त मुजायस नहीं है।

" त्रिजुली इस बातकी सन्त्रामना है कि प्रवत्न-यन बहुंसकी बान के इस जार की गुंकायस है।

मिल्लुबो इस बातकी सम्मापना नहीं है कि (सम्मक्) वृद्धि-सान्त मनुष्य हेब-पूर्ण विकार सकर तथायतके परीरते बूत निकाले इस बातकी तरिक मूंबायय नहीं है।

मिसूनो इस बावकी सम्मानना है कि पृथकनन हेपपूर्ण जिला रखकर

शकाभवके अरीरसे सून निकाले इस बावकी गूंबामक है।

निस्त्रों इस नानकी सम्मानना नहीं है कि (सम्बक्त) वृद्धि-आरत मनुष्य मिस्नु-सम्में मेर नुरमना करनेका कारम नने इस नातकी तनिक नुवास्त्र नहीं।

" विज्ञा इस बादकी सम्बाधना है कि पुणकरण मिल्कु-सबर्धे सेंद्र सुरक्तन करे, इस बादकी जुंबायस है।

मिनुनो इस बाक्की सम्भावना नहीं है कि (सम्बक्) वृष्टि-प्राप्त नतुष्य किसी दूसरे सास्ताकी सरण प्रकृप करे, इस बातकी सनिक पृक्षसम्

मदी है।

"भिक्षुओ, इस बातकी सम्भावना है कि पृथकजन किसी दूसरे शास्ताकी शरण ग्रहण करे, इस वातकी गुजायश है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना नहीं है कि एक ही विश्वमें एक ही समयमें दो बहुत सम्यक् सम्बुद्ध एक साथ उत्पन्न हो, इस वातकी तिनक गुजायश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि एक ही विश्वमें एक ही समयमें एक अर्हत सम्यक सम्बुद्ध उत्पन्न हो, इस वातकी गुजायश है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना नहीं है कि एक ही विश्वमें, एक ही समयमें दो चक्रवर्ती राजा एक साथ उत्पन्न हो, इस वातकी तिनक गुजायश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि एक ही विश्वमें, एक ही समयमें एक चक्रवर्ती राजा हो, इस वातकी गुजायश है।

"भिक्षुओ, इस बातकी सम्भावना नहीं है कि स्त्री अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध हो, इस बातकी तनिक गुजायश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि पुरुष अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध हो, इस बातकी गुजायश है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना नहीं है स्त्री चक्रवर्ती राजा हो सके, इस बातकी गुजायश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि पुरुष चन्नवर्ती राजा हो सके, इस वातकी गुजायश है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना नहीं है कि स्त्री शक वन सके मार वन सके . . . . ब्रह्म वन सके, इस वातकी गुजायश नही।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना नहीं है कि शारीरिक दुष्कर्मका अच्छा, सुन्दर, भला परिणाम हो, इसकी गुजायश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि शारीरिक दुष्कर्मका बुरा, असुन्दर, खराव परिणाम हो, इसकी गुजायश है।

प्रिश्नुवो इस बादकी तस्त्रावना नहीं है कि बायीके दुरवर्गका सच्का सुचर मका परिचास हो इसकी गुवासय नहीं है। "मिश्नुवो इत्वादकी सस्मावना है कि बाजीके दुष्कर्मका बुरा-अमुचर

कराब परिनाम हो। इसकी नुंबामध है। विकासी कर जानकी सरसावका वर्जी

भिभूभो इस बातकी सम्भावना नहीं है कि मानसिक बुक्कर्यका अच्छा सुन्दर, भना परिचाम हो इसकी गुंबायस नहीं है।

भिनुनो इस बातको सम्मादना है कि मानविक दुःकर्मका बुरा बसुन्वर, बराद परिचाम हो। इसकी गुंजायस है।

निभूमो इस बातकी सम्मावना नहीं है कि साधिरिक कुन-मर्गका कुछ

अपुन्दर, बराव परिचान हो इतकी पूँबानय नहीं है। "मिञ्जूनो इस बातको सन्धादना है कि सारीरिक सुमन्दर्मका बच्छा,

भूतर, भक्ता परिचाम हो इसकी गुंजायस है। पिसुतो इस बातकी सम्माबना नहीं है कि बाजीके सुध-कर्मका बूस

अमुन्दर, सराव परिभाग हो इसकी गुंबावध नहीं है। मिसूबो इस बातकी सम्मावना है कि बालोके सम-कर्मका अच्छा

मुत्रक मन्त्र परियाम हो इसकी नुवायस है।

परभाग हा ६५का नुवायस इ.स. भिन्नुवो इस बातकी सम्मावता नहीं है कि मातसिक सुभ-कर्मका बुदा

बमुन्दर, सराव परिनाम हो इसकी मुंबावस नहीं है:

विश्वमो इस बातकी सम्मावना है कि मानसिक सूच-कर्मका कच्छा मुख्य-जन्म परिचाम हो इसकी पूजायस है।

भिमुनो इस नातकी सम्मादमा नहीं है कि सरीरते दुष्टमं करनेताका प्राची उसके परिधान-सक्तम उसके हेनुने सरीरके न स्तृतेपर, मरनेके अनुन्तर, सुपृति सर्व-कोकको प्राप्त हो। इसकी पूंचायस नहीं है।

विश्वनो इत बातकी सम्मावना है कि बाँगरे कुकने करनेनाका प्राची करके परिकास-स्वक्त बतके केनुये सारीरके न रहनेगर, मरनेके बननार, क्यांब इसीत नरक-लोकको प्रान्य हो समझे दुँगामस है।

"तिकृती इत नाजनी सम्मानना नहीं है जि नामीसे दुष्टमं करनेतास प्राप्ती तसके परिवासकक्ष्म अन्ते हेतुने करोरके न रहनेपर, मरनेकें ननतार, युक्ति राजनीकको प्राप्त हो। इतकी युक्तिक नहीं है।

- "भिक्षुओ, अिस वातको सम्भावना है कि वाणीसे दुष्कर्म करनेवाला प्राणी असके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर अपाय दुर्गति नरक-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश है।
- "भिक्षुओ, इस बातकी सम्भावना नहीं है कि मनसे दुष्कर्म करनेवाला प्राणी असके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति स्वर्ग-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश नहीं है।
- "भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि मनसे दुष्कर्म करनेवाला प्राणी उसके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर अपाय दुर्गति नरक-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश है।
- "भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना नहीं है कि शरीरसे शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी उसके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर अपाय दुर्गनि नरक-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश नहीं है।
- "भिक्षुओ, इस बातकी सम्भावना है कि शरीरसे शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुमे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति स्वर्ग-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश है।
  - "मिक्षुबो, इस बातकी सम्भावना नहीं है कि वाणीमे शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर अपाय दुर्गति नरक-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश नहीं है।
  - "भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना है कि वाणीसे शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति स्वर्ग-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश है।
  - "भिक्षुओ, इस वातकी सम्भावना नही है कि मनसे शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर अपाम दुर्गति नरक-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायश नहीं है।
  - "भिक्षुओ, इस वातको सम्भावना है कि मनसे शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी उसके परिणाम-स्वरूप, उसके हेतुसे, शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति स्वर्ग-लोकको प्राप्त हो, इसकी गुजायशहै।"

#### (१६)

"मिशुओ एक धर्म का अस्यास उसकी वृद्धि मिशुके सम्पूर्ण निर्वेदके किये वैरास्यके किये निरोधके किये उपध्यमके किये आन-माध्यके किये वोधिके किये स्था निर्वोद्यक्ति किये होती है। कीमधे एक वर्मका? बुखानुस्मृदिका।

"मिश्वों इस एक सर्वेका जन्मास इस एक धर्मकी वृद्धि मिश्वे के सम्पूर्ण

निर्वेदके किने होती है।

"मिश्रुको एक धर्मका करवाछ उसकी मृदि मिलुके सम्पूर्ण निर्वेषके किये
होती है। कौतते एक धर्मका ? धर्मातृस्मृतिका चैवानु-स्मृतिका धीलानुस्मृतिका त्यावानुस्मृतिका दैवानु-स्मृतिका बानापानस्मृतिका गरणानुस्मृतिका काव

वातृत्वृतिका अवध्यातृत्वृतिका ।

"मिसूनो इस एक धर्मका ज्ञामास, इस एक धर्मको वृत्ति निस्तृते समूर्यः

तिर्देश्ते तिले वैरामके किये चरसमत्रके क्रिय शात-सारिक क्रिये वोशिके क्रिये

राहा निर्देश-ज्ञामके क्रिये होती है।

### ((0)

 फिलुको में बूचपी कोई भी एक बात ऐसी नहीं बानता जिससे बनुत्यम्न बहुशक-पर्म उत्पन्न होते हों तथा उत्पन्न बहुशक-प्रमीमें वृद्धि होती हो बिपुकता होती हो बीचे पिशुको निष्पा-वृध्यि।

भिल्लो निम्मा-वृध्यमकेमें अनुत्रम बङ्कसक-धर्म पैदा हो आते हैं जलास बङ्क्यक-धर्म पृक्षिका निष्क्रधाको भाष्य हो चाते हैं।

२ मिस्तुमी में कुछ कोई भी एक बाठ ऐसी नहीं जानता विससे सनुत्तम कुछल-धर्म डलम हो तथा उत्पम कुछल-धर्मीमें वृद्धि होती हो विदुलता होती हो अंति मिस्तुमी तस्मक-बुटिट ।

मिरामी, सम्यन-वृध्यमानेमें बनुष्यम पुषक-वर्ग उत्पन्न हो जाते हैं, बलाम पुषक-वर्ग वृद्धिको विपुनताको माध्य हो जाते हैं।

- ३ "भिक्षुओं, मं दूसरी काई एक भी वात ऐसी नहीं जानता जिसमें अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न न होते ही जयवा उत्पन्न कुशल-धर्मों की हानि हो जाती ही जैसे भिक्षुओं, मिथ्या-दृष्टि ।
  - " मिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टियालेमे अनुत्पन्न कुगल-धर्म उत्पन्न नहीं होते, उत्पन्न कुशल-धर्मों की हानि हो जाती हैं।"
- ४ " भिक्षुओ, मैं दूसरी कोई एक भी वात ऐसी नही जानता जिसमें अनुत्पन्न अकुशल-धम उत्पन्न न हो अथवा उत्पन्न अकुशल-धर्मों की हानि हो, जैंमें भिक्षुओ, सम्यक्-दृष्टि।
- "भिशुओ, सम्यक्-दृष्टि वाले में अनुत्पन्न अकुगल-धर्म उत्पन्न नहीं होते और उत्पन्न अकुगल-धर्मों की हानि हो जाती है।"
- ५ "भिक्षुओ, में दूसरी कोई एक भी वात ऐसी नहीं जानता जियसे अनुत्पन्न मिथ्या-दृष्टि उत्पन्न हो जाती हो अथवा उत्पन्न मिथ्या-दृष्टि वृद्धि को प्राप्त हो जाती हो, जैसे यह गळत इंग से मोचना।
- "भिक्षुओ, गलत ढग मे मोचने ने अनुत्पन्न मिथ्या-दृष्टि उत्पन्न हो जाती है, उत्पन्न मिथ्या-दृष्टि वृद्धि को प्राप्त हो जाती है।"
- ६ "भिक्षुओ, मैं दूसरी कोई एक भी वात ऐसी नहीं जानता जिससे अनुत्पन्न सम्यक्-दृष्टि उत्पन्न हो जाती हैं अथवा उत्पन्न सम्यक्-दृष्टि वृद्धि को प्राप्त हो जाती हैं, जैसे यह ठीक ढग से सोचना।
- "भिक्षुको, ठीक ढग से मोचने से अनुत्पन्न सम्यक्-दृष्टि उत्पन्न हो जाती है अयवा उत्पन्न सम्यक्-दृष्टि वृद्धि को प्राप्त हो जाती है।"
- ७ "मिक्षुओ, में दूसरी कोई एक भी वात ऐसी नही जानता जिससे प्राणी इसं प्रकार शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर, अपाय, दुर्गति, विशिष्ट-पतन, नरक-लोक में उत्पन्न होते हैं जैसे कि भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टि।
- "भिक्षुओ, मिण्या-दृष्टि से युक्त प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर, अपाय, दुर्गति, विशिष्ट-पतन, नरक-लोक में उत्पन्न होते हैं।"
- ८ "भिक्षुओ, में दूसरी कोई एक भी बात ऐसी नही जानता जिससे प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर, सुगति, स्वर्ग-लोक में उत्पन्न होते हैं, जैसे कि भिक्षुओ, सम्यक्-दृष्टि ।

"भिज्ञा सम्मज-वृद्धि से मुक्त प्राणी खरीर केन रहने पर, मरने के जनन्तर, सुपति स्वर्थ-मोक में उत्पन्न होते हैं।

९ मिलुको मिप्पा-इंटिकाने प्राणी का को भी मिध्या-इंटिके बनुवार किया बसा सारिशिक-कर्न हैं जो भी बाली का कर्म हैं जो भी में पर का कर्म हैं को भी केतना हैं जो भी करना हैं को भी करना हैं के सिमें बहित के किये कर्म के किये बुराई के सिमें बहित के किये क्या कर के किये होंगे हैं। ऐसा किस सिमें ? सिलुसा पुटिद हों बुरी हैं।

"पिलुमों जीये नीम का बीच हो। को छातकों-बीच हो वा बढ़वी को की भा बीच हो और वह गीको पूजी में गावा पवा हो। वह नितने भी पूजी-रक्ष को बहुज करना है जितने भी छवड़-रम का बहुज करता है वह तकत हो होगा है कहुजा हो होता है जविषकर ही होता है। यह किछ किये ? मिलुमों बीच हो बच्च है। इसी प्रकार भिलुमों निय्या-वृध्वित्तां माणी का बो भी धारीरिक-को है को भी बाली का करें हैं जा भी मन का करें हैं जिससो दृष्टि हो नहीं है।

भित्र जो सम्बन्ध वृद्धिकां के प्राची का जो भी सम्बन्ध नृद्धि के अनुसार रिया नया पारीरिक-कर्म है जा भी बाबी का कर्म है जो भी मत का कर्म है जो भी केतता हूं जो भी कानता है जो भी संकल है सका निवार भी स्वकार है वे सभी अर्थ रूप के लिये वाचिक निवार मनाई के लिये हिए के निये उचा मुख के लिये होते हैं। सेना किस लिये ? नियासा परिट ही जन्मी है।

निश्वों जैन कर का बीन हो बात का बीन हो या अपूर का बीन हो बार कह पीकी पूजी में गावा गया हो वह निगते में पूजी-तस को बहुव करता है निगत भी नरक-रण को बहुक करता है यह गत अपूर हो होता है रिवाद हो होना है जरूदन हो होना है। यह किन किने गिम्मूना बीन हो अच्छा है। एसी प्रकार विभागों अस्थार-पृथ्वित्याने प्राची का को थी धारी(त्य-कर्न है जो भी वाची वा वर्ग है जो भी मन वा वर्ग है मिमूनो, इरिट ही वर्षणी है।

**(**१८)

विश्व में तीफ़ में एन भाषमी बहुत वनों के सहित के सिने बहुत बनां के अनुस के निये बहुत बनां के तमा वंद-मनुष्यों के सनवें के सिय अहित के सिये तथा दुनर के निये पैश होता है। "कौनसा एक आदमी ?

" मिथ्या-दृष्टि वाला विपरीत-दर्शी होता है, वह बहुत जनो को सद्धर्म की ओर से हटाकर असद्धर्म की ओर लगा देता है।

"भिक्षुओ, लोक में यह एक आदमी दुख के लिये पैदा होता है।"

२ "भिक्षुओ, लोक में एक आदमी वहुत जनो के हित के लिये, वहुत जनो के मुख के लिये, बहुत जनो तया देवमनुष्यों के अर्थ के लिये, हित के लिये तथा मुख के लिये पैदा होता है।

" कौनसा एक आदमी ?

"सम्यक्-दृष्टिवाला अविपरीत-दर्शी होता है, वह बहुत जनो को असद्धर्म की ओर में हटाकर सद्धर्म की ओर लगा देता है।

"भिक्षुओ, लोक में यह एक आदमी सुख के लिये पैदा होता है।"

३ "भिक्षुओ, में दूसरी कोई भी ऐसी वात नही देखता जो इतनी महान् दोषपूर्ण हो जितनी कि यह मिथ्या-दृष्टि ।

"भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टि सर्वाधिक दोपपूर्ण है।"

४ "मिक्षुओ, मैं दूसरे किसी एक भी आदमी को नही देखता जो इस प्रकार बहुत जनो का अहित करने में लगा हो, बहुत जनो को दुख पहुँचाने में लगा हो, बहुत जनो तथा देव-मनुष्यों के अनर्थ के लिये हो, अहित के लिये हो और दुख के लिये हो, जैसे कि भिक्षुओ, यह मक्खली मूर्ख-आदमी।

"भिक्षुओ, जैसे नदी के मुहाने पर जाल फैला हो, जो बहुत सी मछलियों के अहित के लिये हो, दुख के लिये हो, क्लेश के लिये हो, कष्ट के लिये हो, इसी प्रकार भिक्षुओ, मक्खली मूर्ख-आदमी को आदमी-रूपी जाल मानना चाहिये, बहुत जनों के अहिन के लिये, दुख के लिये, क्लेश के लिये तथा कष्ट के लिये।"

५ "भिक्षुओ, अनुचित धर्म-विनय में जो किसी को दीक्षित करता है, जिमे दीक्षित करता है और जो तदनुसार आचरण करता है, ये सभी बहुत अपुण्यार्जन करते हैं। यह किस लिये ? भिक्षुओ धर्म के ही अनीचित्य के कारण।"

- ६ "भितुको उपिण धर्म-विनय में को निमी को वीसित करता है किसे बीसित करता है और को तबनुसार आवरण करता है वे सभी बहुत पुम्पार्मन करते हैं। यह किस सिसे? निस्को धर्म के ही अधिक्य के कारण।"
- फिलुओ अनुचित धर्म-विकय में बायक को (दान की) सामा चानती
   चाहिये प्रतिचाहक को नहीं। यह किस स्थिते ? मिशुओ धर्म के अनीचित्य के वारण।

 "भिक्षुको उचित धर्म-विनय में प्रतिवाहक को मात्रा जाननी चाहिये दावक को नहीं। यह किस किसे? भिक्षको धर्म के बौचित्य के कारण।

९ फिसुको अनुमित धर्म-विनय में को अठि उरलाही होना है वह कष्ट

पाता है। यह किस किसे । फिलुको धर्मके धनीवित्य के गारण। १. फिलुका स्वीपत धर्म-वितय में को सन्द-सित होता है वह क्ष्ट

पाताई। यह फिस किसे ? पिलुसी धर्म के बीचिरस के कारन।"

११ पिरामी अनुचित धर्म-विजय में वो मन्द-सित होना है यह सुख पाता है। यह भिन्न किये? पिजुको धर्म के बनीचित्य के कारण। १२ "पिक्सको कनचित धर्म-विजय में वो सित-बल्हाही होता है वह

र । सभुना नगाया धमनवर्गम भा साद-उत्पाहा हरता ह सुखापाता है। सह किस किसे । धिलाडो धर्म के बौचिस्स के कारण।"

१६ भिसुनो जैसे बोडा भी दुँह दुर्गन्त ही देता है हती प्रकार भिजुनों में बोडे भी ससार की प्रबंस नहीं करता और तो और चुटकी-मान की भी नहीं।

१४ भिज्ञुनो जैते जोडाभीशूत दुर्गन्यहीदैशाई इसीप्रकार

बुटकी-सात्र की भी नहीं : १५ मिसुबो वैसे बोड़ा भी बुक बुर्यन्त्र ही बेता है, इसी प्रकार

भूटकी-साव की भी गदी। १६ फिलुको जैसे बोटी भी गीप कुर्गन्य ही देती हैं इसी सकार

र्क । मनुवा वस वाडा भाषाप कुण्य हादता हु इसः प्रकार वटकी-माम की भी नहीं।

१७ "भित्नो वैसे कोहामी व्यवस्था है देता है इसी प्रकार इ. पुरुकी-साव की भी नहीं।

### **(१९)**

"पिसूची वैधे इस बम्बुधिय में रमणीय स्थान रमणीय-नण रमणीय-मूमि तथा रमणीय पुष्परिचर्या वीडी ही हैं अधिकता तो ऊँची-नीची नवी से कटी साद-सौबादवाडी भूमि तथा विश्वम पर्यंत-मदेशों को ही है। "इसी प्रकार भिक्षुओ, स्थन्त पर जन्म ग्रहण करनेवाले प्राणी अल्प-सख्यक हैं, उन्हीं की सख्या अधिक हैं जो जल में उत्पन्न होनेवाले हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, मनुष्य होकर जन्म गहण करनेवाले प्राणी अल्प-सम्यक है, ऐसे ही प्राणियो की सस्या अधिक है जो मनुष्येतर योनियो में जन्म ग्रहण करते हैं।

"इसी प्रकार मिक्षुओ, मध्यम-जनपदो में जन्म ग्रहण करनेवाले प्राणी अल्य-मल्यक है, ऐमे ही प्राणियों की मख्या अधिक है जो अशिक्षित म्लेच्छ जनपदो में जन्म ग्रहण करते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी प्रज्ञावान् है, जडवृद्धि नहीं हैं, जिन के मुंह से लार नहीं टपकती तथा जो सुभाषित-दुर्भाषित का अर्थ समझने में समये है वे अल्य-संस्थक हैं, ऐसे ही प्राणियों की सस्या अधिक हैं जो प्रज्ञावान् नहीं हैं, जो जड- बुद्धि हैं, जिन के मुंह से लार टपकती हैं तथा जो सुभाषित-दुर्भाषित का अर्थ जानने में असमयें हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ आयं प्रज्ञा-चक्षु मे युक्त प्राणी अल्प-सस्यक हैं, ऐसे ही प्राणियो की सस्या अधिक है जो मूढ हैं, अविद्या-ग्रस्त है।

"इसी प्रकार मिक्षुओ, जिन प्राणियो को तथागत का दर्शन-लाभ होता है, वे अल्प सस्यक हैं, ऐसे ही प्राणियो की सस्या अधिक है जिन्हें तथागत का दर्शन-लाभ नहीं होता।

"इसी प्रकार भिक्षुको, जिन प्राणियों को तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनने के लिये मिलता है, वे अन्य-मस्यक है, उन्हीं की सस्या अधिक है जिन्हें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनने के लिये नहीं मिलता है।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी सुनकर धर्म को मन में जगह देते हैं वे अल्प-मख्यक है, ऐसे ही प्राणियो की सख्या अधिक है जो सुनकर धर्म को मन में जगह नहीं देते।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी सुने हुए धर्म के अर्थ पर विचार करते हैं वे अल्प-सब्यक है, ऐसे ही प्राणियों की सख्या अधिक है जो सुने हुए धर्म के अर्थ पर विचार नहीं करते।

"इसी प्रकार भिराबों जो प्राची अर्च तथा धर्म को जानकर प्रमीनुसार साचरच करते हैं वे जान-संकरक हैं ऐसे ही प्राविधों की संदया अधिक है जो अर्च तचा धर्म को न जान कर धर्मानुसार जावरण नहीं करते।

यम का न जान कर यमानुसार मामस्य मही करते।

" इसी प्रकार मिजुनो जो प्राणी प्रमाणित होने के स्वान पर प्रभावित होंगे हैं ने सब्द-गब्दक हैं ऐसे ही प्राणियों की संख्या विश्वक है जो प्रमाणित होने के स्वान पर प्रभावित नहीं होंगे।

"इसी प्रकार भिष्नुना को प्राची प्रमानित होकर ठीक तरह से प्रमानवान होने हैं ने जरूर-संस्थक हैं ऐसे ही प्राधियों की ग्रंस्या क्यिक हैं जो प्रमानित होकर ठीक से प्रमानवान नहीं होते।

स्ती प्रकार निस्तुनों जो प्राणी तिर्वाण का प्यात कर समाप्ति तार्थ करते हैं जिला की एकामधा प्रस्त करते हैं वे बाल-संस्थाक हैं ऐसे ही प्रतिकारी की संस्था ब्रिक्ट है जो निर्वाण का स्थात कर समाप्ति साथ नहीं करते जिला की एकास्ता साथ नहीं करते।

इसी प्रकार भिक्षुनी को प्राणी सेव्ड-उत्तम रलके लाभी हैं ने नन्य-चंद्रमक है एसे ही प्रामियों की सबस अधिक है जो सेव्ड उत्तम रत के छानी नहीं हैं और कन्द्र-मुक बाकर सा भिशादन कर गुजादा करते हैं।

रीर कम्ब-मून बाकर या निसादन कर गुवारा करते हैं। इसी गुकार पित्रकों को साकी वर्णकार क

स्ती प्रकार पितृकों को प्राची क्यें-रह धर्म-रह रहा विपृत्ति-रह के सामी है के सम्पन्तकार हैं ऐसे ही प्राचित की शंक्या कवित्र हैं जो कर्म-रम कर्म-रह एका निमृत्ति-रह के सामी नहीं हैं। स्व किने मिन्कों यही शीकाना वाहिंगे कि हम कर्म रहा कर्म-रह श्रमा विमृतित-रह के सामी होगे। निजुको ऐसा ही शीकान चाहिये।

२ शिक्षको लैंगे इस अम्बुद्धीय में रमणीय उद्यान रमणीय-नन रमणीय भूमि तथा रमणीय-पुल्करियमी लीगी ही है अधिकता तो ऊर्जी-नीणी नधी ने पटी ब्राज-संख्यक बाखी मूमि तथा विषय पर्वत प्रदेशों की ही है।

इसी सकार भिज्ञानों को अनुष्यन्यानि से मरफर मिर अनुष्या ही होकर जन्म सहय करते हैं ने करा-सम्पन्त हैं कर्त्ती सामियों की सकत निकत्त हैं को अनुष्य-स्त्रीय दे मर कर नरक में पैदा होते हैं जबू होन्य पैदा होते हैं तथा अंत होकर पैदा होते हैं। " इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी मनुष्य-योनि से मर कर देव-लोक मे जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प-सस्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की सख्या अधिक हैं जो मनुष्य-योनि से मर कर नरक में पैदा होते हैं, पशु होकर पैदा होते हैं तथा प्रेत होकर पैदा होते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी देव-योनि से च्युत होकर देव-योनि में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प-मख्यक है, उन्हीं प्राणियों की मख्या अधिक हैं जो देव-योनि से च्युत होकर नरकमें जन्म ग्रहण करते हैं, पशु होकर जन्म ग्रहण करते हैं, तथा प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं,

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी देव-योनि से च्युत होकर मनुष्य-छोक में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प-सल्यक हैं उन्ही प्राणियो की मस्या अधिक है जो देव-मोनि से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं, पशु होकर जन्म ग्रहण करते हैं तथा प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी नरक से च्युन होकर मनुष्य लोक में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प-सख्यक हैं, उन्ही प्राणियो की मस्या अधिक हैं जो नरक से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं, पशु होकर जन्म ग्रहण करते हैं, तथा प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी पशु-योनि से च्युत होकर मनुष्य-लोक में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प-सस्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की सख्या अधिक है जो पद्यु-योनि से च्युत होकर नरक में पैदा होते हैं तथा प्रेत होकर पैदा होते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी पश्-योनि ने च्युत होकर देय-लोक में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प-सस्यक है, उन्हीं प्राणियों की सस्या अधिक हैं जो पशु-योनि से च्युत होकर नरक में पैदा होते हैं, पशु-योनि में पैदा होते हैं तथा प्रेत-योनि में पैदा होते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी पशु-योनि से च्युत होकर देव-छोक में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प सस्यक है, उन्हीं की सस्या अधिक हैं जो पशु-योनि से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं, पशु होकर पैदा होते हैं तथा प्रेत-योनि में जन्म ग्रहण करते हैं।

" इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी प्रेत-योनि से च्युत होकर मनुप्य-लोक में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्प-सस्यक हैं, उन्हीं की सस्या अधिक हैं जो पशु-योनि से च्युत होकर तरन में अन्य घटन करते हैं। यमुन्योति में अन्य घटन करते हैं तका प्रेप-योति में अन्य क्टम करते हैं।

हमी बकार निष्मुं को प्राची प्रतानाति से प्यून होकर वसनोक में जग्म-प्यूच करते हैं वे प्रत्य संस्वत है उन्हों की गंक्या बांधन है जो प्रमानीति से च्यून होरर नरक-काक में जन्म प्रमुक करते हैं प्यानीति में जग्म पहुच करते हैं तहा प्रेम-पीति में जग्म प्रसुक करते हैं।

### (२०)

- रै नियुक्ता सर का आरब्यन्त है यह निरवयन्त्रकं साम है यह जो स्पिरनावल (= निसादन) है यह जा गीगुर्सल्डल (= प्रन्नुपारे चीवड़ों के चीवर पारण करमा ) है यह जो भीचिवरपारी होगा है यह जा यमेन विक् होना है यह जो निवयन्तर होना है यह जो बहु-चून होना है यह जा रचीवर होना है, यह जो चीवर जासि का साम है यह जो मनुवादरों का होना है यह वा बहुन कर बाहयों का होना है वह जो भेच्न-तुक वा होना है यह वो परिच्या-नजेवाना होना है यह जो व नज्वाभी-वाचीवाना होना है वह जा जलेच्यान है तथा यह जो निरोधी होना है।
  - १ निश्को प्रविच कीई मिश्र पुटकी बजाने के सनय कर भी जबन स्थान का अस्थार करवा है वो है मिश्रूओ उठने में ही बढ़ निश् स्थानी बहकाता है भारता के जनुसासन में उठने बाका उनके बचकेश के अनुसार बायरण बरने बाका। बढ़ जिए स्थर्ष ही उठन-रिश्व लाने बाका नहीं होगा। यो निश्, इतका बहुत अस्थान करते हैं उनका वा बहुता ही बया!

मिश्रुको । यदि कोई निया, जुटकी बजाने के सबब भर भी दूसरे-स्वात पा अस्थान करता है

> तीवरे-स्थान ना भागात करता है चीने-स्थान ना मामान करता है मैडी क्यो चिता-विमृत्ति का मामान करता है करवा क्यो चिता-विमृत्ति ना मामान करता है मृत्तिन न्यो चिता-विमृत्ति ना मामान करता है वरेका क्यो चिता-विमृत्ति ना मामान करता है वरेका क्यो चिता-विमृत्ति ना मामान करता है

" १० काय के प्रति कायानुपश्यी होकर विहार करता है, प्रयत्नशील, शानी, स्मृतिमान् तथा लोक में राग-द्वेष के वश में न होने वाला

"वेदनाओं के प्रति वेदनानुपदयी होकर

" चित्त के प्रति चिलानुपक्ष्यी होकर

" वर्मों के प्रति वर्मान्पस्यी होकर

१४ "अनुत्पन्न पापपूर्ण अनुदाल धर्मों को उत्पन्न न होने देने के लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, पराक्रम करता है, चित्त को रोकता है, कोशिश करता है

" उत्पन्न पापपूर्ण अकुशल-धर्मों के प्रहाण के लिये मकल्प करता है, प्रयत्न करता है, पराक्रम करता है, चित्त को रोकता है, कोशिश करता है

"अनुत्पन्न कुणल-धर्मों को उत्पन्न करने के लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, परात्रम करता है, चित्त को रोकता है, कोशिश करता है

" उत्पन्न कुंगल-धर्मों की स्थिति के लिये, लुप्त न होने देने के लिये, वढाने के लिये, विपुलता को प्राप्त कराने के लिये, पूर्णता को प्राप्त कराने के लिये, सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, पराक्रम करता है, चित्त को रोकता है, कोशिंग करता है।"

१८ " छन्द (=मकल्प) -ममाधि-प्रधान (=प्रयत्न) -सस्कार युक्त ऋदि का अभ्यास करता है

" वीर्य्य-समाधि-प्रधान-सस्कार युक्त ऋदि का अम्यास करता है

" चित्त-समाधि-प्रधान-सस्कार-युक्त ऋद्धि का अभ्यास करता है

"विमसा (=विवेक)-समाधि-प्रधान-संस्कार-युक्त ऋद्धि का अभ्यास करता है

> २२ "श्रद्धा-इन्द्रिय का अम्यास करता है "वीर्य्य-इन्द्रिय का अम्यास करता है "स्मृति-इन्द्रिय का अम्यास करता है "समाधि-इन्द्रिय का अम्यास करता है "प्रज्ञा-इन्द्रिय का अम्यास करता है श्रद्धा-बलका अम्यास करता है "वीर्य्य-बल का अम्यास करता है

"स्मृति-वक्त का अम्बास करता है समाधि-वत का जम्मास करता है "प्रजा-वस का अपन्यास करता है 🎍 ३२ "स्मिति-सम्बोधि-अन्न का बन्नास करता 🕏 धर्म-विषय-सम्बोधि-बंग का नम्यास करता है "बीर्घ्य-सम्बोध-बंग का बन्यास करता है ... प्रीति-सम्बोधि-बंग का बम्यास करता है प्रश्न विश्व-सम्बोधि-बन का बन्यास करता है समाधि-सम्बोधि-वग ना जम्मास करता है रुपेशा-सम्बोधि-बन का अञ्चल करता है धम्मक-दृष्टि का सम्यास करता है १४ "सम्बद्ध-सङ्ख्य का बम्बास करता है सम्बद्ध-वाची का सम्बास करता है सम्बद्ध-नर्मान्त का बम्यास करता है " सम्भक-भावीविका का बम्यास करता है भम्बक-स्थायाम का सम्यास वरता है सम्बद्धस्मृति का अभ्यास करता है सम्बद्ध-समाहि ना अभ्यास करता है

अंश्रे कपने मीठर रूप-मजावाना होतर बाहर धीमित मुवर्ण-पूर्वर्ष क्यों को देखता है और उन्हें मगरे वस में कर केने पर क्या की धारमा होती है कि मैं बावता है वैकटा हैं

अपने भीवर कप-सजावाका होकर बाहर अधीम भूनर्य-पूर्वर्ग क्यों को देखता है और उन्हें अपने क्या में कर तेने पर उसकी आरमा होती है कि में जानका है देखता हैं

कपने भीतर बक्स-मक्षा वाका होनर गीमित मुक्क-दुर्वभं क्पीको वेकता है और उन्हें अपने नय में नर भेने पर वसकी धारना होती है कि में बानता हूँ वेकता "अपने भीतर अरूप-मज्ञावाला होकर असीम मुवणं-दुवंणं रूपो को देखता है और उन्हें अपने वश में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि मै जानता हूँ, देखता हूँ

"अपने भीतर अरूप-सज्ञावाला होकर वाहर नीले, नील-वर्ण के, नीली-रगत के तथा नीली-चमक के रूपों को देखता है और उन्हें अपने वदा में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि में जानता हूँ, देखता हूँ .

"अपने भीतर अरूप-सज्ञा वाला होकर वाहर, पीले, पीत वर्ण के, पीली-रगतके तथा पीली-चमक के रूपो को देखता है

"अपने भीतर अरूप-मजावाला होकर वाहर लाल, रक्त-वर्ण के, लाल-रगत के तथा लाल-चमक के रूपों को देखता है

· "अपने भीतर अरूप-सज्ञावाला होकर बाहर मफेंद, स्वेत-वर्ण के, सफेंद-रगत के, सफेंद-चमक के रूपो को देखता है "

५५ "रूप वाला होकर रूपो को देखना है

"अपने भीतर अरूप-मज्ञावाला होकर बाहर रूपो को देखता है

" गोभन हैं ' इसी धारणा वाला होता है

"मभी रूप-मजाओं का अतिक्रमण कर, सभी प्रतिष-मजाओं को अस्त कर, सभी नानत्व सज्ञाओं को मन से दूर कर ' आकाश अनन्त है' ऐसा मान कर आकाशा-नञ्चायतन को प्राप्त कर विहार करता है

"सारे आकाशानञ्चायतन का अतिक्रमण कर 'विज्ञान अनन्त है' ऐसा मानकर विज्ञानञ्चायतन को प्राप्त कर विहार करता है

"सारे विज्ञानञ्चायतन का अतिक्रमण कर 'कुछ नही है' ऐसा मानकर 'अकिञ्चञ्जायतन' को प्राप्त कर विहार करता है

"सारे 'अिक इच्च ज्जायतन' का अितकमण कर 'नेवसञ्जानासञ्जायतन' को प्राप्त कर विहार करता है

"सारे 'नेवसञ्जानासञ्जायतन 'का अतिक्रमण कर 'सञ्जावेदयितनिरोध को प्राप्त कर विहार करता है "

> ६३ "पृथ्वी कसिण ( ध्यान-विधि ) का अभ्यास करता है "जल-कसिण का अभ्यास करता है

"तेत्र ( = क्रांभि ) -क्रसिण का भग्नास करता है " भागु-कसिन का अम्यास करता है

" गीस-करिय का अम्यास करता है

"पीत-कसिन का अभ्यास करता है

**छोहित-कविण का बम्यास करता है** 

भोदात (ब्ब्बेर)-फसिन का अभ्यास करता है बाकास-कसिन का अभ्यास करता है

विशात-कश्चिम का जम्मास करता है

७३ जगुर्म-सजा का जस्याम करता है " मरन-सनाका सम्यास करता 🖡

आहार के सम्बन्ध में प्रतिकृत-स्त्राका कम्यास करता 🕏 सारे लोक के प्रति बनासिक्त-भाव का बन्दास करता है।

भनित्प-सज्ञा का जन्यास करता है जनित्य के बारे में दुःच सत्रा का भम्यास करता है

दु स के बारेमें अतारम-सभा का अभ्यास करता है प्रधान-एका का बस्याध करता है

"वैराप्य-सन्ना का अम्यास करता है निरोध-सबा का कम्याध करता है

" जरित्प-संज्ञा का सम्मात करता है

अनारम-एका का बम्यात करता है

"मरन-चंद्रा का सम्यास करता है

"आहार के सम्बन्ध में प्रतिकृत-भावता का सम्यास करता है धारे लोक के प्रति अनाधन्ति-नाथ का अस्थात करता है अस्त्र-मज्ञा का अध्यास करता 🛊

" ( कास ) फुक बारे की सबा का अम्बास करता 🛊

"नीती पर जाने भी सता का सम्माध करता 🛊

हेर हो बाने की शंहा का मध्यास करता है

" मूत्र जाने की शक्षा का बम्बास करना 🛊

```
" ९३ वृद्धानुस्मृति का अभ्याम करता है
" धर्मानुम्युति का अम्यास करता है
" मधानुम्मृति का अम्याम करता है
" शील-अनुस्मृति का अभ्यान करता है 🚦
 " त्यागानुस्मृति का अभ्यास करता है
 "देवतानुस्मृति का अभ्यास करता है।
 " आनापानुस्मृति का अभ्याम करता है।
 "मरण-स्मृति का अभ्यास करता है
 " काय सम्बन्धी-स्मृति का अम्यास करता है
 " उपशमानुस्मृति का अम्यास करता है
  " १०३ प्रयम-ध्यान महित श्रद्धा इन्द्रिय का अभ्यास करता है
  " प्रथम-घ्यान सहित वीर्य्य इन्द्रिय का अभ्यासक रता है
  " प्रथम-घ्यान सहित स्मृति इन्द्रिय का अभ्यास करता है
  " प्रयम-घ्यान महित समाधि इन्द्रिय का अम्यास करता है
  "प्रथम-च्यान-सहित प्रज्ञा इन्द्रिय का अभ्याम करता है
  " प्रथम
                         श्रद्धा-वल का अम्यास करता है
   "प्रथम .
                         वीर्य्य-वल का अभ्यास करता है
   " प्रथम
                         स्पृति-वल का अभ्यास करता है
   " प्रथम .
                         समाधि-वल का अभ्यास करता है
   " प्रयम ...
                         प्रज्ञा-वलका अभ्यास करता है
    "११३ द्वितीय-ध्यान-सहित
    " १२३ तृतीय-च्यान-सहित
    " १३३ चतुर्थ-घ्यान-सहित
    " १४३ मैत्री-सहित
    " १५३ करुणा-सहित
     " १६३ मृदिता-सहित
     "१७३ उपेक्षा-सहित
```

" १८३ श्रद्धा इन्द्रिय का अम्यास करता है

बीर्म्म इस्त्रिम का अम्याम करता है "स्मृति इस्त्रिम का अम्यास करता है

"समाधि इत्त्रिय का अभ्यात करता है प्रशा इत्त्रिय का अभ्यात करता है ...

मका वस का अम्यास करता है

″नीम्मं वत्त का कम्यास करता **दै** 

"स्पृति बस ना अभ्यात करता है। समाप्ति कर का करवार करता है।

्समाधि वस का जन्मास करता 🕻।

"प्रजाबक का अस्थात करता है इस प्रकार के मिश्रु को है मिश्रुकों स्थानी कहते हैं सारता के बनुसावन में रहनेवाला जनके उपवेस के बनुसार जावरण करनेवाला वह मिश्रु व्यर्वे ही राष्ट्र-पित्र कानेवाला नहीं होता। जो मिश्रु इस का बहुत जस्मास करते हैं जनका

क्षो कहनाही क्या !

(२१) १ मिलुको जो को है पी किल से महायमुद्द का स्पर्ध करता है समूद्र में पढ़नेशाकों कोटी नवियों भी उसके मार्चात ही जा वाती है होंगे प्रकार निश्चनों जो कोई काम पत-स्मृति का जम्माया कर केता है, जसे बढ़ा केता है वियाने भी विद्यान्त्रपति कुचल-सर्म है जन सकता समाचेत उसके कार्यात हो जाता है।

भित्तुओ, एक वर्षेत्रा अध्यासः एक प्रमें का सवर्षतः महान् सबेप का कारण होना है

शरम हाता इ महान् वर्ष का कारण होता है।

महान् कस्याय का कारण होता है। स्वृति-सम्प्रयस्य का कारण होता है।

स्तृत्य-सम्प्रजस्य का कारण हाता है। अन-वर्शन-साम का कारण होता है।

इनी जरम में मुख पूर्वक रहने का कारण होता है। विचानविस्तित-कल के सामाय करने का कारण होता है।

"किम एक वर्गवा अभ्यात ? वायमतस्मृति वा अभ्यात ? मिसूको इस एक वर्गका अभ्यात विधा-विमुक्ति-सन्त के साक्षात करने वा वारण होता है।

- "९ मिक्षुओ, एक धर्म का अभ्यान करने पर, एक धर्म का सबर्घन करने पर, शरीर भी भान्त होता है, जित्त भी शान्त होता है, वितक-तिचार भी भान्त हो जाते हैं तथा नारे के सारे विधा-पक्षीय धर्म परिपूर्णता को प्राप्त हो जाते हैं। किस एक धर्म का अभ्यान करने पर? कायगत-स्मृति का अभ्यान करने पर। भिक्षुओ, इस एक धर्म का
- "१३ भिधुआ, एक धर्म का अन्यास करते पर, एक धर्मका सवधन करते पर अनुत्पन्न अनुनल-धम उत्पन्न नहीं होते, उत्पार अनुशल-धर्मों का प्रहाण हो जाता है। किस एक ध्रम का अन्यास करते पर १ गाय-गत-स्मृति का अन्यास करते पर ।

"भियुयो, इस एक बम का प्रहाण हो जाता है।"

"१५ मिक्षुओ, एक धर्म ना अम्यान गरने पर, मवर्धन करने पर अनु-त्यन्न कुराल-धर्म उत्यन्न हो जाते हैं, उत्यन्न कुशन-धर्म बुद्धि हो, विपुलना को प्राप्त होते ह। किस एक धर्म का? काय-गत-स्मृति हा।

"भिधुओ, इस एक धग का प्राप्त होते हैं।"

"१७ भिक्षुत्रो, एक धर्म का अन्यास करने पर, सवर्धन करने पर अविद्या का प्रहाण होता है, जिद्या उत्पन्न होती है, अहफार का नाण होता है, अनुप्रयो का पात होता है तथा नयोजनो का पहाण होता है। किस एक धर्म का काय-गत-स्मृति का।"

" मिक्षुओ, इस एक वर्म का प्राप्त होते हैं।

"२२ मिक्षुओ, एक धर्म का अम्याम करने पर, मवर्धन करने पर प्रज्ञा फूट पडती है, (पाच स्वन्धो की) उत्पत्ति न होने मे निर्वाण की प्राप्ति होती है। किम एक धर्म का? काय-गत-स्मृति का।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म का प्राप्त होती है।"

"२४ मिक्षुओ, एक धर्म का अम्यास करने पर, सवर्धन करने पर अनेक घातुओ का ज्ञान होता है, नाना घातुओ का ज्ञान होता है तथा नाना घातुओ का विक्लेपण करने की सामर्थ्य पैदा होती है। किम एक धर्म का ? काय-गत-स्मृति का।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म का पैदा होती है।"

"२७ भिक्षुओ, एक धर्म का अभ्यास करने पर, सवर्धन करने पर स्रोता-पत्ति-फल का साक्षात होता है, सक्रदागामी-फल का साक्षात होता है, अनागामी- फस वा साक्षात होता है। वहैत-फल वा माधात होता है। दिस एक धर्मवारै शाय-गत-स्थति दा ।

> मिश्को इस एक धर्मका होता है।"

" ६१ मिल्ली एक धर्म ना सम्यान करते गे संबर्धन करते से प्रवादा कान होता है। प्रज्ञानी वृद्धि होती है। प्रज्ञा विपुत्त-हत्ना है। सहात-प्रज्ञा द्वारा है। वहुप्रस होता है विपुत-प्रज होता है सम्भीर-गत्र होता है दूर की सोचनवासा होता है मुरि-गत होता है बहुल-प्रश होता है भी म-प्रव होता है स्पृतिवाला होता है बतुर हाता है तुरस्त सोचनेवामा हाता है तीसन-वृद्धिवामा होता है तवा बीधनवासी प्रजावासी होता है। दिस एक धर्म दा<sup>9</sup> दाय-गठ-स्मृति दा।

> भिद्यंत्री इस एक धर्म का अस्यास करने स प्रवादाका होता है।"

४७ मिस्नुमा जो रायगन-स्मृति का परि-भोग नहीं वरत वे अमृत का परिमौन नहीं करते। भिस्तुत्रों जो शायनत-स्मृति का परिमौग करते हैं वे समृत का परियोग करते हैं।

४९ भिरमुमी विश्वोने कायगत-स्मृति का परिभीय नहीं किया उन्होंने समृत का परिमोप नहीं किया । भिक्षको जिन्होंने रामपत-स्नृति का परिमोग किया उन्होते समय का परिकोष किया।

५१ मिखुबो विनकी भागगत-स्मृति नष्ट हो गई पन का बमृत नष्ट हो बमा । प्रिश्तको जिनको कायवत-स्मृति नच्ट नही हुई उनका अमृत नच्ट नही हुआ ।"

५३ मिसुमो जिनकी नामगत-स्मृति निरोधिनी रही वे अनृत विरोधी खे, जिन की कायगठ स्मृति विरोधिनी नहीं रही वे बमृत-विरोधी नहीं खे। "

५५ मिशुको जिन्होने काममत-स्मृति के प्रति प्रमाद किया जन्होंने बमत के प्रति प्रमाव किया। फिस्को विन्होंने कायवत-स्मृति के प्रति प्रमाव नही

किया उन्होते अमृत के प्रति प्रमाद नहीं किया। ५७ मिस्सी को कायगत-स्मिति को मत गर्न वे अमृत को मल गर्ने।

भिक्रजों को कामबद-समित को नहीं सके वे असत को नहीं करे। ५९ मिलुबो जिल्होने कामनत-स्मृति का सेवल नही किया उन्होंने

कम्त का सेवन नहीं किया। भिक्षमी जिल्होने कामबठ-स्मृति का सेवम किया

पन्तीत समत का धेवन किया।

- "६१ भिक्षुओ, जिन्होने काय-गत-म्मृति का अभ्यास नहीं किया, उन्होने अमृत का अभ्यास नहीं किया। भिक्षुओ, जिन्होने कायगत-स्मृति का अभ्यास किया उन्होने अमृत का अभ्यास किया।"
- "६३ भिक्षुओ, जिन्होने कायगत-स्मृति की वृद्धि नही की, उन्होने अमृत की वृद्धि नही की। भिक्षुओ, जिन्होने कायगत-स्मृति की वृद्धि की, उन्होने अमृत की वृद्धि की।"
- "६५ भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृति से अपरिचित रहे, वे अमृत से अपरिचित रहे। भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृति से परिचित रहे, वे अमृत से परिचित रहे।"
- "६७ भिक्षुओ, जिन्हे कायगत-स्मृति का ज्ञान नही हुआ, उन्हे अमृत का ज्ञान नही हुआ। भिक्षुओ, जिन्हे कायगत-स्मृति का ज्ञान हुआ, उन्हे अमृत का ज्ञान हुआ।"
- "६९ भिक्षुओ, जिन्होने कायगत-स्मृति का साक्षातकार नही किया, उन्होने अमृत का साक्षातकार नही किया।"
- "७० मिक्षुओ, जिन्होने काय-गत-स्मृति का माक्षातकार किया, उन्होने अमृत का माक्षातकार किया।"

एक निपात के सहस्र सूत्र समाप्त ।

# दूसरा निपात

ऐसा मैने सूना—एक समय मगवान् भावस्ती में जेतवश में जनाव पिष्मक के आराम में विद्यार नरते थे। वहाँ मगवान् ने मिललो को सम्बोधित किया— मिल्लो! जन मिल्लो ने मगवान् को प्रायुक्तर विद्या— 'मदला!'' मगवान् ने ऐसा कहा—

भिलमो यो दोप है। भौतसे दो? इहकोक-सम्बन्धी दोप तथा परकोक-सम्बन्धी बोप । भिक्षमा इहकोक-सम्बन्धी बोप कौनसा है ? भिक्रमो एक बादमी देखता है कि एक चीर को। एक बपराधी को राजा के बादमी पकड़ कर के जाते हैं और नाना प्रकार के बच्च देते हैं---शाबुक से भी पीटते हैं बेल से भी पीटते है मुख्यर से भी पौटते हैं हाम भी छेर देते हैं पौन भी छेर देते हैं हाच-पौन भी क्रेंब देते हैं कान भी क्षेत्र देते हैं नाक भी क्षत्र देते हैं कान-नाक भी क्षेत्र देते हैं जोपनी निकासकर उस में पर्न कोडा भी बाक देते हैं। बाको सहित सिर की चमडी उचाह कर बोपडींसे कक्सोको भी रवडते हैं सवासी से मुँह बोलकर उसमें दीपक भी बचा देते है सारे सरीर पर तेक-नत्ती कपेट कर उस में जान भी भगा बेठे हैं झाच पर तेक-बत्ती क्रपेट कर उसमें मान भी कगा देते हैं, मके से विद्ने तक की चमडी भी उतार देते हैं मने ने कटि-परेच तक की चमड़ी और कटि-प्रदेश से निट्टे तक की चमड़ी मी उदार देते हैं बोगों फोहनियाँ तवा दोनों बुटनो में मेखें ठोक कर बमीन पर भी किटा देते हैं। उमय-मुख कांटे पाड-पाडकर वमडी माँच तवा नसे भी नवीट केते हैं। सारे सरीर भी चमडी को कार्योग्य कार्योग्य मर बाट बास्टे हैं। सरीर को बहाँ-रहीं धन्त्रों से पीट कर उत्त पर कवी भी फेरते हैं एक करवड़ बिटा कर कात में से सेख भी माड देते हैं दिना चमडी को हानि पहुँचाये अन्वर-सन्बर हर्दडी भी पीछ बासते हैं बदलता जनल्या तेल भी बात देते हैं कुतों से भी नटवाते हैं औते जी सुनी पर भी सटकाते हैं तका तककार से सिर भी काट डाकते हैं।

उसके मन में वह होता है— विस उपह के पान-कमें करने से एक चोर को एक मनपानी को पना के नावमी पचडकर ने वाले हैं और नाना प्रकार के दश्व देने हुं चानुक से भी पीरते हैं जनवार से सिट भी नाट बाकते हैं। से सी यदि ऐसा पाप-कर्म कर्रोगा, तो मुझे भी राजा के आदमी पकडकर ले जायेंगे और इसी प्रकार से नाना दण्डो से दिण्डत करेगे, चाबुक से भी पीटेंगे तलवार से सिर भी काट डालेगे।

"वह इसी जन्म में फल देनेवाले दुष्कर्म से डरकर दूसरों की वस्तुयें लूटता हुआ नहीं यूमता है। भिक्षुओं यह कहलाता है इसी जन्म में बुरा फल देनेवाला दुष्कर्म।"

"भिक्षुओ, परलोक में फल देने वाला दुष्कर्म क्या है ?"

"भिक्षुओ, कोई कोई इस प्रकार विचार करता है—कायिक-दुष्कर्म का परलोक में बुरा फल भुगतना पडता है, वाणी के दुष्कर्म का परलोक में बुरा फल भुगतना पडता है, वाणी के दुष्कर्म का परलोक में बुरा फल भुगतना पडता है, मानिमक दुष्कर्म का परलोक में बुरा फल भुगतना पडता है, में गरीर से दुष्कर्म करता हूँ, वाणी से दुष्कर्म करता हूँ, मन से दुष्कर्म करता हूँ और यह क्या है जिसमे में शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर नरक लोक में उत्पन्न होकर दुर्गति को, दुरवस्था को प्राप्त होऊ।

"वह परलोक में फल देने वाले दुष्कर्म से भयभीत हो जाने के कारण शरीर के दुष्कर्म का त्याग कर, शरीर के शुभ-कर्मों का अम्यास करता है, वाणी के दुष्कर्मों का त्याग कर, वाणी के शुभ-कर्मों का अम्यास करता है, मन के दुष्कर्मों का त्याग कर, मन के शुभ-कर्मों का अम्यास करता है और अपने अपको शुद्ध वनाता है। भिक्षुओ, यह परलोक में फल देनेवाला दुष्कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, ये दो प्रकार के दुष्कर्म हैं।

"इसिलिये भिक्षुओ, यह सीखना चाहिये इसी जन्म में बुरा फल देनेवाले दुष्कर्म से डरेंगे, परलोक में बुरा फल देने वाले दुष्कर्म से डरेंगे, दोष में भय मानने-वाले होगे, दोष में भय देखनेवाले। इसी प्रकार भिक्षुओ, सीखना चाहिये। भिक्षुओ, यह आशा करनी चाहिये कि दोष में भय माननेवाला, दोष में भय देखने-वाला सभी दोषों से मुक्त हो जायेगा।"

"भिक्षुओ, लोक में यह दो दुष्कर कार्य्य हैं,। कौन से दो? एक तो गृहस्यों का घर में रहते समय (भिक्षुओं को) चीवर, पिण्डपात, शयनासन, ग्लान-प्रत्यय औपध आदि आवश्यक वस्तुओं का दान करने का दुष्कर कार्य्य, दूसरा भार से वेघर हुए अनागारिक प्रव्रजितों का सभी चित्त-मलों को दूर करने का प्रयास।

## दूसरा निपात

ऐसा मैंने सूना—एक समय भगवान् भावस्ती में बेतवन में बनाव पिष्मक के आराम में बिहार करते वे। वहाँ भगवान् ने भिक्षओं की सम्बोधित किया— भिक्षओं । उन भिक्षओं में भगवान् को प्रस्कृतर दिया— "भवता!" भगवान् ने एसा कहा—

भिक्षको दो दोप है। कौनसे दो<sup>9</sup> इहस्रोक-सम्बन्धी दोप तका परलोक-सम्बन्धी दोप। भिक्षको इहकोक-सम्बन्धी दोप कौनसा है ? भिक्षकी एक आदमी देखता है कि एक भोर को। एक अपराधी को राजा के बादमी पकर कर के जाते हैं और नाना प्रकार के रण्ड देते हैं--- चावक से भी पीटते हैं बेत से भी पीटते है मन्दर से भी पीटते हैं हाम भी छेर देते हैं पाँच भी छेद देते हैं हाम-पाँच भी क्षेत्र देते हैं. कान भी क्षेत्र देते हैं. नाक भी क्षेत्र देते हैं. कान-नाक भी क्षेत्र देते हैं. कोपड़ी निकासकर उस में वर्ग कोड़ा भी बास देते हैं। बासों सहित सिर की अमडी उचार कर कोपबीसे कर रोको भी रवडते हैं सदासी से मेह कोलकर उसमें बीपक भी बका बेते है सारे सरीर पर तेल-बली लगेट कर उस में बाव भी सना बेते हैं डाव पर तेल-बल्दी क्येट कर उसमें बाद भी लगा देते हैं। गते से गिट्टे तुरु की चमडी भी जतार देते हैं। वक्ते से कटि-प्रदेश तक की चमड़ी और कटि प्रदेश ने बिट्डे तक की चमड़ी भी उतार देते हैं दोनो कोइनियो तवा दोनों बुटनो में येखें ठोक कर बसीन पर मी किटा देते हैं उभय-मुख काँटे बाइ-शावकर चमडी माँत तवा नहीं भी नवीट केते हैं सारे धरीर की बमडी को कार्यायन कार्यायन मर बाट बास्ते हैं करीर को बड़ी-तड़ी सरवो से पीट कर उस पर कवी भी फेरते हैं एक करवट किटा कर कान में से मेख भी बाट देते हैं दिना चमडी को हानि वहुँचाये अन्दर-सन्दर हडडी भी पीस डाक्ते हैं, उपलया उपल्या देल भी बाल देते हैं क्यों से भी क्ष्टवाते हैं बीते जी सुबी पर भी सटकाते हैं तवा तसवार से सिर भी काट डास्ते हैं।

उसके मन में यह द्वांता है—जिस तरह के पानकमें करने से एक चौर को एक कपराधी को राजा के आदमी पकरकर के वाने है और नाना प्रकार के बण्ड देने हैं चानुक ने भी पीटते हैं स्वन्यार से सिर भी काट सकते हैं। में भी यदि ऐसा पाप-कर्म कर्म्गा, तो मुझे भी राजा के आदमी पकडकर ले जायेंगे और इसी प्रकार से नाना दण्डो से दिण्डत करेगे, चाबुक से भी पीटेंगे तलवार से सिर भी काट डालेगे।

"वह इसी जन्म में फल देनेवाले दुष्कर्म से हरकर दूसरों की वस्तुयें लूटता हुआ नहीं घूमता है। भिक्षुओं यह कहलाता है इसी जन्म में बुरा फल देनेवाला दुष्कर्म।"

"भिक्षुओ, परलोक में फल देने वाला दुष्कर्म क्या है ?"

"भिक्षुओ, कोई कोई इस प्रकार विचार करता है—कायिक-दुष्कर्म का परलोक में बुरा फल भुगतना पडता है, वाणी के दुष्कर्म का परलोक में बुरा फल भुगतना पडता है, वाणी के दुष्कर्म का परलोक में बुरा फल भुगतना पडता है, में गरीर से दुष्कर्म करता हूँ, वाणी से दुष्कर्म करता हूँ, मन से दुष्कर्म करता हूँ और यह क्या है जिसमे में शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर नरक लोक में उत्पन्न होकर दुर्गति को, दुरवस्था को प्राप्त होऊ।

"वह परलोक में फल देने वाले दुष्कमं से भयभीत हो जाने के कारण शरीर के दुष्कमं का त्याग कर, शरीर के शुभ-कमों का अम्यास करता है, वाणी के दुष्कमों का त्याग कर, वाणी के शुभ-कमों का अम्यास करता है, मन के दुष्कमों का त्याग कर, मन के शुभ-कमों का अम्यास करता है और अपने अपको शुद्ध वनाता है। भिक्षुओ, यह परलोक में फल देनेवाला दुष्कमं कहलाता है। भिक्षुओ, ये दो प्रकार के दुष्कमं हैं।

"इसिलिये भिक्षुओ, यह सीखना चाहिये इसी जन्म में वुरा फल देनेवाले दुष्कर्म से डरेगे, परलोक में वुरा फल देने वाले दुष्कर्म से डरेगे, दोष में भय मानने-वाले होगे, दोष में भय देखनेवाले। इसी प्रकार भिक्षुओ, सीखना चाहिये। भिक्षुओ, यह आशा करनी चाहिये कि दोष में भय माननेवाला, दोष में भय देखने-वाला सभी दोषों से मुक्त हो जायेगा।"

"भिक्षुओ, लोक में यह दो दुष्कर कार्य्य हैं,। कौन से दो? एक तो गृहस्थो का घर में रहते समय (भिक्षुओ को) चीवर, पिण्डपात, शयनासन, ग्लान-प्रत्यय औषध आदि आवश्यक वस्तुओ का दान करने का दुष्कर कार्य्य, दूसरा चर से वेघर हुए अनागारिक प्रव्रजितो का सभी चित्त-मलो को दूर करने का प्रयास।

भिक्षमी कोक में से बो बुष्कर कार्य्य है। भिज्ञको इन बोनों दुष्कर कार्यों में यह को छमी विख्यमांने को दूर करने का प्रयास है यह दुष्कर कार्य्य है। इसिके भिक्षको सही सीवना वाहियें कि सभी विख्यमांने को दूर करने का प्रवास करेंदे भिक्षको यही सीवना वाहिये।"

"१ मिजूबों ये दो अनुकार पैदा करने वाली वार्ड है। कीनशी हो? मिजूबों किसी ने करीर से दुम्मर्स किया होता है गुम-कर्स गड़ी किया होता बागी से दुम्मर्स किया होता है सुम-कर्स नहीं किया होता मन से दुम्मर्स किया होता है सुम-कर्स गड़ी किया होता।

" वह यह योषकर अनुष्य होता है कि मेंने भरीर से दुक्कों किया स्वरीरसे सुम्कनों नहीं किया यह योषकर अनुष्य होता है कि मेंने वाची से दुक्कों किया यापी ये सुम्कनों नहीं किया यह सोषकर अनुष्य होता है कि मन दुक्कों किया सुम्बकों नहीं किया। प्रसूचने ये से अनुष्या पैदा करनवानी वार्षे हैं।

भिसूको से दो जनुवार न पैदा करने वाकी बात है। कौनकी हो? भिरूको किसी ने स्पीर से सुमन्त्रमें किया होता है पुष्पमंत्रही किया होवा मन से पुष्पमं वह सह शोककर मनुष्यत नहीं होता कि सीने स्पीर से सुभ-माँ किया है यह सोककर मनुष्यत नहीं होता कि सीने स्पीर से पुष्पमं नहीं किया है सन से पुष्पमं

िम्तुनों में वो बनुदाय न पैदा करनेवाली वार्ते हैं।

५ भिनुनों मेंने दो बातों को पहुंचाई है बाता है पर दो कुछक-धर्मों में बहतपुर एते को इसरे सदद प्रमान करने पहने को। मिनुनों मेंने स्वतंत प्रवास किया है यह सोवकर कि बाहे लगा नहें और हहती ही सेय रह बातें स्वतंत का मीम-तत्त मुख बावें को कुछ पुरस्त-पार्य पुरस्त-पार्य का पुरस्त-पराक्रम से प्रगत हो स्कता है बिना करे प्रगत किमे प्रस्ता नहीं क्लेगा। इस प्रकार भिनुनों मेरी वीधि कप्रमान से ही प्रस्त हों है बनुत्तर-भोनदोन मी बप्रमान है हो

मिनुको सबि तुम भी स्वत प्रयक्त करते रहोने—बाई त्वका नहें बीर हर्की ही सेन रह बार्ने स्पीर का मॉस-स्का सुब कार्य को कुछ पुस्त-सामध्ये पुन्त-बीर्य तका पुस्त-सरक्त से प्रान्त हो तकता है बिना बसे प्राप्त किये प्रयक्त

प्राप्त हमा है।

नहीं रुकेगा—तो भियुओ, तुम भी जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये कुल-पुत्र ठीव घर से वे-घर होकर प्रग्नजित हो जाते हैं, उस श्रेष्ठ, ग्रह्मचर्य्य-फल को इसी शरी अपने आप जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर, विहार करोगे।

"इसीलिये मिक्षुओ, यही सीखना चाहिये निरन्तर प्रयत्नशील रहें। चाहे त्वचा, नसे और हड्डी ही शेप रह जायं, शरीर का मांस-रक्त सूख जाये, कुछ पुरुष-नामर्थ्य, पुरुष-वीर्य्य, तथा पुरुष-पराक्रम से प्राप्त ही मकता है, विना प्राप्त किये प्रयत्न नहीं रुकेगा। मिक्षुओ, ऐसा ही मीखना चाहिये।"

"६ मिसुओ, दो धर्म है।

"कौनसे दो ?

"एव तो नयोजनीय-विषयों में मजा लेना और दूसरे रायोजनीय-विषयें ओर ने विरक्त होना। मिक्षुओ, नयोजनीय-विषयों में मजा लेनेवाला रा मुक्त नहीं होता, द्वेष से मुक्त नहीं होता, मोह से मुक्त नहीं होता। राग, तथा मोह से मुक्त न होने के कारण वह जाति, जरा, मरण, शोक, रोने-पं दुख, दौर्मनम तथा चिन्ता से मुक्त नहीं होता, में कहता हैं कि वह दुख से मुक्त हो मकता।

"भिक्षुओ, मयोजनीय-विषयों की ओर से विरक्त रहनेवाला, राग से होता है, द्वेष में भुक्त होता है, मोह से भुक्त होता है,। राग-द्वेष तथा मोह से होने के कारण वह जाति, जरा, मरण, शोक, रोने-पीटने, दुःख-दौर्मनंस तथा ि से मुक्त होता है, में कहता हैं कि वह दुःख से भुक्त होता है।"

"मिक्षुंगो, दो कृष्ण-धर्म हैं ?

"कौनसे दो।

"निर्लंग्ज होना तथा दुष्कर्म करने में निधडक होना। भिक्षुओ, कृष्ण-धर्म हैं।"

" भिक्षुओ, दो शुक्ल-धर्म हैं ?

"कौन से दो?

"लज्जी होना तथा दुष्कर्म करने में निधडक न होना। भिक्षुः दो शुक्ल-सर्म है।"

" ९ मिक्षुओ, ये दो शुक्ल-धर्में लोक का पालन करते हैं। कौन से

बज्बी होना तथा बुष्कर्स करने में निषयक न होना। सिह्यूको सबि ये दो चुरूत-धर्म लोक का पाकन म करें तो न माता विचार दे न मौती विचार दे म मानी दिवार दे न गुरू-गत्नी दिवार दे सबया न मरने से बड़े किती की भार्या दिवार दे लोक एक दग महन्त्रक हो बाय। जैसे पेट बकरी मूर्गी मुक्ट-कुरते तथा पीदव : क्योंकि सिब्ह्मा से दो चुरूत-धर्म कोक पा पाकन करते हैं प्रश्ति माता भी विचार देती हैं मौती भी विचार देती हैं। मानी भी दिवार देती हैं।

"१ भिशुको दो नपी-पास**ई**?

कीन से दो ? पहकाशीर पिकसा ? मिझ्को से दो वर्षातास है ।

पिस्**नो** येथो वस है।

कीन से वो ?

"विचार-वस्न तथा सम्भास-वस्न। प्रिसुको विचार-वस्न (प्रतिसंस्थान-वस्र) भौतसा है ?

मिसूबी एक (बादमी) यह विचार करता है कि स्टीर से किये आने बाके दुष्कर्म का दुब कोक रावा परकोक में कूछ परिमान होता है नाजी से किसे बानें बाके दुष्कर्म का दुब जोक रावा परकोक में कुछ परिचान होता है। मन से मिनें सानेवाने बुक्तर्म का दुस जोक रावा परकोक में कुछ परिचान होता है।

बहु यह विचार कर, सरीर के दुष्पमों का स्थाय कर, घरीर के दुष्पमों का सम्यास करता है भग के दुष्पमों का स्थाय कर, मन के पृथममों का अध्यास करता है वह परिजन्मीयन व्यक्ति करता है। पित्रमों पह विचार-वक कहकाता है ।

ह् पवित्र-पोवन व्यतीत करणा है। धिभूनो यह निवार-वस कहकाता है। मिश्रज्ञों वस्पात-वर्ष (भावना-वष्ण) कीनता है?

भिजूबो यह वो सम्पाय-का है वह सावको (=चैतो) का बस है। सातक (स्पैत) इसी बत से पण का स्वात करता है हेप वा स्वात करता है नोह वा स्वाय करता है पण हो या ववा मोह वा स्वात वर वो मुकुधक-कर्य है उन्हें नहीं करता है जो साम-नर्य है उनके विरक्ष पहला ह।

"पिक्को यह अभ्यास-वन कड्काता 🕻 । मिल्को ये यो बन 🕻 ।

- "भिक्षुओ, ये दो वल हैं ?
- "कौनसे दो?
- "विचार-बल तथा अम्यास-बल।
- "भिक्षुओ, विचार-वल कौनसा है ? भिक्षुओ, एक आदमी यह विचार करता है (सख्या १)। भिक्षुओ, यह कहलाता है विचार-वल।"
  - "भिक्षुओ, अम्यास-वल कौन सा है?
- "भिक्षुओ, भिक्षु स्मृति सम्बोधि-अग का अभ्यास करता है जो कि विवेका-श्रित है, वैराग्य-आश्रित है, निरोधाश्रित है और जिसके अन्तमें सम्पूर्ण त्याग है।
- " ( शारीरिक तथा मानसिक ) धर्मों का विचार करने के सम्वोधि-अग का अम्यास करता है, जो कि ।

١

- "वीर्य्य सम्बोधि-अग का अभ्यास करता है
- "प्रीति सम्वोधि-अग का अभ्यास करता है
- "प्रश्नविध सम्बोधि-अग का अम्यास करता है
- " समाधि सम्बोधि-अग का अभ्यास करता है
- "उपेक्षा मम्बोधि-अग का अम्यास करता है
- "भिक्षुओ, इसे अम्यास-बल कहते हैं। भिक्षुओ, ये दो वल हैं।"
  - ३ "भिक्षुओ, येदोवल है।
  - "कौन से दो?
  - " विचार-बल तथा अभ्यास-बल।
  - "भिक्षुओ, विचार-वल कौनसा है ?
- "भिक्षुओ, एक आदमी यह विचार-वल कहलाता है। (देखें—-स॰ १)
  - "भिक्षुओ, अम्यास-वल कौनसा है ?
- "भिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षु काम-भोगों से दूर हो, अकुशल-बातो से दूर हो, सिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षु काम-भोगों से दूर हो, अकुशल-बातो से दूर हो, सिक्षुओ, सिक्षुओ, एकान्नज, प्रीतिसुख-युक्त प्रथम-ध्यान-लाभी हो विहार करता हैं, वितर्क-विचारो का उपशमन होने के अनन्तर, आन्तरिक प्रसाद-युक्त, चित्त की एकाग्रता-युक्त, वितर्क-विचार-रहित, समाधिज प्रीति-सुख-युक्त द्वितीय-ध्यान का लाभी हो विहार करता हैं, प्रीति से भी वैराग्य-युक्त ही, उपेक्षावान् वन विहार

करता है स्मृतिमान हो जानवान हो या पर-मुख का सार्ध करता है जिस के बारे में बार्ध-बन कहते हैं कि उपेशावान है, स्मृतिमान है मुख्यूर्वक विहार करनेवाला है, ऐसा दृतीय-स्मान प्राप्त कर विहार करता है मुख बीर दुख योगों का भी कोर होकर, सीमनस्पर्धनस्य पावो का पहले ही लोग हुआ एहने से सदुख-बाहुत क्य उपेशा-स्पृति से परिसुद चलुर्व-स्थान साथी हो विहार करता है। मिसूनो यह कहताता है बम्यास-बक। जिल्हामों ये से बक है।

४ भिक्षुको तबावत की बर्ग-देखना को प्रकार की होती है। कौन से को प्रकार की? स्विधन्त तबा किस्तुतः भिक्षुको से को प्रकार की तबावत की कर्म-देखना है।

" मित्रुको बिन्न किसी मधिकरण में प्रतिकारी-पित्रु तथा वादी पित्रु स्वव अपने वारे में सम्मक् विचार नहीं करतें मित्रुको उस विकिरण में हती बात की आधा करती चाहिये कि उनका करते सीचें काम तक वाटी खेरा वे परस्पर कडोर बोकरे खेने और मार्ट्मीट मी करते खेने तथा सिन्न सुकर्मक न पर सकेने।

भिश्वको विद्या किसी मधिकरण में प्रतिवाधी-भिन्नु तथा वादी-मिन्नु स्वय मार्ग बारे में सम्बन्ध विचार करते हैं मिन्नुमों उस मिन्नरण में एव बात की माचा रक्तमी चाहिये कि सरसार करते हैं विचार तक वारी खेला ने बरसार करते हो को खेंने सीर म पार्चीर करते खेने तम मिन्न सक्तर्यक खानकेंग्र

पिलुको प्रतिवादी-मिस्नुअपने बारेसे किछ प्रकार सन्यक विचार करता है  $^{2}$ 

निजुली प्रतिवादी-पिन्नु कार्य वारे में इस प्रकार कार्यक विचार करवा है — मेंन सरीर है कुछ वीच किया। यह निश्च में देख किया कि मेरे अरीर है कुछ दोर किया। यदि मेरे परिर है कोई दोष न किया होता दो नह निश्च न देखता कि मेरे सरीर में काई दोग किया है। क्योंकि मेरे करीर है दोर किया सरीक्तिये तम सिन्नु में देखा कि मेरे सरीर किया। यह देखकर कि मेरे सरीर है तोर किया वह किया मेरे करानुष्ट हुआ बजानुष्ट होने है कुछ निश्च में मुझे करानुष्ट करोदाने बचन महै। उत विद्यु ने करानुष्ट हुआ दुआ हुआ हुआ हुआ मेर में साम्युट्ट हुआ। अनमुष्ट हुकर मेरे दुखरों से बहुमानुक्ता दिया। इसमें मेरा हुई सोर है, मेरा ही अपराध है जैसे माल पर विना कस्टम—डघूटी १ दिये उसे ले जानेवाला अपराधी हो।

" भिक्षुओ, वादी-भिक्षु अपने वारे में किस प्रकार सम्यक् विचार करता है <sup>?</sup>

"भिक्षुओ, वादी-भिक्षु अपने वारे में इस प्रकार सम्यक् विचार करता है — इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया। मैंने देखा कि इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया। यदि यह भिक्षु शरीर से कुछ दुष्कर्म न करता तो में यह न देखता कि इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया है। क्योंकि इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया है। क्योंकि इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया है। यह देखकर कि इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया है। यह देखकर कि इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया है। यह होकर मैंने इस भिक्षु ने शरीर से कुछ दुष्कर्म किया है, में असन्तुष्ट हुआ। असन्तुष्ट होकर मैंने इस मिक्षु को असन्तुष्ट करने वाली वात सुनकर यह भिक्षु असन्तुष्ट हुआ। अमन्तुष्ट होकर इसने दूसरो से कहना-सुनना किया। इसमें मेरा ही दोप है, मेरा ही अपराध है, जैसे कोई माल पर विना कस्टम-डचूटी दिये उसे लेजाने वाला अपराधी हो।

" भिक्षुओ, वादी-भिक्षु अपने वारे में इस प्रकार सम्यक् विचार करता है।

"भिक्षुओ, जिस किसी अधिकरण में प्रतिवादी-भिक्षु तथा वादी-भिक्षु स्वय अपने वारे में सम्यक् विचार नहीं करते, भिक्षुओ, उस अधिकरण में इस बात की आशा रखनी चाहिये कि उनका कलह दीर्घ-काल तक जारी रहेगा, वे परस्पर कठोर बोलते रहेंगे और मारपीट भी करते रहेगे तथा भिक्षु सुखपूर्वक न रह सकेगे।

"भिक्षुको, जिस किसी अधिकरण में प्रतिवादी-भिक्षु तथा वादी-भिक्षु स्वय अपने वारे में सम्यक् विचार करते हैं, भिक्षुओ, उस अधिकरण में इस बात की आशा रखनी चाहिये कि न उन का कलह दीर्घ-काल तक जारी रहेगा, न वे परस्पर कठोर वोलते रहेगे और न मार-पीट ही करते रहेगे तथा भिक्षु सुखपूर्वक रह सकेगे।

६ एक ब्राह्मण जहाँ भगवान् (बृद्ध) थे वहाँ गया। जाकर भगवान् के साथ बातचीत की और कुशल-क्षेम पूछा। कुशल-क्षेम पूछ चुकने के बाद वह स्राह्मण एक ओर जाकर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए उस ब्राह्मण ने भगवान् को कहा—"भो गीतम। इसका क्या कारण है, क्या हेतु है, जिससे कुछ प्राणी शरीर

१ कस्टम-डघूटी=सुंक।

"बाह्मन् ! इसका कारण इसका हेत् धर्म भर्म्या है सम भर्म्या है निससे

सुन्दर गौतम ! बहुत मुन्दर नौतम ! वीचे कोई उस्टे को सीधा कर

तब बाग्स्सोची बाझम बहाँ मधवान वे वहाँ माया मौर मनवान

क्टने पर, मरने के अनन्तर पुर्नेति को प्राप्त होते हैं नरक-कोक में चलक होते हैं ? बाह्य । इसका कारम इसका हेलू बधर्ग कर्म्या है विषय कर्म्या है

बिससे कुछ प्राभी सरीर सटने पर, मरने के अनन्तर, दुर्नति को प्राप्त होते हैं।

"भो गौतम ! इसका क्या कारण है क्या हेत् है जिससे कुछ प्राची

सरीर सुरने पर, भरने के बनन्तर, सुगति को प्राप्त होने हैं स्वर्ग-कोफ में उलाम होते हैं ?

कुछ प्राची शरीर कटने पर, भरने के बनन्तर सुमति का प्राप्त होते हैं। स्वर्ग-छोक में जलक होते हैं।"

दे इके को चवाड दे मार्ग मध्य को एस्ता बता दे जबना अन्धेरे में प्रसास कका वे जिससे जीववाने जीवों को देश सके। इसी प्रकार गौतम ने नाना प्रकार

से धर्म को प्रकासित किया है। मैं भगवान भौतम (उनके) धर्म तवा तव की सरव

काता हैं। भगवान् आधीर में प्राच खुने तक मुझे अपना सरकावत उपासक वानें।

के साथ बात जीत की एक और बैंडे हुए जानुस्तोणी बाह्मन ने मगवान् से करा- मो नौतम ! इसका नया कारण है क्या हेतू है जिससे कुछ आणी सरीर धूनने पर, मरने के सनन्तर दुर्नित को प्राप्त होते हैं शरक-सौक में उत्पन्न होते हैं ?

सूटन पर सुगति को प्राप्त होते हैं स्वर्ग-कोक में बलास होते हैं ? "

शाह्मन ! करने तना न करने के शारण यहाँ कुछ प्राची भारीर कून्ते

पर, जरने के जनन्तर दुर्गित को प्राप्त होने हैं नरक-कोक में उत्पन्न होते हैं।

" को गौतम ! इतका क्या कारण है क्या हेतु है जिसमें कुछ प्राणी शरीर

"बाह्यमः । करने तथा न नरने के नारण सहाँ कुछ प्राणी सरीर कुठने पर, मरने के बनन्तर सुनति की जाना होते हैं स्वर्ग-कोक में बलक होते हैं।

में भववान बीतम के इस मंक्षेप ने कवित तका विस्तार ने अववित भायन का बिस्तार से नर्ज नहीं भागता । सन्धा हो यबि भनवान मुझे इन प्रकार धर्मोतरेख करें जिसने में जाप नीतम के नशिप्ता मायच को विस्तारपूर्वक जान औ।

तो बाह्यय सूत<sup>ा</sup> बच्छी तरह सन में कर मैं कहेंगा।"

"बहुत अन्छा" पहकर जाणुम्मोणी ब्राह्मण ने भगवान् को प्रत्युत्तर दिया । भगवान ने यह कहा—

"ब्राह्मण! यहां एक आदमी ने घरीर मे दुष्कमं किया होता है, शुभ-कमं नहीं किया होता, वाणी में दुष्कमं किया होता है, शुभ-कम नहीं किया होता, मन में दुष्कमं किया होता है, शुभ-कमं नहीं किया होता। इस प्रकार ब्राह्मण करने तथा न करने में यहां कुछ प्राणी घरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर दुगति को प्राप्त होते हैं, नरक-लोग में उत्पन्न होते हैं।

"ब्राह्मण! यहां एक आदमी ने शरीर मे शुभ-कमं किया होता है, दुष्कम नहीं किया होता, वाणी मे शुभ-कम किया होता है, दुष्कम नहीं किया होता, मन से शुभ-कमं किया होता है, दुष्कमं नहीं किया होता। इस प्रकार ब्राह्मण करने तया न करने मे यहां कुछ प्राणी धरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर सुगति को प्राप्त होते हैं।"

"सुन्दर गौतम । बहुत सुन्दर । नगवान् । शरीर में प्राण रहने तक मुझे अपना दारणागत उपासक जानें।"

८ तव आयुष्मान आनन्द जहाँ भगवान् घे, वहाँ गये। पाम जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर वैठे एक ओर वैठे आयुष्मान आनन्द को भगवान् ने यह कहा—"आनन्द। मैं शरीर के दुष्कर्म, वाणी के दुष्कर्म तथा मन के दुष्कर्म को सम्पूर्ण रूप से अकरणीय कहता हूँ।"

"भन्ते । भगवान् ने जो यह शरीर के दुष्कर्म, वाणी के दुष्कर्म तथा मन के दुष्कर्म को सम्पूर्ण रूप से अकरणीय कहा है, उस अकरणीय के करने पर किस दुष्परिणाम की आशा करनी चाहिये ?"

"आनन्द । यह जो मैंने सम्पूर्ण रूप से अकरणीय कहा है उस अकरणीय के करने पर इस दुष्परिणाम की आशा की जानी चाहिये—अपना-आप अपनी निन्दा करता है, विज्ञ लोग मालूम होने पर तिरस्कार करते है, अपयश होता है, मूढ-म्मृति होकर मृत्यु को प्राप्त होता है, शरीर छूटने पर, मरों के अनन्तर दुर्गित की प्राप्त होता है, नरक-लोक में उत्पन्न होता है। आनन्द! मैंने जो यह शरीर के दुष्कमें, वाणी के दुष्कमें तथा मनके दुष्कमें को मम्पूर्ण रूप से अकरणीय कहा है, उम अकरणीय के करने पर, इस दुष्परिणाम की आशा करनी चाहिये।

"ज्ञानन्तर! मैं सरीर के सुभ-कर्मवाणी के सुभ-कर्मवीर मन के -धुत-कर्मसम्पूर्णस्य से करपीय कहता हूँ।

"सन्ते! धनवान् ने को यह घरीर के सुभक्तमुँ वाली के सुभक्तमं त्वना मन के सुभक्तमं को समूर्ण कर ते करणीय नहां है जह करणीय के करते पर किश्च सुपरिचान की बाया करणी वाहिते! "सानव्य यह को मेरो सम्प्रक कर के करणीय कहा है जह

करणीय के करते पर इस पुपरिणाम की भाषा की वानी चाहिये—स्पना-साप सपनी तिक्यानहीं करता है किस कोच मानून होने पर विरस्कार नहीं करते हैं अपमध्य नहीं होता हैं मूब-स्पृति होकर मृत्य को मान्य नहीं होता हैं सपीर सून्ये पर, मरते के सतत्वर पूर्णि को मान्य होता हैं स्वयं-कोक में उत्पाद होता है। आतत्व ! यह को मेने समून्ये क्य से करणीय कहा है उस करणीय के करने पर इस सुपरिलाम की आसा की वानी चाहिये।

 भिक्तो नकुमल को को दो। सिस्ता वकुमल को दा वा सकता है। यदि मिय्ता यह गही एकता कि नकुमल को दा बा सकता तो मैं ऐसा क कहता कि भिस्ता नकुमल को दो। के किन भिक्ता नयों कि नकुमल को दा बा एकता है दलियों में ऐसा कहता हैं भित्ता नकुमल को दो।

मिसूनों विदेश सुक्रक कर प्रदान होने से आहित और दुख होता ही मैं ऐंडा नहीं कहता मिसूनों जहस्त कोड़ी। केकिन क्योंकि सिसूनों कहूचत का प्रहान दिव देवा युक का कारण होता है दत्तिन्ये में ऐंडा कब्दा हूँ मिस्ननों अक्टबल कोड़ी।

"भिनुत्रों हुमल का सम्मात करो। प्रसूत्रों हुमल का सम्मात हो स्वता है। विभूतों यदि वह न हो स्वता कि हुम्ब का सम्मात हो स्वत्रा तो में ऐसा न कहता कि निजुत्रों हुमल का सम्मात करो। किन्न स्पोकि मिल्लों हुम्ब का सम्मात हो सकता है स्पनित्रों में ऐसा कहता हैं कि "निभूत्रों हुम्बका सम्मात करो।

निश्व यदि प्रधान का साम्याध करने से महित और दुव होता हो में ऐशा नहीं कहणा निश्व में पूपत का सम्याद करो। प्रिक्त क्योंकि विभागों कुपत का सम्याध हित और मुख के नियं होता है इससिये में यह कहता हूँ कि निज्ञों कुमत का सम्याध करो।

- "१० भिक्षुओ, दो बातें सद्धर्म के नाश का उसके अन्तर्धान का कारण होती है। कौन सी दो बातें ?
  - "पोली के शब्दो का व्यतिक्रम तथा उनके अर्थ का अनर्थ करना।
  - "भिक्षुओ, पाली के शब्दो का व्यतिक्रम होने से उनके अर्थ का भी अनर्थ होता है। भिक्षुओ, ये दो बातें सद्धर्म के नाश का, उसके अन्तर्धान का कारण होती है।"
  - "भिक्षुओ, दो वातें सद्धर्म की स्थिति का, उसके नाश न होने का, उस के अन्तर्धान न होने का कारण होती है। कौन सी दो बातें ?
    - "पाली के शब्दो का ठीक-ठीक ऋम तथा उन का सही सही अर्थ।
  - "भिक्षुओ, पाली के शब्दों का कम ठीक-ठीक रहने से उनका अर्थ भी सही-सही रहता है।
  - "भिक्षुओ, ये दो बातें सद्धर्म की स्थिति का, उसके नाश न होने का, उसके अन्तर्धान न होने का कारण होती है।"
    - "भिक्षुओ, येदो मूर्ख है।
    - "कौनसे दो?
  - "एक जो अपने दोष को दोष नहीं मानता, दूसरा जो अपने दोप को दोष माननेवाले को क्षमा नहीं करता। भिक्षुओ, ये दो मूर्ख है।"
    - "भिक्षुओ, येदो पण्डित है।
    - " कौनसे दो ?
  - "एक जो अपने दोष को दोष मानता है, दूसरा जो अपने दोष को दोष माननेवाले को क्षमा करता है। भिक्षुओ, ये दो पण्डित है।"
    - "भिक्षुओ, ये दो तयागत पर मिथ्यारोप करते हैं।
    - "कौनसे दो?
  - "दुष्ट मनवाला द्वेषी तथा बे-समझ श्रद्धावान्। भिक्षुओ, ये दो तथागत पर मिथ्यारोप करते हैं।"
    - "भिक्षुओ, ये दो तथागत पर मिथ्यारोप करते हैं।
    - " कौनसे दो ?
    - "जिसका तथागत ने भाषण नहीं किया है, जो तथागत ने नहीं कहा है, उसे जो तथागत द्वारा भाषित अथवा तथागत द्वारा कहा गया कहता है, और जिसका

तवागत में मायन किया है जो तवागत में कहा है उसे जो तवागत डाय नर्मापित सनवा तवापत डाय नहीं कहा गया कहता है। मिलुको से दो तयावत पर मिस्मा-रोप करते हैं।? "

"४ भिक्को से दो तवागत पर निष्यारोप नहीं करते।

"कौनमें को ?

को तमानत हाए क्यापित है जो तमानत हाए नहीं कहा गया है वर्षे जो तमागत हाए समापित तमानत हाए नहीं कहा एमा कहता है जो तमानत हाए मापित है जो तमानत हाए नहां गया है उने वो तमात हाए मापित तमायत हाए नहां पया कहता है। विसनों ये वो तमानत पर निष्यापित नहीं करते।

"भिमुनो से वो तवासन पर मिन्यारोग करते हैं। कीन ते वो ? को भैन्यारो-मूनो को नीतार्च-मून करके प्रकट करता है बीर को मीतार्च-मून को मैन्यार्च-मून करके प्रकट करता है। मिल्लो से वो तवासन पर मिन्यारोग करते हैं।"

भिरमुका ये को तकागत पर मिच्यारोप नहीं करते है।

"कीनसे को ?

को नेप्पार्व-सूत्र को नेप्पार्व-सूत्र करके प्रकट करता है। जो नीवार्व-सत्र को गीवार्य करके प्रकट करता है।

मिस्त्रो, ने दो तमानत पर निष्यारीय नहीं करते।

प्रस्तुको पाय-वर्गकरलेकाले के किये को यक्तिमों में से एक बात की कामा करती चाहिये—नरक या पश-योगि।

विश्वमा पुरूप-कर्न करनेवासे के किये वो वितर्वों में है एक विति की कामा वरनी वाडिये—वेब-मीनि वा मनस्य-मीनि।"

भिनुषों सिम्पानुष्टि व्यक्ति के किये दो पतियों में है एक पति वी बाह्य करनी वाहिये—सरक या पदा साति।

निश्वभा नम्बर् वृष्टि स्पन्ति के निये वो पविषो में से एक नित की आपा करनी वारिय—रेक-मोर्टिया सर्युध्य-मोनि।

१ नैय्यार्वे=प्यवहार मात्रा २ नीतार्व=परनार्व मात्रा

- "भिक्षुओ, दुराचारी का दो जगह स्वागत होता है, नरक मे या पशु-योनि में।"
- "भिक्षुओ, सदाचारी का दो जगह स्वागत होता है देव-योनि में या मनुष्य-योनि में।"
- "भिक्षुओ, मैं दो वातो का विचार कर जगल में, वन में एकान्त-शयनासन का सेवन करता हूँ।

" कौनसी दो ?

" निजी इह-लौकिक सुख-विहार के लिये तथा बाद में आनेवाले लोगो पर अनुकम्पा करने के लिये। भिक्षुओ, मैं ये दो बातें विचार कर जगल में, वन में एकान्त-शयनासन का सेवन करता हूँ।"

"भिक्षुओ, दो धर्म विद्या-पक्षीय है।

"कौनसे दो?

"शमय तथा विपश्यना। भिक्षुओ, शमय के अम्यास से किस उद्देश्य की सिद्धि होती है  $^{7}$  चित्त का विकास होता है। चित्त का विकास होने से किस उद्देश्य की सिद्धि होती है  $^{7}$  राग का प्रहाण होता है।

"भिक्षुओ, विपश्यना के अम्यास से किस उद्देश्य की सिद्धि होती है ? प्रज्ञाका विकास होता है। प्रज्ञा का विकास होने से किस उद्देश्य की सिद्धि होती है ? अविद्या का प्रहाण होता है। भिक्षुओ, राग से अनुरक्त चित्त मुक्त नहीं होता और अविद्या से दूषित प्रज्ञा का विकास नहीं होता। भिक्षुओ, यह राग का विराग होने से चित्त की विभुक्ति तथा अविद्या का क्षय होने से प्रज्ञा की विमुक्ति है।"

"भिक्षुओ, में असत्पुरुप-भूमि तथा सत्पुरुप-भूमि की देशना करता हूँ। उसे सुनो, अच्छी तरह मन में धारण करो, कहता हूँ।"

"भन्ते, अच्छा" कहकर उन भिक्षुओ ने भगवान् को उत्तर दिया। भगवान् ने यह कहा-

"भिक्षुओ, असत्पुरुष-भूमि कौन सी है?

"भिक्षुओ, असत्पुष्प अकृतज्ञ होता है, कृत-उपकार को न जाननेवाला। भिक्षुओ, इस अकृतज्ञता की, इस अकृतवेदिता की असत्पुष्पो ने ही प्रशसा की है। भिक्षुओ, यह जो अकृतज्ञता है, यह जो अकृत-वेदिता है, यह सम्पूर्ण असत्पुष्प-भूमि है। भिक्षुओ, सत्पुष्प कृतज्ञ होता है, कृत-उपकार को जाननेवाला। भिक्षुओ,

तयागत ने भायन किया है जो तनागत ने कहा है उसे को तनागत दाय जमार्पित जनवा तनागत हारा नहीं कहा गया कहता है। भिक्षुओं से वो तसावत पर मिम्पा-रोप करते हैं।?

"४ भिक्षुओं से दो तथागत पर मिथ्यारोप नहीं करते।

"कौनसे दो ?

को क्यानत हाए नमापित हैं भी दमानद हाए नहीं नदा मया है वसे भी दमागढ़ डाए समापित स्थानद हाए नहीं नदा गमा बहुता हैं भी दमायद हाए मापित हैं भी दमानद डाए नहां पया है उसे भी दमानद हाए मापित दे ना दमायद हाए नहां प्रमान हुए हैं। सिमुझी में भी दमानद पर मिस्मापित नहीं करते।

मिलुको से को तवायत पर निष्मारीय करते हैं। कीन से को है को नेस्मार्थ-मूच के को तिलाई-मूच करके प्रकट करता है और को नीताई-मूच को नेस्मार्थ-जुब करके प्रकट करता है। मिलुको से को प्रमान पर निष्मारीय करते हैं।"

मिसूनी में दो तवायंत्र पर मिस्मारीय नहीं करते हैं।

"कानते यो ?

का मेध्यावं-मूत्र को नेध्यावं-मूत्र करके प्रकट करता है। जो मीतावं-सन को नीतावं करके प्रकट करता है।

मिलको ये दो वदागत पर मिच्यारीप नहीं करते।"

आसा करनी चाहिये—केव-योनि या मनुष्य-योनि।"

[मसुनो | मिस्सा-कृष्य व्यक्ति के निये हो सवियो में से एक गाँव की

वाद्या वरनी पाहिसे—नरक सा पसु सोति। "

भिगुको नामर्-कृष्टि व्यक्ति के किये वो पतियों में से एक वित की कामा करती चाहिय---देव-योनि या मनुष्य-याति।

१ नन्यार्थं≖ध्यवहार-भाषाः २ शीतार्थं≈परमार्थं भाषा

"भिअुओ, दुराचारी का दो जगह स्वागत होता है, नरक में या प्रमुक् योनि में।"

"भिखुओ, सदाचारी का दो जगह स्वागत होता है देव-योनि में या मनुष्य- योनि में।"

"भिक्षुओ, मैं दो वातो का विचार कर जगल में, वन में एवान्त-शयनामन का सेवन करता हूँ।

" कौनसी दो ?

" निजी इह-लौकिक मुख-विहार के लिये तथा बाद में आनेवाले लोगो पर अनुकम्पा करने के लिये। भिक्षुओ, में ये दो बातें विचार कर जगल में, बन में एकान्त-शयनासन का सेवन करता हूँ।"

"भिक्षुओ, दो धर्म विद्या-पक्षीय है।

"कौनसे दो?

"शमय तथा विपश्यना। मिक्षुओ, शमय के अम्यास से किस उद्देश्य की सिद्धि होती हैं वित्त का विकास होता है। चित्त का विकास होने से किस उद्देश्य की सिद्धि होती हैं राग का प्रहाण होता है।

"भिक्षुओ, विपन्यना के अभ्याम से किस उद्देश्य की मिद्धि होती है? प्रज्ञाका विकास होता है। प्रज्ञा का विकास होने से किस उद्देश्य की मिद्धि होती है? अविद्या का प्रहाण होता है। भिक्षुओ, राग से अनुरक्त चित्त मुक्त नहीं होता और अविद्या से दूपित प्रज्ञा का विकास नहीं होता। भिक्षुओ, यह राग का विराग होने से चित्त की विभुक्ति तथा अविद्या का क्षय होने से प्रज्ञा की विभुक्ति है।"

"भिक्षुओ, में असत्पुरुप-भूमि तथा सत्पुरुप-भूमि की देशना करता हूँ। उमे सुनो, अच्छी तरह मन में धारण करो, कहता हूँ।"

"भन्ते, अच्छा" कहकर उन भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया। भगवान् ने यह कहा-

"भिक्षुओ, असत्पुरुप-भूमि कौन सी है ?

"भिक्षुओ, असत्पुरुष अकृतज्ञ होता है, कृत-उपकार को न जाननेवाला। भिक्षुओ, इस अकृतज्ञता की, इस अकृतवेदिता की असत्पुरुपो ने ही प्रशसा की है। भिक्षुओ, यह जो अकृतज्ञता है, यह जो अकृत-वेदिता है, यह सम्पूर्ण असत्पुरुप-मूमि है। भिक्षुओ, मत्पुरुप कृतज्ञ होता है, कृत-उपकार को जाननेवाला। भिक्षुओ,

तवागत में भायन किया है। को तवागत ने कहा है। उसे जो तवागत हारा वर्षागित भववा तवागत हारा नहीं कहा गया कहता है। भिनुसों से बो तवागत पर भिन्यान रोग करते हैं।?

"४ मि**स्**नौ में दो तमायत पर मिष्मारोप नहीं करते।

भीनसे यो ?

को तमारत डांच कमारित हैं जो तमारत डांच गही रुद्धा यमा है वधे जो तमारत डांच समारित तमारत डांच गही रुद्धा गता रुद्धा है जो तमारत डांच मारित है जो तमारत डांच रुद्धा पया है वहें को तमारत डांच मारित तमारत डांच रुद्धा प्याच रुद्धा है। तमारते में को तमारत पर मिख्याचेन गती करते।

सिञ्जूबों में वो तबागत पर मिष्यापोप करते हैं। कीन वे दो? भी गेम्यार्व-सूत्र<sup>1</sup> को गीतार्व-सूत्र करके प्रकट करता है बीर जो गीतार्व-सूत्र को नेम्यार्व-भूत करके प्रकट करता है। सिजुस्तों ने वो तबाबत पर मिष्यारीय करते हैं।"

भिज्ञको ये दो तकायत पर मिन्यारीय नहीं करते हैं।

कौनसे दो ?

कानच का :

को नेस्पार्थ-पूत्र को नस्पार्थ-पूत्र करके प्रकट करता है को नीतार्थ पूत्र को नीतार्थ करके प्रकट करता है।

. जिल्लामी में को तलागत पर मिध्यारीय नहीं करते।

भिजुनो पाप-कर्ष करतेशके के किये हो प्रतियों में से एक वृति की जाला करनी वाहिये—गरक या पश्चयोगि।

भिशुओं पुष्प-कर्म करतेशाते के किये हो निर्देशों में से एक नित्र की जाता करती चारिये—वेद-मौति या मनस्य-मौति।

" त्रिश्वको । मिष्या-वृदिक व्यक्ति के किये को गठियों में से एक गठि की बाधा करनी वाहिये---नरक मा पद्म कोनी।

भित्तुको सम्पन्न-वृद्धि व्यक्ति के किये हो गठियों में से एक कित की आया करती चाहिये---यैव-योगि या मनुष्य-योगि।

१ नेम्यार्व⊏स्पनहार कापा १ मीतार्व⊐परवार्वमापा

"४ उस नमय अनाथ-पिण्डिक गृहपित जहाँ भगवान् थे वहाँ गया, जाकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर वैठे हुए अनाथ-पिण्डिक गृहपित ने भगवान् से यह कहा—

"भन्ते । लोक में दक्षिणाई कितने हैं ? दान कहाँ देना चाहिये ? " "गृहपित । लोक में दो दक्षिणाई है, शैक्ष तथा अशैक्ष । गृहपित । ये दो दक्षिणाई हैं । इन्ह दान दिया जाना चाहिये।"

भगवान् ने यह कहा और यह कहकर तदनन्तर शास्ता ने यह कहा-

सेखो अमेखो च इमस्मि लोके आहुणेय्या यजमानान होन्ति ते उज्जुभूता कायेन वाचाय उद चेतसा खेत्त त यजमानान एन्थ दिन्न महप्फल ॥

[यजमानों के लिये ससार में गैक्ष तथा अर्शक्ष दा दिलाणाई है। वे शरीर, वाणी तथा मन से ऋजु होते हैं। ये यजमानों के (पुण्य-) क्षेत्र हैं। इन्हें देने का महान् फरु होता है।]

५ ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथ-पिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् सारिपुत्र श्रावस्ती में मिगारमाता के पूर्वाराम प्रसाद में रहते थे। तव आयुष्मान् सारिपुत्र ने भिक्षुओं को सम्बोधित किया—" आयुष्मान् भिक्षुओं।" उन भिक्षुओं ने आयुष्मान् सारिपुत्र को प्रत्युत्तर दिया—

" आयुष्मान् । "

आयुष्मान् सारिपुत्र ने यह कहा---

"आयुष्मानो। में भीतर-सयोजन वाले व्यक्ति के वारे में कहूँगा, बाह्य-सयोजन वाले व्यक्ति के वारे में कहूँगा, इसे सुनकर मन में अच्छी तरह स्थान दो। कहता हूँ।"

"आयुष्मान् । बहुत अच्छा " कह उन भिक्षुओ ने आयुष्मान् सारिपुत्र को प्रत्युत्तर दिया। आयुष्मान् सारिपुत्र ने यह कहा—

"आयुष्मानो । भीतर-सयोजनवाला व्यक्ति कौन सा होता है <sup>?</sup>

इस इतनता की इस इतनेदिता की सायुर्यों ने ही प्रससा की है। भिस्को यह को इतनता है यह को इत-विदिश है यह सम्पूर्ण सायुक्य-मूमि है।"

भिज्ञको दो जर्नो का प्रत्युपकार सहज नही।

"किन दो का?

"माठा का तथा पिता का। मिलुको सौ वर्ष तक एक कंग्रे पर भावा को सौये तथा एक कंग्रे पर पिता को सोये और वह उन नी उबटन मकने मर्बन करने महत्वाने तथा हाथ-पैर दशने आदि की सेता करे, और वे पी सम के कंग्रे पर ही मक-मून कर वे तो भी मिलुको यह न माता-पिता का कोई बकात होता है और न मत्युपकर। मिलुको यह इस सफ-रल-बहुत पूजी का ऐरवर्य-स्प्रमा माता-पिता को नींग दिया जाये तो भी न उनका उपकार होता है और न मत्युपकर। यह किम किमें? मिलुको माता-पिता वा पूक्ष पर बहुत उपकार है। वे समस्

पानन करनेवाने हैं। योगन करनेवारे हैं। "निरानों को नोई समझावान् माता-पिता को सदा में प्रतिस्थित करता है करावारी माता-पिता की समावार में प्रतिस्थित करता है क्षेत्रण माता पिटा की स्माम

कुराचारी माता-पिता को खराचार में प्रतिध्वित करता है। क्षेत्रम भाता पिठा को स्माम में प्रतिध्वित चरता है। दु-मज माना-पिता का प्रका में प्रतिध्वित करता है-तो दतने छे। माता-पिता का चणकार होता है। प्रमुचकार होना है तका बतिरिक्त-वपकार होता है।"

उस समय एक ब्राह्मच बहा पतवान् वे बहा तथा आकर प्रवयान् ने नाव बातवीत नी एक बोर वैठे हुए उन ब्राह्मच ने प्रवयान् से यह वहा ----

"बाप गीनम का क्या भाव है क्या मत है?" श्राह्मक "में क्रिया-कारी हैं तथा क्रिया-कारी हैं।

कार मीनम<sup>ा</sup> जिया-नादी तथा कविया-नादी जिस प्रकार है ? "

में बाइमा न करने दो बान वरना हूँ—साधिरिक दुक्कों वाभी के दुक्कों, यन के दुक्कों, अनेक प्रवाद के धाननावों ने न वरने की बाद वरना हूँ। ये बाइम वरने दो बान वरना हूँ—साधिरक पुत्रनावों, वाभी के पुत्रनावों मन के पुत्रनावों, बनेव प्रवाद के दुम्मनावों के वरने वो बान करना हूँ। बाइमा रि इन बहार में दिवानाधी वर्ष वरिवानामी हैं।"

"नृत्यर गीतन ! चहुन मुत्यर! जगवान् गरीर में प्राप्त रहते तर करें करना गरणान्य उपनर कार्ये। ६ उस समय बहुत से समान-चित्तवाले देवता जहाँ भगवान् थे वहाँ आये। आकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठ गये। एक ओर स्थित उन देवताओं ने भगवान से यह कहा—

"भन्ते । मिगार-माता के पूर्वाराम प्रासाद में आयुष्मान सारिपुत्र ने भिक्षुओं को भीतर-सयोजनवाले तथा बाह्य-सयोजन वाले व्यक्ति के बारे में देशना की है। परिषद् प्रसन्न है। अच्छा हो यदि भन्ते । भगवान् कृषापूर्वक जहाँ सारिपुत्र हैं वहाँ चले।" भगवानने चुप रहकर स्वीकार किया।

तव भगवान् जैसे कोई वलवान् पुरुष समेटी हुई वाँह को पसारे अथवा पनारी हुई बाँह को समेटे, उसी प्रकार जेतवन से अन्तर्धान होकर मिगार-माता के पूर्वाराम प्रासाद में आयुष्मान् सारिपुत्र के सामने प्रकट हुए। भगवान् विछे आसन पर विराजमान् हुए। आयुष्मान् सारिपुत्र भी भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठे। एक ओर वैठे आयुष्मान् सारिपुत्र को भगवान् ने यह कहा—

"सारिपुत्र । यहाँ बहुत से समान-चित्तवाले देवता जहाँ में था वहाँ आये। आकर मुजे प्रणाम कर एक ओर बैठ गये।

" मारिपुत्र । एक ओर स्थित उन देवताओ ने मुझे यह कहा---

"भन्ते । मिगार-माता के पूर्वाराम प्रासाद में स्थित आयुष्मान् सारिपुत्र ने भिक्षुओं को भीतर-सयोजनवाले व्यक्ति के बारे में तथा बाह्य-सयोजनवाले व्यक्ति के बारे में तथा बाह्य-सयोजनवाले व्यक्ति के बारे में उपदेश दिया है। भन्ते । परिषद् प्रसन्न है। भन्ते । अच्छा हो यदि आप कृपा पूर्वक वहाँ चले जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र है। सारिपुत्र । वे देवता दस हों, वीस हो, तीस हो, चालीस हो, पचास हों, साठ हो वे सब सुई की नोक (गिरने) के स्थान पर खढे हो जाते हैं और परस्पर एक दूसरे से रगड नही खाते।

"हो सकता है सारिपुत्र । तेरे मन में ऐसा हो कि उन देवताओ ने वहाँ इस प्रकार चित्त का अभ्यास किया है कि वे देवता चाहे दस हो, चाहे बीस हो, चाहे तीस हो, चाहे चालीस हो सुई की नोक के स्थान पर रह सकते है और परस्पर एक दूसरे से रगडते नहीं। नहीं सारिपुत्र । ऐसा नहीं समझना चाहिये—यही उन देवताओं ने ऐसा चित्त-अभ्यास किया है कि वे चाहे दस हो रगडते नहीं।

"इस लिये सारिपुत्र। यह सीखना चाहिये कि हम शान्त इन्द्रियोवाले होगे, शान्त मनवाले। हमारे शारीरिक-कर्म शान्त होगे। वाणी शान्त होगी। आयुष्पाना! एक पिथु शीसवान् होता है प्राप्ति-योग के नियमों की पासन करनेवाना जावर-यावर से युवन अयु-साव-बांग से भी भगमीन होनेवाणा तवा जिल्ला-पत्नों का सम्बद्ध पासन करने वाता।

वह भरीर के छूटने पर भरत के अनन्तर, किसी देव-सानि में जग्म प्रहर्ण करता है। वह वहां से क्यूत दोकर सानामी होता है किर इस सोक में सानेवाला।

अपुष्पातो ! ऐसा व्यक्ति भीतर-समोजनवाका व्यक्ति कड्साता इ. साजामी फिर इस सोक में आनेवाका।

मायुष्मानो ! बाह्य-संयोजन स्थलिन कौनसा होता है ?

आयुष्मानो ! एक प्रिश्नु गीमबान् होता है आहिमध्य के निवसी का वाकन करनेवाका आवर-गोवर वे बुक्त अनुसान दोव से भी भय-बीत होनेवाका तथा विकास-वहां का सम्बद्ध वाकन करनेवाया।

बहु अन्यतम चित्त के बिमोझ को मान्त कर बिहार करता है। बहु धरीर के कूटने पर, मरने के बनला किती देव-मीनि में बनन प्रहल करता है। चहु वहीं से च्युत होकर मनावागी होना है किर इस कोक में नहीं बाने बाना।

्रापुष्पानो ' ऐसा व्यक्ति बाह्य-अयोजन बाह्य व्यक्ति कहताता है कर्मणामी फिर इस कोक से न कार्य वाह्य।

और भी फिर बायुष्मानी । पिश्व शिक्तान् शोता है सम्मक सासन करने वाला।

वह कामनाओं है ही निर्देश प्राप्त करने के किने कामनाओं के ही किएम के किमें कामनाओं के ही निरोध के किस प्रमुखनात होता है। वह घन हो ही निर्देश प्राप्त करने के किसे पन के ही निराद के किसे पन के ही निरोध के किसे प्रमुखनात होता है। वह तुम्बा का सम करने के किसे प्रमुखनीत होता है। वह कोस का अब करने के किसे प्रमुखनीत होता है। वह स्टीर क्टने पर, परने के कानतार सिसी देवनोंनि में जम्म बहुत करता है। वह सही हे ब्युट होकर कामनामी होता है किर एक कोफ में नहीं कानेवाल।

बाबुष्मानो । ऐसा व्यक्ति बाह्य-समोजन वाजा व्यक्ति कहसाता है कनावामी फिर इस लोक में न बाने वाला। ६ उम समय बहुत मे समान-चित्तवाले देवता जहाँ भगवान् थे वहाँ आये। आकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठ गये। एक ओर स्थित उन देवताओं ने भगवान में यह कहा—

"मन्ते । मिगार-माता के पूर्वाराम प्रासाद में आयुष्मान सारिपुत्र ने निक्षुओं को भीतर-मयोजनवाले तथा वाह्य-सयोजन वाले व्यक्ति के वारे में देशना की है। परिषद् प्रसन्न है। अच्छा हो यदि भन्ते। भगवान् कृपापूर्वक जहाँ सारिपुत्र हैं वहाँ चले।" भगवानने चुप रहकर स्वीकार किया।

तव भगवान् जैसे कोई वलवान् पुरुष समेटी हुई वांह को पसारे अथवा पनारी हुई बांह को समेटे, उसी प्रकार जेतवन से अन्तर्धान होकर मिगार-माता के पूर्वाराम प्रानाद में आयुष्मान् सारिपुत्र के सामने प्रकट हुए। भगवान् विछे आसन पर विराजमान् हुए। आयुष्मान् सारिपुत्र भी भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठे। एक ओर वैठे आयुष्मान् सारिपुत्र को भगवान् ने यह कहा—

"मारिपुत्र । यहाँ बहुत से समान-चित्तवाले देवता जहाँ मैं था वहाँ आये । आकर मुझे प्रणाम कर एक ओर वैंठ गये ।

"मारिपुत्र। एक ओर स्थित उन देवताओं ने मुझे यह कहा-

"भन्ते । मिगार-माता के पूर्वाराम प्रासाद में स्थित आयुष्मान् सारिपुत्र ने मिक्षुओं को नीतर-सयोजनवाले व्यक्ति के वारे में तथा वाह्य-सयोजनवाले व्यक्ति के वारे में उपदेश दिया है। भन्ते । परिपद् प्रसन्न है। भन्ते । अच्छा हो यदि आप कृपा पूर्वक वहाँ चले जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र है। सारिपुत्र । वे देवता दस हो, वीस हो, तीस हो, चालीस हो, पचास हो, साठ हो वे सव सुई की नोक (गिरने) के स्थान पर खडे हो जाते हैं और परस्पर एक दूसरे से रगड नही खाते।

"हो सकता है सारिपुत्र । तेरे मन में ऐसा हो कि उन देवताओं ने वहाँ इस प्रकार चित्त का अभ्यास किया है कि वे देवता चाहे दस हो, चाहे वीस हो, चाहे तीस हो, चाहे चालीस हो सुई की नोक के स्थान पर रह सकते हैं और परस्पर एक दूसरे से रगडते नहीं। नहीं सारिपुत्र । ऐसा नहीं समझना चाहिये—यही उन देवताओं ने ऐसा चित्त-अभ्यास किया है कि वे चाहे दस हो रगडते नहीं।

"इस लिये सारिपुत्र । यह सीखना चाहिये कि हम शान्त इन्द्रियोवाले होंगे, शान्त मनवाले। हमारे शारीरिक-कर्म शान्त होगे। वाणी शान्त होगी।

भन धान्त होता। इस अपने उपहासारियों के प्रति सान्त ही स्थवहार करेते। सारिपुत्र | ऐसा ही सीसना साहिये। जिन दूसरे अध्य-टीविक परिवासकों ने हरा सर्मे को नहीं सुना ने विनास की प्राप्त हुए।

ऐसा मेंने मुना। एक समय जायुम्मान् महाकारपायन कर्यम-दह
 फिलारे पर वर्णा में विहार कर रहे थे।

"उस समय बारामदरक बाह्यन बही बायुप्पान् महाकाल्येयन ने वहीं पमा । बाहर बायुप्पान् वारामा के साम बायजीत की और कुसस-सीम पूर्ण । कुसक-सीम पुक्र चुक्ते के बाद वह बाह्यन एक मोर बैठा ।

एक जोर बैठे हुए आधानवण्ड बाह्यण ने जामुख्यान् महाशासायन को

यह महा---

च न्या । इसका क्या हेतु हैं इसका क्या कराय है कि समित्र भी कामियों के साथ विवाद करते हैं बाह्म भी बाह्मजों के साथ विवाद करते हैं

भी क्रांत्रमों के साम विचाद करते हैं बाह्मण भी बाह्मणों के साम विचाद करते हैं मृह्पति (≔ वैदम) भी मृह्पतियों के साम विचाद करते हैं ? शास-मोनों के प्रति बायदित के कारण नामकोगों के बात में पेते होंगे

कार-सामा के प्राप्त आधावत के कारण वास्त्राधा के कारण भार भी है। के कारण वास-सोगों के लीवन में बैंधे होने के कारण वास-सोगों कार्य में गो में पड़े होने के कारण है बाह्यण ! समित्र भी राषियों से निवाद करते हैं बाह्यण भी बाह्यणों से निवाद करते हैं गृहपति (=दैस्त) भी गृहपतिओं के साथ विवाद करते हैं।"

हे कारवायत ! इसका रवा हेतु है इसका क्या कारल है कि अमन भी

सनपा क शान पिनार करते हूँ ?"

कृष्टि (स सार-सियेप) के प्रति साशित के नारम कृष्टि के साक सें

क्षित होते के नारम कृष्टि के नीवड़ में क्षित होते के नारम कृष्टि के गर्त में यहे होते
के नारम कृष्टि के गर्त में स्थान क्षेत्र साथ कृष्टि के गर्त में यहे होते
के नारम के बाह्यम ! साम भी साथों के साथ क्षित्र करते हैं।

"है नात्यायत ! यया कोई इस लोक में ऐसा है जो नाम घोनो नी बास्टिल-स्थल आर्थि के तना दृष्टि की अस्तिल और अधन आर्थि के इस पार जना गया हो ?

"है बाह्मम<sup>ा</sup> सोक में ऐसा (स्पष्टिताय) है जो शाम-मोगो की सारास्ति-वंधन साथि तथा कृष्टि की सार्याक्ष सीर वधन साथि के उस पार बसा सुदा है।"

क्षत्र कात्र तथा कृष्य वा अस्तरा नार वधन कात्र के उस पार वसा क्या है।" "हे वास्यायन ! कोर्कमें ऐसा वीत है यो वास सौसा वी आतिरित

ह नारमापन : नाइन में एशा नात है जा नाम मागा नी आंतिहन चैंपन भादि तना कृष्टि की भातिका बीह क्यन आदि के उस पार क्यों गया है ? \*\* "हे ब्राह्मण । पूर्व जनपद में श्रावस्ती नाम का नगर है। इस समय वह भगवान् अहंत सम्यक् सम्बुद्ध वहाँ विहार करते हैं। हे ब्राह्मण । वे भगवान् काम-भोगो की आसिक्त और वधन आदि तथा दृष्टि की आसिक्त और वधन आदि के उस पार चले गये हैं।"

ऐसा कहने पर आरामदण्ड ब्राह्मण ने आसन से उठ, वस्त्र को एक कधे पर कर, दाये घुटने को पृथ्वी पर टेक, जिधर भगवान् थे उधर हाथ जोड तीन वार उदान वाक्य कहा---

" उन भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है। उन भगवान् को जो काम-भोगो की आसिक्त और वधन आदि तथा दृष्टि की आमिक्त और वधन आदि के उस पार चले गये हैं।"

"सुन्दर हं कात्यायन । जैसे कोई उल्टे को सीधा कर दे, ढके को उधाड दे अथवा मार्ग-भ्रष्ट को रास्ता वता दे अथवा अन्धेरे में महाल जला दे जिससे आँख वाले चीजो को देख सके। इस प्रकार आप कात्यायन ने अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया है। हे कात्यायन । में उन भगवान् गीतम, (अनके) धर्म तथा सघ की घरण जाता हूँ। हे कात्यायन । आज मे शरीर में प्राण रहने तक आप मुझे शरणागत उपासक जानें।"

७ एक समय आयुष्मान् महाकात्यायन मधुरा (मथुरा) में गुन्दवन में विहार करते थे। तब कण्डरायन ब्राह्मण जहां आयुष्मान महाकात्यायन थे, वहां आया। आकर् आयुष्मान् महाकात्यायन के साथ एक ओर बैठे हुए कण्ड- एयन ब्राह्मण ने आयुष्मान् महाकात्यायन को यह कहा—

"हे कात्यायन । मैने सुना है कि श्रमण कात्यायन वहे, वूढ़े, ज्येष्ठ, आयु-प्राप्त ब्राह्मणो का न अभिवादन करता है, न सत्कार करता है, न उन्हे (आदर-पूर्वक) आमन देता है। हे कात्यायन । यदि यह ऐसा ही है कि श्रमण कात्यायन वहे, वूढे, ज्येष्ठ, आयु-प्राप्त ब्राह्मणो का न अभिवादन करता है, न सत्कार करता है, न उन्हें (-आदरपूर्वक) आसन देता है तो यह ठीक नहीं है।

"हे ब्राह्मण पा उन जाननेवाले, देखने वाले अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध ने च्येष्ठ-भूमि तथा कनिष्ठ-भूमि की व्याख्या की है।

हे ब्राह्मक! यदि कोई जायू ये सस्ती वर्षका हो नवसे वर्ष को हमस्ता वर्षका हो नवसे वर्ष को हमस्ता वर्ष का हो। किन्तु बहु काम-सोग में एत हो काम-सोग के बीच में पहुला हो, काम-सोग की वक्त से बसदा हो। काम भाग के किये उत्तुक पहुला हो तो बहु भी कोटा (बाकक १) ही यिना आयेगा।

"हे बाह्मण । मिंद कोई छोटा मी हो। उत्पाहा बाले बाकावाका हो। सेट्ट यौजन से मुक्त हो। मननी प्रमम-सामू में हो हो। किन्तु वह बाम भोग में एत पही काम-भोग के भीक में न एहता हो। काम भोग की बक्ता से म बकता हो। काम भोग के विवक्ती डाएान कामा बाता हो। काम-भोग के किसे उल्लूक न एहता हो हो कह पोचल केट ही पिना बासेगा।

हा ता वह भाषत चंद्र हो भाग सामगा।

"ऐसा करने पर करकायन में साधन से उटकर, बरन को एक कमो पर कर, कोटे मिनुसो के परको में सिर से ममसकार किया। साथ कोस औरत है व्येस्ट-मृति पर स्थित हैं इस कोच किया है कमिस्ट-मृति पर स्थित है।

"मुक्टर है नात्यायन ! हे नात्यायन ! साज से आप मूझे गरीर में प्राण राज्ये तन खरणायत ज्यातक समझें !

ट. "भियुत्ती जिस समय चौर बतवान् होने हैं उस समय घोनान दुवेंत हो बाते हैं उस समय विश्वती चावातों के किसे बाहर-बीतर जाना-जाना सुकर नहीं चुता तथा प्रश्नल-अनगढ का अनुधासन बरता भी पुत्र र नहीं छता वसी प्रशाद बाहर-अनुहरतियों के किसे भी यन तथाय बाहर-आना बाता तथा बाहर कराते का तिरीक्षण करना सकर मेरी घडता।

"उसी प्रकार विश्वनी जिंत तमन पापी मिशु तबक हो जाने हैं उस समय सन्दर्ज मिश्रु दुर्गक हो जाने हैं उस समय नाज्यन निश्च पम के बीच मुंड वह रिचे बैठे पहते हैं सबबा प्रसाम-जनाय की बोर को जाते हैं निश्चमी, यह बहुत बजो के सहित के मिमें टीजा है बहुत बजो के अनुक के किये होता है बहुत बजो के अनर्थ सहित रूप देव-अनुष्यों के दुल के लिये होता है।

"विद्युनो, विश्व ननय राजा बनवान् होते हैं और दुर्बम होते हैं। उस सनय विश्वृत्तो, राजानों के सिये बाहर जीतर जाता-जाता मुक्तर हाता है तवा प्रयक्त

१ शान#नर्न

जनपद का मानन करना भी सुकर होता है, उसी प्रकार ब्राह्मण-गृहपतियो के लिये भी जस समय बाहर आना-जाना तथा बाहर के कामो का निरीक्षण करना मुकर रहता है ।

"उनी प्रकार भिध्वों, जिस समय सज्जन भिध्नु सबल रहते हैं, उस समय पापी भिध्नु दुउल तो जाते हैं, उस समय पापी भिध्नु गय के बीच मूंह दन्द किये बैठे रहते हैं अयजा जहां-तहां चले जाते हैं, भिध्नुओं, यह बहुत जनों के हित के लिये होता है, बहुत जनों के मुख के लिये होता है, बहुत जनों के उर्थ, हित तथा देण-मनुष्यों के मुख के लिये होता है।"

" मिखुओं, मैं दो जनों की मिथ्या-चर्या की प्रशमा नहीं करता हूँ, गृहस्यों की तथा प्रद्रजितों की। भिक्षुओं, चाहे गृहस्य हो, चाहे प्रव्रजित हो यदि वह मिथ्या-प्रतिपन्त है तो अपनी मिथ्या-चर्या के कारण वह जेय कुश्वल-धर्म को प्राप्त नहीं कर मक्ता।

"भिक्षुको, मंदो जो वी सम्यक्-चर्या की प्रशमा करता हूँ, गृहस्य की तथा प्रव्रजित की। भिक्षुओ, चाहे गृहस्य हो, चाहे प्रप्रजित हो, यदि वह सम्यक्-प्रतिपन्न है तो अपनी सम्यक्-चर्या के कारण वह जेय कुश्चल-धर्म को प्राप्त कर सकता है।

"भिक्षुओ, जो मिक्षु अपने अक्षर-व्यञ्जन-युक्त दुर्गृहीत सूत्रो के अर्थ और धर्म (न्मार-भाव) को श्रेष्ठ करने व्यक्त करते हैं, शिक्षुओ, वे भिक्षु बहुत जनो का अहित करने वाले हैं, बहुत जनो के असुख के लिये हैं, बहुत जनो के अनर्थ के लिये, अहित के लिये तया देव-मनुष्यों के दुख के लिये हैं, भिक्षुओ, वे भिक्षु बहुत अपु-ण्यार्जन करते हैं, तथा मद्धम का अन्तर्धान करते हैं।

"भिक्षुओ, जो भिक्षु अपने अक्षर-च्यञ्जन-युवत सुगृहीत मूत्रो के अर्य (सार-भाव) को यथार्थ रूप से व्यक्त करते हैं, भिक्षुओ, वे भिक्षु बहुत जनो ना हित करने वाले हैं, बहुत जनो के मुखके लिये हैं, बहुत जनो के अर्थ के लिये, हित के लिये तथा देव-मनुष्यों के मुख के लिये हैं, भिक्षुओ, वे भिक्षु बहुत पुण्यार्जन करते हैं तथा सद्धर्म की स्थापना करते हैं।

(4)

<sup>&</sup>quot;भिक्षुओ, परिषद् दो प्रकार की होती है। "कौनसे दो प्रकार की?

उपनी-परिषद् तना नम्मीर-परिषद् ।

"पिश्रमो उपमी परिषद कौनसी होती है रै

"भिक्षुनो निस्त परियन् में मिन्नु उठत होते हैं मानी हाते हैं चनक होते हैं मुखर होते हैं क्यंस्ट-मानी होते हैं मिन्सुट-स्पृति होते हैं मुखं होते हैं चिन्न भी एकारण में हीत होते हैं आन्त्रसित्त होते हैं — निस्तानों सेनी परियम उपकी-परियम कहतात्त्रीह हैं ।

"भिक्षको सम्मीर-परिषद कौन सी होती हैं?

"पिलुओं बिछ परिषद् में मिश्रु अनुवान होने है मान पहिल होते हैं परम नहीं हाते मुखर नहीं होते मंगठ-मानी होने हैं जगरिवठ-सन्दार होने हैं बुबिमान् होने हैं जिला की एकापना में मुक्त हाते हैं सान्य-जिला नहीं होने हैं तथा सरव-प्रिया होने हैं—सिमाओं ऐसी परिषय जम्मीर-परिषय जम्मानों है।

मिधुमो येदो प्रकारकी परिपर्देहैं। मिमुको इन दो प्रकारकी

परिपदों में सही परिपद् भेष्ठ हैं जो कि यह सम्भीर-पश्चिद् हैं। २ सिक्षुमों दो तत्त्व की परिपद हाती हैं।

कौनशी यो तरह की ?

विवारी हुई परिवर् दवा तमह-परिपर् ।

निज्ञों विकरों इदें परिषद् कीनशी होती हैं। विज्ञों जित परिषद् में मिल्नु परस्पर तमश्र करते हैं कतह करते हैं। एक दूशरे की मुख रपी श्रीका (=वस्त्र) से बीपने रहते हैं—मिलुजों इत प्रकार की परिषद् विकरी हुई परिषद् वहनानी हैं।

भिन्नुको नमग्र-परिषद् कीनगी होती है?

मिलुको जिन परिपद् में जिल्ल मिल-युक्तर प्रनमनाहुबंग दिना दिवाद करते हुए दूधनावी पी तरफ कि दुए, एक दूसरें को प्रेम-पदी बीज से देखते हुए दिहार करने हैं—किसूको जन प्रचार भी परिपद समय-परिपद् कड़कादी हैं। सिद्धार नामें के यो तरफ की परिपद होगी है।

इन बाजवार की करियकों ने यही निराह थेएंड है जो कि वह नमग्र करियक है।

विश्ववी को तरह की परिषद् होती है ?

- "कौन मी दो तरह की ?
- " अग्र-परिपद् तथा अनग्र-परिपद्।
- "भिधुओ, अनग्र-परिपद् फैमी होती है ?

"भिष्युंगो, जिस परिपद् में स्यिवर भिक्षु अल्पेच्छ नहीं होते, शियिल होते हैं, पनन की ओर अग्रमर होते हैं, एकान्त-मेवन के प्रति उदामीन होते हैं, अप्राप्त की प्राप्ति के लिये, जो हस्तगन नहीं हैं, उसे हम्नगत करने के लिये, जिसका साक्षात नहीं हुआ हैं, उसका साक्षात करने के लिये, प्रयत्न-शील नहीं होते, उनके पीछे चलनेवाले अनुयायी भी उनका अनुकरण करते हैं, वे भी अल्पेच्छ नहीं होते, शियिल होते हैं, पनन की ओर अग्रसर हाते हैं, एकान्त-भेवन के प्रति उदामीन होते हैं, अप्राप्त की प्राप्ति के लिये, जो हम्तगत नहीं हैं उसे हस्तगत करने के लिये, जिसका साक्षात नहीं हुआ हैं उस का साक्षात करने के लिये, प्रयत्न-शील नहीं होते। भिक्षुओ, ऐसी परिपद् अनग्र-परिपद् कहलाती है।

" भिक्षुओ, अग्रपरिषद् कैमी होती है ?

"भिक्षुंबों, जिस परिपद् में स्थिवर भिक्षु अल्पेच्छ होते हैं, शिथिल नहीं होते, पतन की ओर अग्रसर नहीं होते, एकान्त-सेवन के प्रति उदासीन नहीं होते, अप्राप्त की प्राप्त के लिये, जो हस्तगत नहीं हैं उसे हस्तगत करने के लिये, जिसका साक्षात नहीं हुआ है उसका साक्षात करने के लिये, प्रयत्त-शील होते हैं, उनके पीछे चलनेवाले अनुयायी भी उनका अनुयरण करते हैं, वे भी अल्पेच्छ होते हैं, शिथिल नहीं होते, पतन की ओर अग्रसर नहीं होते, एकान्त-सेवन के प्रति उदासीन नहीं होते, अग्राप्त की प्राप्ति के लिये, जो हस्तगत नहीं हुआ है उसे हस्तगत करने के लिये, जिसका साक्षात नहीं हुआ है उसका साक्षात करने के लिये, प्रयत्त-शील होते हैं। भिक्षुओं, इस प्रकार की परिपद् अग्र-परिपद् कहलाती है।

"मिसुबो, ये दो तरह की परिषद् होती है। इन दोनो तरह की परिषदों में यही श्रेष्ठ है, यह जो अग्र-परिषद् है।"

४ "मिक्षुओ, दो तरह की परिपद् होती है।

"कौनमी दो तरह की ?

" आर्य-परिपद् तथा अनार्य-परिपद्।

"भिक्षुओ, अनार्य-परिपद् कौन सी होती है ?

" निर्माने जिस परिषद् में भिर्मु मा तुन्त हुन्त सम्मापक्रिक में नहीं जातन है यह पुरा-मनपत है को समार्थ-जा में नहीं जातने। यह पुरा-निरोध है हमें पर्वार्थ-कर न नहीं जातने पह पुरा निरोध की जार में जावनाम मार्ग है के पर्यार्थ जा मारी जातने—चित्राकी एसी परिषद क्यार्थ-गिरमु क्यार्थ-गिर्मु

"मिछ्ना आर्थ-गरिषद् कौन सी ≽ानी है ?

भिनुषो जिस परिषद् में निर्मास हुन्त ? इस समार्थ-नर से आपने हैं सह बुजनाबुदार है हो समार्थ-नर में जातने से सह दानितास है इस समार्थ-कम में जातते हैं यह बुप-विराध की और भ जातनाता समार्थ है से समार्थ-नर से आपने हैं—स्पेरी परिषद कार्य-गरिषद करकारी है।

"मिसुमो ये वा ठर्ट्स मी परिषद् हैं? मिसुमो इन बो ठर्ट्स मी परिषदों में सड़ी भेरत हैं जो यह मार्थ-परिषद ?।

भ नद्वा मण्ड हे अर यह आव-११९४२ । ५ भिन्नको को सरक नौ परिषक शोगी हैं।

"कौनसी को तरह की ?

निस्सार-परिपद क्षता सारवान-परिपद।

भिम्नका निस्सार परिपद कोन भी होती है ?

मिसुनो जिस परिषद् में मिसु राग के वर्षीभूत हो सकरणीय करते हैं द्वेप के दर्धी-मूत हो ककरणीय वरते हैं सोह के दर्धीभूत हो ककरणीय करते हैं सब के वर्षीभुत हो ककरणीय करते हैं—देशी परिषद् निस्कृत निस्सार-परिषद् बहुकाती है।

भिरामो सारकान-परिपद कौनसी होती हैं।

भिराको विश्व परिषद् में भिन्नु राग के नवीमूठ हो सकरपीय नहीं करते हेन के नवी-पुछ हो सकरपीय नहीं करते भोड़ के नवीमूछ हो सकरपीय नहीं करते यह के नवीमूछ हो बन रनीय नहीं करते—ऐंगी परिषद् भिन्नुको भारदान्-गरिषद् बहुकारी है।

"मिमूनों में मो तस्त्र की परिषम् होनी है। इन वो तस्त्र की परिपर्नों में बढ़ी परिषम् भेरत हैं यह को सारवान-परिपर्क है।

६ भिनुनी दो तरह की परिपद होती है।

कैसी को करक की?

हुर्विनीय बीर प्रश्तोत्वर हार्च समिनीय तथा प्रश्तोत्वर हार्च विनीय और सुविनीय ।

"निध्नुत्रों, र्यावनीत बार प्रक्तोत्तर प्राप्त किता परिष्यु गैसी देश विश्वमा, विश्व परिष्यु में को न्यागा प्राप्त नावित गर्मकीर, गर्मकीर-अर्थना, लेंगुल्तर, तथा प्राप्त-गुणा या है उन्ने पा खारे नमक उन्ने गुनते हैं, न पान देने हैं, न प्राप्त पर्यों में कि उस आप निल्ल एराज एरों है, न उन धारों हो से सोपते-साथ तथा धारण हरों योग्य मार्गत , जिल्हु जा किन्दुत गर्में स्थार आपित है, उन्ते पर्यों का विश्व पर्यों है विश्व पर्यों है विश्व पर्यों है, प्राप्त के के प्राप्त भाषित है, उन्ते पर्यों पर्यों का विश्व उधर किता एगाज जिल्हें हैं, उपर याप होते हैं, प्राप्त नया धारण परने के लिये उधर किता एगाज जिले हैं, अर्थित एगाज नया भर्म के परने कि लिये उधर किता एगाज जिले हैं। धारण पर पर वर्ष है, इसना त्या अर्थ है परके उनकी मीमामा नहीं करने वे उन्ने को मुल्यान नहीं है, वे अन्याद को स्थाद नहीं काते हैं, अनेर प्रकार के मित्रक चर्चा का वे मित्रक-पर्यं ही रहने देते हैं। भिनुत्रा ऐसी परिष्य दुविनीत और प्रकारनर हाण अविशित परियय परलाती हैं।

"भिधुओ, प्रज्वोत्तर द्वारा विश्वित और मुविशीत परिषर् नैनी होती है ? निधुओ, जिस परिषद् में जो कवि-सृत काव्य-सूक्त है, जिसके अभी तथा प्रयंजनों में विचित्रता है, जो वाह्य है, जो (अन्य-) श्रावर भाषित है उनके एहे जाते नमय न उन्हें मुनते है, न बान देते हैं, न भान प्राप्त बरते के लिये उस आर चित्त एकाग्र बरते हैं, न उन धमों को सीचने योग्य तथा धारण रहने याग्य मानते है, किन्तु जो तथागत द्वारा मापित गम्भीर, गम्भीर अर्थ-चाले, लोगुत्ता तथा भून्यता-युवन सूक्त है उन के कहे जाते ममय उन्हें मुनते है, उधर बान देते है, भान प्राप्त बरते के लिये उधर चित्त एकाग्र बरते हैं, उन धमों को मीयने तथा धारण करने योग्य मानते हैं। वे उन धमों को धारण कर यह कैसे है, इसका क्या अर्थ है बरके उनकी मीमामा करते हैं, वे उलझे को मुलझाते हैं, वे अम्पष्ट को स्पष्ट करते हैं, वे अनेक प्रकार के सन्दिग्ध-स्थलों को मन्दिग्ध-स्थल नहीं रहने देते। भिक्षुओ, ऐसी परिषद् प्रव्वोत्तर द्वारा विनीत और सुविनीत परिषद् कहलाती है ?

"भिक्षुओ ये दो प्रकार की परिपर्दे हैं। इन दो प्रकार की परिपदों में यह श्रेप्ठ परिपद् हैं जो यह प्रकोत्तर द्वारा विनीत और सुविनीत परिपद् यहलाती है। "भिक्षओ, परिपद् दो तरह की होती है?



"भिक्षुओ, जिस परिपद् में अधामिक कार्य्य होते हैं, धार्मिक कार्य्य नहीं होते, अविनय-कर्म होते हैं विनय-कर्म नहीं होते, अधार्मिक-कार्य्य चमकते हैं, धार्मिक-कार्य्य चमकते हैं, धार्मिक-कार्य्य नहीं चमकते, अविनय-कर्म चमकते हैं, विनय-कर्म नहीं चमकते— भिक्षुओ, ऐसी परिपद् विपम-परिपद् कहलाती हैं। भिक्षुओ, परिपद् की विपमता के कारण अधार्मिक कार्य्य होते हैं, धार्मिक-कार्य्य नहीं होते, अविनय-कर्म होते हैं, विनय-कर्म नहीं होते, आधार्मिक-कार्य्य चमकते हैं, धार्मिक-कार्य्य नहीं चमकते, अविनय-कर्म चमकते हैं, विनय-कर्म नहीं चमकते।

" भिक्षुओ, सम-परिपद् कौनसी होती है ?

"भिक्षुओ, जिस परिपद् में धार्मिक-कार्य्य होते हैं, अधार्मिक-कार्य्य नहीं होते, विनय-कर्म होते हैं, अविनय-कर्म नहीं होते, धार्मिक-कार्य्य चमकते हैं, अधार्मिक कार्य्य नहीं चमकते, विनय-कर्म चमकते हैं, अविनय-कर्म नहीं चमकते—भिक्षुओ, ऐसी परिपद् सम-परिपद् कहलाती हैं। भिक्षुओ, परिपद् की समता के कारण धार्मिक-कार्य्य होते हैं, अधार्मिक-कार्य्य नहीं होते, विनय-कर्म होते हैं, अविनय-कर्म नहीं होते, धार्मिक-कार्य्य चमकते हैं, अधार्मिक-कार्य्य नहीं चमकते, विनय-कर्म नहीं होते, अविनय-कर्म नहीं चमकते। भिक्षुओ, यह दो प्रकार की परिपद् होती है। भिक्षुओ, इन दो प्रकार की परिपद् होती है। भिक्षुओ, इन दो प्रकार की परिपदों में यहीं श्रेष्ठ परिषद् हैं जो यह सम-परिपद्।"

"भिक्षुओ, दो प्रकार की परिषद होती है।

" कौनसी दो प्रकार की ?

"अधार्मिक-परिषद् तथा धार्मिक-परिषद् (स ८) भिक्षुओ, यह दो प्रकार की परिषद् हैं। भिक्षुओ, इन दो प्रकार की परिषदों में यही श्रेष्ठ हैं जो यह धार्मिक-परिषद्।"

" १० भिक्षुओ, दो प्रकार की परिषद् होती है ?

" कौनसी दो प्रकार की ?

" अधर्मवादी-परिषद् तथा धर्म-वादी परिषद्।

" भिक्षुओ, अधर्मवादी-परिषद् कौनसी होती है।

"भिक्षुओ, जिस परिषद् में भिक्षु धार्मिक अथवा अधार्मिक विवाद उप-स्थित करते हैं, वे उस विवाद को लेकर एक दूसरे को जनाते नहीं हैं, न उसे जनाने "कौनसी दो तस्द की ?

भौतिक-बीजो को सहत्व देनेवाठी विन्तु धर्म को सहत्व न देनेवाठी धर्म को सहत्व देनेवाजी किन्तु भौतिक-बीजों को सहत्व न देनेवाछी।

"पिसूनो पीतिष-पीनो को महत्व बेने वासी किन्तु धर्म को महत्व न बेने बाली परिपद् कंडी होती है? पिसको बिस परिपद् में पिशु स्वेत-वर्स धारी गृहस्तों के सम्मूक परस्पर यह कह कर कि बमुक भिश्न दोनों भागों से मुस्त है बमुक प्रज्ञा-विमुक्त है बमुक काय-सासी है बमुक दुन्निमों के बनत सक पहुँच पया है अनुक स्वा-विमुक्त है बमुक काय-सासी है बमुक धार्माम् ध्यानाम्यारी है वस्क धार्मिक ध्यानारी है तथा बमुक पापी दुन्तवारी है बमुक धार्माम्य स्वान्त है वस्क स्वान्त काम होता है तथा बमुक पापी दुन्तवारी है कहकर प्रश्ना करते है वस्क स्वान्त असमें बीहर, असके दुन्तरिमामों की बोर से कायरसाह, विना प्रत्यवेशा किस उन वस्तुओं का परिसोद करते हैं। मिशुओं भीतिक-पीनों को सहत्व बेने साओं फिन्तु धर्म को सहत्व न बेनेवाली परिपद् एसी होती है।

भिन्नुनों अर्थ को महत्व देनवासी किन्तु नीटिक-बीनों को महत्व म देने वासी परित्यू करी होती हैं? जिस्तुनों जिस परित्यू में भिन्नु परित्यू कर कर कारी पृहस्तों के सम्मूक परत्यत्र यह कहकर कि बन्नुक मिन्नों के मान के मूक्त है बन्नुक प्रवानियुक्त हैं अनुक काम्याक्ती हैं बन्नुक पृष्टियों के अन्त एक पहुँच प्रवा है अनुक मका-वियुक्त हैं, बन्नुक प्रवानुतारी हैं अनुक वर्मानुतारी हैं अनुक स्रामित्र स्वानियुक्त हैं, बन्नुक प्रवानुतारी हैं अनुक वर्मानुतारी हैं अनुक स्वानिक स्वानियुक्त हैं, बन्नुक प्रवानुतारी हैं अनुक प्रयान मही करते स्व से बन्ने बारों की प्राप्ति होती हैं उन कामों को प्राप्त करने दुष्परिचारोंने प्रति स्वया प्रत्येक्ता करके उन बनुता का परियोन करते हैं। पिस्तुनों सर्थ को महत्व सेनेशानी किन्तु मीतिय-भीनों को महत्व न देनवानी परित्यू ऐसी होती हैं।

मिश्रुमो को सर्व्यक्षी परिषद् होती है।

कौन शीको उठ्य की <sup>7</sup>

विश्वम तकासम।

निश्जो विषय-परिवर् कौलमी होती है ?

"भिक्षुओ, जिस परिपद् में अधार्मिक कार्य्य होते हैं, धार्मिक कार्य्य नहीं होते, अविनय-कर्म होते हैं विनय-कर्म नहीं होते, अधार्मिक-कार्य्य चमकते हैं धार्मिक-कार्य्य नहीं चमकते, अविनय-कर्म चमकते हैं, विनय-कर्म नहीं चमकते—भिक्षुओ, ऐसी परिपद् विपम-परिपद् कहलाती हैं। भिक्षुओ, परिषद् की विपमत के कारण अधार्मिक कार्य्य होते हैं, धार्मिक-कार्य्य नहीं होते, अविनय-कर्म होते हैं विनय-कर्म नहीं होते, आधार्मिक-कार्य्य चमकते हैं, धार्मिक-कार्य्य नहीं चमकते अविनय-कर्म चमकते हैं, विनय-कर्म नहीं चमकते।

"भिक्षुओ, सम-परिषद् कौनसी होती है ?

"भिक्षुओ, जिस परिपद् में धार्मिक-कार्य्य होते हैं, अधार्मिक-कार्य्य नहं होते, विनय-कर्ग होते हैं, अविनय-कर्म नही होते, वार्मिक-कार्य्य चमकते हैं अधार्मिक कार्य्य नही चमकते, विनय-कर्म चमकते हैं, अविनय-कर्म नही चमकते—भिक्षुओ, ऐसी परिपद् सम-परिपद् कहलाती हैं। भिक्षुओ, परिपद् की समता कारण धार्मिक-कार्य्य होते हैं, अधार्मिक-कार्य्य नही होते, विनय-कर्म होते हं अविनय-कर्म नही होते, धार्मिक-कार्य्य चमकते हैं, अधार्मिक-कार्य्य नही चमकते विनय-कर्म चमकते हैं, अधार्मिक-कार्य नही चमकते विनय-कर्म चमकते हैं, अविनय-कर्म नही चमकते। भिक्षुओ, यह दो प्रकार व परिषद् होती है। भिक्षुओ, इन दो प्रकार की परिषदो में यही श्रेष्ठ परिषद् जो यह सम-परिषद्।"

" भिक्षुओ, दो प्रकार की परिषद होती है।

" कौनसी दो प्रकार की ?

"अधार्मिक-परिषद् तथा धार्मिक-परिषद् (स ८) भिक्षुअं यह दो प्रकार की परिषद् हैं। भिक्षुओ, इन दो प्रकार की परिषदों में यही श्रेष हैं जो यह धार्मिक-परिषद्।"

" १० भिक्षुओ, दो प्रकार की परिषद् होती है ?

"कौनसी दो प्रकार की ?

" अधर्मवादी-परिषद् तथा धर्म-वादी परिषद्।

" भिक्षुओ, अधर्मवादी-परिषद् कौनसी होती है।

" मिक्षुओ, जिम परिषद् में भिक्षु द्यामिक अथवा अद्यामिक विवाद उ स्थित करते हैं, वे उस विवाद को लेकर एक दूसरे को जनाते नही हैं, न उसे जन के किसे इकट्टे होते हैं एक बूनरे से न प्रकट करते हैं म प्रकट करते के किस इकट्टे होते हैं वे अपने अज्ञान-कप के बारण अपकट करते के बाद के कारण परा-विधय की पहल करने वाले जगी विवाद को बूबडा से प्रहण कर, प्रकटकर मान केते हैं वि पहीं ठीक है और सब प्रकट हैं—सिद्धना ऐसी परिषद् वादर्भवादी परिषद् बहुकाती है।

गिश्चनो धर्मभादी परिपद् कैसी होती है ?

लियूमी जिन परिपर् में मिशु श्रामिक समसा स्थामिक विवाद वपस्थित करते हैं वे वस विवाद को सेकर एक दूसरे को जनाते हैं उसे जनाने के सिन्ने इकट्टे होने हैं एक दूसरे पर मनट करते हैं अगट करने के सिन्ने इकट्टे होने हैं वे जपनी आनकारों के सकते में जनते प्रकल्प करने के बता से पशा-विश्वेत को न प्रहाब करनेवाले उसी विवाद को पूछा से प्रहाल कर, पत्रवक्तर नहीं मान लेखें कि पार्टी होता है और सब बता है——पियस्तों ऐसी परिपर अनेवादी परिपर कस्त्राती है।

भिन्नभो से दो परिपर्दे है। इन दो परिपर्दों में सही परिवद भेष्ठ

है जो यह सर्मवादी परिपद है।

(4)

भियुक्ती सोक में दो स्थान्त बहुबन-हिठ के नियं बहुबन-मुख के नियं उत्पक्त होते हैं बहुठ बनी के मर्द हिठ उना देव-मनुष्यों के मुख के किसे उत्पक्त होते हैं।

कौनसे दो स्पन्ति <sup>?</sup>

सम्बद्ध-सम्बद्ध बहुंच समायत और पक्षमधी-राजा। मिलुको ये दो स्वस्थि कोक में बहुबन-हित के क्रिमें बहुबन-मुख के किसे उत्पन्न होते हैं बहुत बनों के बर्च हित समा देव-मनुष्यों के सुख के क्षित्रे उत्पन्न होते हैं।

भिल्लों कोड़ में वो मारवर्गजनक मनुष्य जन्म केते हैं।

कीनसे को ?

सम्बद्ध सर्वेद तकागत और कन्नर्ती-सना। प्रिस्को कोक मैं ने दो बारकर्स-ननक मनुष्य जन्म केते हैं।

६ भिशुको इन दो स्पन्तियों की मृत्युबहुत बनो के अनुदाय का कारण होती है।

क्षेत्रसे को जनो की ?

- "सम्यक् सम्बुद्ध अर्हत तथागत की और चक्रवर्ती-राजा की । भिक्षुओ, इन दो व्यक्तियों की मृत्यु वहुत जनों के अनुताप का कारण होती है।"
  - ४ "भिक्षुओ, ये दो स्तूप-पूज्य है।
    - "कौन से दो?
    - " सम्यक् सम्बुद्ध अर्हत तथागत तथा चऋवर्ती-राजा।
    - "भिक्षुओ, ये दो स्तूप-पूज्य है।
  - ५ " भिक्षुओ, ये दो वुद्ध होते हैं।
    - "कौन से दो ?
    - ' सम्यक् सम्बुद्ध अहंत तथागत तथा प्रत्येक-बुद्ध ।
    - "भिक्षुओ, ये दो बुद्ध होते हैं।"
  - ६ " भिक्षुओ, ये दो विजली के कडकने पर उरते नहीं। "कौनसे दो<sup>?</sup>
  - "क्षीणश्रव भिक्षु तथा श्रेष्ठ हाथी। भिक्षुओ, ये दो विजली के कडकने पर डरते नही।"
    - ७ "र्हू भिक्षुओ, ये दो त्रिजली के कडकने पर डरते नहीं। "कौनसे दो ?
  - "क्षीणाश्रव भिक्षु तथा श्रेष्ठ अस्व। भिक्षुओ, ये दो विजली के कडकने पर डरते नही।"
    - ८ " भिक्षुओ, ये दो विजली के कडकने पर डरते नहीं। "कौनसे दो ?
  - "क्षीणाश्रव मिक्षु तथा मृगराज सिंह। भिक्षुओ, ये दो विजली के कडकने पर डरते नही।"
    - "भिक्षुओ, दो बातो का विचार कर किन्नर मानुपी-भाषा नही बोलते। "कौनसी दो वातें?
    - "हम झूठ न वोर्ले तथा किसी पर मिथ्यारोप न लगायें। मिक्षुओ, इन दो वातो का विचार कर किन्नर मानुपी-भाषा नहीं वोलते।"
      - "भिक्षुओ, स्त्रियाँ दो वातो से असन्तुष्ट रह कर ही शरीर-त्याग करती हैं। "कौनसी दो वातो से ?

"मैपून तथा सन्तानस्तरित की इनका में । मिलुबी स्नियाँ इन दों बादों से मन्त्रपुट्ट ही सरीर-स्थाय करती हूं।"

"प्रिस्तुमी स्थाल-महसाय तथा सान्त-सहसास के बारे में उगरेस वैद्या हूँ। इसे सुनो। सम्बी तरह मन में बारण करा। वहता हूँ।" "बहुट अच्छा" कह कर विद्युजी ने मक्यानु को प्रतिकथन विद्या। भगवानु ने यह कहा—

र प्रस्तुका न नवर्ग्य का अध्यवनगणकरा। जगवान्य यह कहा— "भिक्षाको क्यान्य-सहवास वैमा होता है? स्थान्त कैसे रहते हैं ?

"भिजुडो स्वविर भिशु सोघटा है—

स्विदर मिल् भी मृते कुछ न वह सध्यम-स्विद भी मृत्ते दुछ न वहँ मुद्रे भी मृत्ते दुछ न वहँ भी भी न स्विदर सिक्ष्या को कुछ कहूँ न सम्स्वम-स्विदर्श को कुछ कहँ बीद न नये सिल्जों को कुछ कहूँ।

"स्विदर मुझे कुछ नहेगा दा बहित को ही बात कहेगा हित वी बात नहीं कहेगा। में भी पंछे नहीं कहरूर कर दूंगा और स्वया हाथ आजता हुना भी उसका बहुता नहीं करूना। मान्यस्विद भी मुझे कुछ कहेगा नवा भी मुझे कुछ कहेगा दो बहित की ही सह महस्वार हित की बाद नहीं कहेगा। में भी बंधे नहीं कहरूर कर दूंगा भीर वसना होगा सित की उसका कहना नहीं करणा।

मध्य-स्यविर भी सावता है नया मिलू भी

सोचवा है—

स्विद भी मुझे दुखन कहें सभ्यम-स्विद भी मुझे दुखन कहें तमे भी मुझे कुछन कहें में भी गस्विद भिसुको को दुखकड़ें न सम्यम-स्विदिशे की दुखनड़ें और न नमें मिसुको को दुखकहें।

स्पितर मुझे कुछ करोगा दो कहिए की ही बाद करोगा हिए की बाद नहीं करोगा। में भी दोरे नहीं कह कर कर दूरेगा और करना दोप बानदा हुआ भी उन्नक नहता नहीं करना। सम्मान्य करियों में मुझे कुछ नहेता नया मी मुझे कुछ करोगा दो बहित की ही बाद करेगा हिए की बाद नहीं करेगा। में दरे नहीं कह कर कर दूंगा और करना दोप बानदा हुआ भी उनका करना नहीं करना 1 मिसुमों इस प्रकार क्यान्स सहसा हैता है। क्यान्स इसी प्रकार रहते हैं।

मिनुमी बान्त-सङ्गस कैसा होता है? सन्त कैसे रहते हैं?

मिल्लुनो स्थविर मिसुसोभताई—

"स्यदिष्या गिक्षा में सुझे पति, मन्यमन्थित्य भी मृते पति, नये भी मुझे वहें, में भी राजिष्ट निलुओं का ष्ट्रें, मन्यमन्यजित्य रा गहें, नये निलुओं को रहें।

"स्यिति मुझे गुह गरेगा तो हिए गी शी बात गरेगा, अहित की यात नहीं करेगा। सभी उसे "अन्छा" ग्रेंगा और गाट न विदेशा। अपना रोष देखता हुआ भ उसका करना करगा। सम्बम-स्थिति भी गुझे कुछ गरेगा, नया भी मुछे कुछ उतेगा ता हिन की ही बात गिंगा, अहित की बात नहीं गरेगा। में भी उसे "अन्छा" रहुंगा और कर की देंगा। अपना रोष रेगता हुआ में उनका करना करगा। भित्तों, इस प्रकार धान्त-मह्यास होता है। धान्त उसी प्रकार रहते हैं।

"िश्जों, जिस अजिनरण में दोनों ओर से कहा-सुनी रहेगी, मत-विशेष का उनग्रर रहाा, चिता गुपित रहेगा, दाननस्य रहमा, द ब ृशा, अशान्ति रहेगी, उस अजिलान के बारे में जिल्लुओं, यही आशा करनी चाहिये कि जनका कलह दीर्य-तार नम जारी रहगा, वे परस्था कठोर जोग्यों रहा और मारनीट सी करने रहेंगे नया भित्र सुन-पूत्रक न रह सकेगे।

" िगक्षुओ, जिस अधिकरण में दोना ओर ने कहा-मुनी न होगी, मत-विशेष का दुराप्रह न होगा, चित्त कुषित न रहेगा, दीर्मनन्य न रहेगा, फ्राध न रहेगा, अशान्ति न रहेगी, उम अधिकरण के वारे में भिक्षुओ, वहीं आशा करनी चाहिय कि न उन का कलह दीवकार तक जारी रहेगा, न वे परस्पर कलार बोलते रहेगे और न मार्गिट ही करते रहेगे तथा भिक्षु सुखपूर्वक रह मकेगे।

(৩)

१ "भिक्तुको, दो मुख है।

<sup>&</sup>quot; कौनसे दो ?

<sup>&</sup>quot;गृहस्य-सुख तथा प्रग्नज्या-सुख।

<sup>&</sup>quot;भिक्षुओ, ये दो सुख है। इन दोनो सुखो में यह जो प्रव्रज्या-सुख है श्रेष्ठ है।"

<sup>&</sup>quot; भिक्षुओ, ये दो मुख है।

<sup>&</sup>quot; कौनसे दो ?

"काम भोतों का सूझ तका अभिनिष्क्रमण का सुझ।

"भिज्ञां ये दो पुत्र है। इन दोनों सुत्रों में यह जो समिनिष्णमन कर सुत्र है थेस्ट है।"

३ मिश्रुवी येथो पुरु है।

"कौनसे दो ?

" भौकिय-गुस तथा कोकुत्तर-गुस :

"मिसुबों ये दो सुबाई। मिझुबो इन दोनीं तुदो में यह कोकुलार सुकाभेट्ठ है।

४ मिसूबो मेदो मुख है।

"कौनसे दो ?

तासय-मुख तथा अनासय-मुख।

" भिक्षुजो से यो शुक्त हैं। मिशुजो इन दो तुको में सह अनाजय-सुक्त डी भेच्छ हैं।

५ प्रिभुजो नेदीमुखहै।

"कौनसे दो ?

भौतिक-गुस तथा अभौतिक-गुस ।

प्रिश्नुको नेदो गुजाहै। पिलुको इनदो गुर्को में बमीतिक-गुजा मेर्फहै।

"भिज्ञो, ये दो मुख है।

" कौनसे दो ?

" बार्य-युक्त तका बनार्य-युक्त ।

मिभूनो येदो गुणाहै। निस्ता इत दो गुर्जों में यह आर्थ-गुणा मेर्स्ट है।<sup>™</sup>

७ भिजुनो नेदोसुकाहै।

"कौनसे दो<sup>?</sup>

धारीरक मुन तना नैत्रधिक नुद्ध।

मिस्त्रों वेदो सुन हैं। भित्रुओं इन दो सुवों में यह वैतसिक-भूवा भेरत है।

- ८ "भिक्षुओ दो सुख है।
- " प्रीति-सहित मुख, प्रीति-विरहित सुख।
- "भिक्षुओ, ये दो मुख है। भिक्षुओ, इन दो मुखो में यह प्रीति-विरहित मुखर्ेु श्रेष्ठ है।"
  - ९ "भिक्षुओ, ये दो सुख है।
  - "कौनसे दो?
  - " आस्त्राद-सुख तथा उपेक्षा-सुख।
- "भिक्षुओ, ये दो सुख है। भिक्षुओ, इन दो सुखो में यह उपेक्षा-सुख श्रेष्ठ है।"
  - १० "भिक्षुओ, ये दो सुख है।
  - "कौनसे दो?
  - " असमाधि-सुख तथा समाधि-सुख।
  - "मिक्षुओ, ये दो सुख है। भिक्षुओ, इन दोनो सुखो में समाधि-सुख श्रेष्ठ है।"
    - ११ "भिक्षुओ, ये दो सुख है।
    - "कौनसे दो?
    - " प्रीति-आलम्बन-सुख तया अ-प्रीति-आलम्बन-सुख।
    - "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दोनो सुखो में अ-प्रीति-आलम्बन सुख ही श्रेष्ठ है।"
      - १२ "भिक्षुओ, ये दो सुख है।
      - "कौनसे दों ?
      - "आस्वाद-आलम्बन-मुख तया उपेक्षा-आलम्बन-मुख। भिक्षुओ, ये दो मुख है। भिक्षुओ, इन दोनो मुखो में उपेक्षा-आलम्बन-मुख ही श्रेष्ठ है।"
        - "भिक्षुओ, येदो सुख हैं।
        - "कौनसे दो?
        - " रूप-आलम्बन-मुख तथा अरूप-आलम्बन-सुख ।
        - "भिक्षुओ, ये दो सुख है। भिक्षुओ, इन दोनो सुखो में यह अरूप-आलम्बन-सुख ही श्रेष्ठ है।"

(८)

विज्ञां पारी-जदूबल धर्म निमिल्त (≃प्राधार) होने में उत्पन्न होने हैं विना निमिल्त के नदी छलान होने । उस निमिल्त को ही नप्प कर देने से वे पारी कक्षणक-धर्म उत्पन्न नहीं डीलें।

"सिमुको पाणी सहस्यक समें निवान (=कारण) हाने में उत्तान होता है विना निवान के गही। उस निवान को ही नष्ट कर वेने से वे पाणी अनुसन-समें प्रतान नहीं होते।

मिसुसी पापी अपुसस-सार्ग हेतु होत से उत्तर होते हैं पिता हेतु के नहीं। छस हेतु को ही नष्ट कर देने से वे पापी अनुसन-पर्म बत्तर तरी होते।

४ मिलुकी पापी बहुसाल-धर्म संस्वार होने में उत्पन्न होने में शिवा संस्वार के नहीं। उस संस्कार को ही नष्ट कर देने में व पापी बहुसल-धर्म उत्पन्न नहीं होने।

५ "भिक्तुओ पापी अञ्चलक-धर्म बलाय होने में बलाम होने हैं जिला प्रत्यय के नहीं। उस प्रत्यय को ही नष्ट कर देने ने वे पापी अञ्चल-धर्म स्त्यप्र नहीं होते।

मिशुबो पापी बङ्ग्यम-धर्म रप होने से () उत्पन्न होने हैं बिना रप
 के नहीं। उस रप का ही नास कर देने से वे पापी बङ्ग्यन-धर्म उत्पन्न कही होते।

कंत्रहों। उस क्य का हा नाय कर वन संव पाया बहुयल-सम उत्यम तका प्रति है। जिस्तों पायी बहुसल-सर्म वेदना के होने से ही उत्यम होते हैं जिला वेदना के नहीं। उस वेदना ना ही नास कर देने से वे पायी बदसाल-सर्थ

उत्पन्न नहीं होते ।

८ मिनुबो पापी सङ्ग्रसन्धर्म एका होने छे हो उत्पन्न होते है किना सका के नहीं। उच्छ सन का ही नाए कर देने से वे पापी अङ्ग्रसन्धर्म उत्पन्न नहीं होते। मिनुबो पापी अङ्ग्रसन्धर्म किनान होन से ही उत्पन्न होने हे किना विकान के नहीं। उस विकान का ही गाए कर देने छे पापी अङ्ग्रसन्धर्म उत्पन्न नहीं होते।

१ भिज्ञा पानी जकुणक-धर्म उसक्त-आकावन होने से ही उत्पाप होने हैं विना उसक्त-आकावन के गहीं। उस शहक आकावन का ही नाम कर वेने से पानी सकूबक-बर्ग स्टास नहीं होने।

(%)

१ "निमुखो, दो धर्म है।

"कीनसे दो ?

" चिता की विमुक्ति तथा प्रज्ञा की विमुक्ति।

" गिक्सों ये दा धर्म है।

" (आो के मूत्र इसी त्रम से 🗉 ।)

२ " रोय्यं (=प्रग्रह) नया चित्ते गाग्रता (=अविधेपं,)

३ "नाम और मप।

४ "विद्या तथा त्रिगुन्ति।

५ " मत-तृष्टि तत्रा विभव-दृष्टि।

६ " निउक्तपन तथा निपर-पन ।

७ "सञ्जानया (पाप-) भीरता ।

८ "दुवेंचन होना तथा फुमगति।

९ "सूपन होना तथा गत्नगति।

१० " ( अट्टारह ) धानुओं के ज्ञान में कुशल होना तया चित्त की एकांग्रना में बुशर राना।

११ "भिभुआ, दो धर्म है।

"कीन से दो ?

"आपन्ति (=दोपो) के ज्ञान में कुगल होना तथा विशिष्ट-दोषो के ज्ञान में कुगल होना।"

(80)

"भिक्षुओं, ये दो मूर्व (≈बाल) होते हैं।

"कौनमे दो ?

"जो अनागन-भार वहन करता है तथा जो आगत-भार (=जिम्मेदारी) वहन नहीं करना।

"भिक्षुओ, ये दो मूर्ख होते है।"

" मिक्सो, ये दो पण्डित होते है।

"कौनमे दो?

```
"वो आगत-भार वहन करता है तवा जो अनामत-जार वहन नहीं करता 🕨
```

"भिलुको येदोपण्डित है। 1 "भिन्नजो येदोमलंडैं।

"क्रीनमें को ?

काराय वा । "यो कप्पिय (=विषठ) को अवस्थिय समझे तवा अवस्थिय को कप्पिय समझे ।

"भिश्वनो येथो मूर्य है।"

४ "भिस्ता में दो पविश्त है।

"कीनसे दो ?

" को जकप्पिय (=अनुक्ति) को बगुक्ति समझे तवा वो विपय (=उक्ति)

को प्रचित्त समझे।"

५ "मिश्रुजो येदो मूर्जहैं।

"कीत से की ?

भी मदोप को दौप समझता है तका जो दोप को भदोप समझता है।

भिज्ञो, वेदो मूर्वई।" ६ फिलको येदो पश्चित् है।

"क्रीनोरको?

ंकानस वार ंकी बदोन को नदीन समझता है तवा को दोप को दोन समझता है ≥

भिज्ञा ये यो पण्डित है। जिज्ञा वे यो मूर्च है।

ण । तथुका चरायूक **०** "कौतसे को ?

"कौनसे को

को समर्ग को वर्ग समझता है तथा को वर्ग को सार्ग समझता है। मिलुको से दी मूर्व है।

ँ मि**जु**को ये दो पध्यित है।

कीनसे दो ?

भो समर्ग को सबमें तमजता है तथा को धर्म को धर्म समजता है ! धिलुओ

में की पण्डित हैं। • विकास के के के कार्य के

९. "मितृको येशो नूर्वहै।

"कौनसे दो?

"जो अविनय (=अनियम) को विनय समझता है, तथा जो विनय को अविनय समझता है। भिक्षुओ, ये दो मूर्ख है।"

१० "भिक्षओ, ये दो पण्डित है।

"कीनसे दो?

"जो अविनय को अविनय समझता है तथा जो विनय को विनय समझता है। भिक्षुओ, ये दो पण्डित है।"

११ "मिक्षुओ, इन दो के आस्वव वढते हैं।

" किन दो के ?

"जो अकौकृत्य के विषय में कौकृत्य करता है तथा कीकृत्य के विषय में अकौकृत्य करता है।"

१२ "भिक्षुओ, इन दो के आस्त्रव नही बढते।

" किन दो के ?

"जो अकौकृत्य के विषय में अकीकृत्य करता है, कौकृत्य के विषय में कौकृत्य करता है। भिस्अो, इन दो के आस्नव नहीं बढने।"

१३ "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ने है।

"किन दो के ?

" जो अकिष्पय (=अनुचित) को किष्पय समझता है तथा जो किष्पय को अकिष्पय समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव वढते हैं।"

१४ "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नही वढते।

" किन दो के?

"जो अकिप्पय (=अनुचित) को अकिप्पय समझता है तथा जो किप्पय को किप्पय समझता है। भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढते हैं।"

१५ "भिक्षुओ, इन दो के आस्त्रव वढते है।

" किन दो के ?

"जो अनापित्त (=अदोप) को आपित्त (=दोप) समझना है तथा जो आपित्त को अनापित्त समझता है। मिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढते है।" १६ "प्रिश्नुको इन दो के नासव नहीं बढते।

दिन दो के?

"को बनापरित (=बदोप) को बनापरित समझता है तका को वापरित (=दोष) को मापरित समझता है।

१७ भिक्षको इत दो के मासन नडते हैं।

किन को के ?

जो सधर्म को बर्म समजता है तथा जो सर्म को सबर्म समझता है। भिज्ञुजो

इन हो के जानव नहीं हैं। १८. भियानों इन यो के सामन नहीं नहते।

**र** फिलाको के ?

" जो समर्ग को अधर्म समझता है तथा जो बर्म को धर्म समझता है ? पिस्नुजो इस को के आसम नहीं बढ़ते !

१९ भिल्ला इन दो के बासर बढते हैं।

किन वो के रै

भो समित्रय को मित्रय समक्षता है तथा जो दित्रय को समित्रय समजता है। फिलाबों इन घो के सामय महते हैं!

> . भिक्षको इन दो के कालव नदी बढते।

कित को के ?

को अभिनय को मिनस समझता है तमा को मिनस को मिनस समझता है। मिसूको इन यो के साक्षण नहीं वस्ते हैं।

(11)

१ भिन्दाों से दो बासामें (ऋष्णाने) बासानी से नदी कोड़ी जासकती।

कीनसी दो '

कामरी जाणा (= ६ च्छा) तदा वीदनकी श्राष्टा (= ६ च्छा)। मिश्रुको में दो जापार्जे जानानीले नहीं कोशी जा सक्ती।

२ "प्रिधुको कोक में ये दातरमुक्ते स्पक्ति दुर्लन हैं।

" कौतसे को सरक के ?

"परोपकार करनेवाला तथा परोपकारको स्मरण रखनेवाला। भिक्षुओ, लोकमें ये दो तरहके व्यक्ति दुर्लभ है।"

३ "भिक्षुओ, लोकमें ये दो तरहके व्यक्ति दुर्लभ है।"

"कौनसे दो तरहके ?"

"तृप्त (=अरहत) तथा तृप्त करनेवाला (=सम्यक्-सम्बुद्ध)। भिक्षुओ, लोकमें ये दो तरहके व्यक्ति दुर्लभ है।"

४ "मिक्षुओ, अिन दो तरहके व्यक्तियो को तृष्त करना सहज नही। "किन दो तरहके ?

" एक तो ऐसे व्यक्तिको जिसे जो-जो मिलता है असे रखता जाता है, दूसरे ऐने व्यक्तिको जिसे जो-जो मिलता है असे दूमरोको देता जाता है।

"भिक्षुओ, इन दो तरह के व्यक्तियो को तृष्त करना सहज नही।"

५ "भिक्षुओ, इन दो तरह के व्यक्तियों को तृप्त करना सहज है।"
"किन दो व्यक्तियों को ?"

"एक तो उस व्यक्ति को जिसे जो-जो मिलता है उसे रखता नही जाता है, दूसरे उम व्यक्ति को जिसे जो-जो मिलता है, उमे दूसरो को नही देता।

"भिक्षुओ, इन दो व्यक्तियो को तृप्त करना सहज है।"

६ "भिक्षुओ, राग (=अनुराग) की उत्पत्ति के दो हेतु है ? "

"शुभ-निमित्त ( च्सुन्दर करके देखना ) तथा अयोनिमो-मनिमकार (=अनुचित ढग मे विचार करना )।

"भिध्युओ, राग की उत्पत्ति के दो हेत् है।"

७ "भिक्षुओ, द्वेप की उत्पत्ति के दो हेनु हैं ?"

"कौनमे दो ?"

"प्रतिध-निमित्त (≈प्रतिकूल करके देखना ) तथा अयोनिसो-मनसिकार (=अनुचित ढग से विचार करना )।

"भिक्षुओ, द्वेप की उत्पत्ति के दो हेतू हैं?"

८ "भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टि की उत्पत्ति के दो हेतु है।"

"कौनसे दो?'

परायी-कोषमा (=सडर्म-विरोधी-मत) और वयोतिसो-सनस्विकार (⊯कनुषित विचार)।

"पिशुबो मिच्या-वृष्टिकी उत्पत्ति के वो दो हेतु हैं?

भिश्वो सम्बद्धिकी उत्पत्ति के दो हैगुई।
 भौतने दो?

भगप्रधाः विकास (ज्यमांगुक्क सठ) और योगियो-मनसिकार (ज्विक्ट इंग् से किकार)।

भिक्षमी सम्मक्-पृष्टिकी उत्पत्ति के वो हेतु है।

१ "मिलुको येदो अन्तरितर्ग(=दोष) है।

कौनसी दो। इसकी सापत्ति देवा मारी वापत्ति।

"मिश्चनो ने दो नापरित्यों है।

११ " भिक्षुको में को अन्यस्तिमाँ (≔योग) है। अप्रैनमी को ?"

कानसाराः "राज्यस्य स्वास्ति स्वयः अस्ति स्वयंति ।

"दु-स्यूक भागतित तमा अ-दु-स्यूक भागतित।

पित्नुको येदो अगपरित्यीई। पिद्युको येदा अगपरित्यीई।

कौतसी को <sup>?</sup>

" मधेप-भापतिः तथा समेप-भापतिः।

"भिभुजों ये दो जापस्तिया है।

(१२)

मिलुओ अदाबान निश्च यदि मध्यक प्रकार नामना करता है तो उसकी यही नामना होनी चाहिये कि में ऐसा होऊँ जैसे मारिपुक-मौद्यस्यायन थे।

पिश्वासं यही पुरा है यही माप-जोल्ड है मेरे शिश्व सावकों के सिसी को यह नारिप्रव-मीयवस्थायन है।

विद्यमियां थी।

को यह नारिपुत-मीर्नस्थायन है। २ मिनुना संदेखान् सिन्नुनी यदि सम्बद्ध प्रवार वामना करे हो सन्तरी यही वामना होनी चारिये कि मैं शेनी हार्ड जैसी कि क्षेमा नवा दलप-चर्चा " मिक्षुओ, यही तुला है, यही माप-जोख है मेरी मिक्षुणी श्राविकाओं के लिये जो ये क्षेमा तथा उत्पल-वर्णा भिष्णुणियाँ है।"

" भिक्षुओ, श्रद्धावान् उपासक यदि सम्यक् प्रकार कामना करे तो उसकी यही कामना होनी चाहिये कि मै ऐसा होऊँ जैसे कि चित्र-गृहपति तथा आळवक हस्तक थे।"

"भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप-जोस है मेरे श्रद्धावान् जपासको के लिये जो कि यह चित्र-गृहपति तथा आळवक हस्तक थे।"

"भिक्षुओ, श्रद्धावान् उपासिका यदि सम्यक् प्रकार कामना करे तो उसकी यही कामना होनी चाहिये कि में ऐसी होऊँ जैसी कि खुज्जुत्तरा उपासिका तथा वेळु-कण्टकी नन्द-माता।"

"भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप-जोख है मेरी श्रद्धावान् उपासिकाओं के लिये जो कि ये खुज्जुत्तरा उपासिका तथा वेळुकण्टकी नन्द-माता।"

५ "भिक्षुओ, दो बातो मे युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दनीय होता है और बहुत अपुण्य का हेतु होता है।"

"कौनमी दो वातो से ?"

"विना जाने, विना विचार किये अवगुणी के अवगुण कहता है, विना जाने, विना विचार किये गुणी के अवगुण कहता है।

"मिक्षुओ, इन दो बातो से युक्त मूर्ब, अव्यक्त असत्पुरुप अवगुणी होता है, सदोप होता है, विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दनीय होता है और वहुत अपुण्य का हेतु होता है।"

" मिक्षुओ, इन दो बातो से युक्त, पण्डित, व्यक्त, सत्पुरुप गुणी होता है, निर्दोप होता है, विज्ञ पुरुपो द्वारा प्रशसनीय होता है और बहुत पुण्य का हेतु होता है।"

" कौनसी दो वातो से ? "

" जानकर, विचारकर अवगुणी के अवगुण कहता है, जानकर, विचारकर गुणी के गुण कहता है।"

" भिक्षुओ, इन दो वातों से युक्त, पण्डित, व्यक्त, सत्पुरुष गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषो द्वारा प्रशसनीय होता है और बहुत पुण्य का हेतु होता है।"

६ "मिस्तूमो को बार्नो से मुक्त मूर्न बायका अनस्पूर्ण अवसूती हाता है सराय रोता है किस दुस्यों बारा नियमीय रोता है और बहुत अपुस्य कर हेतु होता है।

"कौनमी दो बार्जी से ?

"विना बाने विना क्यार क्ये क्याडेय-कान पर शडा व्यक्त करता है विना बाने किना विकार क्ये शडाय-कान पर समझा व्यक्त करता है।" "भित्रुको इन यो बानों हे युक्त मूर्ण क्याक्त असलुर्य कागुणी होना है सरोप होता है किन पुरुषों हास निकारित होना है और बहुत कपुन्य का

हेनु होना है। प्रिमुख इन को कार्नों में मुक्त पश्चित स्थवन संस्पृत्य पूत्री होता है निस्तेय होता है किस पुरुषों बारा प्रसंतनीय होता है और बहुत पुल्य का हेनु

होता है। कौशनी वो बानों से ?

" बातकर, विचार कर सम्बेद-स्वात पर बसदा स्थक करता है । बात कर, विचार कर, अदेग-स्वात पर शदा स्थक करता है।

कर, विचार कर, सदय-स्वान पर सदा स्थान करता है। भिन्नुनो इन दो बातों से बुक्त पश्चित स्थान सत्युद्ध गुणी होता है निदोंच होता है बिज पुस्पो हारा प्रयोगनीय होता है बौर बहुत पुष्प का हेनू रोता है।

 मिसूत्रो इत दोगों के प्रति त्रतृषित स्ववहार करनेवाला मूर्ज कम्मक्त वसल्युक्य अवमूत्री होता है सदीप होता है वित्र पुरुषों हारा निष्यानित.

द्योता है और महुत अपूज्य का हेतु होता है। किन दो के प्रति?

मातातवापिताके प्रति।

मिन्नों दन दोनों के प्रीत नगुचित स्पद्धार करनेवाला मूर्ण सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धारी होता है। यदोग होता है। विक्र पुत्रमों क्रांस निम्मनीय होता है। और बहुत महुम्य का हेर्द्ध होता है।

पिश्नुमी इन दोनों के प्रति उचित स्मवहार करनेवाला परिष्ठत स्मक्त चलुक्य मुनी होता है निर्दोग होता है विज्ञ पुल्यो बारा प्रवस्तीय होता है और बहुत पुल्य का हेतु होता है:

- " किन दो के प्रति ?
- " माता तथा पिता के प्रति।"
- "भिशुओ, उन दोनों के प्रति उचिन व्यवहार करनेवाला, पण्डिस, व्यवन, सत्युरुष गुणों होता है, निर्दीप होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशानीय होता है और बहुत पुण्य वा हेतु होता है।
- ८ "भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति अनुचिन व्ययतार करनेवाला मूर्व, अव्यक्त, अमत्पुरूप अवगुणी होता है, मदोप होना है, विज्ञ पुरूपों द्वारा निन्दनीय होना है और बहुन अपुण्य का हेतु होना है।
  - " किन दो के प्रति ?
  - "नयागत नया तयागत-श्रावक के प्रति।"
  - " निशुओ, इन दोनों के प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला मूर्च, अव्यक्त, अमत्पुरप अवगुणी नोता है, गदोप हाता है, निज पुरणों द्वारा निन्दनीय होना है और बहुन अपुण्य का हेनु होता है।"
  - "निक्षुओ, इन दोनों के प्रति उचिन व्यवहार रखेवाला पण्डित, व्यक्त, सत्पुरुप गुणी होता है, निर्दोप होता है, विज्ञ-पुरुपो हारा प्रश्नमनीय होता है और बहुत पुष्प का हेतु होता है।"
    - " किन दो के प्रति।"
    - "तयागत तथा तयागत-श्रावक के प्रति।"
    - "भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति उचित व्यवहार करने वाला पण्डित, व्यक्त, सत्युरुप गुणी होता है, निदींप होता है, विज्ञ पुरुपो द्वारा प्रशमनीय होता है और बहुत पुण्य का हेतु होता है।"
      - "भिक्षुओ, दो धर्म है।
      - "कौनमें दो?
      - " चित्त की परिशुद्धि तथा किमी भी वस्तु के प्रति आसक्त न होना।
      - "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"
      - १० " मिक्षुओ, ये दो धर्म है।
      - " कौनसे दो ?
      - " कोघ तया वँघा-वैर।

```
मिलओ येदोधर्महै।
         ११ नियुका सेदाधनंहै।
         "कौनसे को ?
         " नोम को वसीमृत करना तथा बँबे-वैर का स्थाय करना।
          मिलको यको धर्म है।"
                               (E)
          भिश्वो में दो दान है।
          कीनसे हो ?
        ",जीतिक-दान तथा धर्म-दान । भिस्नुजी ये दो दान है। भिस्नुजी,
इन दौनो दानो में धर्म-दान बेप्ट है।
         २ "भिस्नवी वेदोयज्ञ है।
        " कौतरे को ?
         भौतिक-यह तवा धर्म-यह । भिलुको ये दो धर्म-यह बेप्ठ है।"
        क भिज्ञजी ये को त्यान है।
        "कौनसे को रै
        "भौतिक-स्थागतवाद्वामिक-स्थाग। भिज्ञजी, येदो धार्मिक
स्याग श्रेष्ठ 🖁 ।
        ४ "पिज्ञाको से को परिस्काल है।
        "कीनसे को ?
          श्रीतिक-परित्वाय तथा प्रामिक-परित्याय। धिकको ये हो

 शार्मिक-परिशास भेष्ठ है।"

        ५ मिझको येदो मोवडै।
         कीनसे हो ?
         भौतिक-मोग तमा धार्मिक-मोगः। मिजूनो वेदो
                                                         धारिक-
बोग भेष्ठ है।'
        ६ "पिसूजो थे दो सं-धोग है।
         कीनमें को ?
         भौतिक-समोन तवा धार्मिक-संभोग। विश्व और में को
```

समोब शेष्ठ है।

प्राप्तिक-

- ७ "भिक्षुओ, ये दो सिवभाग (=वितरण) है।"
- " कीनमे दो ?"
- " मौतिक-सविभाग तथा धार्मिक-सविभाग। भिक्षुओ, ये दो .
- धार्मिक-सिवभाग श्रेष्ठ है।"
  - "८ भिक्षुओ, ये दो सग्रह है।"
  - " कौनसे दो ?
- "भौतिक-सग्रह तथा धार्मिक-सग्रह । भिक्षुओ, ये दो धार्मिक-सग्रह श्रेष्ठ है।"
  - ९ "भिक्षुओ, ये दो अनुग्रह है।"
  - " कौनसे दो ?
  - "भौतिक-अनुग्रह तथा वार्मिक-अनुग्रह। भिक्षुओ, ये दो धार्मिक अनुग्रह श्रेष्ठ है।"
    - १० "भिक्षुओ, ये दो अनुकम्पार्ये है ।"
    - "कौनसी दो?
    - "भौतिक-अनुकम्पा तथा धार्मिक-अनुकम्पा। भिक्षुओ, ये दो धार्मिक-अनुकम्पा श्रेष्ठ है।"

(१६)

- "भिक्षुओ, ये दो प्रतिछादन (=सन्यार) है।"
- " कौनसे दो ?
- "भौतिक-प्रतिछादन तथा धार्मिक-प्रतिछादन। भिक्षुओ, ये दो धार्मिक-प्रतिछादन श्रेष्ठ है।"
  - "भिक्षुओ, ये दो प्रति-सन्यार है।"
  - " कौनसे दो ?
- "भौतिक-प्रतिसन्यार तथा धार्मिक-प्रतिसन्यार। भिक्षुओ, ये दो धार्मिक-प्रतिसन्यार श्रेष्ठ है।"
  - ३ "भिक्षुओ, ये दो एषणायें है।"
  - "कौन सी दो ?
- "भौतिक-एषणा तथा धार्मिक-एषणा। भिक्षुओ, ये दो धार्मिक एषणा श्रेष्ठ हैं।"

```
४ भिश्वभी सेशापर्येषणार्थे है।
            कानसी को ?
            मौतिक-पर्येषमा तथा श्रामिक-पर्येषना। भिक्षको से दो
      धार्मिक-पर्वेपना श्रेष्ठ है।
           भिक्षको मेदो प्राप्तियौ है।
           कानसी को रे
         "भौतिक-प्राप्ति तना धार्मिक-प्राप्ति। भिन्नवा में वो
                                                                  पामिक
प्राप्ति स्रोप्त है।
         ६ "मिशुमो दाप्रकारकी पूजाती।
           कौतसे को प्रकार की ?
           भौतिक-पुना चना धार्मिक-पुना।
         "मिश्वो येदो प्रकार की पूजा है। मिश्वों से दो प्रकार की
                  वार्मिन-पूत्रा मेट्ट है।
पुजा
         ७ "सिजको सेतो प्रकार के क्रानिस्त है।
          कौनसे को प्रकार के?
          गौतिक-सातिष्य तथा प्राप्तिक आदिष्य । पिशसो इन दो
        ब्रामिन'-ब्राविच्य थय्ठ है ।
        ८ भिक्तको येको भाविषा है।
          wheth th?
         भौतित अर्थि तथा धार्मित अर्थि । मिश्रुको इत दो प्रकार की
ऋकियों में
                থাদিক-ক্ষুত্রি থক্ত 🛊 ।
         ु भिलानो थेदो विश्वयाहि।
         कौतसी को ?
```

" सौतिक-मृद्धि तथा धार्मिक-मृद्धि । सिझ्यो दन दो प्रकार की

प्राप्तिक ग्रांटि चेटर है।

र मिम्बो येदो प्रकार केरला है।" - कौनने दो प्रकार के? " भौतिक रत्न तथा धार्मिक-रत्न । भिक्षुको, इन दो प्रकार के रत

.... धार्मिक-रत्न ही श्रेप्ट हैं।"

११ "मिक्तुओ, ये दो सग्रह (=मिनचय) है।

" कौनसे दो ?

"भौतिक-मग्रह तथा धार्मिक-मग्रह। भिक्षुओ, इन दोनो म धार्मिक सग्रह श्रेष्ठ है।"

१२ "भिक्षुओ, ये दो विपुलतायें है।

"कौनसी दो?

"भौतिक विपुलता तथा धार्मिक विपुलता। भिक्षुओ, इन दो वि धार्मिक विपुलता श्रेष्ठ है।"

(१५)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म है।

"कौनसे दो?

" घ्यान (समापत्ति ) में बैठने की कुशलता तथा घ्यान से उठने व भिक्षुओ, ये दो धर्म है।

( आगे २---१७ मही फम है। )

२ "ऋजुता तथा मृदुता।"

३ "क्षमा तथा सदाचार।"

४ " प्रियवाणी तथा अतिथि-मत्कार।"

५ "अविहिंसा तथा शुचता।"

६ "इन्द्रियो का अरक्षण तया भोजन में मात्रज्ञ होना।"

७ "इन्द्रियो का सरक्षण तथा भोजन में मात्रज्ञ होना।"

८ "प्रति-सस्यान (=ज्ञान)-वल तथा भावना-वल।"

९ "स्मृति-बल तथा समाधि-बल।"

१० "शमथ तथा विपश्यना।"

११ " शील-दोष (विपत्ति ) तथा दृष्टि-दोप।"

१२ " शील-मम्पत्ति तथा दृष्टि-सम्पत्ति।"

१३ "शील-विशुद्धि तया दृष्टि-विशुद्धि।"

```
१४ "दुष्टि-विद्युद्धि तमा मना-वर्षेन प्रयत्न।"
 १५ " कुस<del>क स</del>र्मों में वसन्तोग तवा प्रयत्न में सत्तत-भाव ।
 १६ "मूड-स्मृति होना तका बजानकार होना।
 १७ स्मिति तवाज्ञानः"
                         (11)
"मिशुओं येदी धर्म है।
 "कीनसे दा?
"त्रोध तवाउपनाह(≔यड-वैर)। भिसूबो येदो धर्मे है।
      (इसी प्रकार २--१ तकः।)
२ " स्वसः ( दूतरे के यून को डॅकना तवा प्रदास (वण्ड-पारूप्य) ।"
३ "ईवीतवा सारसर्य।
४ भाषात्वाधळता।<sup>™</sup>
५ "तिसंज्ञतातवा (पाप-वर्ममें ) निर्मयता।
६ " अकोष तदा अनुपनाह।

 अध्यक्ष तमा अप्रदात ।"

८. "बनीवी तथा अमालवे ।"

 भ्रतामा तथा संग्रद्धता।

     लज्जातवा (पाप-नर्म में ) भवा"
"११ जिल्ला को सभी ने युक्त होते पर दुल भौतना होता है।
" रित हो धर्मों ने ?
भोग ने समा उपनाइ ने।"
१२ मन्नीतवाप्रदान गे?"
१३ दिनी ने तका मारनर्व है।"
१४ ँ नाया से तवा शप्ता ने ।
     तिर्वत्रका नवा (पान-नवं में ) तिबंद होने ने।"
 बिन्दा दादायभी से पूत्राहोते पर दुन्त जोतना होता है।"
     किएको इन दो प्रकी से युवन होते पर मूल कोवना है।
 की गण का सभी ने '
```

```
" अक्रोघ तथा अनुपनाह से।"
```

"अम्रक्ष तथा अप्रदास से।"

" अनीर्पा तया अमात्सर्य्य से।"

" अमाया तथा अशठता से।"

" लज्जा तथा पाप-कर्म में भय होने से ।"

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त होने पर सुख भोगता है।"

२१ "भिक्षुओ, मे दो धर्म शैक्ष-भिक्षु की हानि का कारण होते हैं।"

"कौनसे दो?"

"क्रोध तथा उपनाह।"

२२ "म्रक्ष तया प्रदास।"

२३ "ईर्पा तथा मात्सय्यं।"

२४ "माया तथा शठता।"

२५ "निलंज्जता तथा (पाप-कर्म में ) भय-रहित होना।"

"मिसुओ, ये दो धर्म शैक्ष-मिक्षु की हानि के कारण होते हैं।"

२६ "मिक्षुओ, ये दो धर्म शैक्ष-भिक्षु की हानि का कारण नही होते।

"कौनसे दो?

" अक्रोध तया अनुपनाह।"

"अम्रक्ष तथा अप्रदास।"

" अनीर्पा तया अमात्सर्यं।"

" अमाया तथा अशठता।"

"लज्जा तया पाप-कर्म में भय होना । "

" मिखुओ, ये दो धर्म शैक्ष की हानि का कारण नहीं होते।"

२१-२५ "भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त श्रादमी मानो नरक में डाल दिया गया हो।

" विन दो धर्मों मे<sup>?</sup>

"त्रोध ने तया उपनाह रे" (११ मे १५)

"मिशुओ, इन दो धर्मों मे युक्त (आदमी) मानी नरक में डाल दिया गया हो।" ३६४ "मिनुको इन दो बर्मों से युक्त (स्रादमी) मार्नो स्वर्पर्से बात दिया पया हो।

" कौतसे को धर्मों से ?

"अत्रोधतवा बनुपनाइ से (१६—२)

"मिल्लुओं इन को धर्मों से मुक्त (आ दमी) मानो स्वर्गमें बास दिमा

गया क्षेत्र।"

े ४१ ४५ "भित्रुको इन दो सभी से युक्त (प्रामी) सरीर सूटने पर भरते के कामतर कपास दुर्गति सरक जहसम में बन्स बहुण करता है।

"कौतसे को धर्मों से ?

"त्रोध से सवा चपनाइ से (१११५)

"पितृतो इन दो धर्मी से पुक्त जन्म पहुच करता है।"

Y६-५ फिसुबो, इन दो धर्मी से पुक्त (प्रामी) सरीर के छूटने पर,
मरने के अनन्तर, सुपति स्वर्ग-कोट में जन्म इडल करता है।

" कौतने दो प्रमों से ?

"कानमंद्राप्रमासा "अन्त्रोध तदा अनुपनाह से (१६२)

"सत्राध तका अनुपताह स (१६२) "सिशुबो, इत दो छसीं से जन्त प्रहम करता है।"

जिस्तुनी ये यो धर्म अपूर्णण है (देली १-५) ५६६ "शिक्तुनो ये दोधर्म दूसल है "(देलो ६१)

६१६४ भिनुतो से वो धर्म महोप ई "(देनो १-५) ६५-७ निहालो सेवाधर्म निहोंदले (देनो ६१)

६५-७ विश्वाने येवाधर्म निर्देष है (देनो ६१) ७०-३५ विश्वाने येवो धर्म दुश-नारक है "(देनो १-५)

७०-३५ समुना य दा सम् दुण-नारक हु "(देशो १-५) ७६-८ निगुनो, य को सर्व नुगनारक हुँ "(देशो १-१)

८१-८५ भिगुनो ये दो कर्म मुग्तदादर है "(देगो ६१) ८६- मिशनो ये दो कर्म मुगत्तावी है "(देगो ६१)

•१-९५ "बिगुको, ये को धर्म तुमर है (हेमो १-५)

९६१ (त्रियाओं, में को बर्म नुसदर्ह (देशो ६१)

"विशवो से दो धर्म नगर है।

"भिक्षुओ, दो वातोका लाभ देख कर तथागतने श्रावको के लिये शिक्षा-पदो (=िनयमो) की प्रज्ञप्ति की है।

"कौनसी दो बातो का ?

"सघकी मलाई के लिये तथा सघ की आसानी के लिये ।"

"दुराचारी भिक्षुओ का निग्रह करनेके लिये तथा सदाचारी भिक्षुओ के सुख-पूर्वक रहनेके लिये •।"

"असी शरीर में अनुभव होनेवाले आस्त्रवो, वैरो, दोषो, भयो तथा अकुशल-धर्मोंके सवरके लिये, पारलौकिक आस्त्रवोंके, वैरो के, दोषोंके, भयों के, अकुशल-धर्मों के नाश के लिये ।"

"गृहस्थोपर अनुकम्पा करनेके लिये तथा पापियोके पक्ष का नाश करने के लिये।"

"अप्रसन्नों को प्रसन्न करनेके लिये, प्रसन्नों को और भी अधिक प्रसन्न करनेके लिये ।"

"सद्धर्म की स्थिति के लिये, विनयपर अनुग्रह करनेके लिये।"

"भिक्षुओ, इन दोनो वातो का ख्याल कर तथागत ने श्रावकोंके लिये शिक्षापदो (=िनयमो ) की प्रज्ञप्ति की है।

"प्रातिमोक्ष उद्शो की प्रज्ञप्ति की है "देखो-१)
"प्रातिमोक्ष-स्थापना की प्रज्ञप्ति की है "देखो-१
"प्रवारणा की प्रज्ञप्ति की है"
"प्रवारणा-स्थापना की प्रज्ञप्ति की है"
"तंजंनीय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है"
"प्रवारणनेय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है"
"प्रवारणीय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है"
"प्रतिसारणीय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है"
"परिवास-दान की प्रज्ञप्ति की है"
"मूल-प्रतिकर्षण को प्रज्ञप्ति की है"
"मानव-दान की प्रज्ञप्ति की है"
"मानव-दान की प्रज्ञप्ति की है"
"मानव-दान की प्रज्ञप्ति की है"
"

प्रातिनोश की प्रतित्व की हैं ''अस्तान की प्रज्ञत्ति की हैं''

पापियों के पक्ष का नास अरने के किये।

करने के किये

प्रातिकारा 🔐 🚣 स्वर्धिक है	~
मातिकार "अक्सान की प्रज्ञातिक की हैं" "मोतारकीय की प्रज्ञातिक की हैं"	*
"बोधारबीव की प्रशास की है" निक्तारबीव की प्रशास की है	17
निम्हारमात्र की प्रतिय की हैं 'अपतास्था की प्रतिय की हैं'	
'अपनामामा का अपनित की है"	
Aur Rep - Felt Tall and Tall and Tall and Tall	(रेको१)
	(येषां-१)
न्तरिय पात्र के जाने की माने के हैं न समासिय भी महारिय की हैं न समासिय भी म्यूप्रसायित की हैं महारिया भी प्रसाय की हैं	(येक्ते-१)
THE PARTY OF THE P	(येको-१)
" the said and the said of the	
ल् <sup>ति-विभा</sup> क करित को 🕻	(येक्यो≔१)
" अपूर्व-विरोध की प्रमृत्ति की है	(देको-१)
्रमुखारा करें भूभूभित्तका (श्याहमरा) की प्रश्नपित की है	(वेको≔१)
संभूतितका (स्वाहरू अस्वतपापवितिका की प्रकृति की है	(वेको-१)
प्रसंपितारक की प्रतित की है"	(रेसो-१)
क्षांवरण को ?"	
	दुराचारी
सब का मना कि कि कि तथा तथायारी पिश्त में के मुख-पूर्वक ए	ले के किस
विश्वीको निवह र प्रकार करने करने करने करने करने करने करने करन	
इसी क्रीर में अनुभव होनेवाठे वासवों नैरों दोयो नयो	त्वा <b>महुत्तत</b>

<sub>समी</sub> में सबर के किये पारजी किक आ कार्य के वैरों के दोवोंके भयो के अ<u>पू</u>राल

सबनें की स्विति के सिये विनय पर बनुगृह करने के सिये।

" कप्रसन्तों को प्रसन्त करने के लिये। प्रसन्तों को और भी अधिक प्रसन्त

। गृहस्त्रो पर बनुसम्मा करने के सिये त्वा

"निधुओ, इन दो वातो का स्थाउ कर त्यागत ने श्रायको के लिये शिक्षा-पदो (=निययो) की प्रशम्ति की है।"

"३ निध्यो, राग (के गयाथ स्वरूप) का ज्ञान प्राप्त करने के लियें दो धर्मों की भावना (=अस्याम) करनी चाहिये।

"कौनमें दो धर्मों नी ?

"दामय तथा विपय्यना की । भिक्षुओ, राग का ज्ञान प्राप्त करने के लिये दो धर्मों की भावना करनी चाहिये।"

४ "भिक्षुओ, राग के परिज्ञान के लिये, परिक्षय के लिये, प्रहाण के लिये, क्षय के लिये, व्यय के लिये, विराग के लिये, निरोध के लिये, त्याग के लिये, प्रतिनिमगं के लिये, इन दो धर्मों की भावना रंग्नी चाहियें (देनो—१७-५)

"भिक्षुओ, द्वेष के, मोह के, फोध के, उपनाह के, स्रक्ष के, प्रश्न के, ईपों के, मात्मर्य्य के, माया के, पठना के, स्नन्द्ध-भाय के, सारम के, मान के, अतिमान के, मद के, प्रमाद के (यथाय स्वम्प के) ज्ञान के लिये, परिज्ञान के लिये, परिक्षय के लिये, प्रहाण के लिये, ध्वय के लिये, व्यय के लिये, विराग के लिये, निरोध के लिये, त्याग के लिये, प्रतिनिमगं के लिये, दो धर्मों की भावना फरनी चाहिये।

"कौनसे दो धर्मों की ?

"शमय को तथा विपश्यना की। इन दो धर्मों की भावना करनी चाहिये।"

#### तीसरा-निपात

ऐषा मैंने सुना। एक धमय प्रवदान् भावस्ती में बतावधिनिक के बेठवनाराम में विद्यार करते थे। वहां भववान् ने भिग्नुकों को बार्यमित किया"मिन्नुकों! उन मिन्नुकों ने भगवान् को प्रतिवचन निया- प्रवत्ता!"
वस्तान ने यह कहा- "पिन्नुकों निनन्ते मो भय उत्तर्भ होते हैं वे मूर्ब से ही उत्तरभ होते हैं विद्यान से मही।

मिस्कों जैसे सरफारों भी कर में वा जून की कर में तार्थी हुई बाव किये-पुठे निक्त जरफोसाने जन्म सिककिमोनाके क्यागारों को भी जान जाकती है जमी प्रकार मिनुकों निवाने भी पर उत्पन्न होने हैं वे मुक्त से ही जत्म होने हैं परिवान में नहीं। जिनने भी उपकां उत्पन्न होने हैं वे मुक्त से ही उत्पन्न होने हैं परिवान से नहीं। जिनने भी उपवान उत्पन्न होने हैं वे मुक्त से ही अपन होने हैं परिवान से नहीं।

41.50 0 1611

निगुको इस प्रकार नुर्णे सन्म हाना है परिष्ठ निर्मय होता है मुखे स-जगनने होता है परिष्ठ करसने-पहित होता है मुखे स-काश्य होता है परिषठ कराइन-पहित होता है। मिनुको परिष्ठ से मय नहीं है परिष्ठ से क्यतर्थ नहीं है परिष्ठ से क्याह नहीं हैं।"

हनसिन्धे भिजूनो नह मीलना माहिने जिन तीन-स्पों से मुक्त नाहसी मुक्त समझा जना है उन तीन बनों को त्याद कर तथा जिन तथा से मुक्त आवसी परित्त नसझा जागा है उन तीन समों के समस्तित होकर रहेते। सिगुनो नहीं तीराना माहिने।

(२)

मिश्रुओ, मूर्तनान्यालक्षम है पश्चिम नान्यालक्षम है? चरित्र ने ही प्रज्ञानी गोमा है। "भिक्षुओ, इन तीन वातो से युक्त आदमी को मूर्ख समझना चाहिये। किन तीन वातो से? शरीर के दुश्चिरित्र से, वाणी के दुश्चिरित्र से तथा मन के दुश्चिरित्र से। भिक्षुओ, इन तीन वातो से युक्त आदमी को मूर्ख जानना चाहिये।"

"भिक्षुओ, इन तीन बातो से युक्त आदमी को पण्डित समझना चाहिये। किन तीन बातो से ? शरीर के सुचरित्र से, वाणी के सुचरित्र से तथा मन के सुचरित्र से। भिक्षुओ, इन तीन बातो से युक्त आदमी को पण्डित जानना चाहिये।"

"इसलिये भिक्षुओ यह सीखना चाहिये, जिन तीन धर्मों से युक्त आदमी मूर्ख समझा जाता है उन तीन धर्मों को त्याग कर तथा जिन तीन धर्मों से युक्त आदमी पण्डित समझा जाता है उन तीन बर्मों से समन्वित होकर रहेगे।"

"भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये।"

(३)

"भिक्षुओ, मूर्ख के तीन लक्षण है। कौन से तीन ने भिक्षुओ, मूर्ख बुरे विचार रखता है, बुरी वाणी वोलता है, बुरे कर्म करता है। भिक्षुओ, यदि मूर्ख बुरे विचार न रखे, बुरी वाणी न वोले, बुरे कर्म न करे, तो पण्डित-लोग यह कैसे जानेंगे कि यह जनाव असत्पुष्ण मूर्ख है। क्योंकि भिक्षुओ, मूर्ख बुरे विचार रखता है, बुरी वाणी वोलता है, बुरे कर्म करता है, इसी लिये पण्डित-लोग जान लेते है कि यह जनाव असत्पुष्ण मूर्ख है। भिक्षुओ, ये तीन मूर्ख के लक्षण है।"

"भिक्षुओ, पण्डित के तीन लक्षण है। कौन से तीन?

"भिक्षुओ, पण्डित अच्छे विचार रखता है, अच्छी वाणी बोलता है, अच्छे कर्म करता है। भिक्षुओ, यदि पण्डित अच्छे विचार न रखे, अच्छी वाणी न बोले, अच्छे कर्म न करे तो पण्डित लोग कैसे जानेंगे कि यह जनाव सत्पुरुप पण्डित है। क्योंकि भिक्षुओ, पण्डित अच्छे विचार रखता है, अच्छी वाणी बोलता है, अच्छे कर्म करता है, इसी लिये पण्डित-लोग जान लेते हैं कि यह जनाव सत्पुरुष पण्डित हैं। भिक्षुओ ये तीन पण्डित के लक्षण हैं।"

(8)

"भिक्षुओ, तीन वातो से युक्त को मूर्ख जानना चाहिये। कौनसी तीन वातो से ?

"वह अपने 'दोप' को 'दोप' करके नही देखता, 'दोप' को 'दोष' करके देखकर वह उसका 'प्रतिकर्म' नही करता, यदि कोई दूसरा अपना 'दोप'

स्वीकार करे दो बहुदमे धर्मानुसार शामा नहीं वरता। प्रिसुबी इत तीन वार्दों से मुक्त को मूर्गजानना चाहिसे।

भिष्युको धीन वार्नो से युक्त को पण्डित समझना चाहिये। वीत गी धीन वार्तों से ?

"बह नवते दोव को दोव करक देनता है दार को दाव करके देककर वह उत्तरा प्रति-कर्म करता ? परि कोई दूखरा क्याना दाव स्थीनार करे दो बहु जो प्रमृतुमार शमा करता है। निशुस्तो इन तीन दातों में युक्त को प्रविद्य स्थानना काहिये।

(५)

"मिद्दाओं तीन बानों से युक्त की मूर्च जानना चाहिये। कीननी सीन बाओं से?

अनुभित बंग से प्रस्त पूछनेशामा होता है अनुभित बंग से प्रस्त का छातर हैनेशामा होता है हुए के दिये येथे प्रसाव उत्तर का परिस्तरक पर-ध्यन्तर्गी है रक्ष-पुस्त राह्मां है हो सुनीवन करने वाका नही होता। भिगुलो इन तीन प्रमों है प्रस्तु की मुखं बालाग पाहिये।

"मिध्यूजो तीन वार्तों से युक्त को पण्डित ज्ञानना चाहिये। कीनसी तीन वार्तों से?

स्तित बंग से प्रस्त पूछने वाला होता है तथित बंग से प्रस्त का उत्तर देनेबाला होता है पूसरे के दिये गर्व बचार्च उत्तर दा परितासक पर-काशनों से स्वेब-युक्त समार्थ से बर्गुनोधन करने वाला होता हैं। विश्ववी इन तीन समों से कुक्त को पश्चित काला वाहिये।"

> (६) भिस्तको तीन कालो से युक्त को मूर्च कानना चाहियो।

तीन नको थे ?

बहुत्यक साधिरिक-कर्म थे बहुत्यक नाजी के कर्म थे तजा अपूर्णक मनके कर्म थे। भिक्तको इन तीन नाजी थे सक्त भूको होता है।"

निस्त्रों तीन वातों से मुक्त को पश्चित वानना वाहिसे। कौनसी

धीन वार्तों से ?

" कुराल शारीरिक-कर्म से, कुराल वाणी के कर्म से, कुराल मन के कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन वातों से युक्त को 'पण्डित' जनना चाहिये।"

(७)

"भिक्षुओ, तीन बातो से युक्त को 'मूर्ख 'जानना चाहिये। कौनसी जीन वातो से ?

"सदोष शारीरिक-कर्म से, सदोष वाणी-कर्म से, सदोप मनोकर्म से युक्त को ।"

"भिक्षुओ, तीन बातो से युक्त को 'पण्डित' जानना चाहिये। कौनसी तीन बातो से ?

"निर्दोष शारीरिक-कर्म से, निर्दोष वाणी-कर्म से, निर्दोष मनो-कर्म से ।"

(८)

"[भिक्षुओ, तीन बातो से युक्त को 'मूर्ख 'जानना चाहिये। कौनसी तीन बातो से ?

"बुरे शारीरिक कर्म से बुरे मनो-कर्म से . ।"

"भिक्षुक्षो, तीन बातो से युक्त को 'पण्डित 'जानना चाहिये। कौनसी तीन बातो से ?

"अच्छे शारीरिक-कर्म से अच्छे मनो-कर्म से ।"

"भिक्षुयो, इन तीन वातो से युक्त को 'पण्डित' जानना चाहिये।

" इसिल्ये भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये, जिन तीन-धर्मों से युक्त आदमी मूर्ख समझा जाता है उन तीन धर्मों को त्याग कर तथा जिन तीन-धर्मों से युक्त आदमी पिष्टत समझा जाता है उन तीन धर्मों से समन्वित होकर रहेंगे।

"भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये।"

(9)

"भिक्षुओ, इन तीन बातों से युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुप अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निन्दनीय होता है और बहुत अपुण्य का, हेतु होता है।"

" कौनसी तीन वातों से ?"

" धारीरिक दुष्कर्म से वाजी के दुष्कर्म से तवा मनके दुष्कर्म से ।

"मिश्रुओं इस टीन बार्टों से मुक्त सूर्व अवस्थ्य अवस्था होता है सबोप होता है विजयुक्यों बारा शिन्दगीन होता है और बहुत बपुष्प का

हेत होता है। "भिज्ञानो तीन नातों से मुक्त पश्चित स्थक्त सत्पुरव गुणी होता है निवॉप होता है विजयुक्तो बारा प्रवस्तीय होता है और बहुत पूम्य का हेनू होता है।"

कौनसी बीन बार्वों से ? बारीरिक सुम-तर्म से वाजी के सूध-कर्म से तथा मन के लुग कर्म से।

भिक्षमो इन तीम बाठों से यक्त पश्चित व्यक्त सत्पुरप मुनी होता है निवाल होता है। निज्ञ पुरुषो हारा प्रचसनीय होता है और बहुत पुष्प का हेतु होता है।

भिक्षमों सीन बस्तो से मुक्त (भादमी) विनासीन मकोँ ना स्याप किये नरक में बाक दिये गये के समान होता है। कौनमी सीम वार्तों से ?

इस्बील होता है तवा उसका दुस्सीलता स्थी मल नप्रहीन होता है; देवील होता है तका उसका देवींक्यी मल अप्रहीन होता है मारसर्थ-युक्त हाता है तना जसका मारगर्थ-मुक्त मक वप्रद्वीण होता है। धिश्रुको इन तीन अमों से बक्त (मादमी) विना तीन मलो ना त्वाग किये नरक में बात विने क्ये के समान होता है।

भिज्ञों तीन बातों से मुक्त (बादमी ) तीम मको का त्याय कर स्वर्म में बाल दिये क्ये के समान होता है। कौनसी तीन वार्तों से ? सदाचारी होता है दुराचार रूपी सम्म परित्यक्त होता है ईर्पी-रहित होता है देवों क्यों मक परित्यक्त रहता है मास्सम्में-रहित होता है मास्सम्में क्यी नक परित्यक्त होता है।

भिक्तको इन तीन वानो से यक्त (बादमी) तीन मनों का त्याग कर स्वर्ग में डाल दिये गये के समान डोता है।

(11)

भिस्त्रको जीन बाठा में मुक्त प्रसिद्ध मिख् बहुत बनो का अहित करता है. बहुत जना के अनुस्र का नारन होता है। बहुत जनो के बनर्व तमा बहित का कारण होता है और देव-मन्त्यों को इस देता है। कीन ती धीन बानो से?

"प्रतिकूल घारीरिक-कर्म करता है, प्रतिकूल वाणी का कर्म करता है, प्रतिकूल मनो-कर्म करता है। मिक्षुओ, उन तीन वातों से युक्त प्रनिद्ध मिक्षु बहुत जनों का अहित करता है, बहुत जनों के अमुख का कारण होता है, बहुत जनों के अनुध का कारण होता है।"

"मिक्षुओ, तीन बातो से युवन प्रसिद्ध मिक्षु बहुत जनो का हित करना है, बहुत जनो के सुख का कारण होता है, बहुत जनो के अर्थ तथा हित का कारण होता है और देव-मनुष्यो को मुख देता है। कौनमी तीन बातो से ?

"अनुकूल शारीरिक-कर्म करता है, अनुकूल वाणीका कर्म करता है, अनुकूल मनो-कर्म करता है। भिक्षुओ, उन तीन वातो मे युक्त प्रसिद्ध भिक्षु वहुत जनो का हित करता है, वहुत जनो के सुख का कारण होता है, वहुत जनो के अर्थ तथा हित का कारण होता है और देव-मनुष्यों को सुख देता है।"

# (१२)

"भिधुओ, ये तीन वार्ते राज्यभिषिक्त क्षियिय राजा को जन्म भर याद रहती है। कौनमी तीन वार्ते?

"भिक्षुको, जिम जगह राज्यभिषियत क्षत्रिय राजा जन्म ग्रहण करता है, भिक्षुओ, यह पहली वात है जो राज्याभिषियत क्षत्रिय राजा को जन्म भर याद रहती है।

"फिर भिक्षुओ, जिस जगह राज्याभिपिक्त क्षत्रिय राजा का राज्याभिपेक होता है, भिक्षुओ यह दूसरी बात है जो राज्याभिपिक्त क्षत्रिय राजा को जन्म भर याद रहती है  $^{\circ}$ 

"फिर भिक्षुओ, जिस जगह राज्याभिषिक्त क्षत्रिय राजा सग्राम जीत कर, विजयी होकर, विजय के उमी स्थान पर रहता है, भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो राज्याभिषिक्त क्षत्रिय राजा को जन्म भर याद रहती है।

"भिक्षुको, ये तीन वातें राज्याभिषिक्त क्षत्रिय राजा को जन्म भर याद रहती है ।"

"इसी प्रकार भिक्षुको, ये तीन वातें भिक्षु को जन्म भर याद रहती है। कौनसी तीन वातें ?

"भिक्षुओ, जिस जगह मिक्षु वाल-दाढी मुंडवा, कापाय वस्य पहन, घर से वे-घर हो प्रव्रजित होता है, भिक्षुओ, यह पहली वात है जो मिक्षु को जन्म भर याद रहती है।



"भिक्षुओ, राज्याभिषिक्त क्षत्रिय राजा होता है। वह सुनता है कि अमुक नाम का क्षत्रिय क्षत्रियो द्वारा क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त हुआ है। उसके मन में यह नही होता कि मुझे भी क्षत्रिय कव क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त करेंगे। यह किस लिखे? भिक्षओ, अनिषेक से पूर्व की इसकी अभिषेकाशा पूरी हो चुकी है। भिक्षुओ, ऐसा (आदमी) विगताशा आदमी कहलाता है।

"भिक्षुओ, इस लोक में यह तीन प्रकार के आदमी है। इसी प्रकार मिक्षुओ, भिक्षुओ में भी तीन प्रकार के भिक्षु है। कौनसे तीन प्रकार के ?

" निराश, आशावान तथा विगताशा।

"भिक्षुओ, निराश भिक्षु किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक भिक्षु दुग्जील होता है, पापी, अपवित्र, सशकित, अशुभ-कर्मी, अश्रमण होता हुआ श्रमण-प्रतिज्ञ, अत्रह्मचारी होता हुआ व्रह्मचर्य्य-प्रतिज्ञ, भीतर से सडा हुआ, रागादि से भीगा हुआ, रागादि कूडे से समन्वित। वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्रवो का क्षय करके, अनास्रव चित्त-विमोक्ष, प्रज्ञा-विमोक्ष को इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मन में यह नही होता—में भी कव आस्रवो का क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमोक्ष, प्रज्ञा-विमोक्ष को इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार कर्लेगा। भिक्षुओ, ऐसा (भिक्षु) निराश भिक्षु कहलाता है।

"भिक्षुओ, आशावान् भिक्षु किसे कहते हैं ?

"भिक्षुओ, भिक्षु सदाचारी होता है कल्याण-धर्मी। वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्रवो का क्षय करके, अनास्रव चित्त-विमोक्ष, प्रज्ञा-विमोक्ष को इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मन में यह होता है—में भी कव आस्रवो का क्षय कर विहार करूँगा।

"भिक्षुओ, ऐसा (भिक्षु) आशावान् भिक्षु कहलाता है।

"भिक्षुबो, विगताशा भिक्षु किसे कहते हैं ?"

"भिक्षुओ, एक (भिक्षु) क्षीणास्त्रव अर्हत होता है। वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्रवो का क्षय कर विहार करता है। उसके मन में यह नही होता—में भी कब आस्रवो का क्षय कर विहार करूगा। यह किस िंगे भिक्षुओ, मुक्त होने से पूर्व की इसकी मुक्त होने की आशा शान्त हो चुकी है।

फिर मिसूबों विस बगह मिसूको यह कुचा है इसका सवार्ष जान हो बाता है यह कुच-सुदार है इसका सवार्ष जान हो बाता है, यह कुच-रिरोध है, इसका सवार्य-सान हो बाता है यह निरोध-सामिती-प्रतिपदा है इसका सवार्य-जान हो बाता है विससों यह इसके बात है वो निया को बनम सर यह रहती है।

"फिर मिनुको निस जगह मिनु सामने का सम करके, सवामन निस्त-नित्तृति का प्रसानमृत्ति को इसी क्योर में स्वयं बाल कर, साताक कर, प्राप्त कर, प्राप्त कर, नित्तृति का प्रसानमृत्ति को इसी क्योर में स्वयं बाल कर, साताक कर, प्राप्त कर, निक्षार करता हैं मिलुका यह तीवरी बात है वो मिनु को बन्स पर माद रहती हैं।

( ? ? )

"मिलुओं कोक में तीन क्षर्य के सादमी है। कौनसे तीन करह के हैं निरास आधानान तथा विगताचा।

भिक्षको नियस **बादमी किसे क**हते हैं ?

ामसूचा नायन जात्या विका कहुत है!

मिसूची एक वास्ती गीच-कुल में अगम पहण करता है यदिव-कुल में
जगम प्रहण करता है जरून वास्ती गीच-कुल में अगम प्रहण करता है वह किताहै ते
बाता-पीता मिक्सा है जैसे चरवास कुल में ह्वामिक्स-कुल में जंग-कोशो के
कुल में जाता के कुल में मालियों के कुल में। यह दुवंच होता है दुवंदीनीय
सला रोच-बहुल काना कहा कावाय परधानात हुवा हो। यह जनवनाति मिल्सी है न वहन मिल्सी है न सावा-प्या-विकेशन मिल्सी है न देखा पिल्सी है न तिवात-काति मिल्सी है न माता-प्य-विकेशन मिल्सी है न देखा पिल्सी है न तिवात-काति मिल्सी है नौर न प्रदीप मिल्सी है। वह
धुनता है कि बहुल मान के शवित का साविधी हारा राज्योप मिल्सी है। वरते
पत में यह नही होता कि मुझे मी सनिय कर साविधामिपिक है निर्माण करेते—
सिल्झों रेखा (बारमी) निरास बारमी कुल्ला है।

एसा (कारमा) । नरास कारमा कृड्कारा है ! भिस्तों भाषा-वान कारमी किसे कडते है ?

सिस्को चन्यापियिक्त कानिय चना का क्येच्य पुत्र होता है कथियेत्व हैं कर्तापियक बायु-प्राप्त । वह मुन्ता है बमुक गाम का शनिव शनियों डाउ क्रविया-प्रियेक के अभियाक्त हुवा है। जसके मन में यह होता है कि शनिव मुझे भी क्व स्वियापियेक से अभियक्त करने ? जिस्को ऐसा (बादमी) जाधानान् बादमी शहुकाश है।

विदाला विपराधा बादमी किसे कहते हैं ?

"भिक्षुओ, राज्याभिषिक्त क्षत्रिय राजा होता है। वह सुनता है कि अमुक नाम का क्षत्रिय क्षत्रियो द्वारा क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त हुआ है। उसके मन में यह नही होता कि मुझे भी क्षत्रिय कव क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त करेगे। यह किस लिखे? भिक्षओ, अनिषेक से पूर्व की इसकी अभिषेकाशा पूरी हो चुकी है। भिक्षुओ, ऐसा (आदमी) विगताशा आदमी कहलाता है।

"भिक्षुओ, इस लोक में यह तीन प्रकार के आदमी है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षुओ में भी तीन प्रकार के भिक्षु है। कौनसे तीन प्रकार के ?

"निराश, आशावान तथा विगताशा।

"भिक्षुओ, निराश भिक्षु किसे कहते हैं ?

"भिक्षुओ, एक भिक्षु दुश्शील होता है, पापी, अपवित्र, सशकित, अशुभ-कर्मी, अश्रमण होता हुआ श्रमण-प्रतिज्ञ, अन्नह्मचारी होता हुआ न्नह्मचर्य-प्रतिज्ञ, भीतर से सडा हुआ, रागादि से भीगा हुआ, रागादि कूडे से समन्वित। वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्रवो का क्षय करके, अनास्रव चित्त-विमोक्ष, प्रज्ञा-विमोक्ष को इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मन में यह नही होता—में भी कव आस्रवो का क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमोक्ष, प्रज्ञा-विमोक्ष को इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करूँगा। भिक्षुओ, ऐसा (भिक्षु) निराज्ञ भिक्षु कहलाता है।

"भिक्षुओ, आशावान् भिक्षु किसे कहते हैं ?

"भिक्षुओ, भिक्षु सदाचारी होता है कल्याण-धर्मी। वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्त्रवो का क्षय करके, अनास्त्रव चित्त-विमोक्ष, प्रज्ञा-विमोक्ष को इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मन में यह होता है—में भी कब आस्रवो का क्षय कर विहार करूँगा।

" भिक्षुओ, ऐसा ( भिक्षु ) आशावान् भिक्षु कहलाता है ।

"भिक्षुओं, विगताशा भिक्षु किसे कहते हैं ?"

"भिक्षुओ, एक (भिक्षु) क्षीणास्रव अर्हत होता है। वह सुनता है कि समुक भिक्षु आसर्वों का क्षय कर विहार करता है। उसके मन में यह नही होता—में भी कब आस्रवों का क्षय कर विहार करूगा। यह किस लिये? भिक्षुओ, मुक्त होने से पूर्व की इसकी मुक्त होने की आशा शान्त हो चुकी है। "भिक्षुओ ऐसा (भिजु) विगतासा भिजु कहरूता है। भिजुओ भिजुलों में ये तीन प्रकार के भिक्षु है।

(4A)

"भिभूनो को कक्तर्यी धार्मिक धर्म-राजा होता है वह भी राजा-विद्योग होकर करूनर्यी राज्य नहीं करता।

पेसा कहते पर एक मिल्नुने भववान् से यह कहा— "भन्ते आर्मिक वक्कर्ती अर्म-राजाका राजाकौन ?

भिस् । धर्मही राजाहै। जाने भयनानृते कहा---

"हे मिला । सामिक चकतर्ती अर्म-एका समें के ही किये अर्म का सल्कार करते हुए, समें के प्रति गीरण प्रविद्य करते हुए, समें की पूरा करते हुए, समे-कर, समीमिश्त चतरा की मानिक सरला की स्थारना करता है।

"है सिम्हां बौर किर, धार्मिक करूरों धर्म-राजा धर्म के ही किसे धर्म का तत्कार करते हुए, धर्म के प्रति चौरण प्रविच्छ करते हुए धर्म की पूजा करते हुए, धर्म-व्यक्ष धर्म-केन्द्र, धर्माधियार सामियों की अनुपूत्त्व सामियों की दोना की बाह्य-सूत्रदियों की निवन-वनपद के कांगों की समल बाह्यों की तथा पश्च-रिजाों की सुरक्षा करता है।

है सिन्द्री यह शासिक राजा जकतर्ती बार्मिक सुरक्षा की व्यवसाम करके व्यवस्थि की पणुपनियों की धर्मानृहार ही (उपय) जक का प्रमृत्त करणा है। यह यक किसी क्षय मनुष्य हाए किसी धर्मु हाए प्रमृतिक नही होणा।

इसी प्रकार है पिसू ! सम्पन सम्बुद सईत तनामत सामिक धर्म राजा बर्म के ही किये वर्म का सकार करते हुए, धर्म के प्रति गौरव प्रवर्धित करते हुए, धर्म की पूजा करते हुए, बर्म-क्जर धर्म-क्जु, धर्माध्यस्य सारीतिक-वर्म के प्रति सामिक पहेरारी की स्वरत्या करते हैं—स्व प्रकार का सारीतिक-कर्म करना चाहिये इस प्रकार का सारीतिल-कर्म नहीं करना चाहिये।

भीर किर भित्र | सन्यक्त सन्दृष्ट नहुँग समाग्र सामिक धर्मराजा धर्म के ही किये धर्म जा सरकार करते हुए, धर्म के प्रति भीरक प्रयोधित करते हुए, धर्म की पुत्रा करते हुए, धर्म-स्वत धर्म-केनु, धर्माधियस बाजी के कर्म के प्रति वाणी या कर्म करना चाहिये, इस प्रकार का वाणी का कर्म नही करना चाहिये। मन का कर्म करना चाहिये, मन का कर्म नही करना चाहिये।

"हे मिक्षु वह सम्यक् सम्बुद्ध अहंत, तथागत, धार्मिक, धर्मराजा धर्माधिपत्य पहरेदारी की व्यवस्थाकर धर्म मे ही अनुत्तर धर्म-चक्र का प्रवर्तन करता है। उन धर्म-चक्र को लोक में न कोई दूसरा श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार और न कोई और प्रवर्तित कर सकता है।"

# (१५)

एक समय भगवान् वाराणभी (वनारम) में ऋपिपतन मृगदायमें विहार करने थे। वहाँ भगवान् ने भिक्षुओं को सम्बोधित किया---

" भिक्षुओ <sup>।</sup> "

" मदन्त" कह उन निक्षुओं ने भगवान् को प्रतिवचन दिया। भगवान् ने यह कहा---

"भिक्षुओ । पूर्व समय में प्रचेतन नाम का राजा हुआ था। निक्षुओ । तब राजा प्रचेतन ने रथकार को बुलाकर कहा—

"सौम्य रथकार । छ महीनो के वाद सग्राम होना। नया तू इस वीच (रथ के) पहियो की नई जोडी बना सकेगा?"

> "भिक्षुओ, रथकार ने प्रचेतन राजा को प्रत्युत्तर दिया— "वना सक्ता।"

"तव भिक्षुओ, रथकार ने छ दिन कम छ महीने में एक पहिया बनाया। तब भिक्षुओ, राजा प्रचेतन ने रयकार को सम्बोधित किया—

"सौम्य रथकार । आज से छ दिन के बाद सग्राम होगा, नये पहियो की जोडी बनकर तैयार हुई ?"

"देव<sup>।</sup> इन छ दिन कम छ महीनो में एक पहिया वन कर तैयार हुआ है।"

"सीम्य । इन छ दिनो में दूसरा एक पहिया वना सकोगे ?"

"भिक्षुओ, रथकार ने प्रचेतन राजा को उत्तर दिया-

"देव<sup>।</sup> बनासकूँगा।"

"२ तब पिशुको रक्कार ने छ कियों में दूसरा पहिसा तैयार किया और इस पहिलों की नई जोड़ी को लेकर नहीं राजा प्रवेतन या वहाँ शया। बाकर उस ने राजा प्रवेतन को सह वहां -

**"देद!** सह जापकी पहिसों की आ क्वी तैसार है। ″

"सीम्ब रक्कार! यह जो एक पहिचा तूने छादिन क्या का नहीनों में तैयार किया और यह जो दूसरा पहिचा छादिनों में तैयार किया इन दिनों में क्या अन्तर हैं? में इन दोनों में कोई मेद नहीं देसता?"

् संदेग पाना पंचाद भय गरा देखार - देवां इन दोतों में मल्तरही । देवां इन दोतो ना मल्तरदेखें । ‴ " मिशमा तब स्पदार ने ए: दिन में दत्रे हुए परिये को चानुविया ।

हाने ही लहुनदा कर वसीन पर गिर पहा। तब उस ने वो पहिला का दिन बन छ महीन में बनाया ना बने नाल किया। नालू शिया हुना नह पहिला विननी खोर में धरेला गया था उम और नी गल के अनुसार बाहर धुंछै पर दिना की तरह लड़ा हा गया। लीख रक्तरारं देश ना नवा है हु में नवा नारण है कि जो यह छा दिन में बना हुना परिवार के सिननी और में बनेना गया था उन और के गयान्य होने ही लड़ानहा नर जनीन पर गिर पहा और जो नरिया छा दिन नम छ महीने

में तैष्यार हुता वह परिया जिनती जोर से सकेचा बया वा उस बोर के अनुसार

बात दिया हुआ वह पहिया जिल्ही और में घडेला गया बा बन और के समाप्त

की नेमी के भी सीधे, निर्दोष तथा कसर-रिहत होने से, उस के आरो के भी सीधे, निर्दोष तथा कसर-रिहत होने से, उसकी नाभी के भी सीधे, निर्दोष तथा कसर-रिहत होने से यह जो पिहया छ दिन कम छ महीने में तैय्यार हुआ वह पिहया जितनी जोर से धकेला गया था उम जोर के अनुसार धुरी पर स्थित की तरह खडा हो गया।

"भिक्षुओ, सम्भव है कि तुम यह सोचो कि वह रथकार कोओ दूसरा ही था। मिक्षुओ, यह वात इम प्रकार नहीं समझनी चाहिये। मैं ही उस समय वह रयकार था। उस समय में लकडीके टेढे-पन, लकडीकी कसरे दूर करनेमें कुशल था। इस समय भिक्षुओ, में अरहत सम्यक् सम्बद्ध, शरीर मन तथा वाणीके टेढे-पन, दोप और कसरोको दूर करनेमें कुशल हूँ।

"भिक्षुओ, जिस किमी भिक्षु वा भिक्षुणी के शरीर, वाणी तथा मन का देढापन, दोप तथा कसर दूर नहीं हुओं हैं वे इस धर्म-विनय से उसी प्रकार गिरे हैं जैसे वह छ दिनों में बना हुआ पहिया।

"भिक्षुओ, जिस किसी भिक्षु या भिक्षुणी के शरीर वाणी तथा मन का टेढ़ापन, दोष तथा कमर दूर हो गई है, भिक्षुओ, वे भिक्षु तथा भिक्षुणियाँ इस धर्मं-विनय में उसी प्रकार प्रतिष्ठित है जैसे छ दिन कम छ महीने में वना हुआ पहिया।

"इस लिये भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये गरीर वाणी तथा मन के टेढेपन, दोषो और कसरो का त्याग करेगे। भिक्षुओ, ऐसा ही सीखना चाहिये।"
(१६)

"भिक्षुओ, तीन वातो से युक्त भिक्षु अप्रतिकूल-प्रतिपदा का अनुगामी होता है और उसका जन्म आस्रवों के क्षय में लगा होता है। कौनसी तीन वातो से ?

"भिक्षुओ, भिक्षु इन्द्रियो को सयत रखता है, भोजन में मात्रज्ञ होता है, जाग्रत रहता है।

"भिक्षुओ, इन्द्रियो को किस प्रकार सयत रखता है?

"भिक्षुओ, भिक्षु चक्षु से रूप देखकर न उसके निमित्त को ग्रहण करता है औन न उसके अनुव्यजन को, जिस चक्षु-इन्द्रिय के असयत रहने से लोभ-दौर्मनस्य आदि पापी अकुशल धर्मों की उत्पत्ति हो सकती है, उसे सयत रखने का प्रयास करता है, चक्षु-इन्द्रिय को रक्षा करता है, चक्षु-इन्द्रिय को सयत रखता है, चक्षु-इन्द्रिय को स्था

नाय संस्पर्ध नर तथा मन से पान के विषया का सहस नर न जन के मिसला को सहस करना है जोर न उनके अनुस्थानन को जिस मन इंटिंग के बसंसद रहन से सीमानीमेनस्य साथि पाने अनुस्थान्यों को उन्पत्ति ने मनदी है वसंसद रखने का प्रयास नरता है अन इंटिंग की परा नरना रे मन इंटिंग को देवद रखनों है। मिलुझा इस अन्यर मिस्सु इंटिंग को गरना रखना है।

मिश्रुजो भिद्यु माजन में कैसे माजब शादा है?

"मिजुको मिलु झानपूर्वक ठीक स बाहार प्रहम करना ? न सवाक के किसे न सब के किसे न प्रधीर की समित्रक करने के किसे सीर न किसूनित करने के किसे न प्रधीर की स्थित है उब उक्त चन बनाये रचने के किसे विहिंगा कि विराद रहने के किसे प्रधा बहाजमाँ पर बनुषह करने ने जिस तानि पूरानी वेदना का संहार हो गई बेदना की उत्तरित न हो और पिरी (औवन) साथा निवास तवा बागुनिया-रहित हो। इस प्रचार मिजुको मिस मानव के विरास में मानव होता है।

भिज्ञा निक् वायत कैये रहता है ?

"मिज्ञा मित् दिन में जनगण करता रह कर वस्त्रा बंध रह कर मन के मैकों को दूर करता है राठ के प्रकार गहर में जनगण करता हुता स्थान में के में दे कर करता है राठ के प्रकार गहर में प्रकार करता हुता स्थान में अर्थ हुत स्थान है स्थान के में के पहर में पैर पर पैर राजकर वाहिनी करवट पिंह-मैचा भटता है जागकराज्ञांक उठने के मंत्रक को मन में बाद कर, एनि के पिक्रमें पहर में उठकर पत्रमाम करता हुता नवार बैठा हुता मन के मैको को दूर कर्या है। मित्रो है राजकर प्रकार प्रकार राज्ञा है। किया की दिन में स्थान में का मारी प्रमाण मित्रु सामित्रकरमीयपर का सनुवासी होता है सौर उचकर पत्रमा समयों के सन में बना होता है।

(१७)

"विष्णुको इन तीन बातो से अपना भी अहित होता है इसरोका भी अहित होता है योनो ना भी अहित होता है। कौनती तीन बाता से?

"सारीरिक दुरवरिजवासे वाचीकी दुरवरिजवासे तवा मन की दुरवरिजवासे। सिस्तुओ, बन तीन बावा से अपना भी अहित होता हैं दूसरों का भी अहित होता हैं दोनों का भी अहित होता हैं। -- "भिक्षुओ, तीन वातो से न अपना अहित होता है, न दूसरो का अहित होता है और न दोनोका अहित होता है। कौनसी तीन वातो से ?

"शारीरिक सच्चरित्रता से,वाणीकी सच्चरित्रतासे तया मन की सच्चरित्रता से। भिक्षुओ, इन तीन वातों से न अपना अहित होता है, न दूसरों का अहित होता है।"

## (१८)

"भिक्षुओ, यदि अन्य मतो के परिन्नाजक तुम्हे यह पूछे—आयुष्मानो । क्या श्रमण गीतम देव-लोकमें उत्पन्न होने के लिये ब्रह्मचर्य (=श्रेष्ठ जीवन) व्यतीत करता है। तो भिक्षुओ, असा पूछने पर क्या तुम्हे पीडा नही होगी, लज्जा नही आयेगी, घृणा नही होगी ?

"भन्ते । हा।"

"भिक्षुओ, इसमे पहले कि तुम्हे दिव्य-आयु, दिव्य-वर्ण, दिव्य-सुख, दिव्य-यश तथा दिव्य-आधिपत्य से पीडा हो, लज्जा हो, घृणा हो, तुम्हे शारिरीक दुश्चरिच मे, वाणी के दुश्चरित्र से तथा मन के दुश्चरित्र से पीडा होनी चाहिये, लज्जा होनी चाहिये, घृणा होनी चाहिये।"

### (१९)

"भिक्षुओ, जिस दुकानदार में ये तीन वार्ते होती है, वह न अप्राप्त धन को प्राप्त कर सकता है और न प्राप्त धन को वढा सकता है। कौनसी तीन वार्ते?

"भिक्षुओ, जो दुकानदार पूर्वान्ह के समय सम्यक् रीति से अपना कारोबार नहीं करता, मध्यान्ह के समय सम्यक् रीति से अपना कारोवार नहीं करता, शाम के समय सम्यक् रीति से अपना कारोवार नहीं करता। भिक्षुओ, जिस दुकानदार में ये तीन वाते होती है वह न अप्राप्त धन को प्राप्त कर सकता है और न प्राप्त धन को वढा सकता है।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षु में ये तीन वार्ते होती है वह अप्राप्त कुशल-धर्म को प्राप्त नहीं कर सकता, तथा प्राप्त कुशल-धर्म को बढ़ा नहीं सकता।

"कौनसी तीन वार्ते ?

"भिक्षुओ, भिक्षु पूर्वान्ह के समय सम्यक्-प्रकार से समाधि के निमित्त (=मोग-विधि) का अभ्यास नहीं करता, मध्यान्ह के समय सम्यक् प्रकार से समाधि

के निमित्त का अभ्यास नहीं करता साम के समय समाधि के निमित्त का अभ्यान नहीं करता।

" मिस्सी जिस मिस में थे तीन बार्वे होती है वह बबाज पुसस-सर्म को प्राप्त नहीं कर सकता तथा प्राप्त कुसम-सर्मको वहा नहीं सबता।

मिस्तुओं जिल बुधानदार में में तीन बार्ते हाती है वह अप्राप्त धन को प्राप्त कर सकता है प्राप्त धन को बड़ा नकता है। कीतसी तीन वार्ने ?

"मिसूनो जो दुकानदार पूर्णान् के समय सम्बद्ध रिविने जरना कारोबार करता है मध्यानद् के समय सम्बद्ध रिवि है जरना कारोबार करता है जरधन्त्व के समय सम्बद्ध रिवि है सरना कारोबार करता है। मिसूनो दिस दुकानदार में से रीत कार्ते होती है वह जमान्य धन को मध्य कर सकता है यथा मान्य बन को बच्चा करना है।

"हती प्रकार मिशुमों जिल मिशुमें ये तीन कर्ते होती है वह सप्राप्त कुमल मने को प्राप्त कर सदता है प्राप्त नुपाल-मने को वड़ा नकता है। कीन-सी तीन कर्ते?

"सिक्सो पिस् पूर्वान्ह के समय सम्बन्ध से समारिक निमित्त (क्सोम-सिंध) का सम्यास करता है मध्यान्द के समय साम के सबय समाधि के निमित्त का सम्यास करता है। सिक्सो वित विश्व में ये तीन सर्वे होती हैं का समारिक स्वस करों को प्राय कर सहरता है तम मारिक स्थल में के स्वा सरात है।

(२) विसुनों वित दुकानदार में ये दौन क्यों होती है वह घोष्य ही तम्पत्ति भी क्षिकता वा विपन्ता को बारत कर लेता हैं। भीनती तीन करों ?

"एक ठो पुकानदार चनुमान् होता है पूछरे निवृद होता है,डीछरे सामय-यक्त होता है।

"भिनुत्री दुकानदार पक्षमान् की होता है? भिक्षमो, दुकानदार वेचनेके सामानको बानता है कि यह दश मान सरीया हुना है दश दासपर वेचनेके सत्था मुक्क मा बायदा नीर स्तान साम रहेगा। पिस्ती दल प्रकार दुकानदार चनुमान् होता है।

न मिल्लुको पुत्रानदार दिश्वर देखे होता है ?

"भिक्षुओ, दुकानदार वेचनेका मामान गरीक्को में कुमरुकोता है। भिक्षुओ, अस प्रकार दुकानदार विधुर होता है।

"भिक्षुओं, दुकानदार आश्रय-युगत की होना है ?

"भिक्षुओं, जो श्रीमान् महाधनवार तथा महासम्पत्तिनाली गृहपित वा गृहपित-पुत्र हैं वे उनके बारे में जानते हैं कि यह दुकानबार पध्युमान् है, विधुर हैं, पुत्र-स्त्री का पालन करनेमें समयं है तथा समय-समय पहारे हमारे धन का सूद या लाभ देने में समय है। वे उसे सम्पत्ति देते ह कि सौम्य । यहा से यह सम्पत्ति के जा, पुत्र-स्त्री का पोपण कर तथा समय-समय पर हमें भी सूद या लाभ दे। भिक्षुओं, इस प्रकार दुकानदार आश्रय-युक्त होता है।

"इस प्रकार गिध्युओ,जिस भिध्यु में ये तीन वार्ते होती है वह शीघ्र ही कुराल-धर्मों में महातता वा विपुलता प्राप्त कर लेता है। कौनसी तीन वार्ते ?

"भिक्षुओ, भिक्षु चक्षुमान् होना है, विद्युर होता है तया आशय-युक्त होता है।

"भिक्षुओ, मिध्रु चक्षुमान् किस प्रकार होता है ?

"भिक्षुओ, भिष्तु यह दु ख है इसे यथार्थ रूप मे जानता है यह निरोध की ओर रू जाने वाला मार्ग है इसे यथाय रूप मे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चक्षुमान् होता है।

"निक्षुओ, भिक्षु विद्युर किम प्रकार होता है ?

"भिक्षुओ, भिक्षु अकुशल-धर्मोका नाम करने के लिये तथा कुशल-धर्मों के उत्पादन के लिये प्रयत्नशील होता है, मामर्थ्यवान् होना है, दृढ पराक्रमी होता है। उसने कुशल-वर्मो का जुआ कन्धे पर धारण किया होता है। भिक्षुओ, भिक्षु जिम प्रकार विधुर होता है।

"भिष्नुकों, भिक्षु किस प्रकार आश्रय-युक्त होता हैं? भिक्षुओं, भिक्षु जो बहुश्रुत भिक्षु हैं, जो आगम या शास्त्र के जानकार हैं, जो धर्म-धर हैं, जो विनय-धर हैं, जो मानृका-धर हैं, उनके पास समय समयपर जाकर पूछता हैं, प्रश्न करता हैं — भन्ते। यह कैसे हैं, इसवा क्या अर्थ हैं? उमके लिये वे आयुष्मान ढके को उधाद देते हैं, अस्पष्ट को स्पष्ट कर देते हैं, अनेक प्रकार के सन्दिग्ध विषयों में शका-समाधान कर देते हैं।

"मिश्नुनो इस प्रचार मिन्नु साथय पुनन होता है। प्रिस प्रचार निसुनो दिस भिद्युमें ये तीन बार्ने शेनी है वह सीच ही दुखल-धर्मों में महानता वा नियुक्ता प्राप्त कर सेता है।"

(२१)

ण्या भेने मुना । एक समय भवनात भावस्त्रीसँ स्थाय-विशेषक के वेनजनारसमने विशाद करने थे। आयुम्मान् गान्दिक तका आयुम्मान् कौहिटत बहुं स्थापन् मारिपुत्र प बहुं पहुँव। जाकर बायुम्मान् मारिपुत्र के साव गुणक-सेमरी यातकीत की एक और भी हुने आयुम्मान् मनिद्दा आयुम्मान् सारिपुत्र ने यह बहु —

आयुष्पान् गारिपुत्र । इस संनारमें तीन प्रसार के सीग है। सीनमें तीन प्रसार से ? सान-गार्ती सिंग्यान तसा अध्यानिस्तान । आयुष्पान् इस गमारमें नीन प्रसार से साम ? । आयुष्पान् इस तीन प्रसार के सीमोर्म से सह अधानिस्तान है सा सी अधिन सम्या जीवा अध्यानिस्तान है। यह दिस तिये ? आयोगान इस आरोपी सी प्रधानिक्ष सम्मती ?।

नव आपुरमान् नारिपुत्र ने आपुरमान् सरावारिपुत्र को बहु करा — आपुरमान् कोरिपुत्र ! इस समारमें नीत प्रवारों रोज है। बोज से नीत प्रवार के ? बाव नागी आपरमान् इस मेंनारमें ने नीत प्रवारके साथ है। आपुरमान् ! इस तीत प्रवारके प्राणाने तुर्हे वीतना प्रवार अधिक अच्छा भवित हैन्द्र वेतना हैन न्य आयुग्मान् महारोद्दिन ने आयुग्मान् मारिगुप्तनी पर पहा—"आपुग्मान् नारिगुप्त । एम समाप्ति जोनो तीन ? नाय-नाधी अप्युष्मान् । इन नमारने ये तीन प्रप्तारों लोग है। आयुग्पाप् । इन तीन प्रपारके रागीमें जो यह पृष्टि-प्राप्त है वह पत्ने अधित अन्हा, अधिक श्रेष्ट जनता है। यर दिस दिये ? इम आदमी वी प्रजा-इन्द्रिय नलगी है। "

न्य अगुष्मान् नारिमुधाः आयुष्मान् नविद्य तया अगुष्मान् महायोद्यत को यह कहा—

"आयुग्मानो । हम त्या अत्मी-अपनी तमझ हे अपूर्णर कहा । आओ, जहा अगवान ते वहा चले । एत जाकर भगवान ने यह बान कहे । फिर जैने हमारे भवदान कहे वैवा स्वीकार को ।"

आयुष्मात् सित्र् तथा आयुष्मात् महाकोह्रित ने आयुष्मात् परिपुत्र को "बहुत अच्छा" रहा । तद आदृष्मात् परिपुत्र, आयुष्मात् सिवर्ठ तथा आयुष्मात् महाकेह्रित जहा नगवान वे वहा प्रे। पात पहुँच रूर, नगदात् को नमस्तार कर एक और वैठे। एक ओर वैठ हुए आदुष्मात् चारिपुत्र हे आयुष्मात् मिवर्ठ तथा आयुष्मान महाकोह्रितके साथ जित्त हि वात-चीत हुओ थी दह सब नगवान् ने निवेदन की।

"सारिपुत्र । एक ओर ने यह वहना कि उन तीन प्रकार के लोगों में यह अधिक अप्डेट है, आजान नहीं है। सारिपुत्र । इसकी सम्भावना है कि जो यह आदमी श्रद्धा-विमुक्त हो। वह अहत्व के मार्ग पर आर इ हो और जो यह आदमी काय-साक्षी है वह सख़दानामी वा अनागामी हो और उसी प्रकार जा यह दृष्टि-प्राप्त है वह भी सकुदानामी वा अनागामी हो।

"मारिपुत्र। एक जार से यह वहना वि उन तीन प्रकारके लोगोमें यह अधिक अच्छा है, यह जिया श्रेष्ठ है, आसान नहीं है। सारिपुत्र। इसकी सम्भावना है वि जो यह आदमी काय-माधी है वह श्रहत्व के मागपर आहढ हो और जो यह आदमी श्रद्धाविषुवत है यह सक्तदागामी वा अनागामी हो और इसी प्रकार जो यह दृष्टि-प्राप्त है वह भी सक्तदागामी वा अनागामी हो।

"सारिपुत्र । एक ओर से यह कर्टना कि इन तीन प्रकार के लोगोमें यह अधिक अच्छा है, यह अधिक श्रेप्ट है, आसान नही है। सारिपुत्र ! इसकी

सम्मानना है कि जो यह जावनी वृष्टि-साप्त है जह सहंत्व के मार्ग पर आकर हो और जो यह सावनी अक्षाविमुक्त हैं वह सहस्वापानी वा जनानानी हो और इसी प्रकार जो यह काय-साक्षी हैं जह भी सहस्वापानी वा जनानानी हो।

"सारिपुत । एक जोर से यह कहना कि इन तौन प्रकार के लोगा में यह अधिक अच्छा है यह अधिक भेष्ठ हैं जासान नहीं है। (२२)

"मिमुनो इस सम्राप्तें तीन वर्षाई के रोनी हैं। कीनसे तीन वर्षाई के?

मिसुनो एक रोगी ऐसा होता है कि चाहे वसे अनुकृत मोजन मिले और चाहे न मिले चाहे वसे अनुकृत बीयक मिले बीर चाहे न मिले चाहे उसे अनुकृत सेवक मिले और चाहे न मिले बह उस रोग से मनत नहीं होता।

भिज्ञां, एक (बूचए) रोनी ऐसा झोता है कि बाहे उस अनुकूत प्रोजन सिके बाहे नि मिछे बाहे उसे अनुकूत बाँचस मिले बाहे नि पिछे बाहे उसे अनुकूत सेवन मिले बाँद बाहे नि मिले बहु उस रोन से मुक्त झोता है।

"भिक्षुबो एक (तीसरा) रोजी होता है कि उन बनुकक सोबन मिले गृही मिले ऐसा गृही बनुकूत बौराय मिले न मिले ऐसा गृही बनुकूत सेवक विभे न मिले एसा गृही बहु उस रोग से मुक्त होता है।

भिश्रुको इत में को यह रोगी है विधे मनुकूत भीवन सिते न मिरे ऐसा तरी भनुकत बीचम सिते न सिते एसा तरी जनुकूत देवक सिते न सिते ऐसा तरी हो तर रोग से मृत्य होता हैं एस ही रोगी के लिये रोगी-सीतन रोगी-सीयम बीर रोगी-तेवक हो स्वरूप करने के लिये हुए गया है। चित्र हुए रोगी के निमित्त से बाय रोगियोकी भी हैसा करनी कियो हुए गया है। चित्र हुए रोगी के निमित्त से बाय रोगियोकी भी हैसा करनी कार्यास । मिस्सी कोट में में सीत तरह के रोगी है।

> र्" इसी प्रकार विश्वको इत्त समार में ये तीन रोकी-समान महुष्य है। तिक?

कीनसे तीन ?

" मिराजी कोई-काई चाहे उसे तकागत का वर्षक मिक्रे चाहे न सिक्ते चाहे तकायत हारा क्यक्टिय धर्म-किनय मुनना मिल्रे चाहे न सिक्ते चह कुसत-

धर्मों में मार्च के सम्बन्धन को प्राप्त नहीं करता। मिसूबों कोई-कोई काई कम तमायत का दर्मत किसे काई व मिले

चाहे तचायत हारा उपस्थि धर्म-विनय मुक्ता मिलः चाहे न मिले वह नुसक्त सर्वो में नार्व के सम्बद्ध को प्राप्त करता है। "भिक्षुओ, कोई-कोई यदि उमे तथागत का दर्शन मिले, नही मिले औसा नहीं, यदि उसे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनना मिले, न मिले औसा नहीं, वह कुशल-धर्मों में मार्ग के सम्यकत्व को प्राप्त करता है।

"भिक्षुओ, जो यह आदमी तयागत का दर्शन मिलने में, न मिलने में नहीं, तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनना मिलने में, न मिलने से ऐसा नहीं, कुशल-धर्मों में मार्ग के सम्यक्तव का लाम करता है, भिध्युओ, इस एक आदमी के लिये धर्म-देशना की अनुज्ञा की गई हैं। भिक्षुओ, इस एक आदमी के निमित्त में दूसरों को भी धर्मोपदेश दिया जाना चाहिये।

> "भिक्षुओ, इस ससार में ये तीन रोगी-समान मनुष्य है।" (२३)

"मिक्षुओ, ससार में तीन तरह के आदमी है। कीनसे तीन तरह के नि "मिक्षुओ, एक आदमी व्यापाद-सहित शारीरिक कर्म करता है, व्यापाद-सिहत वाणीका कर्म करता है, व्यापाद-सिहत मानसिक कर्म करता है। वह सव्यापाद शारीरिक-कर्म करके, सव्यापाद वाणी का कर्म करके, सव्यापाद मानसिक-कर्म करके सव्यापाद-लोक में उत्पन्न होता है। इस प्रकार उस सव्यापाद-लोक में उत्पन्न को सव्यापाद-स्पर्श स्पर्श करते है। सव्यापाद-स्पर्शों से स्पृष्ट हुआ वह सव्यापाद वेदनाओं का अनुभव करता है जो सर्वाश में दुख-स्वरूप होती है जैसे नरक के प्राणी।

" मिक्षुओ, एक आदमी व्यापाद-रहित शारीरिक-कर्म करता है, व्यापाद-रिहत वाणी का कर्म करता है, व्यापाद-रिहत मानसिक-कर्म करता है। वह अव्यापाद शारीरिक-कर्म करके अव्यापाद मानसिक-कर्म करके अव्यापाद-लोक में उत्पन्न होता है। इस प्रकार अव्यापाद-लोक में उत्पन्न हुए हुए को अव्यापाद-स्पर्श स्पर्श करते हैं। अव्यापाद-स्पर्शों से स्पृष्ट हुआ हुआ वह अव्यापाद-वेदनाओ का स्पर्श करता है जो सर्वांश में सुख-स्वरूप है जैसे शुभकीण देवता।

"भिक्षुओ, एक आदमी व्यापाद-सहित भी तथा व्यापाद-रहित भी शारीरिक-कर्म करता है व्यापाद-सहित भी तथा व्यापाद-रहित भी मानसिक-कर्म करता है। वह व्यापाद-सहित भी तथा व्यापाद-रहित भी शारीरिक-कर्म करके

व्यापाद-सहित भी तथा व्यापाद-रहित भी मानसिक कर्म करके व्यापाद-सहित भी व्यापाद-रहित भी लोक में उत्पन्न होता है। इस प्रकार व्यापाद-सहित तथा: स्थापाद पहित कांत्र में उत्पन्न हुए हुए को स्थापाद-व्यक्ति तथा स्थापाद परित स्था त्यां करते हुं। साथापाद तथा श्रम्थापाद स्था है स्पृष्ट हुआ हुआ बह् सम्यापाद तथा अस्थायाद वेदनाओं का स्था करता है को नि मुख-दुक्तमय मिथित होगी है जैसे हुछ मुद्रम्य तथा हुछ विकित्यानिक वेदनय।

भिक्षुको संसार में में तीन करह के कादमी है।"

(74)

"भिजुआ यातीन जन आवसी का बहुत उपकार करवजासे हैं। कौन संनीत जन ?

"निष्युया जिस आसी के नारण आहमी नृद की साम बाता समें की साम जाता तमा राम भी भारी जाता है बहु आहमी उन आसी ना बहुत उपकार करनवासा होता है।

"और निराभी जिन जारं। के वारण जावंगी यह दुगर है देने यवार्ष क्य में जावता / यह कुक्त-निराम के मेर के पार्ववाला मार्ग दे दे के पत्राचेन्य य जातता है जिल्ला वह जावंगी वस जावंगी का करत प्रवास करने वाला होता है।

"किर निमृत्ती जिन सामगी के कारण कोई सामगी सामगा का ध्या बरने इसी सारीपर्व समानाव जिल्लानियुक्ति तथा प्रसानीवयुक्ति को स्वयं जातकर, साधान कर प्राप्त कर विदार करणा ८ वह आध्यो वन सामगी वा बहुत वयसार बरन बाला भीता है।

" मिशुका में तीत वस आपनी ता बहुत करवार करनेवारे है। तिशुकी भ बहता है दि रह तीत करा में महतर भावती वा बंदि करवार करनेवारा गरी है। मिशुकी महि आपनी पत्त तिम बने दे दो बिताद सर्युक्तात हान-माहता मोम्म दिया भीता विश्वात प्रात्मात विश्वत प्राय्य जैतरवजीरवार माहि देवर प्राप्तकार बाला कोरे तो यह चुलगुल्वार तीह होगा।

#### (>+)

भिनुषा संतार ने गीर प्रशेष के लोग है। बीतोर तीत प्रणार के है पूराने क्या के तमान कि र साथ कार रे दिख्यों के नकान जिल्ह पाण बारकी तथा कार्य जनान विल्लाकार प्रणासिक है। "भिक्षुओ, पुराने क्रण के रामान चित्त वाला आदमी कैसा होता है, भिक्षुओ एक आदमी कोधी-स्वभाव का होता है, अस्थिर-चित्त वाला, उसे थोडा सा भी कुछ कहने से वह बात उसे लग जाती है, उसे कोध आ जाता है, वह व्यापाद को प्राप्त हाता है, वह कठोर हो जाता है, दह कोध, द्वेप तथा दीर्मनस्य प्रकट करता है। जैसे पुराना ग्रण लकडी या ठीकरा लग जाने से और भी बहने लग जाता है, इस प्रकार भिक्षुओ एक आदमी कोधी स्वभाव का होता है प्रकट करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुराने ग्रण के समान वित्त वाला आदमी कहलाता है।

"भिक्षुओ, विजली के समान चिन्त वाला आदमी कैसा होता है । भिक्षुओ, एक आदमी यह दुख है इमे यघार्य एप से जानता है यह दुख-िनरोध की ओर रे जाने वाला मार्ग है, इसे ययार्थ-एप मे जानता है। जैसे भिक्षुओ, कोई आंख वाला आदमी विजली-चमकती घोर अघेरी रात में रूप देखे, इसी प्रकार भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी यह दुख है यह दुख की ओर ले जाने वाला मार्ग है, इसे यथार्थ रूप से जानता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी विजली के समान चिन्त वाला आदमी कहलाता है।

"भिक्षुओ, वज्र के समान चित्त वाला आदमी कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी आस्रवो का क्षय करके, इसी धारीर में अनास्रव चित्त-विमुक्ति तथा प्रज्ञा-विमुक्ति को स्वय जानकर, साक्षात् कर, प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, जैसे वज्र के लिखे कुछ भी अभेद्य नहीं हैं, चाहे मणि हो, चाहे पाषाण हो, इसी प्रकार भिक्षुओ, एक आदमी आस्रवो का क्षय कर प्राप्तकर विहार करता है भिक्षुओ, ऐसा आदमी वज्र के समान चित्त वाला आदमी कहलाता है।

" मिक्षुओ, इस ससार में ये तीन प्रकार के लोग है।" (२६)

"भिक्षुओ, लोक में तीन तरह के लोग है। कौन से तीन तरह के ? भिक्षुओ, ऐसा आदमी होता है, जिमके साथ न रहना चाहिये, न सगत करनी चाहिये, न साथ उठना-चैठना चाहिये। भिक्षुओ ऐसा आदमी होता है जिसके साथ रहना चाहिये, सगत करनी चाहिये, साथ उठना-चैठना चाहिये। भिक्षुओ, ऐसा आदमी होता है जिस की गौरव-पूर्वक, आदर पूर्वक (सेवा करते) हुओ साथ रहना चाहिये, सगत करनी चाहिये, साथ उठना-चैठना चाहिये।

" पिसुनो वह भावमी कैसा होता है जिसके साथ न रहना चाहिये न स्थंयत करनी चाहिये न साथ उठना-बैठना चाहिये ?

" भिजुनो एक नावमी धीक समाधि तथा प्रज्ञा स हीत होता है। मिजुनो उस पर बया या बनुकम्मा करने की स्थिति को डोडकर न उस के साथ रहना चाहिये, "म संबद करनी चाहिये म साथ उठना-बैठना चाहिये।

भिजुमी नह मादमी कैंसा होता है चितके साम रहना चाहिमें संगठ करनी चाहियें साम उठना-बैठना चाहिमें ?

पिशुकों एक मारवी बीक समाधि तथा प्रता में अपने जेशा होता है।
ऐसे बावनी के साथ खुना चाहिने स्थात करनी चाहिने साथ उठना-बैठना चाहिने
यह किस किमें ! सब्दान-सील बाकों के साथ सील-कवा आरम्म होगी सील-कवा
आरी रहेगी और उस से हमें मुख मिलेगा सबुक-समाधि बालों के साथ समाधि कवा आरम्म होगी समाधि-कवा बारी रहेगी और उस से हमें सुख मिलेगा सब्दा प्रता बानों के साथ माधि-कवा बारी रहेगी और उस से हमें सुख मिलेगा सब्दा प्रता बानों के साथ माधि-कवा बारी प्रता करनी चार स्वरा चाहिने स्वरा करनी चाहिन साथ उठना-बैठना वाहिने।

निस्तुओं बह बादमी कैसा हाना है जिस की नौरसपूर्वक आवरपूर्वक (सेसा करते हुए) मार्थ रहना चाहिये संनद करनी चाहिये साब उठना-बैटना चाहिये?

ंभिशुमों एक बादमी शीक तथा समाधि में अधिक होता है। ऐसे जाएमी की औरम-पूर्वक नार-पूर्वक (देवा करते हुए) साथ रहमा व्यक्ति वाहियों करते करते हुए। साथ रहमा व्यक्ति करते की किये? में अविष्युर्व सीत करते की विष्युर्व के में अविष्युर्व कराम विष्युर्व की विष्युर्व के परिपूर्व कराम परिपूर्व किया में प्रका से बुद करमा अविष्युर्व कर्मामीय-करण को परिपूर्व कर्ममा परिपूर्व कर्ममा वाहियुर्व कर्ममा कर्मापुर्व कर्मापुर्व कर्ममा कर्मापुर्व कर्ममा कर्मापुर्व कर्ममा कर्मापुर्व कर्ममा कर्मम

"शिवाबो, सोक में वे तीन तरद के शोप है।

निहीयति पुरिमो निहीनसेवी न च हायेथ कदाचि तुल्यसेवी सेट्ठे उपनम उदेति खिप्प तस्मा अत्तनो उत्तर्रि भजेथ।

[अपने से हीन आदमी की सगित करने वाला स्वय हीन हो जाता है, समान की सगित करने वाला कभी ह्नास को प्राप्त नहीं होता। अपने से श्रेष्ठ की सगित करने वाला शीघ्र ही उन्नत होता है। इस लिये अपने से श्रेष्ठ की ही सगित करनी चाहिये।]

(२७)

"भिक्षुओ, लोक में तीन तरह के लोग है। कौन से तीन तरह के? मिक्षुओ, ऐसा आदमी होता है जो घृणा करने योग्य होता है, जिसके साय न रहना चाहिये, न सगत करनी चाहिये, न साथ उठना-वैठना चाहिये। भिक्षुओ, ऐसा आदमी होता है जो उपेक्षा करने योग्य होता है, जिसके साथ न रहना चाहिये, न सगत करनी चाहिये, न साथ उठना-वैठना चाहिये। भिक्षुओ, ऐसा आदमी होता है जिसके साथ रहना चाहिये, सगत करनी चाहिये, उठना-वैठना चाहिये।

"भिक्षुयो, वह आदमी कैसा होता है जो घृणा करने योग्य होता है, जिसके साथ न रहना चाहिये, न सगत करनी चाहिये, न साय उठना-बैठना चाहिये।

"भिक्षुओ, एक आदमी होता है दुराचारी, पापी, अपवित्र-सशकित आचरण वाला, छिपकर आचरण करने वाला, अश्रमण होकर 'श्रमण ' कहने वाला, अत्रह्मचारी होकर ' ब्रह्मचारी ' कहने वाला, भीतर से सडा हुआ, वेकार, कूडा-करकट। भिक्षुओ, इस तरह का आदमी घृणा करने योग्य होता है, जिसके साथ न रहना चाहिये, न सगत करनी चाहिये, न साथ उठना-चैठना चाहिये। यह किस लिये े भिक्षुओ, चाहे कोई ऐसे आदमी का कुछ भी अनुकरण न करता हो तो भो उसका अपयश होता है, यह पापियो का मित्र है, यह पापियो का सहायक है, यह पापियो का दोस्त है। जिस प्रकार गूंहमें लिवडा हुआ सर्प चाहे डक न मारे तो भी लवेड देगा, इसी प्रकार भिक्षुओ, चाहे कोई ऐसे आदमी का कुछ भी पापियो का दोस्त है। इस लिये इस प्रकार का आदमी घृणा करने योग्य होता है, जिसके साथ न रहना चाहिये, न सगत करनी चाहिये, न साथ उठना-चैठना चाहिये।

"मिरपुनो वर भारती कैमा होता ह जा उपेला करन बाग्य होता है जिसके साम न रहना पाहिये न गगत बण्ली चाहिये न उठना-बैठना चाहिय।

मिश्नो पाई पार्ट आवसी काधी-त्रभाव का होता है अधानत पूर भोड़ा भी बोछने से बिगड भागा है। प्राजित ो जाता हा स्थापाद-प्रस्त हो भागा है। मिरोधी हो जाता है जोध- द्वेय और सगंजार प्रस्ट करता है। जैसे सिक्षमा पूराता कन अनदी साठीकरा लग चारे संसीर भी बहु। कम आहा है दसी प्रकार भिखुओं कोई कोई जावमी (३-- ) जैसे मिश्रदो विश्वद का अहाव करही वा ठीकरे स छेड़ देने स और भी मधिन निट-पिट नरता ै इसी प्रनार भिल्लों कोई कोई आसमी (३-२५) जैसे शिख्वा गुँड का गढासकडी माठीकरे से केंद्र देने से बौर भी अधिक प्रथम देता है। उसी प्रकार मिलाओ कोई कोई जादमी त्रीभी स्वमाय का होता है। यसान्त कुछ बोडा भी बोकने छे। समदोप प्रकट करता है। मिश्रज़ी इस प्रकार के आदमी के प्रति तपेशा करना साम्य हाना है जिसके साम न रहना चाहिये न संगत करनी चाहियं न ठठना नैदना चाहिये। यह किस किसे ? इस प्ररार का भारमी सबे गांधी भी दे सकता है अपस⊸द भी कह सकता है और मुझे हानि भी पहुँचा सकता इ.। इस किने इस प्रकार के नाश्मी के प्रति चपेक्षा करनी चार्टिये उसके साम न रहना चाड़िये न सनत करनी चारिने और न चठना-बैठना चाडिये।

"मिलुको वह बादनी छैंसा होता है विसके साथ पहना पाहिने सनत करती पाहिसे उठना-बैठना पाहिसे।

'मिसूबों एक बादमी स्वाचारी होता है कस्माज-समी। भिसूबों ऐसे बादमी के साम पहना नाहिबें स्थाप करनी माहिसे उठना-बेठना माहिसे प्रह फित फिसे? भिस्तुकों ऐसे सादमी का कोई कुक मोहा भी सनुकरण करे. दक्षका पर होता है यह सम्मत्ती किया है सम्मत्तों का तहासक है देना सम्मत्ती हा दोस्त है। इस किये इस प्रकार के सादमी के साम पहना नाहिसे स्थाप करनी नाहिबें उठना-बैठना नाहिसे। भिस्तुबों इस संहार में से तीन तद्ध के कोन हो।

निश्चीयति पूरिको निश्चीनसेवी त च श्चामेच स्थाचि दुस्यसेवी सेट्ठ उपनम चवेति विद्या तस्मा सत्त्रनो चत्तरि मधीय। [ अपने में हीन आदमी की सगत करने वाला स्वय हीन हो जाता है, समान की सगत करने वाला कभी ह्वास की प्राप्त नहीं होता। अपने से श्रेष्ठ की सगत करने वाला शीघ्र ही उन्नत होता है। इस लिये अपने से श्रेष्ठ की ही सगत करनी चाहिये।]
(२८)

"भिक्षुओ, ससार में तीन तरह के लोग है। कौन से तीन तरह के ? मल-मृख, पुष्प-मुख तथा मधु-मुख।

"भिक्षुओ, मल-मुख आदमी कैसा होता है । भिक्षुओ, कोई कोई आदमी चाहे उसे सभा में ले जाकर, चाहे परिपद् में ले जाकर, चाहे जाति-समूह में ले जाकर, चाहे पूग में ले जाकर और चाहे राज-दरवार में ले जाकर, यदि उस से यह कहकर साक्षी पूछी जाये कि हे पुरुप । जो जानता हो वह कह। वह न जानता हुआ कहेगा कि जानता हूँ, जानता हुआ कहेगा कि नही जानता हूँ, न देखता हुआ कहेगा कि देखता हूँ और देखता हुआ कहेगा कि नही देखता हूँ। ऐसा वह या अपने अर्थ के लिओ या पराये अर्थ के लिये करेगा या किसी भौतिक लाभ के लिये करेगा। वह जान वृक्ष कर झूठ वोलने वाला होगा।

"भिक्षुओ, ऐसा आदमी मल-मुख होता है।

"भिक्षुओ, पुण्प-मुख आदमी कैसा होता है, ? भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी चाहे उसे सभा में ले जाकर, चाहे परिषद् में ले जाकर, चाहे जाति-समूह में ले जाकर, चाहे पूग में ले जाकर और चाहे राज-दरबार में ले जाकर, यदि उस से यह कहकर साक्षी पूछी जाय कि हे पुरुष । जो जानता हो वह कह। वह न जानता हुआ कहेगा कि नही जानता हूँ, जानता हुआ कहेगा कि जानता हूँ, न देखता हुआ कहेगा कि नही देखता हूँ, देखता हुआ कहेगा कि विषे जान-बूझ कर झूठ लिये न पराये अर्थ के लिये और न किसी भौतिक लाभ के लिये जान-बूझ कर झूठ वोलने वाला होगा। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुष्प-मुख होता है।

"भिक्षुओ, मधु-मुख आदमी कैसा होता है ? भिक्षुओ, कोई कोई आदमी कठोर-वाणी वोलना छोड कठोर-वाणी से विरत होकर रहता है। जो वाणी निर्दोप होती है, कानो को अच्छी लगने वाली होती है, प्रेम पैदा करने वाली होती है, हृदय

१ पूग = श्रेणी, व्यवसाय-विशेष का सगठन।

में पैठ जाने वाली होटी है गुल-युक्त होती है बहुद जर्मों को सुन्दर, बहुद जर्मों को जिस करने वाली होती है—ऐसी वाली बोकता है। जिलुको ऐसा बादमी सर्थ मूल बादमी होता है।

" भिलुको संसारमें ये तीन प्रकार के भारपी है।

(२९)

भिस्तुनो ससार में तीन प्रकार के लोग है। कौन से तीन प्रकार के? बच्चे एक जीवनामें दोनो कॉब-नाके।

मिसुओं अन्या आरमी कैसा होता है? मिसुओं किसी जाएमी के पात ऐसी ओल नहीं होती कि अभाग्य तम्मित को मान्य कर तके मीर मान्य बम्मित को बड़ा तकं उत की ऐसी जॉब भी नहीं होती दित से बढ़ कुतक-जुपक बर्गों को पहाल कर तके उसरे निर्देश कार्य पहाल कर तके हीन-सकीत करों की पहुचान कर तके उसरा पार-पुंच परस्त-किसीओं बर्गों की पहुचान कर तके। मिसुबों, ऐसा आरमी मन्या कहताता है।

" पिसुको एक-बाँक बाका बादयी कैसा होठा है? फिनुको किसी दिली बादमी के पान एसी जाँक होती है कि बायन्त सम्पत्ति को मान्य कर करे और प्राप्त सम्पत्ति को बहा सके किन्तु उस की ऐसी जांक नहीं होती जिस से नह कुसक-अपूक्त समी की पहचान कर सके तथा पितार्थें को पहचान कर सके हीन प्रमति कभी की पहचान कर सके तथा पान-पुष्प परस्पर-विरोधी को जी पहचान कर सके: मिसुको ऐसा बादमी एक-बाँक सामा कहकारा है।

पिश्वमा सो जांच नाजा जास्मी केया होया है? प्रश्नमां कियां कियां बादमी के पाय ऐसी जांच होती है कि महाज्य सम्पत्ति को प्राप्त कर तके जोर प्राप्त सम्पत्ति को बहा को जोर यह की ऐसी जांच भी होती है किय से कह कुसक-अनुस्क सभी की पहचान कर एके परोप-निर्देश कमी की पहचान कर तके हीन प्रभाव करों की पहचान कर एके सम पार-पुंच परस्पर-विरोधी कमी की पहचान कर सके। मिश्रमी ऐसा आदमी दो जांच साला कहताहा है।

" भिजुको संसार में वे तीन तरह के कोय है।

नवे'व भोषा तवाक्या न च पुरुमानि कुम्बति उभगत्व कतिस्पही बन्धस्य हरावनकृती अयापराय अक्तातो एकचक्खु च पुग्गलो धम्माधम्मेन ससट्ठो भोगानि परियेसित ॥ थेय्येन कूटकम्मेन मुसावादेन चुंभय कुसलो होति सघातु कामभोगी च मान्वो इतो सो निरय गन्त्वा एकंचक्खु विहञ्जाति द्विंचक्खु पन अक्सातो सेट्ठो पुरिसपुग्गलो धम्मलद्वेहि भोगेहि उद्यानिधगत धम्मं ददाति सेठ्टसकप्पो अव्यग्गमनसो नरो उपेति भद्दक ठानं यत्य गन्त्वा न सोचिति ॥ अन्ध च एकचक्खुं च आरका परिवज्जये द्विचक्छुं च सेवेथ सेट्ठ पुरिसपुग्गल ॥

[जो चक्षु-विहीन अन्धा आदमी होता है उस के पास न ती वैसे भोगपदार्थ ही होते हैं और न वह कोई पुण्य ही करता है। एकं दूसरा आदमी होता है
जो एक आँख वाला कहलाता है, वह धर्माधर्म मिश्रित कर्मों से सम्पत्ति प्राप्त करता
है—चोरी से, ठगी से और झूठ वोल कर। वह कामभोगी मनुष्य काम-भोग के
पदार्थों का सग्रह करने में कुशल होता है। किन्तु वह एकं आँख वाला आदमी यहाँ
से नरक में जाकर विनाश को प्राप्त होता है। जो दो आँख वाला आदमी होता है
वही श्रेष्ठ कहा गया है। वह अप्रमाद तथा धर्म से भोग्य-पदार्थों को प्राप्त करता है।
फिर वह व्यग्रता-रहित श्रेष्ठ सकल्प वाला नर ( उन में से ) दान करता है। ( ईस
कर्म से ) वह श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त करता है, जहाँ जाने से अनुताप नही होता। इस
लिये अन्धे तथा एक चक्षु वाले से दूर दूर रहे। जो दोनो आँख वाला श्रेष्ठ व्यक्ति
हो उसी की सगित करे।]

(३०)

<sup>&</sup>quot;भिक्षुओ, संसार में तीन तरह के लोग है। कीन से तीन तरह के ? अोंघी-खोपडी वाले आदमी, पल्ले जैसी प्रज्ञा वाले आदमी, बहुल-प्रज्ञ आदमी।

<sup>&</sup>quot;भिक्षुओ, औंधी खोपडी वाला आदमी कैसा होता है ?

<sup>&</sup>quot;मिसुओ, कोई कोई आदमी भिक्षुओ से धर्म सीखने के लिये उन के पास विहार (=आराम)में निरन्तर जाने वाला होता है। उसे भिक्षु आरम्भ में कल्याणकारी

मध्य में कस्थापकारी अन्त में कस्थायकारी धर्म का उपरेश करते हूं अर्थ-गरित ध्येत्र-विद्वार वर्ष के परिसूध कर्म के प्रकाशित करते हैं। वह बाधन पर बैठा हुमा न छंड उपरेश के भारत्म को मनमें ववह देश हैं न मध्य को मन में ववह देश हैं। उस बाधन से उठने पर भी न उस उपरेश के भारत्म को मन में ववह देश हैं। उस बाधन से उठने पर भी न उस उपरेश के भारत्म को मन में ववह देश हैं। मध्य को मन में ववह देश हैं। धर्म मच्छ को मन में ववह देश हैं। धर्म मच्छ को मन में ववह देश हैं। धर्म मच्छ को मन में ववह देश हैं। प्रकाश को मन में ववह देश हैं। उस साधन से छठने पर भी न वज्य को मन में ववह देश हैं। पर माधन से छठने पर भी न वज्य को मन में ववह देश हैं। पर्म में ऐसा बादमी वैभी-कोपसी माला बादमी कहाश हैं।

"पिथुबो पस्ते वैधी प्रज्ञा वाला आदमी कैता होता है ? "विश्वभो, कोई कोई आदमी जिल्लों से बर्म मीचने के किये

प्रकाशित करते हैं। यह बायन पर नैठा हुना उम उपरेसके जारमको भी मन में बयह रेता है मध्य को भी मन में बयह रेता है और मन्त को भी मन में अपह रेता है। दिन्तु उस बायन से पठने पर न उस उपरेस के बारम नो मा में अगह रेता है न नयम को मन में वयह रेता है बीर न मन्त नो मन में जनन रेता है। जैने पिछुंबों किमी बादमी के पत्ने में नता नार पौ बाय चरुतु हो जिन्हों जिनम हों, सहसू हों नेर हों नह बातन से उठने तमय मनावानी के नारम उन्हें हों, हह सुती सनार पिछुंबों नोई कोई बायमी पिछुंबों से वर्ष सीमने के नियो

प्रवाशित करते हैं। यह शासक पर बैठा हुआ। असह देता है। विन्तु आतन से बठने पर न अल्त को नन में जगह देता है। जिभुजों ऐना आपनी वर्णने जैसी प्रका वाला वाल्यादा है।

पिस्ता वहन-प्रश्न आदमी वैना हाला है?

निश्को कोई-कोई साम्मी निश्कों ने धर्म नीमने के लिये प्रका पित्र करते हैं। वह सामन कर केंद्र हुआ बार उपरोध के सारम्ब को भी मन में प्रमूह देशा हूँ अगत को भी मन में ब्याद देशा है। वह आमन में उन्हें पर औ कम बारोध के सामन को भी स्मान की भी मन में जगह देशा है। निश्कों की ने मीधे को में साम हुआ का नी उसमें उहरना है जिएना नहीं है इसी प्रकार भिधुओ, कोई-कोई आदमी भिक्षुओ से धर्म सीखने के लिये . प्रकाशित करते हैं। वह आसन पर वैठा हुआ उस उपदेशके आरम्भ को भी मन में जगह देता हैं। वह आसन से उठने पर भी उस उपदेश के आरम्भ को भी . अन्त को भी मन में जगह देता हैं। कि आरम्भ को भी . अन्त को भी मन में जगह देता हैं। भिक्षुओ, ऐसा आदमी बहुल-प्रज्ञ आदमी कहलाता है।

"भिक्षओ, ससार में ये तीन तरह के लोग है।" अवकुज्जपञ्जो पुरिसो दुम्मेष्ठो अविचक्कणो अभिक्वण पि चे होति गन्ता भिक्युन मन्तिके आदि कयाय मज्ज च परियोसान च तादिसो उगाहेत न सक्कोति पञ्जा हिस्स न विज्जित उच्छग-पञ्जो पुरिसो सेय्यो एतेन व्च्चति ॥ अभिक्खण पि चे होति गन्ता भिक्खन सन्तिके आदि कयाय मज्झच परियोसान च तादिसो निसिन्नो आसने तस्मि उग्गहेत्वान व्यञ्जन वृद्धिठतो नप्पजानाति गहित पिस्स मुस्सति ॥ पूर्यपञ्जो च पुरिसो सेय्यो एतेहि वुच्चित अभिक्खण पि चे होति गन्ता भिक्खन सन्तिके आदि कथाय मज्झ च परियोसान च तादिसो निसिन्नो आसने तस्मि उग्गहेत्वान व्यञ्जन धारेति सेट्ठसकव्यो अव्यग्धमनसो नरो धम्मान्धम्मपटिपन्नो दुक्खस्सन्तकरो सिया।।

[ दुर्नुद्धि, वे-अक्ल, औंधी खोपडीवाला आदमी यदि भिक्षुओ के पार निरन्तर भी जाता है, तो वह उस उपदेश का न भादि, न मध्य और न अन्त ही ग्रहण् कर सकता है। उमकी वैसी प्रज्ञा ही नहीं होती। उस आदमी की अपेक्षा पल्ले जैसी प्रज्ञा वाला आदमी श्रेष्ठ कहलाता है। वह यदि भिक्षुओ के पास निरन्ता भी जाता है, तो वह आमन पर वैठे रहने समय उस धर्मोपदेश के आदि, मध्य और अन्त को व्यजन-सहित ग्रहण कर लेता है। लेकिन आसन से उठने पर भूल जाता है उमका ग्रहण करना ऐसा ही होता है। इन दोनो से वहुल-प्रज्ञ आदमी श्रेष्ठत सम्म में कस्थापकारी बन्त में कस्थाबकारी धर्म का उपरेश करते हैं वर्ष-मिटि स्पेबन-बहित सम्मूर्क कर से परिसूच वर्ष को प्रकाधित करते हैं। वह बासन पर बैठा हुआ न उस उपरोध के आरम्भ को मनमें बनाह देशा है। तम्म को मन में बनाह देशा है और न अन्यको मन में बनाह देशा है। तम्म को मन में बनाह देशा है। बीर न अन्य को मन में बगह देशा है। मिशुओ जैसे उस्टे वह में बाध हुआ पानी दिर पहला है उहरता नहीं है स्ती प्रकार मिशुओ कोई कोई बाधनी धर्म सीक्षण के किस्टे मिशुओं के पास काम न में बनाह देशा है। साधन से उस्ते पर मी म अन्य को मन में बनाह देशा है। सेशा काइमी बीमी-कोएकी बाधा बाधनी कुकाशा है।

> "भिज्ञो पत्ने वैसी प्रजा नामा बादमी ईसा होता है ? "मिजनो कोई कोई बादमी मिजनों से दर्म सीजने के निये

प्रकाशित करते हैं। यह सामन पर बैठा हुमा उन्न उपरेशके बारम्मको भी मन में बगाइ रेठा है। मध्य को भी मन में बगाइ रेठा है और अन्त को भी मन में बगाइ रेठा है। शिन्तु एवं बाग्न से उठमें पर न उठ उपरेश के बारम्म को मन में बगाइ रेठा है न मध्य को मन में बगाइ रेठा है जोर न मन्त को मन में बगाइ रेठा है। बैठे मिसुबो निस्ती बादमी के पत्क में नाता मोरा को बाग्न वस्तु हो कि हों बात क मिसुबो हो। बेर हो। यह बायन से उठने ग्रम्स का सामाणी के बारम उन्हें बोर कहड़ हो। प्रमार मिसुबो कोई कोई मारामी मिनुबों से वर्म धोवनों में सिम्

प्रकाषित करते हैं। यह साधन पर देश हुआ। असह देश हैं। फिल्युआधन से उक्ते पर न अस्त को मन में जगह देश हैं। पिश्वों ऐसा मास्मी परके कैंसी प्रसादाका कहकाश है। पितासों वकत-सब साथनी कैसा होता है?

"भिष्मुमों कोई-काई आदमी भिष्मुमों से धर्म शीक्षने के किये प्रका-पिछ करते हैं। यह माजन पर बैठा हुमा वह उत्परेश के आएका की भी मन में बनह देवा है "अवत को भी मन में बपह देशा है। यह जाउन के उठने पर भी कह करदेश के जाएम को भी सक की भी मन में बपह देशा है। भिष्मुमों चैसे शीचे यह में अमा हुमा पानी जबमें उद्दरशा है, पिरता नही है इसी प्रकार मिक्षुओ, कोई-कोई आदमी मिक्षुओ ने धर्म सीखने के लिये . प्रकाशित करते हैं। वह आमन पर बैठा हुआ उस उपदेशके आरम्भ को भी मन में जगह देता हैं। वह आसन से उठने पर भी उस उपदेश के आरम्भ को भी अन्त को भी मन में जगह देता हैं। कि आरम्भ को भी अन्त को भी मन में जगह देता हैं। भिक्षुओ, ऐसा आदमी बहुल-प्रज्ञ आदमी कहलाता है।

"मिक्षओ, ससार में ये तीन तरह के लोग है।" अवकृज्जपञ्जो पुरिसो दुम्मेघो अविचक्खणो अभिक्यण पि चे होति गन्ता भिक्यून सन्तिके आदि कथाय मुज्ज च परियोमान च तादिमो उग्गहेत् न सक्कोति पञ्जा हिस्स न विज्जति उच्छग-पञ्जो पुरिसो सेय्यो एतेन वुच्चति॥ अभिनखण पि चे होति गन्ता भिनखन सन्तिके ऑदि कयाय मज्झच परियोसान च ताटिसो निसिन्तो आमने तस्मि उग्गहेत्वान व्यञ्जन वृद्धितो नप्पजानाति गहित पिस्स मुस्सति।। पूर्यपञ्जो च पुरिमो सेय्यो एतेहि वुच्चति अभिक्खण पि चे होति गन्ता भिक्खन सन्तिके आदि कयाय मज्झ च परियोसान च तादिसो निसिन्नो आसने तस्मि उग्गहेत्वान व्यञ्जन धारेति सेट्ठसकयो अन्यग्धमनसो नरो धम्मान्धम्मपटिपन्नो दुक्खस्सन्तकरो सिया।।

[ दुर्बुद्धि, वे-अक्ल, औंधी खोपडीवाला आदमी यदि भिक्षुओ के पा निरन्तर भी जाता है, तो वह उस उपदेश का न भादि, न मध्य और न अन्त ही ग्रह कर सकता है। उमकी वैसी प्रज्ञा ही नहीं होती। उस आदमी की अपेक्षा पर जैमी प्रज्ञा वाला आदमी श्रेष्ठ कहलाता है। वह यदि भिक्षुओं के पास निरन्त भी जाता है, तो वह आमन पर वैठे रहते समय उस धर्मोपदेश के आदि, मध्य अं अन्त को व्यजन-सहित ग्रहण कर लेता है। लेकिन आसन से उठने पर भूल जाता हं उसका ग्रहण करना ऐसा ही होता है। इन दोनो से बहुल-प्रज्ञ आदमी श्रेष्ठा माना बाता है। वह यदि पिसूनों के नाम जिस्तर भी बाता है तो यह उन आमन पर देवे एके समय प्रमापनेय के जारि मध्य और बस्त को मानजन-पहित प्रद्य कर भेता है। वह सान्य-वित्त येप्ट-मंदरन वाला लावगी उस धर्म को अच्छी तयह सारण करता है। उस धर्म के अनुसार आवारण कर वह दुक्त वा लग्त करने वाला होता हैं।

(11)

भिन्ना जिन कुकों में घरों के शीवर साता-पिता वा कारर होता हैं वे तक्का-कुक है भिन्ना जिन कुकों में वरोके भीवर साता-पिता का आवर होता है वे स-पूर्वाचार्य-कुक हैं भिन्नो जिन कुकों में वरों के शीवर साता-पिता वा आवर बोता है वे स-पुत्र-स-कुक हैं।

"भिस्ता बद्धा- जर भारत-पिता का ही पर्स्याय है। धिशुको पूर्व काचार्स्य- जद मारा-पिता का ही पर्स्याव है। धिशुको पूर्य- यह सारा-पिता का ही पर्स्याय है।

" सह किस किसे ? भिक्तुओं माता-पिता या वपनी तत्ताना पर बहुत उपकार होता है। वे पालन करने वाले हैं वे पोलग करने वाले हैं पन्होंने ही बह ससार दिलाया है।

> बद्धा कि नाता-विवारी पुज्याबस्मा कि बुज्यरे ब्राह्मचेम्या च पुराम व्यवस्था चानुक्यस्था तस्मा हि वे मध्यसेम्य चक्करेम्याब परिवारो ब्रामेन बाव पानेन वार्चेन व्यवस्था चान्यस्था चार्चेन व्यवस्थान चार्चित्रमु परिवार काल न परिवर्षस्थाव मातारित्रमु परिवार कोब में यार्चित्र वेच्य कार्ये चर्मेक्षर थ

[क्तान के भिन्ने माता-विद्या ही बहा। है माता-विद्या ही पूर्वाचार्थ है माता-विद्या ही पूच्च है। दे कच्चो पर बहुत बनुक्रमा करने वाके है। इन भिन्ने बुद्धितान (सण्यान) को चाहियें कि उन्हें समस्यार करे, उन का श्रीक्षण करे, का है। इतने के सकते से सकतानत के माणिक से नह्यान से से सेने हैं कुछ की हैवा करें। को विद्यात परिचर्य के माठा-विद्या ने समुख्य दे रहता है (?) यहाँ भी उसकी प्रशसा होती है और मृत्यु होने पर दह स्वर्ग में भी आनिन्दत होता है।]

(३२)

तव आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् (बुद्ध) थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे आयुष्मान आनन्द ने भगवान् से यह कहा-—

"भन्ते। क्या भिक्षु को ऐसी ममाधी का लाभ हो सकता है कि इस सिवज्ञान शरीर में ही उसे अहकार, ममत्व तथा मान का बोध न हो, और इस शरीर से बाहर भी जितने विषय है, उन विषयों में भी उसे अहकार, ममत्व तथा मान का बोध न हो और जिस चित्त-विमुक्ति, जिस प्रज्ञा-विमुक्ति के साथ विहार करते हुए अहकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होते, उम चित्त-विमुक्ति, उम प्रज्ञा-विमुक्ति को प्राप्त कर विहार करे।"

"आनन्द । भिक्षु को ऐसी समाधि का लाभ हो सकता है कि इस सविज्ञान शरीर में ही प्राप्त कर विहार करे "

"भन्ते । भिक्षु का वैसा समाधि-लाभ कैमा होता है कि इम सिवज्ञान शरीरमें ही प्राप्त कर विहार करे।"

"आनन्द । इस विषय में भिक्षु को ऐसा लगता है—यही धान्त है, यही प्रणीत है, जो यह सब सस्कारो का शमन, मभी उपिधयो का त्याग, तृष्णा का क्षय, विराग, निरोध, निर्वाण है। इस प्रकार आनन्द। भिक्षु को ऐसी समाधि का लाभ हो सकता है कि इस सविज्ञान शरीर में ही प्राप्त कर विहार करे।

"आनन्द । पुण्य-प्रश्न पारायण में जो मैने यह कहा है वह इसी अर्थ में कहा है---

> सखाय लोकस्मि परोवरानि यस्स इञ्जित नित्थ कुहिंचि लोके मन्तो विद्यूमो सनिघो निरामो अतिर सो जातिजर ति सूमी ॥

[समारमें उस-पार तथा इस-पार का ज्ञान प्राप्त करके जिसके मन में किसी भी विषय के सम्बन्ध में चचलता नही है, उस शान्त, निर्धूम, दुक-रहिठ वासनारहिठ पुस्प ने ही जाति-जय को पार किया है—ऐसा मैं कहना हूँ।]

२ तम क्रामुष्मान् सारिपुत कहीं मगवान् वे वहीं समे। बाकर भयवान् को प्रकास नरएक ओरवैठे। एक क्रोरवैठे क्रामुष्मान् सारिपुत को समवान् न सङ्कता—

" छारिपुत्र ! में मंदोर में भी बर्मीपदेश देता हूँ विस्तार से भी बर्मी-पदेश देता हूँ संक्षित-विस्तृत रूप स भी बर्मीपदेश देता हूँ किन्तु उस के समझने वासे इसेंग हैं।

"भगवान्! इसी का समय है। सुगत! इसी का समय है। भगवान् सभेप में भी भमीपदेश में विस्तार स भी समीपदेश में सिक्षान-निरस्त कम से भी कमीपदेश में असे के समानने वाल होते।

तो सारिपुत्र । इस प्रकार सीकता चाहिये—इस सिकाल सरीर में कईकार मनत्व तथा माल उत्पक्ष नहीं होगा इस से बाहर सभी विषयों में कईकार मनत्व तथा माल उत्पक्ष नहीं होगा किया विषय मिहिल की माण कर में बाहर सिहार करने पर कहाता, मनत्व तथा मान उत्पक्ष नहीं होते उन विषय माण कर मिहार करने । है सारिपुत्र ! इसी प्रकार सीवाल करने माण कर मिहार करने । है सारिपुत्र ! इसी प्रकार सीवाल वाहिये । क्योंकि सारिपुत्र ! इस सिवाल सरीर के नियय में मिल्य में मान में बहुकार, मनत्व तथा माल उत्पक्ष मही होते विषय विषय में मिल्य में मान में बहुकार, मनत्व तथा माल उत्पक्ष मही होते विषय विषय नियाल कर सहस्था माल उत्पक्ष मही होते विषय विषय नियाल कर सहस्था माल उत्पक्ष मही होते विषय विषय नियाल कर माल उत्पक्ष मही होते विषय विषय नियाल कर सहस्था माल उत्पक्ष मही होते विषय विषय नियाल कर माल उत्पक्ष मही होते विषय विषय नियाल कर सहस्था माल उत्पक्ष मही होते विषय नियाल कर सिहार करता है। है सारिपुत्र ! ऐसे मिल्यू के सिवाय में कहा जाता है कि इस में सुच्या को सिवाय कर दुल्य वा माल कर दिया स्थाननी

"तारिदुन! उदयप्रस्त पास्ययम में यो मैं ने यह वहा वह उच्न अर्व में शंवहा—

पहान कामच्छात्वान शोमनस्थान चूमय शीनस्य च पनुशन कुरुकुच्यान निरारक

# उपेक्या मित समुद्र धम्मचयक पुरे जव अन्त्रा विमोक्त पद्भिम अविज्जावणभेदन ॥

[ कामनाओ तथा दीर्मनस्यो का प्रहाण, आलस्य का मदेन तथा कीकृत्य ना निवारण, उपेक्षा तथा स्मृतिकी दृद्धि, नम्यक्-मकन्यो का अनुगमन तथा अविद्या का नाम जहाँ है वही प्रजा-विमुक्ति है—ऐसा मै कहता हैं।]

(55)

"भिशुओं । कमों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु है। कीन से तीन? लाम कमों की उत्पत्तिका हेतु है, ढेप कमों की उत्पत्ति का हेतु है, मोह कमो की उत्पत्ति का हेतु है।

"मिक्षुओ, जिस कर्म के मूलमें लोभ है, जो लोभ निदान है, जिसका हेनु लोभ है, जो लोभ मे उत्पन्न हुआ है, जहाँ अस कर्म के कर्ता का जन्म होता है वहा वह कर्म पकता है, जहाँ वह कर्म पकता है, वहाँ उस कर्म का फल भोगना होता है, उसी जन्ममें, अगले जन्ममें अथवा अन्य किसी जन्ममें।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में द्वेप है, जो द्वेप निदान है, जिसका हेतु द्वेप है, जो द्वेप से उत्पन्न हुआ है, जहाँ उस कर्म के कर्ना का जन्म होता है वहाँ वह कर्म पकता है, वहाँ उस कर्म का फल भोगना होता है, उसी जन्म में, अगले जन्म में अथवा अन्य किसी जन्म में।

" मिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में मोह है, जो मोह-निदान है, जिसका हेतु मोह है, जो मोह मे उत्पन्न हुआ है, जहाँ उस कर्म के कर्ता का जन्म होता है वहाँ वह कर्म पकता है, जहाँ वह कर्म पकता है, वहाँ उस कर्म का फल भोगना होता है, उसी जन्म में, अगले जन्म में अथवा अन्य किसी जन्म में।

"भिक्षुओ, जैसे बीज हो अखण्डित, सडे न हो, हवा-धूप ने खराब न हुए हो, मारवान् हो, अच्छो तरह रखे हो, अच्छो तरह तैयार की गओ भूमि वाले सुक्येत्र में बीजे गओ हो और उन पर पानी सम्यक् रूप से बरसे, तो मिक्षुओ, वे बीज बढती, वृद्धि तथा विपुलना को प्राप्त होगे ही। इमी प्रकार मिक्षुओ, जिम कर्म के मूल में लोग हैं अथवा अन्य किसी जन्म में। जिम कर्म के मूल में देप हैं अथवा अन्य किसी जन्म में। जिस कर्म के मूल में मोह है

अयवा अन्य किसी जन्म में।

"भिक्षुको कर्मों की चल्पत्ति के ये तीन हेतु है।"

२ पिछुको कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेनु है। कौन से तीन ? अकोम कर्मों की घटपत्ति का हैनु हैं अडेव कर्मों की छटपत्तिका हेनु हैं अमोह कर्मों की उत्पत्ति का हेनु हैं।

" सिमुको विस कर्म के मूल में काम है जो सकोम-निदान है जिसका हैतु बलोम है जो सकोम से उत्तम हुना है लोभ के न खुने पर उन कर्म का महान हो बाता है उसकी वह उनक बाती है वह बटे ताह बृश की तरह हो बाता है वह समान-आरत हो बाता है उसकी साथी उत्तित कह बाती है।

निज्ञों जिस कर्म के मूक्त में बहेय है जो बहेय-दिशात है जिनका हेयु अदेश हैं को बदेश ने उत्पास हुआ है है के के न यहने कर उन कर्म का प्रहान हो बाता है उस की कह उनके बाती हैं यह पटे ताह कुछ के तियह हो बाता है वह अपास-पारण हो बाता है जबकी पानी उत्पत्ति कर बाती है।

"भिमुनो निस कर्म के मूल में क्योइ है जो बसोइ-निरात है निस्का हेतु बसोइ है जो बसोइ से कराम हुना है गोइ के त रहने तर उस कर्म का महाग हो बाता है उसकी वह उनके बता है नह कट तार नृष्य की तरक हो बाता है बहु ममान-मान्त्र हो बाता है उसकी मानी उसति एक बाती हैं।

निभुमो की भी भी बहे जनकित नहें नहीं ह्वा-भूग से कराव न हुने हों चारवान हो जनकी तह द स्ते ही जुड़ जारती जागरों करा होते आपरों बखाकर एक कर वे एक करके तेन हवा में उदा वे करता शीध-गायी नहीं में बहा वे बत से जग मीजी का गून नग्द हो बार्य वे कर्ट ताड़ कुस की तहह हो लागे वे जागर-गायत हो बार्य जन की घानी उत्तरित कर बाये। इसी प्रकार निशुमों विश्व कर्म के मूल में जागेग हैं क्या की मानी चलति कर बाती है सिश कर्म के मूल में जागेग हैं चगकी गानी चलति वर्ष बाती हैं जिस वर्ष के मूल में जागेग हैं जानी गानी चलति वर्ष बाती हैं

"विश्व वो क्यों की उत्पत्ति के वे तीन हेनु है। स्टोपन कैंसन केंद्र केंद्र सोहन काणि विहस्

यतेम नन्त काम कर्ण वा वदि वा बहु इबेद त वेश्तीय दल बन्ध न विज्यति

## तस्मा लोभ च दोस च मोह चापि विद्दसु विज्ज उप्पादय भिक्सु सब्बा दुग्गतियो जहे

[ जो मूर्ख लोभ, द्वेप अथवा मोह से प्रेरित होकर चाहे छोटा, चाहे इडा कुछ भी कर्म करता है, उसे वह यही भोगना पडता है, दूसरे को दूसरे का किया नहीं भोगना पडता। इसलिये वुद्धिमान् भिक्षु को चाहिये कि लोभ, द्वेष और मोह का त्याग कर विद्या का लाभ कर सारी दुर्गतियों से मुक्त हो।]

(38)

ऐसा मैं ने सुना। एक समय भगवान् आलवी (राष्ट्र) में गौवो के आने-जाने के मार्ग पर श्रुसप-वन में गिरे-पत्तो के आसन पर बैठे थे।

तव हत्यक (नामक) आळवक राजपुत्र ने घूमने के ममय, सैर करने के समय भगवान् को उस प्रकार गौवों के आने-जाने के मार्ग पर श्रृसप-वन में गिरे-पत्तों के आसन पर वैठे देखा। देखकर जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पाम जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर बैठ हत्यक आळवक ने भगवान् को यह कहा—

" क्या भन्ते भगवान् । आप सुख से सोये ? "

"हौं कुमार <sup>1</sup> में सुख से सोया। समार में जो लोग सुख-पूर्वंक सोते हैं, मैं उन में से एक हूँ।"

"भन्ते! यह हेमन्त ऋतु की शीत रात्रि हैं, माघ और फाल्गुन के बीच के बाठ दिनों का समय हैं, हिम-पात के दिन हैं, गौवों के खुरों की मारी हुंबी कठोर भूमि हैं, पत्तों का पतला विछौना हैं, पेड पर कही कही थोडे पत्ते हैं, ठण्डे कापाय-वस्त्र हैं, चारो-दिशा से हवा आ रही हैं, और भगवानने यह कहा हैं— 'हाँ कुमार! में सुख से सोया। ससार में जो लोग सुख-पूर्वक मोते हैं, मैं उन में में एक हूँ ?"

"तो कुमार । मैं तुझ से ही पूछता हूँ, जैसे तुझे अच्छा लगे वैसा कहना। कुमार । तो तू नया समझता है ? यहाँ किमी गृहपित वा गृहपित-पुत्र का कचा मकान हो, लिपा-पुता हो, जोर की हवा न आती हो, अगेल लगा हो, खिडकी बन्द हो, वहाँ एक पलग हो जिस पर चार अगुल अधिक की झालर वाला आस्तरण विछा हो, कन का आस्तरण विछा हो, घने कन का आस्तरण विछा हो, कदली मृग के श्रेष्ठ चर्म का आस्तरण विछा हो, उस पलग के श्रूपर वितान तना हो, मिर

और पौत की बोर दारक्त-वर्गतिक में हो तेल-प्रदीप अल यहाहा चार मार्स्मी जच्छीत उद्दरेश कर उर्शहों। यो क्रुमार! तुझे इम विश्व में कैसाल गठाह वह सुब-पूर्वक सोयेना व्यवस नहीं ?

भन्ते! वह सुज्ञ-पूर्वक सोमेगा? संसार में जो सूख-पूर्वक सौतै है उन में बहुएक है।

ता कुमार! तुम वया मानते हा क्या उस पृहपति अववा गृहपति-पुत्र को ( नाम ) राग से उत्पन्न होन नाकी ऐसी मारीरिक ना मानसिक जसन हो सक्ठी है जिस (काम-) राग में उत्पन्न होने वाकी चक्रत के कारण वह पूसी रहे ?

मन्ते! हो।

कुमार! जिस (काम ) रात से उलाब अकत के कारम वह मृहपति अववा ब्हुपति-पुत्र जलता रह कर दुवी रह सकता है। तथागत का वह राग प्रहीच हो बया है। उसका चल-मूल कट यया है। वह चटे ताब दूत की सरह हो गया है। वह अमान-आप्त हो गया है उस की भाषी-उत्पत्ति चाती छी है। इमक्रिये में मुख पूर्वक सोया।

तो हुमार! तुम क्या मानते हो क्या उस मृहपति जलवा गृहपति-मोइ से उत्पन्न होनेनाली ऐसी सारीरिक पुत्र को हैन से उत्पन्त होने वाली वा मानसिक जनन हो सकती है जिस मोह से उत्पन्न होने वाकी अक्रम के कारण वह

दुसी एहें?

मन्ते ही।

कुनार! जिस मोद्र से उत्पन्न होने वाली जरून के कारच बद्र नहपति जनवा बृहपिन-पुत्र असता रह कर दुनी रह सकता है। तनागत का वह मोह प्रहीन हो जमा है उन का बड-भूल कट गमा है वह कटे बाड़-पूक्त की बरह हो गमा है, बढ़ बबार-साप्त हो गया है। उस की भाषी-उत्पत्ति वाली , रही है। इलकिये में शुक्र-पूर्वक सोमा ।

्रेगण्यं सवि ब्राह्मनो परिनिम्बुठो रामेषु सौविष्ट्रो निक्पवि केला विनेग्य हरने दर्र मनि पप्पुष्य वैत्रशो [परिनिर्वाण-प्राप्त ब्राह्मण सदा सुख-पूर्वक सोता है, जो काम-भोगों में लिप्त नही होता, जो शान्त है, जो उपाधि-रहित है, जो सभी आसिवतयो को काट-कर हृदय के दुख को दूर करता है, जो शान्ति-पूर्वक मोता है, जो चित्त की शान्ति को प्राप्त करता है।]

(३५)

"भिक्युओ, ये तीन देव-दूत है। कीनसे तीन?

"भिक्षुओ, एक आदमी शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणी से दुष्कर्म करता है, मनसे दुष्कर्म करता है। वह शरीरसे दुष्कर्म करके, वाणीसे दुष्कर्म करके, मनसे दुष्कर्म करके शरीर छूटने पर, मरनेके अनन्तर अपाय दुर्गतिको प्राप्त होता है तथा नरक-लोकर्में अत्पन्न होता है। तो भिक्षुओ, उसे नाना नरक-पाल वाहोंसे पकड कर यमराजके पास ले जाते है—"देव । यह आदमी मातृ-सेवक नहीं, पितृ-सेवक नहीं, श्रमणोकी सेवा करनेवाला नहीं, क्षीणाश्रवोको सेवा करने वाला नहीं, परिवारमें बड़े-बूढ़ोका आदर करने वाला नहीं, हे देव । इसे सजा दें।"

"भिक्षुओ, उस आदमीमे यमराज प्रथम देव-दूतके वारेमें प्रश्न करता है, पूछता है, वातचीत करता है—" हे पुरुष विवास तू ने मनुष्य-लोकमें प्रकट हुए प्रथम देव-दूतको नही देखा ?"

वह बोला—"स्वामी। नहीं देखा।"

तव भिक्षुओ, यमराज उम आदमीसे पूछता है—"हे पुरुष क्या तू ने मनुष्य-लोकमें किसी ऐसी स्त्री या पुरुषको नही देखा जिसकी आयु जन्मसे अस्सी वर्षकी हो,नव्वे वर्षकी हो अथवा सौ वर्षकी हो, जो बूढ़ा हो,जो शहतीरकी तरह टेढा हो, जो टूट गया हो, जिसके हाथमें लाठी हो, जो चलता हुआ कापता हो, जो आतुर हो, जिसका यौवन जाता रहा हो, जिसके दात टूट गये हो, जिसके बाल सफेद हो गये हो, जिसकी खोपडी गजी हो गयी हो, जिसके झूरियां पड गयी हो तथा जिसके बदन पर काले-सफेद निशान पड गये हो।"

वह बोला—"स्वामी वेखा है।"

तो भिक्षुओ, उसे यमराजने कहा — "हे पुरुष तुझ विज्ञ, स्मृतिमान वृद्धके मनमें यह नहीं हुआ कि में भी जरा को प्राप्त होनेवाला हूँ, में भी जराके आधीन हूँ। में शरीर, वाणी तथा मनसे शुभ-कर्म करूँ।" और पात की ओर दो रक्त-वर्ष तिक्ये हीं तेक-प्रदीप वक रहा हो चार माम्पर्से अच्छी तरह सदा कर रही हो। तो कुमार! तुझे दम विषय में चैसा क्याता ह वह मुक्त-पूर्वक सोयेश अववा नहीं?

भन्ते ! वह मुल-पूर्वक सोयया? संसार में आर सुप-पूर्वक सेन्द्रे हैं उन में वह एक है। "

ता दूमार! पुत्र नयां मानते हा नया उस मृद्दश्ति जनका नृद्दश्ति भूत्र को (नाम) राव से उत्पन्न होन नाकी ऐसी सारीरिक ना मानसिक अकन हा सनती है जिस (काम) राग में उत्पन्न होने नाकी असन के कारण वह दुसी रहे?

मन्दे! हो।

"कुमार! निष्ठ (काम) राव से बलाय जनन के कारण वह पृक्षिते अवना पृक्षितिनुक जलता रह कर दुन्ती रह मकना है तथायत ना यह राज प्रहीण हो पना है उपका जब-मूम कर पना है नह करे ताव नुभ की तरह हा गया है वह अधाद प्राप्त हो नमी है उस की भावी-जलतित जानी रही है। हमलिये में मूज पूर्वक लोगा।

पूरक साथा।

तो हुमार ! पून क्या मानते हो क्या उथ पृहाति अवका पृहातिपूत्र को डेस में उत्पक्ष होने वाली मोह से उत्पक्ष होनेवाली ऐसी सारीरिक

सा मानतिक जनक हो तकनी है जिन मोह में प्रतास होने वाली जनन के कारण वह

दुवी पडे<sup>?</sup>″ भलो<sup>†</sup> इति

भागां - हुमार ! निस माइ से जराज होने वाणी जनन के कारण बहु नृहाित क्षत्रवा गृहाित अन्य एक प्रणा एक पर कुणी एक नक्ष्या है उत्तायत का बहु नोह स्थीत हा गया है जम का जर-मूक कर गया है जह करे ताव-मूक की तरक हो क्या है, वह अनाव-आपत हो गया है जम की भावी-उरांति जाती, रही है। इनस्थि में गुण-पूर्वक नोमा।

गन्दरा वे तुन नेति बाह्यनो परितिस्तुरी यो न निग्पति नामेनु गौतिनुरो निन्धिः नच्या नानतियो छेन्या दिनेया हरये दर्र उत्पन्ती नुत्रं मेति नति पणुष्य वेननो "हे मनुष्य वया तू ने मनुष्य-लोकमें प्रकट हुए तीसरे देव-दूतको नहीं देखा?"

वह बोला—"स्वामी। नही देखा।"

तव मिक्षुओ, यमराज उस आदमी से पूछता है—"हे पुरुष विस्ता तूने मनुष्य-लोकमें किसी ऐसे स्त्री या पुरुष को नहीं देखा जिसे मरे एक दिन हो गया हो, जिसे मरे दो दिन हो गये हो, जिसे मरे तीन दिन हो गये हो, जो फूल गया हो, जिसका शरीर नीला पढ गया हो, जिसके बदनमें पीप पढ गयी हो ?"

वह बोला—"स्वामी। देखा है।"

तो भिक्षुओ, उस यमराजने कहा—" हे पुरुष । तुझ विज्ञ, स्मृतिमान्, वृद्धके मनमें यह नहीं हुआ कि में भी मरणको प्राप्त होनेवाला हूँ, में भी मरणके आधीन हूँ। में शरीर, वाणी तथा मनसे शुभ-कर्म करूँ ?"

वह बोला—"स्वामी! मुझसे न हो सका। मैं ने प्रमाद किया।"
तब भिक्षुओ, उसे यमराजने कहा—"हे पुरुष! प्रमादके वशीभूत हो
तूने शरीर, वाणी अथवा मनसे शुभ-कर्म नही किये। तो हे पुरुष! अब ये तेरे
साथ तेरे प्रमादके अनुरूप विहार करेगे। यह जो पाप-कर्म है, यह न तेरी माँ ने किया
है, न वाप ने किया है, न भाईने किया है, न बहनने किया है, न मित्र-अमात्योने
किया है, न रिशतेदारोने किया है, न देवताओने किया है, न श्रमण-त्राह्मणोने किया है,
यह पाप-कर्म तेरे ही द्वारा किया गया है, तू ही असका फल भोगेगा ?"

४ तो भिक्षुओ, यमराज तृतीय देव-दूतके वारेमें प्रश्न करके, पूछ करके, वातचीत करके चुप हो जाता है।

"भिक्षुओ, उस आदमीको यमदूत (नरक-पाल)पाच प्रकारके दहसे दहित करते हैं, लोहेकी तप्त कीले हाथमें ठोकते हैं, लोहेकी तप्त कीले दूसरे हाथमें ठोकते हैं, लोहेकी तप्त कीले पावमें ठोकते हैं, लोहेकी तप्त कीले दूसरे पाँवमें ठोकते हैं, लोहेकी तप्त कीले छातीके वीचमें ठोकते हैं। वह उससे दु ख-पूर्ण, तीव्र कष्टदायक, कट् वेदनाका अनुभव करता है और तवतक नहीं मरता है जवतक अस पाप-कर्मका क्षय नहीं हो जाता।

" मिक्षुको, उस बादमीको यम-दूत िलटा कर कुल्हाडी से छीलते हैं। वह उससे दुख-पूर्ण, तीव्र कष्ट-दायक, कटु वेदनाका अनुभव करता है और तब तक नही मरता है जब तक उस पाप-कर्मका क्षय नहीं हो जाता। नह दोसा— "स्वामी! मुझते न हो तका। में ने प्रमाद निया।" तब मिसुसो उसे समराजने कहा— "हे पुरुष! प्रमादके नशीमुण हो दूने रारीर नामी समया सनसंसुन नमंनही किया। तो हे पुरुष अब तेरे साम

तेरे प्रमायके अनुरूप स्पन्नहार कोने । यह जो पायकर्म है यह न तेरी माने किया है न बाप ने किया है न धाईने किया है न बहनने किया है न सिक-अमार्त्योंने किया है न रिप्तेशार्टीने किया है न देशवार्थीने किया है न समज-बाह्यमीने किया है सद्यापकर्म तेरे ही बाद्य किया गया है दूही जिसका कर्म कोकेशा।"

र तो भिनुमी समयन प्रवम वैद्युतके बारेसे प्रका करके पूछ करके बात चीन करके दूसरे वैद्युतके बारेसे प्रका करता है पूछता है बातचीत करता है— है पुरुष ! बसा सू ने मनुष्य-लोकमें प्रकट हुने दूतरे देवतुत को नही देखा?"

नह योमा— स्वामी ! नहीं देखा।" तब मिनुजो समराज उस जायमीते पूछता है—"हे पुरुत ! क्या तु ने मनुष्य-कोकर्में किसी ऐते स्त्री सायुक्तको नहीं देखा जो रोगी हो जो दुली हो जो बहुत रोगी हैं।

अपने मक-मूनमें पड़ा हो जिसे पूसरे ही आकर विठाये हो पूसरे ही किटाये हों हैं वह भोजा--- स्वामी! देखा है। यो पिसूबो उस समरावने कहा--- हे पुस्स! तुझ कित स्मृतिमान् बुदाके मनमें यह नहीं हुमा कि मैं भी स्माधिको प्राप्त होनेवाला हूँ में की स्माधिक

तन मिनुनो चुने पमण्यने नहा- इंदुरन ! प्रमादक नहीं मूर्य हो पूर्व पर्येष्ठ मानी प्रमान मनते यूम-कर्म नहीं दिये । यो हे पुरम ! बन से देरे एस करें प्रमादक बनुकर निहार करेंगे । यह वो पाप-कर्म है यह न देशे माने किया है न बाप ने क्या है न बादें ने दिया है न बहुन ने दिवा है न मिन-बाताओं ने क्रिया है न स्थित्योगों ने किया है न बेदताओं ने क्या है न समय-बाहायों ने क्रिया है यह पाप-कर्म देरे हैं। हारा क्या पाता है यह है मिछका एक मोनेया !

तो मिलुको अमराज दितीय देव-पूतके बारेमें प्रस्त करके पूछ करके,
 वातचीत करके तृतीय देव-पूतके बारेमें प्रस्त करता है पूछता है बातचीत करता है—

चोदिता देव-रूतेहि ये पमज्जन्ति माणवा ते दीघरत मोचन्ति हीनकायूपगा नरा ये च खो देव-रूतेहि मन्तो सप्पुरिसा छ्छ चोदिता नप्पमज्जन्ति अरियधम्मे कुदाचन उपादाने भय दिस्वा जातिमरणसम्भवे अनुपादा विमुच्चन्ति जातिमरणसखये ते स्त्रेमप्पत्ता सुखिता दिट्ठधम्माभिनिव्युता सव्ववेरभयातीता सव्वदुक्ख उपच्चगुं।

[ देवदूतो ( = जरा, व्याधि, मरण) द्वारा शिक्षित किन्ने जाने पर भी जो मनुष्य प्रमाद करते हैं, वे हीनावस्थाको प्राप्त हो, दीर्घ-काल तक मन्ताप करते हैं। जो सत्पुरुप देव-दूतो द्वारा शिक्षित किये जाने पर आयं-धर्मके विषयमें कभी प्रमाद नहीं करते, वे जाति-मरणके कारण उपादान-स्कन्धोको नयका कारण मान, उपादान-रिहत हो जाति-मरण-क्षय स्वरूप निर्वाणको प्राप्त करते हैं। वे कल्याणको प्राप्त होते हैं। वे सुखी होते हैं। वे जिमी जन्ममें शान्ति-लाम करते हैं। वे सभी वैरो तथा भयोकी मीमा लाघ जाते हैं। वे मभी दु खोका नाथ कर देते हैं।]

भिक्षुओ, पक्षकी अप्टमीके दिन चारो महाराजाओके अमात्य-पारपद इस लोकमें यह देखनेके लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोकके अधिकाश लोग मातृ-सेवक हैं, पितृ-मेवक हैं, श्रमण-सेवक हैं, श्रेष्ठ-पुरुपोंके सेवक हैं, अपने-अपने कुलमें वहोका आदर करनेवाले हैं, उपोसय (-ज़त) रखनेवाले हैं, जागरण करनेवाले हैं तथा पुण्य-कर्म करनेवाले हैं।

भिक्षुओ, पक्षकी चतुर्देशीके दिन चारो महाराजाओके पुत्र इस लोकमें यह देखनेके लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोकके अधिकाश लोग मातृ-सेवक है, पितृ-सेवक है, श्रमण-सेवक है, श्रेष्ठ-पुरुषोके मेवक है, अपने-अपने कुलमें बढोका आदर करनेवाले है, उपोमय (-य्रत) रखने वाले है, जागरण करनेवाले है, तथा पुष्य-कर्म करनेवाले है ?

भिक्षुओ, उसी प्रकार पूर्णिमा-उपोसथके दिन चारी महाराजा स्वय ही इस लोकर्मे यह देखनेके लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोकके अधिकाश लोग मातु- "मिशुको उस सारमीका यम-पूत पैर अपर शिर नीचे करके बसूलेसे क्रीकते हैं। यह उससे हो वाता।

"भिञ्जूबो उस वादमीको सम-दूरु रवमें बोतकर अकटी हुई प्रव्यक्ति प्रदीप्त पूमिपर पकाते मीई हाकते मीहे। बहु उससे हो जाता।

"धितुको वध जादगीका यम-तृत वह मारी वकते हुने प्रत्यक्तित प्रदीख नगारीके परंतुपर बताते भी हैं जाताते भी हैं। बह उस ते हो बाता। "मिसूनो उस मादगीको यम-तृत पैर उत्पर सिर नीये करते नर्म बकती हुई, प्रत्यक्तित प्रदीप्त तत्त कोईको कहादीमें बाल देते हैं। बह वहीं बीस्ता हुवा पत्रता है वह वहीं बीत्रता हुना पत्रता हुता कभी अगर बाता है कभी नीये बाता है कभी बीयमें पहला है। बह उससे

हो चाता है।

पिञ्जूबी उस बादमीको समदूर सहान् मरकर्मेदाल देते हुँ। यह सहान नरक-

> चतुकालो चतुबारो विश्वची मागसी मिठी मबोपाकारपरिकतो समसा पटिकृष्टिको तस्स समोममा पूनि चलिता तैयसा युटा समला योजनसर फरित्या टिट्टिट सम्बदा

्र चार कोने हैं और चार कार है। चार के बार कोने हैं और चार कार है समा वह हिस्सोंनें विभन्त है। उन्ने बारों कोर कोहें की बार है और वह कोहेंसे कका हुआ हैं। उन्ने बारों और सी योजन कोह नम पूमि इमेला जायते प्रव्यक्तिय रहती हैं।]

५ फिलुको पूर्व छनवमें यम-राबके नतमें यह हुमा— (मनुष्य) लाकमें को पाय-कर्म करते हैं वन्हूं एक प्रकारके बहुत ये बच्च मिनते हैं। बच्चम हो बदि मुझे मुख्य होकर वैद्या होना मिने बचा मनम बच्चत छानक छन्तु उत्पादका भी (मनुष्य) लोकमें बच्च हो में उन भगवाण्या छाना बच्चे वे भगवाण् मुझे ध्यानिश्च वे बीर में वन प्रमादाके उत्परिको वालंगा

बिस्तुओं में यह बाठ किसी दूसरे समय या बाहाक्षरे सुनवर नहीं वहता बक्ति भिक्षुओं, जो कुछ मेन स्वयं जाता है स्वय देना है स्वयं जनुभव किया है वहीं बहुता है। चोदिता देव-दूतेहि ये पगज्जन्ति माणवा ते दीघरत मोचन्ति हीनकायूपणा नरा ये च तो देव-दूतेहि नन्तो मप्पुरिसा ६घ चोदिता नप्पमज्जन्ति अरियधम्मे कुदाचन उपादाने भय दिरवा जातिमरणसम्भवे अनुपादा विमुच्चन्ति जातिमरणसस्यये ते स्नेम्पत्ता गुलिता दिट्ठधम्माभिनिव्युता मव्यवेरभयातीता मव्यदुक्ल जपच्चगुं।

[ देवदूतो (= जरा, व्याधि, मरण) द्वारा शिक्षित किन्ने जाने पर भी जो मनुष्य प्रमाद करते हैं, वे हीनावस्थाको प्राप्त हो, दीर्घ-काल तक मन्ताप करते हैं। जो नत्पुरुप देव-दूतो द्वारा शिक्षित किन्ये जाने पर आयं-धर्मके विषयमें कभी प्रमाद नहीं करते, वे जाति-मरणके कारण उपादान-स्कन्धोको नयका कारण मान, उपादान-रहित हो जाति-मरण-क्षय स्वरूप निर्वाणको प्राप्त करते हैं। वे कल्याणको प्राप्त होते हैं। वे सुखी होते हैं। वे किसी जन्ममें शान्ति-लाम करते हैं। वे सभी वैरो तमा मयोकी मीमा लाघ जाते हैं। वे मभी दुखोका नाश वर देते हैं।]

भिक्षुओ, पक्षकी अप्टमीके दिन चारो महाराजाओं के अमात्य-पारपद इस लोकमें यह देखनेके लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोकके अधिकाश लोग मातृ-सेवक है, पितृ-मेवक है, श्रमण-मेवक है, श्रेष्ठ-पुरुपोके सेवक है, अपने-अपने कुलमें बढोका आदर करनेवाले हैं, उपोसय (-ब्रत) रखनेवाले हैं, जागरण करनेवाले हैं तथा पुण्य-कर्म करनेवाले हैं।

भिक्षुओ, पक्षकी चतुर्दशीके दिन चारो महाराजाओके पुत्र इस लोकमें यह देखनेके लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोकके अधिकाश लोग मातृ-सेवक हैं, पितृ-सेवक हैं, श्रमण-सेवक हैं, श्रेष्ठ-पुरुषोके सेवक हैं, अपने-अपने कुलमें बडोका आदर करनेवाले हैं, उपोमथ (-व्रत) रखने वाले हैं, जागरण करनेवाले हैं, तथा पुण्य-कर्म करनेवाले हैं ?

भिक्षुओ, उसी प्रकार पूर्णिमा-उपोसथके दिन चारो महाराजा स्वय ही इस लोकमें यह देखनेके लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोकके अधिकाश लोग मानू- सेवक हैं पितृ-मेवक हैं धमण-सेवक हैं ओप्ट-पुरुपीके सेवक है अपने-अपने कुममें बड़ोवा आरण करतवाले हैं उपीसम ( उठ) एकने वासे हैं नागरम करतेवाले हैं तथा पुग्य-क्यों करतवाले हूँ ?

भिजुमो यदि मनुष्य-लोकमें एवं बादगी कोई होते हैं को मान्-शेवक हैं

फिन्-मेकक हों अपन-सेकक हों अंदर-पुत्रयों के सेकक हो अपने अपने कुकरों
बादगा जाए करने वाले हो जगोसल (-वड) रक्षने वाले हों अगारक करनेताले
हो तथा पुत्र-कर्ग करने वाले हों ता भिजुमों के बार्ग महाराज्य स्पोक्ति
कोकमें गुक्रमों समाने एकतित हुए देवतालोकों कहते हैं—स्वयु-मानों देवे
आयमी बोई हें जो मानुसेकक हो पिन्-शेवक हों अपना-मेकक हो अंदर-पुत्राकि
सकत हों अगने-सपने कुकमें बधोका बादर करनेवाले हो जगोसल (-वड) रक्षने
वाले हो आपन-सपने कुकमें बधोका वादर करनेवाले हो जगोसल (-वड) रक्षने
वाले हो आपनर करने वाले हों तथा पुत्र-कर्म करने वाले हों। मिनुओ उत्तरी
स्वाधित केवता अवन्तुन्य होते हैं—से दिव्य-काम से पतित होकर असुर-एगरिर
सराण करनेवाले होने हैं—

नेविन भिनुसो यदि मनुष्य-सोनयें ऐसे सावधी अधिक होते हैं वो मानु सेनक हा भिनुसेनक हो समम-सेनक हों सेट पुरायेके देवक हो अपने अपने कुमनें बरोजा बारद करने वाले हों उसोमय ( प्रक) एतने वाले हों सावदाय नरने वाले हों तथा पुष्य-कर्ष करनेवाले हा जो भिराबो, है सारी महाच्या स्वीचित्र कोमनें पुरायों तथाने एकतित हुए देववायोको कहते हैं-बायुम्यानों । ऐसे बावमी बहुदा है जो मानु देवक हो भिनुसेनक हो स्थय-पेनक हों सेट-पुरायेक देवक हो अपने-अपने कुळां बरोंका बारद करनेवाले हो जागरक करनेवाले ही तथा पुष्य-कर्म करनेवाले हों। सामुओ हमने क्योंकिय देवता संगुद्ध होने हैं —ने अपुर-वायों संपित होकर दिख्य सामुंश हमने क्योंकिय देवता संगुद्ध होने हैं —ने अपुर-वायों संपित होकर दिख्य सामुंश हमने क्योंकिय देवता संगुद्ध होने हैं

(10)

मिध्यते पूर्वतालये स्थोतिय वेतवार्त्यता नेतृत्व करनेवाला वेदेण्ड शाक हुआ है। जम समय उनने वह वाचा नहीं—

चानुर्ती पञ्चवनी बाब प्रसारम अट्टबी चाटिहारियपस्त्रञ्च अट्टह्ननुभवागर्न ज्योतम जनसमध्य वो परेस बादिशो नदी । [पक्षकी त्रतुदंशी, पूर्णिमा, अप्टमी तथा प्रातिहारिय-पक्षको आठ-शीलो त्राला उपोसय-त्रत रवे—जो भी नर मेरे सदृश होना चाहे।]

मिधुओ, देवेन्द्र शक द्वारा कही गयी यह गाया मुगीत नही है, दुर्गीत है,
सुमापित नही है, दुर्मीपित है। यह किस लिए ? भिधुओ, देवेन्द्र शक्का रागद्वेप, मोह क्षय नही हुआ है। गिक्षुओ, यदि कोई ऐगा भिधु जो अरहत हो, क्षीणास्रव
हो, श्रेष्ठ जीवन (=वाम) जी चुका हो, करणीय कर चुका हो, भार अुतार चुका हो,
सदर्य प्राप्त कर चुका हो, भव-समोजन-भीण हो गया हो तया सम्यक् ज्ञान द्वारा
विमुक्त हो गया हो, ऐमी गाया कहे तो उसका यह कथन समुचित होगा—

चातुद्सी पञ्चदसी याव पक्खस्स अट्टमी पाटिहारियपक्सञ्च अट्टब्रगसुममागन उपोमय उपवसेय्य यो प'स्स मादिसो नरो ।

[पक्षकी चतुर्दशी, पूर्णिमा, अप्टमी तथा प्रातिहारिय-पक्षको आठ-शीलो वाला उपोसय-त्रत रखे—जो भी नर मेरे सदृश होना चाहे।]

यह किस लिए ? भिक्षुओ, वह भिक्षु, राग, द्वेप, मोह रहित है। भिक्षुओ, पूर्वकालमें त्र्योपिश देवताओका नेतृत्व करनेवाला देवेन्द्र शक हुआ है। उम ममय उसने यह गाया कही—

> चातुर्मी पञ्चदसी याय पक्लस्स अट्टमी पाटिहारियपक्लञ्च अट्टङ्गसुसमागत उपोसम उपवसेय्य यो प'स्स मादिसो नरो ।

[पक्षकी चतुर्दशी, पूर्णिमा, अष्टमी तथा प्रतिहारिय-पक्ष को आठ शीलो जाला उपोसय-त्रत रखे—जो भी नर मेरे सदृश होना चाहे।]

भिक्षुओ, देवेन्द्र शक द्वारा कही गयी यह गाया सुगीत नहीं है, दुर्गीत है, सुमाषित नहीं है, दुर्मीपित है। यह किस लिए रिमक्षुओ, देवेन्द्र शक जन्म, सुढ़ापा, मरण, शोक, रोना-पीटना, दुःख, दौर्मनस्य, अशान्तिसे मुक्त नहीं है। मैं कहता हूँ कि वह दु खसे मुक्त नहीं है। भिक्षुओ, जो भिक्षु अरहत हो, क्षीणास्रव हो, श्रेष्ठ-जीवन (=वास) जी चुका हो, करणीय कर चुका हो, भार उतार चुका हो, सदर्थ प्राप्त कर चुका हो, भव-सयोजन-क्षीण हो गया हो तथा सम्यक् ज्ञान द्वारा विमुक्त हो गया हो, असी गाया कहे तो असका यह कथन समुचित है—

चातुर्धी पञ्चरधी मात्र पन्यस्य बहुमी पाटिशारियपन्यस्य बहुस्गमुख्यागर्व जपोस्त्रं उपवर्धस्य वो प'स्स भाविसो नरो ।

यह किस किए ? भिजुनो यह भिक्षु जम्म बदापा सरक योक रोता-गीटना कुन्न दौर्मनस्य विशालिके मुक्त हैं। मैं कहना है कि यह दुव्यके मुक्त हैं।

(14)

मिनुको में सुकुतार वा परण मुकुमार, अस्यन्त सकुमार। सिनुको मेरे पिठाके पर पुन्करियां नगी भी—एकमें बरान पुण्यत होने में एकमें पद्म तथा एकमें पुन्वरिकः। यह सभी मेरे ही किए में। सिनुको स्वर समार में काणीका ही जनत प्रारक करवा का मिनुको कार्योकों ही वभी मेरे पानी होतों को कारीका ही कंतुक कार्योका ही निदेशत (—पारतरेका करत) कार्योका ही नृत्वरायत (क्यारर)। पिनुको एउन्देश मेरे सिरपर स्थेत-क्रम प्रारक किया जाता का साथिक मुने सीत कतने पानी माने भूक न कते दिनाके न कर्में तथा और त करो। मिनुको उस सम्प्र मेरे तीन प्रावाब के—एक है मन्त-क्युके किए, एक सीम्म-क्युके विद्य स्था एक प्रार्थी का साथिक क्ये-एक है मन्त-क्युके किए, एक सीम्म-क्युके विद्य स्था एक प्रार्थी का साथिक क्ये-एक है प्रस्तुकों में वर्षिक पाने महिने पर क्यकि मासार मिने क्यों प्रस्ता का। उस समार में पुष्पि-वादम करनेवाकी रिकामेसे किए पहला था। मिनुको से सेह पुर्व करोरे सार्गों स्था नौकर-काकरेको विकस और क्यक (मास) दिशा कारा या वैसे ही किनुको केरे रिकास करनेवाकी स्वाम स्थान करनाकरेको मास समा साथी (क्यान) को मास दिशा नाया ।

२ मिल्ला कर सम्म इस मकारका ऐत्तर्य भोनते हुए तथा इस प्रकार की मुद्रुमारता किए हुए मेरे मनमें यह हुना-कारती समाम बन दर्श बराको प्राप्त होनेशाला होकर, दर्श बराके मार्थीय होकर, दिसी हुएने हुकेने देककर कारती मर्थाका पूत्र करण रातरे कि लियत होता है तथा पृथा करणा है। में भी तो दुक्तिको प्राप्त होनेशाला है बुक्तिके सार्थीन हैं। विरि में दर्श बुक्तिको प्राप्त होनेशाला होकर, सर्व बुक्तिके सार्थीन हाकर हुएने बुक्ति देसकर वच्ट पाऊ सारिज्य होनेश तथा चुक्ता करू, तो यह मेरे योग्य न होगा। भिक्षुओ, इस प्रकार विचार करते करते मेरे मनमें यीवनके प्रति जो यीवन-मद या वह सब जाता रहा।

अज्ञानी सामान्य जन स्वय व्याधिको प्राप्त होनेवाला होकर, स्वय व्याधिके आधीन होकर, किमी दूमरे व्याधि-ग्रस्तको देखकर अपनी मर्यादा भूलकर कप्ट पाता है, लिजत होता है तथा घृणा करता है। में भी तो व्याधिको प्राप्त होने वाला हूँ, व्याधिके आधीन हूँ। यदि में स्वय व्याधिको प्राप्त होनेवाला होकर, स्वय व्याधिके आधीन होकर, दूमरे व्याधि-ग्रम्तको देखकर कप्ट पाऊ, लिजत होऊ तया घृणा करू, तो यह मेरे योग्य न होगा। भिक्षुओ, इस प्रकार विचार करते करने मेरे मनमें आरोग्यके प्रति जो आरोग्य-मद था वह सव जाता रहा।

अज्ञानी मामान्य जन स्वय मरणको प्राप्त होनेवाला होकर, स्वय मरणके आधीन होकर, किमी मृत्यु-प्राप्तको देखकर, अपनी मर्यादा भूलकर कप्ट पाता है—लिजत होता है तथा घृणा करता है। मैं भी तो मरणको प्राप्त होनेवाला हूँ, मरण के आधीन हूँ। यदि मैं स्वय मरणको प्राप्त होनेवाला होकर, स्वय मरणके आधीन होकर, किसी मृत्यु-प्राप्तको देखकर कप्ट पाऊ, लिजत होऊ तथा घृणा करू, तो यह मेरे योग्य न होगा। भिक्षुओ, इस प्रकार विचार करने-करने मेरे मनमें जीवनके प्रति जो जीवन-मद था वह सब जाता रहा।

(३९)

"भिक्षुओ, तीन प्रकारके मद है। कीनसे तीन ?

" यौवन-मद, आरोग्य-मद तथा जीवन-मद।

"भिक्षुओ, यौवन-मदमें मत्त अज्ञानी सामान्य जन शरीरसे दुष्कमं करता है, वाणीमें दुष्कमं करता है तथा मनसे दुष्कमं करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे दुष्कमं करके शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर, अपाय, दुर्गति, पतन, नरकको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, आरोग्य-मदसे मत्त अज्ञानी सामान्य जन शरीरसे दुष्कमं करता है, वाणीसे मनसे करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे नरकको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जीवन-मदसे मत्त अज्ञानी सामान्य जन शरीरसे दुष्कमं करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे - नरकको प्राप्त होता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे - मरनेके अनन्तर - नरकको प्राप्त होना है।

े भिजुनो योषन-मबसे मत्त शिख् विषयाका त्याय कर पतनेत्रमुक होता है। भिजुनो आरोग्य-मबसे गत्त भिन्नु विकाका त्याय कर पतनोत्रमुक होता है। भिजुनो बीचन मदसे मत्त भिन्नु विकाका त्यायकर पतनोत्रमुक होता है।

> स्पाधिसमा क्यासमा क्यो प्रत्यक्षिमतो यहा समा त्या सन्ता बिगुच्छित पुकृतका बहुन्ये तं विगुच्छेत्यं एवं सम्मेषु पातियु न मे तं पटिक्तस्स मम एवं विहारिको स्पेतं एवं बिहुत्यो सत्ता बम्यं निकृतीं करोले योक्तास्मित्र भौतिवर्तसम् यो मयो स्थ्ये मदे बाह्यसारिक मेर्निकार्त स्पापस्ती तस्स में बाह्यसार्त्त निकार्त समितस्ती करिकार्त प्रत्यक्षित्र क्षामति परिकेतित् करिकारी प्रतिस्थिति क्षामति परिकेतित्

[ शामान्य बन स्वयं बरा स्थापि तथा मरणके नाशीन होते हुए मी ऐसे ही दूसरे वनीसे चृणा करते हैं। बाँद में बरा स्थापित तथा मरणके नाशीन प्राण्यितीत वृणा कर तो यह मेरे जनुक्य नहीं होता। में उपाधि-पहिल वर्ष (निर्माण) को सानकर जारोप्य बीवन तथा बीवनके प्रति को मत्त-माब ६ वस सकते त्याप देता हूँ। में नैक्स्प्रचा ही स्वयापकर समानता हूँ। में निर्माण-पहिला है। इनकिसे मेरे जनमें उत्साद हैं। में बद काम-मोमोला स्वय करने से सेम्प नहीं हूँ। में सब इह्यप्य-पराष्ट्र होकर पीसे न करिने वाका होनुंगा।

(Y)

"मिसूबो धीन बाबिपस्य है। कौनसे तीन? "बारमाधिपस्य सोकाधिपस्य बर्मीबिपस्य।

"मिश्रुओ आत्माभिपत्व नया है ?

"निगुजो एक निज्ञ करण्यानी होतर, वयना नृशकी छामानें रहनताता होतर बयना मृत्यानारमें रहनेताता होतर दम प्रवाद नियाद करता है— न से भीतरके लिए योगों के प्रविच्छ हुआ निरुप्तात (स्थीयन) के लिए, न स्वयनत्तरके लिए न बहु-बहु गुरु बननेके लिए। से जाति वसा नरफ गोक रोना-पीटना, दुन्न, दोमंनस्य, अधान्तिमे घिरा हुआ हूँ—दुन्ममें दूवा हुआ। अच्छा हो कि इन दुनका सम्पूर्ण विनाश देल सक्। में जिस प्रकारके वाम-भोगोको छोडकर घरमे वेघर हो प्रयुजित हुआ, वैसे ही काम-भोगोंके पीछे पडू, तो यह उससे भी युरा होगा। यह मेरे अनुस्प नहीं है।

"वह यह दिचार करता है—विना प्रमादके मेरा प्रास्त जारी रहेगा, असमूढ स्मृति अपस्थित रहेगी, शरीर शान्त तथा अस्तेजना-रहित रहेगा और चित्त एकाप्र रहेगा। वह अपने-आपका ही आधिपत्य स्वीकार कर अकुशलका त्याग करता है, कुशलकी भावना करता है, सदोपको छोडता है, निर्दोपका अस्याम करता है—अपने जीवनको शुद्ध बनाता है। भिक्षुओ, इसे आत्माधिपत्य कहते है।"

२ "निधुओ, लोकाधिपत्य क्या है?

"भिक्षुओ, एक भिक्षु अरप्यवामी होकर, अयवा वृक्षकी छायामें रहनेवाला होकर अयवा श्रन्यागार में रहनेवाला होकर इस प्रकार विचार करता है-न मै चीवरके लिए घरमे वे घर हो प्रजाजित हुआ, न पिण्डपान (=भोजन) के लिए न रायनासन के लिए, न यह-वह-कुछ बनने के लिए। मैं जाति, जरा, मरण शोक, रोना-पीटना, दुख, दौर्मनस्य, अशान्ति मे घिरा हुआ हूँ--दु व में डूबा हुआ--अच्छा हो यि उम दुख का सम्पूर्ण विनाश देख सकू। इस प्रकार प्रवर्जित हुआ हुआ मैं यदि काम-भोग सम्बन्धी सकल्प-विकल्पों को मन में जगह दू, व्यापाद (=क्रोध) सवन्धी मकल्प-विकल्पो को मन में जगह दू, वि-हिंसा सम्बन्धी सकल्प-विकल्पो को मन में जगह दूँ, तो यह ससार बहुत वडा है। इस महान् ससार में कुछ श्रमण-त्राह्मण असे है जो ऋदिमान् है, दिव्य चक्षुवारे है, दूसरे के मन की बात जान छेने वाले हैं। वे दूर में भी देख छेते हैं, पाम होने पर भी दिखाओं नहीं देते हैं, वे चित्त से भी चित्त की बात जान छेते हैं। वे भी मेरे बारे में जान लेगे- इम कुल-पुत्र को देखो। यह श्रद्धापूर्वक घर मे वेघर हो प्रव्रजित हुआ है, किन्तु ऐसा होकर भी यह पापी अकुदाल-धर्मोन युक्त हो विहार करता है। कुछ देवता (=देवियां) भी है जो ऋद्धिमान् है, दिव्य-चसु-धारिणी है तथा पर-चित्त को जान लेने वाली है। वे भी मुझे इस प्रकार जान लेगी--इस कुलपुत्र को देखो । यह श्रद्धापूर्वक घर से वेघर हो प्रव्नजित हुआ है, किन्तु ऐसा होकर भी यह पापी अकुशल-धर्मों से युक्त हो विहार करता है।

नह सह विचार करता है—विना सत्रमावके मेरा प्रयत्न वाधी रहेगा असंमुद्ध स्मृति उपस्थित रहेगी धरीर कारत वचा स्रोत्यमा-रहित रहेगा और पिका एकार रहेगा। यह कोक का ही साथियस स्वीकार कर अकुषक का स्थान करता है कुक्तम की मानना करता है स्वीप को कोवता है निर्योग का सम्मास करता है— सारने नीवन की युद्ध बनाता है। मिलुसी इमें कोकाशियस वहते हैं।

भ भिक्षको भर्माधियपस्य क्वा है ?

"पिखाओं एक भिक्ष अरम्यवासी होकर, अववा वक्षकी स्नाया में रहते नामा होकर अवना मन्यायार में रहने नाका होकर इस प्रकार विचार करता है-न में चीवर के लिए भर से वेवर हा प्रवक्ति हमा न पिण्डपात (≖भोजन) के फ्रिस् न चयनासन के किए, न यह-वह कुछ बनने के सिए। मैं बादि जरा मरव सोक रोना-पीटना दुवा वौर्यनस्य अधान्ति से निराहमा हूँ—दुवा में दूवा हुना। अच्छा हो कि इस दुख का सम्पूर्ण दिनाध देख सकूँ। भगवानुका सर्म स-बाक्यात है साहाँदक (इडकोक-संबधी ) है बकाविक है इतके बारे में कहा वा सकता है कि बाबो और स्वय देख को निर्माण की ओर के जाने गाला है इसका प्रत्येक विज्ञ वन स्थय सामात कर सकता है। मेरे तजहावारी (सावी) है जो भारते हुए, देखते हुए विहार करते हैं। विद मैं इत प्रकार के मु-वाक्सात वर्ममें प्रवासित होकर भी सालगी रहें प्रजाबी रहें ता यह मेरे सन्हम नही होया। वह सह सोबना है--विना बनाव के मेरा प्रमत्न जारी खेगा। वर्षमूब स्मृति चपरिवत खेगी सरीर धान्त तथा उत्तेजना रहित खेमा और वित एकाम रहेना। वह धर्म का ही बाधिपत्य स्वीकार कर बकुसक का त्याय करता है बुसक की भावता करता है विभागो प्रमे धर्माविपरम कहते हैं। भिभागों से तीन जाविस्पत्य है।

र तिल कोके पूरी ताम पापकाम प्रमुक्ता । बता हे पुरिस बातारि सम्ब ना बीद ना मुसा करवाम बन भी तिल्व सताल महित्रकाशि यो मुत्र बताल परिपृष्टिस स्मान कराती पात बताल परिपृष्टिस स्मान कराती पात करात साम विस्म बरल हस्सा है बताबियां से सोकसियों व निष्कों के साम धम्माधियो च अनुधम्मचारी न हीयित सच्च-परक्कमी मुनि पसरह मार अभिभूय्य अन्तक मो च फुमी जातिक्लय पधानवा म तादिसो लोकविंदू सुमेधो सब्वेगु धम्मेसु अतम्मयो मुनि।

[पापकर्म करने वाले के लिये लोक में छिपकर काम करने की जगह नही है। हे पुरुष । जो कुछ तू अच्छा या बुरा करता है, वह मत्य है या मृषा है, यह वात तेरा अपना-आप तो जानता ही है। हे माशी । तू सुन्दर है, जो तू अपने आपका ही अतिक्रमण करना है। तू अपने पाप को अपने में ही छिपाता है। लोक में मूर्त आदमी जो अनुचिन कर्म करता है उसे देवता और तथागत देखते है। इस लिये अपने-आप का ही आधिपत्य स्वीकार करने वाले को म्यृतिमान रहना चाहिये तथा लाकाधिपत्य स्वीकार करने वाले को बुद्धिमान तथा ध्यान करने वाला होना चाहिये। धर्म का आधिपत्य स्वीकार करने वाला, धर्मानुमार आचरण करने वाला यथार्य-पराक्रमी मुनि कभी ह्याम को प्राप्त नही होता। वह प्रयत्नवान् मुनि मार तथा अन्तक (=यमराज) को पराजित कर जाति-क्षय (निर्वाण) को स्पर्श करता है। इस प्रकार का लोक का जानकार बुद्धिमान् मृनि ममी धर्मों (=विषयो) की तृष्णा के पर हो जाता है।

#### (88)

"भिक्षुआ, इन तीन के होने से श्रद्वावान् कुलपुत्र को बहुत पुण्य होता है। किन तीनके ?

"भिक्षुओं, श्रद्धा के होने मे श्रद्धात्रान् कुलपुत्र को बहुत पुण्य होता है। भिक्षुओं, दातव्य-वस्तु के होने से श्रद्धावान् कुलपुत्र को बहुत पुण्य होता है। भिक्षुओं, दिक्षणा (=दान) देने योग्य व्यक्ति के मिलने मे श्रद्धावान् कुलपुत्र को बहुत पुण्य होता है।

" भिक्षुओ, इन तीन के होने मे श्रद्धावान् कुलपुत्र को बहुत पुण्य होता है।" (४२)

"भिक्षुओ, तीन वानो मे श्रद्धावान् की, प्रमन्न-चित्त की पहचान होती है। कौन मी तीन वातो से ?

"वह शीलवानो (सदाचारियो) के दर्शन की इच्छा रखने वाला होता है, वह सद्धमं सुनने की इच्छा रखने वाला होता है, वह मात्सर्य्य रहित होकर गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है मुक्त-त्यामी कुछे हाब बाका स्थाती परिस्मामी तबा बानधीक। मिसूमो इन तीन बार्जों से महाबान की प्रसन्न-वित्त की पहचान होती है।

> बस्सनकामो सीसनतं सबस्मं सोनुमिष्कति विनेयम मण्डेरमक सबे सदो हि ब्रव्यति

[बीकवानों का वर्धन करना चाहुता है सबसे सुनना भहता है, मालस्में (⇒कंबुसपन) को जीठे पहता है—वही अबावान कहनाता है।]

(88)

"भिश्वा तीन वातो का क्यांक कर हुए में को धर्मीपरेश देना सोम्य है। कीन भी शीन वातो का ? जो धर्मीपरेश देता है वह वर्ष तथा बसे दोनी का बानकार होता है जो धर्मीपरेश पुगता है वह सर्व तथा बसे दोनी का बानकार होता है जो धर्मीपरेश देते तथा धर्मीपरेश पुनते हैं वै दोनों सर्व तथा बसे दोनों के बानकार होते हैं। भिश्वा दन तीन वातो का क्यांक कर हुए से वो धर्मीपरेश देना सीख है।

(YY)

"शिक्षुको तीन कारनो से (धर्म) कवा का अवर्तन होता है। गीन से तीन कारनो से? वा बर्गोपरेच देता है यह अर्थ तथा बर्म दोनो का मानकार होता है जो अर्थोपरेक पुनता है यह अर्थ तथा धर्म दोनो का मानकार होता है जो अर्थोपरेक देते तथा बर्मोपरेक पुनते हैं दे दोनो कर्य तथा धर्म दोनो के नानकार होते हो। सिद्युको दूर तीन कारणो से (धर्म) क्या का अवर्तन होता है।

(¥4)

" भिज्ञा इन बीन वादो को पश्चितों ने प्रजापित किया है छापुक्यों में प्रजापित किया है। कीन सी बीन वादों को ?

मिन्नुयो बान को परिवरों ने प्रकारित किया हूँ सन्दुक्तों ने प्रकारित किया है। निम्नुयो प्रकार को परिवरों न प्रकारित किया है सन्दुक्तों ने प्रकारित किया है। मिन्नुयो मारा-पिरा की सेवा को परिवरों ने प्रकारित किया है सन्दुक्तों ने प्रकारित किया है। मिन्नुयो हन तीन बाठी को परिवरों ने प्रकारित किया है सन्दर्भों ने प्रकारित किया है। सिंध दान उपन्त्रत्त अहिंसानच्च्रमो दमो मातापितुउपट्ठान मन्तात यहाचारिन सत एतानि ठानानि यानि नेवेच पण्डितो अरियो दस्सनसम्पन्नो स लोक भजते निव॥

[सत्पुरुपो ने दान, अहिसा, सयम तथा दम की प्रश्नमा की है और शान्त, श्रेप्ठाचरण करने वाले तरुणो द्वारा की जाने वाली माता-पिता की मेवाकी प्रश्नमा की है। सत्पुरुपो द्वारा प्रश्नित वातों के अनुसार जो पण्डित आचरण करता है वह श्रेप्ठ है, वह दर्शनीय है, वह कल्याण को प्राप्त होता है।]

## (४६)

"भिक्षुओ, जिस गाँव अथवा निगम के आश्रय से सदाचारी, प्रव्रजित (भिक्षु) रहते हैं, उस बस्ती के रहने वाले तीन तरह से बहुत पृण्य लाभ करते हैं। कौन सी तीन तरह से ?

"शरीर से, वाणी से तया मन स।

"भिक्षुओ, जिस गाँव अथवा निगम के आश्रय में सदाचारी प्रव्रजित (भिक्षु) रहते हैं, उस बस्ती के रहने वाले तीन तरह में बहुत पुण्य लाम करते हैं।"

### (४७)

"भिक्षुओ, सस्कृत-धर्मों के ये तीन सस्कृत लक्षण है। कौन से तीन ? ''उनकी उत्पत्ति दिखाई देती है, उन का विनाश दिखाई देता है, उन में परिवर्तन दिखाअई देता है। निक्षुओ, सस्कृत-धर्मों के ये तीन सस्कृत-लक्षण है।"

"भिक्षुओ, असस्कृत-धर्मों के ये तीन अमस्कृत-लक्षण है। कीन से तीन ?
"न उनकी उत्पत्ति दिखाई देती हैं, न विनाश दिखाई देता है और न उनमें परिवर्तन दिखाई देता है। भिक्षुओ, असस्कृत-धर्मों के ये तीन असस्कृत-लक्षण है।"

#### (86)

" भिक्षुओ, पर्वतराज हिमालय के आश्रित रहते हुए महाशाल वृक्ष तीनः तरह से वृद्धि को प्राप्त होते हैं। कौन सी तीन तरह से ? श्रीवन व्यतीत करता है मुक्त-त्यापी कुछे हाव वाका त्यापी परित्यापी तथा राजधीछ। भिनुत्रो हन तीन बाउँ से यञ्जाबान् की प्रसन्त-वित्त की पहचान होती है।

> दस्यनकामो सीजवर्त सङ्ग्मं सोतुनिच्छति विनेध्य मच्छेरमस सचे सङ्गो हि बुच्चति

[ चीकवार्गे का दर्धन करना वाहता है धडमें सुनना वहता है मासम्में (⇒कंत्रसपन) को जीते एडता है—वही सदावान वहकाता है।]

(¥¥)

"भिज्ञा तीन वार्तों का क्यांक कर कुछरों को तमींपरेख देना मोम्स है। कीन धी तीन वार्तो का? जो अमींपरेख देता है वह सर्व तबा बसे दोनों का बानकार होता है जो अमींपरेख पुनता है वह सर्व तथा असे दोनों का बानकार होता है जो अमींपरेख देते तथा बसींपरेख पुनते हैं है दोनो अर्थ तथा धर्म दोनों के बानकार होते हैं। निश्चनों दन तीन वार्तो का क्यांक कर हुछरों की धर्मीपरेख देना सीम हैं।

(XX)

मिल्ला तीन कारनो थे (याँ) कवा का प्रवर्ग होया है। वीन से तीन कारनो थे? को बर्नोपरेख देता है यह सर्व तथा वर्म दोनों का बातवार होता है को बर्नोपरेख गुनता है वह वर्ष तथा वर्म दोनों का बातवार होता है को बर्नोपरेख गुनता है वह वर्ष तथा वर्म दोनों का बातवार होता है को बर्नोपरेख देते तथा सर्मोपरेख गुनते हैं वे दोनों कर्म तथा बर्मो दोनों के बातवार होते हैं। मिल्ला हो तीन तथा से तीन है। मिल्ला होता है।

(Y4)

"भिक्षुको इन तीन वार्तीको पश्चितो ने प्रकापित किया है सस्पुक्यों ने प्रकापित फिया है। कौन भी तीन वार्तो को ?

भिश्वनों दान को पश्चितों ने प्रकारित किया है सर्पुक्यों ने प्रकारित किया है। निकृतों प्रकार को पर्यक्यों ने प्रकारित किया है तरपुक्यों ने प्रकारित क्या है। विकृतों साजा-रिजा को तेवा को पर्यक्यों ने प्रकारित क्या है सरपुक्यों ने प्रकारित क्या है। निकृतों इन तीन कानों को पश्चियों ने प्रकारित किया है सरपुक्यों ने क्यारित क्या है। प्रयत्न करना चाहिये, जो दुख-पूर्ण, तीव्र, प्रखर, कटु, प्रतिकूल, दुरी, प्राणहर भारीरिक वेदनाओं हो उन्हें सहन करने का प्रयत्न करना चाहिये।

"भिक्षो, इन तीन बातो के लिये प्रयत्न करना चाहिये।

"भिक्षुओ, जब मिक्षु जो अनुत्पन्न पाप है, अकुशल-धर्म है उनके उत्पन्न न होने देने के लिये प्रयत्न करता है, जो उत्पन्न कुशल धर्म है उन के उत्पन्न करने के लिये प्रयत्न करता है, जो दु खपूर्ण, तीव्र, प्रखर, कट्ट, प्रतिकूल, बुरी, प्राणहार शारीरिक वेदनाओं होती है, उन्हें महन करने का प्रयत्न करता है, तो भिक्षुओ, भिक्षु सम्यक् प्रकार में दु ख का अन्त करने वाला स्मृतिमान्, बृद्धिमान् प्रयत्नवान कहलाता है।"

#### (40)

"भिक्षुओ, तीन वाती से युक्त महाचोर सेघ भी लगाते हैं, लूटमार भी करते हैं, डाका भी डालते हैं, रास्ता भी घेरते हैं। कीन मी तीन वानो से  $^{7}$ 

"मिक्षुओ, इस सम्बन्ध में महाचोर विषम-आश्रित होता है, गहन-आश्रित होता है तथा बलवान्-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, महाचोर विषम-आश्रित कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर निदयों के दुर्गम-स्थान में या पर्वतों के विषम-प्रदेश में रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, महाचोर विषम-आश्रित होता है। भिक्षुओ, महाचोर गहन-आश्रित कैसे होता है?

"भिक्षुओ, इस सम्बन्ध में महाचोर तिनको के गहन-जगल में छिपा होता है, वृक्षो के गहन जगल में छिपा होता है, वन में छिपा होता है, महान् वन में छिपा होता है। इस प्रकार भिक्षुओ महाचोर गहन-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, महाचोर बलवान्-आश्रित कैसे होता है?

"भिक्षुओ, इस विषय में महाचोर राजाओ या राजाओं के महामात्यों का आश्रित होता है। उसके मन में होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो ये राजा या राजाओं के महामात्य मेरा बचाव करेगे। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो ये राजा वा राजाओं के महामात्य उसका बचाव करते हैं। इस प्रकार भिक्षुओ, महाचोर बलवान्-आधित होता है। भिक्षुओ, इन तीन बातो से युक्त महाचोर सेष्ट भी लगाते हैं, लूट-मार भी करते हैं, डाका भी डालते हैं, रास्ता भी घेरते हैं।"

"याबार्ये तबा पत्ते बढते हैं छान तबा पपनी बढ़ती है प्रस्तु-आर में इंकि होती है। जिसूसी पर्वतप्तन हिमालम ने बासित प्रते हुए सङ्ख्यान वृक्ष तीन तप्तर से वृक्षि को प्राप्त होते हैं।

इसी प्रकार सिख्यों श्रद्धावान् कुल-गति के कारण उसके बासय में रहने वासे अर्जी में तीन वालों की वृद्धि होती हैं। कौन सी तीन वालों की ?

भवा भी नृति होती है शील भी नृति होती है तथा प्रशा भी नृति होती है। मिसुबो सदाबान् भूक-पति के कारण उसके नामय में रहते बाले बतो में तीत बातों की नृति होती है।

पुराण क्षेत्र होती करण्यस्थि कहावने यं क्षक उपनिस्साम कडकते हे बनास्ति तवेव ग्रीकराम्यमं मार्च कुरूपित हम उपनिस्साम कडकति पुराशाय च बन्धवा समन्या आतिस्था च में चस्स सनुवीतिनो स्पर्स्य ग्रीकराती ग्रीकर्म वार्ष ग्रुचितानि च पस्समाना मुकुम्बनित में प्रवन्ति विचनक्षणा इस कम्में बरिजान मार्ग ग्रुपतिशामिन

नन्दिनो देवबोरुस्थि मौदन्ति कामकामिनो।

[बिछ प्रकार करकोर बंगले में कैल-गर्वत के जायस रहते वाले वृक्ष जतके कारण वृक्षि की प्रान्त होने हैं उसी प्रकार सही क्षावान कुल-गति के बाध्य रहते वाले उतके कारण वृक्षि को प्रान्त होने हैं—पुननका बन्तु, बगारा वार्गियन उसके बाध्यत-जन । वृक्षिमान जन उत सरकारों के बील तथा स्थान का अनुकरण करने हैं। वे नुपत्तशामियों के मार्थ वर्ष के अनुमार बायरण करके हम्ब्याओं की यूर्ति होन से देव लोक में प्रस्त हो और को प्रान्त होने हैं।]

#### ( YY )

पिनुदो तीन बानों में प्रयत्न करना काहिये। किन तीन बानों में ? "यो बनुसान पाप हैं जबुमन-समें हैं उनके उस्ताप्त न होने देने के क्रिये जबल करना चाहिये। जो जनुसाप कुमत-समें हैं उन के उस्ताप्त करने के क्रिये नहीं किये हैं। कुदाल-कर्म नहीं किये हैं। हमारा मय ने त्राण नहीं हुआ है। आप गौतम हमें उपदेश दें। आप गौतम हमारा अनुशानन करे, जो दीर्घ काल तक हमारे हित और मुख के लिए हो।"

"हे ब्राह्मणों । तुम निश्चय में जरा-जीणें हो, वृद्ध हो, वूढ़े हो, तुम्हारी आयु बडी हैं, तुम वय-प्राप्त हो, तुम एक मो बीस वर्ष के हो। तो भी तुम ने शुभ-कमं नहीं किये हैं। कुशल-कमं नहीं किये हैं। तुम्हारा भय से श्राण नहीं हुआ है। हे ब्राह्मणों ! यह नमार जरा, व्याधि तथा मरण द्वारा (खींचकर) ले जाया जाता है। इस प्रकार जरा, व्याधि तथा मरण द्वारा खींचकर ले जाये जाने वाले का मसार में जो यह शरीर, वाणी तथा मन का सयम है वहीं उस परलोक-प्राप्त व्यक्ति का श्राण है, वहीं आश्रय-स्थान है, वहीं द्वीप है, वहीं शरण-स्थान है, वहीं परायण है।

"उपनीयित जीवित अप्प आयु जरूपनीतस्म न मन्ति ताणा एत भय मरणे पेक्समानो पुञ्जानि कयिराथ सुखावहानि

[अल्प-आयु जीवन को (खीचकर) छे जाती है। वूढापे द्वारा (खीचकर) छे जाये जाने वाले के लिये कोई शरण स्थान नही है। मृत्यु के इस भय-भीत स्वरूप को देखकर मनुष्य को चाहिये कि वह सुखदायक पुण्य-कर्म करे।]

"जो शरीर वाणी तथा मन का सयम है, वह जीते जी पुण्य-करने वाले व्यक्ति के लिये परलोक-प्राप्त होने पर सुख का कारण होता है।"

(47)

उस समय दो ब्राह्मण—जो जरा-जीर्ण थे, वृद्ध थे, वूढे थे, जिन की आयु वडी थी, जो वय-प्राप्त थे, जो एक सौ वीस वर्ष के थे—जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। जाकर भगवान् को एक ओर वैठे उन ब्राह्मणो ने भगवान् को यह कहा —

"हे गौतम। हम ब्राह्मण हैं, जरा-जीर्ण है, वृद्ध हैं, वूद्धे हैं, हमारी आयु वडी हैं, हम वय-प्राप्त हैं, हम एक सौ बीस वर्ष के हैं। तो भी हम ने शुभ-कर्म वहीं किये हैं। कुशल-कर्म नहीं किये हैं। हमारा भय से श्राण नहीं हुआ है। २ इसी प्रकार निसुओं तीन मानों में यक्त पानी मिस् अपनेको स्वर्ध काट पहुँकात है मधोर हाना है किस पुसर्यों बारा निस्तित होना है तका बहुत अपूर्य्य साम करता है। कीन भी तीन कारों से ?

"भिनुत्रो इस सम्बन्ध में पानी मिणु विषय-आधित शोना है यहन आधित होता है तथा बलवानु-आधित होता है।

"मिसुको पानी भिन्नु वियम अभिन कैसे होता है ?

"मिल्का एम सम्बन्ध में बारी-मिल्ल विवय-पाधिरिक-कर्य से पुरूत होता है वियम बाबी के कर्म म पुरुत होता है वियम बारी-कर्य से पुरुत होता है। इस प्रवार मिलको जारी मिरा वियम कांचित हाता है।

"मिग्त्री, पारी-मिन् गहन-आभित कैसे होता है ?

"मिजूबो, इन नम्बन्ध में पारी निन्तु विस्मा-वृद्धि हाता है दो सिर्दे की बातों में युक्त'। इन प्रकार मिलुबो पारी विश्व यहन-बाधिन होता है।

विनुष्ठा थानिकत कतवात-वाधित के हे हाता है?
विशुक्ती इन विश्वस में पानि किसू ध्यानों का ध्यानों में नहाबाओं वा साधित होता है। यन ने मन में होता है कि विद्यानों को हैं हुए नहेना तो में पान प्राप्त में ने किस होते हैं हुए नहेना तो में पान प्राप्त में ने कार्य प्राप्त में प्राप्त किस होते हैं। यह उने कार्य हुए पहाले हों में राजा था ध्याना के महानाथ उनका वचार नहीं है। यह उनकार निश्वों, वार्तिकत कमानु-वाधित पाने हैं। इस करार विनुष्तें का तीन वार्ता ने पूछा वार्ति जिल्ला नहीं कर वीन वार्ता ने पूछा वार्ति जिल्ला नहीं कर वीन वार्ता ने एक वार्ति जिल्ला नहीं है। इस पूर्ण कार्य करता है।

(51)

पन ननप सा सामन-पाने जान-पाने में मुख्ये मुद्धे में जिन की बायु नहीं भी सो बस मान में जो एक मी बीत को ने के--बहां बनसाह से बार को । जावर नरसाह को एक बोर की जब सामनी में बारबाह की पह का--

हे भीतन । हन बाह्यन है जरा नीने हैं मुख है जुड़े हैं हमारि बाबू बरी हैं इस नय मान हैं जन एक भी मीन वर्त के दें। नी भी हमते सुमन्तर्य

१ काम बार-सर जीवन का आग्य-कोप्यसर बीवन ।

"हे प्राह्मण! जिसका चित्त रागमे अनुरान है, रागमे अभियूत है, रागके वशीमूत है, वह अपने अहितकी भी वात मोचता है, दूमरेके अहितकी भी वात मोचता है तथा चैतमिक-दु ए, दीर्मनस्यका अनुभव करता है। रागका नाश हो जानेपर न वह अपने अहितकी बात सोचता है, न दोनोंके अहितकी वात मोचता है, न दोनोंके अहितकी वात मोचता है, तथा चैतिमक-दु ख दौर्मनस्य का अनुभय करता है। हे स्राह्मण इस प्रकार भी धर्म माइण्टिक होता है

"हे ब्राह्मण! जिसका चित्त द्वेपमे दूषित है, द्वेपसे अभिभूत है, द्वेपके वशीभूत है, वह अपने अहितकी भी बात सोचता है, दूसरेके अहितकी भी बात सोचता है, दोनों के अहितकी भी बात गोचता है तथा चैतिसक-दुख दीमंनस्यका अनुभव करता है। द्वेपका नाश हो जाने पर न वह अपने अहितकी बात गोचता है, न दूसरेके अहितकी बात गोचता है, न दोनोंके अहितकी बात गोचता है तथा न चैतिसक-दुख दौमंनस्यका अनुभव करता है। हे ब्राह्मण! इस प्रकार भी धर्म सादृष्टिक होता है

"हे ब्राह्मण । जिसका चित्त मोहमे सूढ है, मोहसे अभिसूत है, मोहके वशीभूत है, वह अपने अहितकी भी बात सोचता है, दूसरेके अहितकी भी बात सोचता है, दूसरेके अहितकी भी बात सोचता है, दोनोंके अहितकी भी बात सोचता है तथा चैतसिक-दुख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। मोहका नाश हो जानेपर न वह अपने अहितकी बात सोचता है, न दूसरेके अहितकी बात सोचता है, न दोनोंके अहितकी बात सोचता है तथा न चैतिसक-दुख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। हे ब्राह्मण! इस प्रकार भी धर्म सावृष्टिक होता है

"हे गौतम । सुन्दर है आप गौतम आजसे जीवन पर्य्यत मुझे अपना शरणागत उपासक जानें।"

## (48)

चस समय एक ब्राह्मण परिम्नाजक जहाँ भगवान् ये वहाँ गया एक और वैठे हुए ब्राह्मण परिम्नाजकने भगवान् को यह कहा—"हे गौतम । धर्म को 'सादृष्टिक' कहा जाता है। कौतसा गुण होनेसे धर्म सादृष्टिक (= इस लोक सम्बन्धी) होता है, अकालिक (समयकी सीमासे परे)एहिपस्सिक (जिसके बारेमें कहा जा सके कि आओ माप पौतम हमें उपदेश हैं। आप गौतम हमारा अनुशासन कों जो दीर्पकास कर हमारे हिन और मुख के किए हो।" "हेबाह्मणी! तुम निरम्य में करा-वीर्ण शृक्ष हो बुद्दे हो तुम्हारी

मायुवही है नुसबस-प्राप्त हा तुन एक भी बीम वर्ष के हो। तो सी तुम ने धूम-नर्भ नहीं निय है। नुपाल-कर्न नहीं निर्य है। सुम्हारा मय मे बाम नहीं हुआ है। हे बाह्यमा! यह मैनार जरा ध्वाधि भरण में जल रहा है। इस प्रमार जरा स्याधि तथा मरण में प्रदीप्त गंनारमें जो यह धारी र, बाबी तबा मन बा संबंध है बहु क्रम परमोद प्राप्त व्यक्ति का काण है। बही आध्यय-बात है। बही द्वीप है। बही

बारम-स्थान है। नहीं परायण है। बादिनस्ति बनार्यस्यं नीइरिंह धावनं तं तरम होति अन्याय नो च वं तरब इम्हति एवं आदीपिको नौको अराय बरकोन च नीहरबैंव रानेन निम्न होति न्तीहर्त ।

क्रिंग नाम लगी हाता को बरनन उन आपने ने बचा निमा जाना है बरी बाम भारत है। जो बरनन भागमें जन जाता है नह नान करें भागा। इसी प्रचार यह संसार करा तथा बरणने बन परा है। इन्नेंगे दान देवर यो निवाना वा गरे निवान है। दान विय वा नता क्या है।

"को गरीर बाबी तथा अनुसा संबन्ध वर्ग की की नुस्त करने की

व्यक्ति के तिने परनार-याल होनार मुनवा नारण होता है । " (51)

अनुनवर एट बाह्मण करा जगवान वे वहा क्या । बावर बगवापी तर और है रे हुई पन सामान्त्रे धररावरों पर रहा---नाव

"हे ब्राह्मण! जिसका चित्त रागमे अनुरक्त है, रागमे अभिभूत है, रागके वशीभूत है, वह अपने अहितकी भी वात सोचता है, दूमरेके अहितकी भी वात सोचता है, दूमरेके अहितकी भी वात सोचता है, तथा चैतिसक-दुख, दौर्मनस्यका अनुभव करता है। रागका नाश हो जानेपर न वह अपने अहितकी बात सोचता है, न दूसरेके अहितकी बात सोचता है, न दोनोंके अहितकी वात सोचता है तथा न चैतिसक-दुख दौर्मनस्य का अनुभव करता है। हे झाह्मण! इस प्रकार भी धर्म साद्षिटक होता है

"हे ब्राह्मण! जिसका चित्त द्वेपसे दूपित हैं, द्वेपसे अभिभूत है, द्वेपके विशोभूत है, वह अपने अहितकी भी बात सोचता है, दूसरेके अहितकी भी बात सोचता है, दोनों के अहितकी भी बात सोचता है तथा चैतिसक-दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। द्वेपका नाश हो जाने पर न वह अपने अहितकी बात सोचता है, न दूसरेके अहितकी बात सोचता है, न दोनोंके अहितकी बात सोचता है तथा न चैतिसक-दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। हे ब्राह्मण! इम प्रकार भी धर्म सादृष्टिक होता है

"हे ब्राह्मण! जिसका चित्त मोहसे मूढ है, मोहसे अभिमूत है, मोहके वशीभूत है, वह अपने अहितकी भी बात सोचता है, दूसरेके अहितकी भी बात सोचता है, दोनोंके अहितकी भी बात सोचता है तथा चैतिसक-दुख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। मोहका नाश हो जानेपर न वह अपने अहितकी बात सोचता है, न दूसरेके अहितकी बात सोचता है, न दोनोंके अहितकी बात सोचता है तथा न चैतिमक-दुख चौर्मनस्यका अनुभव करता है। हे ब्राह्मण! इस प्रकार भी धर्म सादृष्टिक होता है

"हे गौतम । सुन्दर है आप गौतम आजसे जीवन पर्य्यत मुझे अपना शरणागत उपासक जानें।"

(48)

चस समय एक ब्राह्मण परिब्राजक जहाँ मगवान् थे वहाँ गया एक और वैठे हुए ब्राह्मण परिब्राजकने भगवान् को यह कहा—" हे गौतम ! धर्म को 'सादृष्टिक' कहा जाता है। कौनसा गुण होनेसे धर्म सादृष्टिक ( = इस लोक सम्बन्धी) होता है, अकालिक (समयको सीमासे परे)एहिपस्सिक (जिसके वारेमें कहा जा सके कि आओ और स्वयं वेश लो) जोपनियक (निर्वाण की बार से जानेवाला) त्वा प्रत्येक विश्व वादमी बारा सामात किया जा सकते बाला।"

"हेबाइनि निसका किस रामधे वह अपने सहिवकी बाव (५३) अनुभव करता है। रामका नाम हो बानेपर वनुभव करता है।

" हे बाह्मन ! जिनका चित्त रायवे धरीरछे दुष्कर्म करता है वाणीसे मनसे बुष्कर्म करता है। समका मान होनेपर म सरीरसे बुष्कर्म करता है

न वाजीछे ग मन से पुष्कमं करता है।
है ब्राह्मण ! सिसका वित्त रागले वह समार्थ जारमार्थ भी नहीं बानता
है सवार्थ परार्थ की नहीं जानता है सवार्थ उपयार्थ भी नहीं बानता है। रामका
सास हो बानेयर सवार्थ जारमार्थ भी बानता है। स्वार्थ परार्थ भी बानता
है सवार्थ उपयार्थ भी बानता है। इसी प्रकार बाह्मण ! सर्थ साद्धिक
होता है

"हंबाह्यम! निसका चित्त द्वेग स

"हे बाह्यमा! निसका चित्त मोहश्च मूब है वह सपने महितकी बात अनुमय करता है। मोहका नास हो जानेपरः अनुमय करता है।

"है बाह्मण ! निस्का चित्त मोहसे मूड है धरीरसे पुष्पमं करता है बामोर्स मानसे पुष्पमं करता है। मोहका मात होने पर म सरीरसे पुष्पमं करता है म बामीसे म मानसे पष्पमं करता है।

"हे बाह्मन ! निष्ठका चित्र मोहसे नृष्ठ है वह मनार्थ आरमार्थ मी नहीं जानता है मनार्थ पर्यों भी नहीं जानता है सवार्थ उपमार्थ भी नहीं जानता है। मोहस नाम हो चानेपर यवार्थ आरमार्थ भी बानता है मवार्थ परार्थ भी जानता है मनार्थ उपमार्थ भी जानता है। हे बाह्मन ! इस प्रकार भी सारिष्टक

हे गीतन । सुन्दर है अगर चीतन आजत जीवन पर्सीत मुखे अपना शरकागत उपासक आर्ने ।

## (44)

पत समय जानुस्तीची बाह्यन जहाँ नपनान् वे वहाँ सवा पक और वैठे बाबस्त्रीमी बाह्यन ने मगवान् को यह कहा--- "हे गौतम । निर्वाण को 'सादृष्टिक' कहा जाता है। कौनसा गुण होनेसे निर्वाण 'सादृष्टिक' होता है, अकालिक, एहिपस्सिक, ओपनियक तथा प्रत्येक विज्ञ आदमी द्वारा साक्षात किया जा सकते वाला।

"हे ब्राह्मण । जिसका चित्त रागसे वह अपने अहितकी बात (५४)
दोनोके अहितकी वात अनुभव करता है। रागका नाश हो जानेपर
न वह अपने अहित न दोनोंके अहितकी बात अनुभव करता है।
हे ब्राह्मण । अस प्रकार निर्वाण 'सादृष्टिक' होता है

"हे ब्राह्मण। जिसका चित्त द्वेषसे दूषित है

"हे ब्राह्मण! जिसका चित्त सोहसे सूढ है वह अपने अहितकी वात अनुभव करता है। मोहका नाश होजाने पर न वह अपने अहितकी वात न दोनोंके अहितकी वात अनुभव करता है। हे ब्राह्मण! अस प्रकार निर्वाण 'मादृष्टिक' होता है, अकालिक, एहिपस्सिक, ओपनियक तथा प्रत्येक विज्ञ आदमी द्वारा साक्षात किया जा सकनेवाला।"

"हे गौतम । सुन्दर है आप गौतम आजसे जीवन-पर्यंत मुझे अपना शरणागत उपासक जानें।"

## (५६)

उस समय एक महाक्षाल ब्राह्मण जहाँ भगवान् (बुद्ध) थे, वहाँ गया। एक ओर वैठे हुए उस महाशाल ब्राह्मणने भगवान्को यह कहा—

"हे गौतम मैंने बड़े-वूढ़े आचार्य-प्राचार्य पूर्वके ब्राह्मणोंसे सुना है कि पहले यह ससार इतना अधिक बसा हुआ था, मानो अवीची नरक हो, ग्राम निगम तथा राजधानियों में मनुष्योकी इतनी अधिक वसती थी कि मानो मुर्गे-मुर्गी भरे हो।

"हे गौतम । इसका क्या कारण है, क्या प्रत्यय है जिससे अब मनुष्योका क्षय हो गया है, कमी दिखाओं दे रही है, ग्राम अग्राम हो गये हैं, निगम अनिगम हो गये हैं, नगर अनगर हो गये हैं तथा जनपद अजनपद।"

" ब्राह्मण । अब मनुष्य अधर्म-रागानुरक्त है, विषय-लोभ के वशीभूत हैं, मिथ्याधर्मके अनुयाओं है। वे अधर्म-रागानुरक्त होनेके कारण, विषय-लोभके वशीभूत होनेके कारण, मिथ्या-धर्मके अनुयायी होनेके कारण, तेज शस्त्र लेकर परस्पर एक कूसरेकी कान केते हैं। इससे कहुत मनुष्य मृत्युको प्राप्त होते हैं। हे बाह्यण रें यह भी एक कारण हैं यह भी एक प्रत्यय है किससे कव मनुष्योंका क्षय हो नवा है कभी विकासी देखी हैं प्राप्त क्षाय हो नये हैं निनम अनिवस हो गये हैं नगर अननर हो गये हैं त्या कनपद बवनपद।

किर ब्राह्मभ ! अब मनुष्य अधर्म-एयानुस्तर है नियम-क्षेप्रके बयी-मृत है निष्पाधर्मके अनुवायी है। उनके अधर्म-एयानुस्तर होनेके कारण विषय-कोध के बयीभूच होनेके कारण निष्पा-धर्मके अनुवाशी होनेके कारण देव भी अच्छी तरह नहीं बरस्ते। इसके मुख्या होता है जैयी नहीं होती दिविहर्म जा जाती हैं बस्कों में बाता नहीं पहचा। इसने बहुत मनुष्य मृत्युका प्राप्त होत है। हे बाह्मण बहु भी एक कारण है यह भी एक प्रत्या है जिससे अब मनुष्योका अस हो गया है कभी दिवाह है यह है हाम अध्याम हो समें है निषम अनिगम हो पसे है नगर अनद हो एवं है जब जनवर अननवर।

किर बाह्म ! अब मनुष्य अधर्मरानानुरका है नियय-धोमके बसीमूठ है मिस्या बर्मक अनुमायी है। जनके अधर्मरावानुरका होनेके नारण विषय-जोमके बडीमूत होनेके बारण निष्या-धर्मके अनुमायी होनेके जारण यक्तराज यक्तोको अनुस्य-भार कोड़ बेरो हैं। इससे बहुत मनुष्य-मृत्युको प्राप्त होने हैं। है बाह्मण ! यह भी एक कारण है यह भी एक प्रस्य है विश्वेष जब मनुष्योका क्या हो गया है क्यो रिवासी देशी है, जाम अध्यक हो गये हैं निवस अनिगय हो पने हैं नगर जनगर हो गये हैं त्या वनगर जबनगर ।"

"हे पीतम 1 नुकर है आप गीतम आबसे जीवन पत्मीत मुझे अपना सरमावत उपासक नार्ने।"

(৭৬)

क्त समय बाज-नीम परिवासक नहीं मपवान् से नहीं बाता। एक बीए बैठे बाइ-मीम परिवासकों ममनाएंडि कहा— है मीमा । मेरे नह बुना है कि समल मीमा ऐसा कहता है कि मुगे ही बान देना साहिए, जगोको नहीं मेरे ही साबकों (सिम्मी) को बान देना साहिए जगोको नहीं मुझे ही देनेंडे महान कल होता है जगोको देनेंडे महान कल नहीं होता मेरे ही मानकोठों देनेंडे महान कल होता है जगोको देनेंडे नहीं। है बीठम! वो ऐसा नहता है कि ममन गौतम ऐसा महता है ति 'मुझे ही दान देनेसे नहीं,' पया ये आप गौतमके कपनानुसार गहने वाले है, त्या ये आप गोतम पर पृठा आराप तो नहीं लगाने रे पया वे आपके धमंकी धार्मिक व्यान्या नहीं है? इससे आपना नहेतुन मत आठोज्य तो नहीं हो जाता है हम आप गौतम पर मिथ्या दोयारोपण नहीं गरना चाहने।"

"हे उत्स । जो यह गरने हैं कि श्रमण गौतम ऐसा गहता है कि मुझे ही दान देनेंग नहीं, ये मेरे बचनानुसार पहनेवाले नहीं हैं, ये मुझपर झूठा आरोप लगाने हैं। हे बहर । जा किसी दूसरेकों दान देनेंग रोगता है बह तीनके रास्तेमें रकायद बनना है, तीनकी हानि गरोबाठा होता है। कौनसे तीन की ?

"दाना के पुण्य-लाभ में बाधक होता है, प्रति-प्राहक की प्राप्ति में बाधक होता है और सबसे पहले अपनी ती ज्ञानि करनेवाला होता है। बत्न । जो किसी दूसरेकों दान देनेसे रोकता है वह इन तीनके रास्तेमें रकावट बनता है, तीनकी हानि करोबाला होता है। बत्म । मेरा तो यह कहना है कि गूथ-कूप वा गन्दे गढ़ेमें भी जो कीडे रहते हैं उनके लिओ भी बदि साओ बालोका धोवन या कमोरेका धोवन फेंकता है कि इसमें उसमें रहतेबाले कीडे जीते रहे, उसमें भी, हे बत्स । में पुण्यकी प्राप्ति कहना है। मनुष्योको दान देनेकी बातका तो क्या ही कहना।

" किन्तु, यत्म । मैं शीलपान् को दान देनेका महान् फल कहता हूँ, वैमा दु गीलको नहीं । शीलवान्में पाच वार्तें नहीं होती और वह पाच वार्तोसे युक्त होता है । "कौनमी पाच वार्ते नहीं होती ?

"काम-छन्द नहीं होता, व्यापाद (क्रोध) नहीं होता, थीन-मिद्ध (आलस्य) नहीं होता, उद्यच्च-क्रीकृत्य (उद्धतपन) नहीं होता, विचिकित्सा (सन्देह) नहीं होता। ये पाच वार्ते नहीं होती।

" कीनमी पाच बातें होती है ?

" अशैक्ष शील-स्कन्धमे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञास्कन्धमे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-स्कन्धसे युक्त होता है। इन पाच बातोंसे युक्त होता है।

"अपरकी पाच वातोंसे रहित तथा इन पाच बातोंसे युक्तको जो दान दिया जाता है, उसका महान् फल होता है—यह कहता है।"

इति कन्द्राम् धेताम् रोडिगीम् हरीम् वा कम्मातास सक्यान योग धारेवतास वा यामु नामु च एतामु बन्तो जायति पुंतको बोरखो बद्धसम्पत्नी कस्यावजबनिक्समो तं एव पारे युज्यन्ति नास्त पञ्जं परिचयरै एवमेव मन्स्येम् वर्रिम करिवञ्च चारियं बाचिये बाह्यमे वैस्से सुद्दे भव्यालपुरसुस् यानु कामु च एवासु बन्दो जायति सुम्बदो बम्मदठो सीलसम्मन्नो सञ्चवादी हिरीमनो पहीन वातिमरनो बहावरियस्य केवसी पद्ममारी विसंपृत्ती क्वकिल्वी जनासकी पारपु सम्बद्धमानं बनुपाराय निव्हती तरिमं सेव विदने केते विपुक्ता होति वनिकता वाला च विकानन्ता बुस्मेबा वस्तुनाविती बहिदा बबन्ति बाना न हि सन्तै चपासरे वे च सले जनसेलि मध्यञ्जे औरसम्मते धना च तेले सुगते मुक्कावा पविद्विता देवजीकं च ते मन्ति कुछे वा इब कामरे बनपुरुषेन निरुषार्थं अविधन्त्रन्ति पश्चिता ।।

कृतकृत्य, आध्यव-हीन, सब धर्मोमें पारगत, उपादान-स्कन्धोंके बन्धनमे मुक्त, तया निर्वाण-प्राप्त जन्मग्रहण करता है उमी रज-रहित (पुण्य-) क्षेत्रमें दान देनेने दक्षिणा विपुल होती है। जो मूर्य है, जो अजानकार है, जो दुवृद्धि है, जो अज्ञानी है वे इनसे बाहर लोगोको दान देते है, वे धान्त जनोकी सेवा नहीं करने। जो धैयंवान, प्रजावान्, शान्तजनोकी सेवा करते है, उनकी श्रद्धा मुगत (बुद्ध) के प्रति मूलरूप से प्रतिष्ठित है। वे देवलोकको प्राप्त होते है तथा यहाँ (श्रेष्ठ) कुलमें जन्म ठेने हैं। ऐमे पण्डिनजन कमश निर्वाणको प्राप्त होते हैं।]

(4८)

चस समय त्रिककर्ण ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे वहाँ गया। पास जाकर भगवानके साथ । एक ओर वैठे हुए त्रिकणं ब्राह्मणने भगवान्के सामने त्रि-विद्य ब्राह्मणोका गुणिनुवाद करना आरम्भ किया - त्रिवित्र ब्राह्मण ऐसे होते हैं, त्रि-विद्य ब्राह्मण ऐसे होते हैं।

भगवानने पूछा---श्राह्मण । स्नाह्मण लोग ब्राह्मणोंके त्रि-विद्या-पनकी कैंमी व्याख्या करते हैं ?

"हे गौतम । त्रि-विद्य ब्राह्मण माता तथा पिता दोनोकी ओरसे सुजन्मा होता है, सात पीढियो तक शुद्ध होता है, उस पर जातिवादकी दृष्टिमे कोई दोप नहीं लगा होता, वह अध्यायक होता है, वह मन्त्र-धर होता है, वह निघण्टू-केट्स सहित तीनो वेदोका-जिनके अक्षर आदि भेद है—पारगत होता है तथा अितहास जिनमें पाचवा माना जाता है, ऐसे चारो वेदोका। वह पदोका जानकार होता है, व्याख्याकार होता है तथा लोकायत-महापुरुष-लक्षणोका सम्पूर्ण जानकार होता है। है गौतम। अस प्रकार ब्राह्मण लोग ब्राह्मणोंके त्रि-विद्या पन की ब्याख्या करते है। "

" हे ब्राह्मण । ब्राह्मण लोग ब्राह्मणोके त्रि-विद्यापनकी व्यावस्था दूसरी तरहसे करते हैं,किन्तु आर्य-विनय (≔सद्धमें) में त्रि-विद्यापन दूसरी प्रकारमे होता है । "

"हे गौतम । आर्य-विनय (= सद्धर्म) में त्रि-विद्या पन कैंमे ट्रोता है ?' अच्छा हो आप गौतम मुझे वैसा धर्मोपदेश दें जैसे आर्य-विनयमें त्रिविद्यापन होता है।"

"तो ब्राह्मण<sup>।</sup> सुन<sup>।</sup> अच्छी तरह मनमें जगह दे। कहता हूँ।"

१ शिक्षा, निरुक्त आदि।

 तद्वत अच्छा कह विकर्ष बाह्यस संगवान् को बात सुनने कगा । समकान्ते ऐसा कहा----

हे बाह्मण | मिशु काम-वितर्ण ये रहिन हो प्रणम-प्यानको प्राप्तफर विचरता है विश्वमें विवर्ण और विचरत पहित है जो एकान्त-नामों उत्पन्न होता है तथा विवर्ण मैंति और नुक एते हैं। दिन यह वितर्ण मेंति विचरण जे उपामनते जयर क्षेत्रकर विवरता है विवर्ण न विवर्ण में विवर्ण के प्रणम्भ के प

४ वह इन प्रकारने घुद्ध, स्वच्छ, दोग-रिह्त, क्लेश-मुक्त चित्तके मृद्ध भाव प्राप्त कर लेनेपर तथा चचलता-रिह्न हो जाने पर उमे च्युति तया उत्पत्तके जानको ओर झकाता है। वह दिव्य, विशुद्ध, अमानुषी चक्षुमे च्युत होने तथा उत्पन्त होने प्राणियोको देखता है। वह निकृष्ठ-श्रेष्ठ, सुवर्ण-दुवंर्ण, मुगितप्राप्त-दुर्गितप्राप्त प्राणियोको जानता है—ये प्राणी शारीरिक दुष्कमंसे युक्त है, वाणीके दुष्कमंमे युक्त है, भनके दुष्कमंमे युक्त है, आयों (=श्रेष्ठ जनो) के निन्दक है, मिथ्या-दृष्टि है तथा मिच्या-कर्मी है, वे शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर, नरक दुर्गित, दोजन्य, जहन्नुममें उत्पन्न हुए है, अथवा ये प्राणी शारीरित शुभ-कमंमे युक्त है, वाणीके शुभ-कमंमे युक्त है, मनके शुभ-कमंमे युक्त है, आयों (श्रेष्टजनो) के प्रशमक है, मम्यक्-दृष्टि है तथा सम्यक् कर्मी है, वे शरीर छूटनेपर मरनेके अनन्तर, गुगित, म्चर्ग-लोकों उत्पन्न हुए। इस प्रकार वह दिव्य, विशुद्ध, अमानुषी चक्षुमे च्युत टोते तथा उत्पन्न होते प्राणियोको देखना है। वह निकृष्ठ-श्रेष्ठ, मुवर्ण, दुर्वणं, सुगितप्राप्त-दुर्गित-प्राप्त प्राणियोको जानना है। यह उमकी प्राप्तकी हुओ दूमरी विधा होती है, अविद्याका नाश हो गया, विद्या उत्पन्न हो गयी, अन्धकार जाना रहा, प्रकाष उत्पन्न हो गया—यह उस अप्रमादीको, आलस्य-रिहत होकर प्रयत्न करनेमे ही प्राप्त हुआ।

५ इम प्रकार वह शुद्ध, स्वच्छ, दोय-रहित, क्लेश-मुक्त, चित्तके मृदुभाव प्राप्त कर लेनेपर तथा चचलता-रहित हो जाने पर चित्तको आस्रवोके क्षयके
ज्ञानकी ओर झुकाता है। यह दु ख तै, इमे वह यथार्य रूपसे जानता है, यह दु खसनुदय है, इमे वह यथार्य रूपमे जानता है। ये आस्रव हैं, इमे वह यथार्य रूपसे
जानता है। यह आस्रव-निरोध की ओर ले जानेवाला मार्ग है, इसे वह यथार्थ रूपसे
जानता है। उसके इस प्रकार जानते हुए इम प्रकार देखते हुए के कामास्रव
भी चित्तको छोड देते है, भवास्रव भी चित्तको छोड देते है, अविद्यास्रव भी चित्तको
छोड देते है, विमुक्त हो जानेपर, विमुक्त हूँ, यह ज्ञान भी होता है — जन्म क्षीण होगया,
बहाचर्य-चास पूरा हो गया, ऋतकृत्य हो गया। वह यह जानता है कि अव यहाँ
जन्म लेनेका कुछ भी कारण नही रहा। यह उसकी प्राप्त की हुई तीसरी विद्या होती
है, अविद्याका नाश हो गया, विद्या उत्पन्न हो गयी, अन्धकार जाता रहा, प्रकाश उत्पन्न
हो गया—यह उस अप्रमादीको आलस्य रहित होकर प्रयत्न करनेसे ही प्राप्त हुआ।

२ जनुष्पादपर्धीसस्य निपदस्य शासिना वित्तं यस्य वसीमृतं एकणं सुतमाहितं तं ने तमोन्दं भीरं दैनिकर्व मञ्चूहायितं हिर्द वेबमनस्थानं बाह धन्तपद्वाधिनं तीहि विश्वादि सम्पर्ध वयस्मळहविद्वारित न्दं मन्तिमधारीरं व नमस्यन्ति योतमं पम्बेनिकार्स को बेदी सरगापार्यंच पस्सति भवी चारिक्सम् पत्ती बिधिक्याबोसिरोमनि एताहि तीहि विज्ञाहि हैविज्ञो होति बाह्यको तं बह बदाभि देविज्यं नक्का कपितसायनं ।

जिसका धील ऊँवा-नीचा नही है जो विक्रमान है जो प्यानी है विसका चित्त वसमें हैं, को एकात है, को समाहित है, उस अन्त्रकार-नाशकको और्य वानको त्रि-विद्या बालेको जुल्युज्ञमीको धर्वस्य त्यानीको देवमनव्योंका हित करने वासा कहा पना है। जो तीन विद्यालीने मुक्त है जो जानमुक्त विहरता है को बल्तिम रेडमारी डै को ब्याहै उस मौतम को (कोन) नमस्त्रार करने है। यो पूर्व-करमोको जानता है। जो स्वर्ध-मस्क को देवता है। जो जन्मके संवर्धी बातसा है। जो मिम्रा-प्राप्त र नो मुनि है वह बाह्मण (व्यमेप्ट-पूरव) इन तीन विद्यानीने निविध क्षोना है। में तमे ही जिबिद कहता है किमी इसरे प्रकारीको नहीं। र (49)

इस समय जान-भौजी बाह्मण वहाँ भगवान वे वहाँ गया । एक सीर बैठे हुए जानु-मोजी बाझानने भयनान्ते वहा---

"हे गीतम ! जिसके यहाँ यह हो पाढ हो वाली पाप हो वालप्य हो दमें ति-विद्य बाह्यजोको ही दान देना चाहिते। "

"श्राद्यात्र ! श्राद्वान स्त्रोग श्राद्धानाके त्रि-विद्या-धनकी कैसी स्थावना

करते हैं ?

"हे नौतम ! ति-विद्य बाह्यल माता तथा पिता दोनो की भारम मुखान होना है नात पीडियों तक गुढ़ होता है उन पर बानि-बारनी दुणिने कोई बोब नहीं कवा दोना वह बच्चायक होना है वह मन्त्र-भर हाना है वह निवस्ट-नेटम

सिहत तीनो वेदोया -जिनके अधर आदि मेद है-पारगत होता है तथा इतिहास जिनमें पाचवा माना जाता है, ऐसे चारो वेदोका। यह पदोका जानकार होता है, व्यास्थाकार होता है तथा लोकायत महापुरुष लक्षणोका सम्पूर्ण जानकार होता है। है गौतम। इस प्रकार ब्राह्मण लोग ब्राह्मणोंके ब्रिविधापनकी व्यास्था करते है।"

"हे प्राह्मण । ब्राह्मण लोग ब्राह्मणोंके विविद्यापनकी व्यास्या दूसरी तरहमें करते हैं, किन्तु आय-विनय (=मद्धर्भ) में त्रि-विद्यापन दूसरी प्रकारने होता है।''

"हे गीतम । आयं-त्रिनय (=मद्वर्भ) में त्रि-विद्यापन कीमे होता है ? सच्छा हो आप गीतम मुझे वैमा धर्मोपदेश दें जैने आयं-विनयमें त्रिविद्यापन होता है।"

"नो ब्राह्मण । सुन । अच्छी तरह मनमें जगह दे। कहता हूँ।"

"बहुन अच्छा" कह जानुधोणी स्नाह्मण भगवान्की बात मुनने लगा। भगवान्ने ऐसा कहा—

"हे ब्राह्मण । पिक्षुकाम-वितर्कने रहिन हो चनुर्य घ्यानको प्राप्तकर विचरता है स्मृतिकी भी परिशृद्धि ।

"बह इस प्रकारके गुद्ध, स्वन्छ, दोप-रिहत, बरेश-मुक्त चित्तके मृदु-भाव प्राप्त कर रेने पर तथा चचलता-रिहत हो जानेपर उस पूर्य-जन्म-स्मरण की ओर प्रकृताता है। वह अनेक प्रकारके पूर्व-जन्मोका अनुस्मरण करता है—जैसे एक-जन्म भी, दो-जन्म भी इस प्रकार आकार तथा उद्देश्य सिंहत अनेक प्रकारके पूर्व जन्मोका स्मरण करता है। यह उसकी प्राप्त की हुई प्रथम-विद्या होती है, अविद्याका नाश हो गया, विशा उत्पन्न हो गयी, अन्यकार जाता रहा, प्रकाश उत्पन्न हो गया, यह उस अप्रमादीको आलस्य रिहत होकर प्रयत्न करनेमे ही प्राप्त हुआ।

"वह इस प्रकारके गुद्ध, स्वच्छ, दोप-रहित वलेश-मुक्त चित्तके मृदुभाव प्राप्तकर लेनेपर तथा चचलता-रहित हो जानेपर उसे च्यृति तथा उत्पत्तिके ज्ञानकी ओर अकाता है। वह दिव्य, विशुद्ध, अमानुषी चक्षुसे प्राणियोको जानता है। यह उसकी प्राप्त की हुई दूसरी विद्या होती है, अविद्याका नाग हो गया, विद्या उत्पन्न हो गयी, अन्धकार जाता रहा, प्रकाश उत्पन्न हो गया—यह उस अप्रमादीको आलस्य रहित होकर प्रयत्न करनेमे ही प्राप्त हुआ।

"इम प्रकार वह शुद्ध, स्वच्छ, दोष-रिहत, क्लेप-मुक्त चित्तके मृदु भाव प्राप्त कर लेने पर तथा चचलता रिहत हो जानेपर चित्तको आस्रवेकि क्षय के जातकी ओर नुकाता है। यह दुख है इसे वह सवार्व रूपन कानता है। पु च-निरोमकी भोर के जाने वासा मार्व है। इसे वह सवार्व क्यारे वानता है। उसके इस प्रकार भानते हुए के इस प्रकार देखते हुए के कामालन भी विलक्ती छोड़ देते हैं मनालय भी जिलाको बाढ़ देते हैं विशुक्त हो जातेपर विमुक्त हूँ यह शान भी होता है---जन्म शीम हो नवा बहावर्ष-वाम पूरा हो गया इतकूरय हा थवा। वह यह जानता है कि अब महाँ बाम मेनेका कुछ भी कारण नहीं रहा। यह संसकी प्राप्त की प्रश्नी तीसरी विका होती है अविधाका नाम हो गया विधा उत्पन्न हो गयी। माचकार जाता रहा प्रकास उत्पन्न हो गया--यह उस मप्रमादीको भासन्य-रहित हाकर प्रयत्न करनेम ही प्राप्त हवा।

सो सीसञ्ज्ञतमम्पन्नी विहतनो समाहितो नित्ते बस्य बसीजून एकम्पं मुसमाहितं पूर्णितिवास यो वेशी संग्यापार्यं च पस्तिति जवो वाविक्सम् पद्यो जभिन्याबौसिवौमनि एवाहि वीहि निम्बाहि वैश्विको होति बाह्यको त अब वदामि तेविएव नाज्यं सपितसापन

जिल बढ चौस-बतसे यक्त है जो प्रवल-सील है जो समाहित है जिसका चित तसके वसमें है जो एकाब-चित है जो सम्बद्ध कमन्ते तमाहित है जो पूर्व-जन्मको कारता है जो स्वर्व-तरक हो देखता है जो जग्मके अयही जातता है जो जिसका-साध्य \$ जा मृति है वह बाह्यच (= धाठ-पुरुव) इन तीन विश्वामीये विविधा होता है। में केवब चमे ही निविध कहता हैं किसी इसरे प्रकारीको नहीं। है

इसी प्रकार हे बाह्य व ! वार्य-वितय (≃पक्षमी) में विनिध कोला है। "

हे नौत्म ! ब्राह्मधोका मै-विब दूसरी तरह होता है तका मार्थ-विवय (= सब्दें) में वैनिय युगरी एरहा हे गौतम ! बाह्यचोका वैनिय जिस जार्य-विश्वयके जैविजके नोस्तव दिस्मेके मुख्यके भी बरावर नहीं। हे गौनमां नुन्वर

श्री आजने प्रामान्त तक मुझे अपना सरमान्त उपातक पार्ने । (4)

जन समय नगारन शहान जहा भनवान ( बुद्ध ) ने बर्डी नगा

और बैठे संबारत बाह्यवने भवशानुको वह वहा---

"हे गौतम! हम ब्राह्मण यज्ञ करते भी हं और यज्ञ कराते भी है। हे गौतम! जो यज्ञ करता है तया जो यज्ञ कराता है, वे अनेक शरीरो-वाले पुण्य-मार्गका अनुगमन करते हैं—यह जो यज्ञमागं है। किन्तु हे गौतम! यह जो जिस-तिस कुलसे चरसे वेचर हो प्रव्रजित हो जाते है, वे तो अकेले ही अपना दमन करते हैं, सकेले ही अपना शमन करते हैं, तथा अकेले ही परिनिर्वाण (शान्ति) को प्राप्त होते हैं। अस प्रकार यह एक शरीर वाला पुण्य-मार्ग है यह जो प्रव्रजित होना है।"

"तो ब्राह्मण तुझे ही पूछता हूँ, जैसा तुझे अच्छा लगे वैसा कह। हे ब्राह्मण वता तू वया मानता है यहा इस ससार में तथागत जन्म ग्रहण करते है, अरहत, सम्यक-सम्बुद्ध, विद्या तथा आचरणसे युन्त, सुगत, लोकज्ञ, पुरुपोंके सर्वश्रेष्ठ सारथी, देवताओ तथा मनुष्योंके ज्ञास्ता, वुद्ध, भगवान। वे ऐसा कहते हैं—आओ, यह मार्ग हैं, यह पथ है जिम पर चलकर में स्वय श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य-गत अभिज्ञाको साक्षात करके कहता हूँ। आओ, तुम भी वैसे ही चलो, जैसे आचरण करनेसे तुम भी श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य-गत अभिज्ञाको स्वय माक्षातकर विहार करोगे इस प्रकार शास्ता इस धर्मकी देशना करते हैं और दूमरे तद्नुसार आचरण करते हैं। वे अनेक सौ भी होते हैं, अनेक हजार भी होते हैं तथा अनेक लाख भी होते हैं। तो ब्राह्मण तुम क्या मानते हो ऐमा होने पर जो यह प्रब्रज्यापण हैं, क्या यह एक शरीर से सम्बन्ध रखने वाला पुण्य-पथ हैं अथवा अनेक शरीर से सम्बन्ध रखने वाला ?"

"ऐसा होने पर तो हे गीतम । यह जो प्रव्रज्या-पथ है, यह अनेक शरीर से सम्बन्ध रखने वाला पुण्य-पथ होता है।"

"ऐसा कहने पर आयुष्मान आनन्द ने सगारव ब्राह्मण को यह कहा— "ब्राह्मण । इन दो मार्गों में से कौनसा मार्ग तुझे अधिक कम खर्चीला, अधिक कम सक्षटी तथा महान् फल वाला, महान् परिणाम वाला मालूम देता है ?"

ऐसा कहने पर सगारव न्नाह्मण ने आयुष्मान आनन्द को यह कहा-- " जैरे आप गौतम तथा आप आनन्द है, ऐसे ही मेरे पूज्य है, ऐसे ही मेरी प्रशसा के पात्र है।

दूसरी वार भी आयुष्मान् आनन्द ने सगारव ब्राह्मण को यह कहा— "ब्राह्मण में तुझसे यह नहीं पूछता हूँ कि कौन तेरे पूज्य है अथवा कौन तेर मर्चसा के पात्र है। बाह्यज ! में तो तुझ से पूकता है कि इन दो सायों से कौन-सा साये तुझे अधिक कम वर्षींचा अधिक कम झझटी तवा सहान् करू वास्त्र सहान् परिचास वास्त्र सामुग देता है?

दूसरी बार भी सगारण बाह्यण ने बायुप्पान् बानजा को यह बहा- वैसे 'बार नीतम तवा बार जानन्द हैं ऐसे ही मेरे पूज्य है ऐसे ही सेरी प्रसंसा के राज है।'' सीसरी बार भी बायप्पान बानजा में सनारण बाह्यण को यह कहा-

बाह्यण ! में तुझने सह नहीं पूछता हूँ कि कौन देरे पूज्य है अबबा कीन देशे अबसा के पात्र है। बाह्यण ! में तो तुझ से यह पूछता हूँ कि इन दो मायों में कौन सा मार्म दुझ अविक कम-कार्योका अधिक कम प्रश्नेसी तथा महान् कर बासा महान् परिचाम बाका मालुन देता है ?

तीसरी बार भी सगारव बाह्यक ने बातुम्मान् बानक को यह कहा— " वैसे आप नौतम तवा बाप सातक है ऐसे ही मेरे पूज्य है ऐसे ही मेरी प्रश्रंसा के पात है।

उस समय पंगवान् के मन में सह हूमा—चील सै बार भी सानवा हारासमृतिक प्रथम पूछे वाने पर समास्य बाह्मण अस से कतराता ही हैं प्रथम का चत्तर नहीं देता। में ही अस से बात कहाँ।

दंब मगवानुने सगारच वाहाच को सह कहा— वाहास र आप राजा के अन्त पुर में राज्य-परिषदमें इक्ट्ठे हुए कोलों में नगा बादचीत चली नी ?

हे जीवन ! बाज धना के जन्मपुर में राज्य-गरिवह में इक्ट्ठे हुए कोगो में बह बातबीत चन्नो थी कि पहले प्रिसुनों की रहेबा चोड़ी थी किन्तु उन में से बहुत से बसामरण नतुष्य-मर्ग जनमा काजि-नक कामवर्षण करते थे। है चौतम ! बाज पान के जन्म पूर में राज्य-गरिवह में इक्ट्ठे हुए बोनो में यह बातबीत चन्नी।

शहान । ये तीन प्रातिहारियां (≔वतामारण कृतियां) है। कीन ती तीन ? व्यक्ति-मातिहारी देवना-प्रातिहारी तथा बनुपायनी-प्रातिहारी।

बाह्यन न्युबि प्राविद्यारी क्लि कहते हैं ?

शाह्यय ! कोई कोई बनेक प्रकार की ऋदियों का अनुभव करता है---एक होकर भी अनेक हो जाता है अनेक होकर की एक हो बाता है प्रकट हो जाता हैं, छिप जाता हैं, दीवारके पार, प्राकार के पार, पर्वत के पार उन्हें छूता हुआ चला जाता हैं, जैसे आकाश में, पृथ्वी पर भी उतराना-डूबना करता है जैसे पानी में, पानी के भी ऊपर ऊपर चलता है जैसे पृथ्वी पर, आकाश में भी पालथी मारकर जाता है जैसे कोई पक्षी हो, इस प्रकार का ऋद्विमान, इस प्रकार के महाप्रतापी चन्द्र-सूर्य्य को भी हाथ से छूता है, ब्रह्मलोक तक भी सथरीर पहुँच जाता है। हे ब्राह्मण । यह ऋद्वि-प्रातिहारी कहलाती है।

" ब्राह्मण । देशना-प्रातिहारी किसे कहते हैं ?

"हे ब्राह्मण । कोई कोई निमित्त (=लक्षण) देखकर बताता है कि गुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारा चित्त ऐसा है। वह बहुत भी कहता है, तो भी जैसा वह कहता है, वैसा ही होता है, अन्यया नही होता।

"हे ब्राह्मण । कोई कोई निमित्त देखकर नही कहता, बल्कि मनुष्यो, अमनुष्यो अथवा देवताओं का शब्द सुनकर कहता है कि तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारा चित्त ऐसा है। वह बहुत भी कहता है, तो भी जैसा वह कहता है, वैसा ही होता है, अन्यथा नही होता।

"हे ब्राह्मण! कोई कोई न निमित्त देखकर कहता है, न मनुष्यो, अमनुष्यो अथवा देवताओं का शब्द मुन कर कहता है, विल्क सकल्प-विकल्प करके, विचार करके मकल्प-विकल्प मे उत्पन्न शब्द सुनकर कहता है कि तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारा चित्त ऐसा है। वह बहुत भी कहता है, तो भी जैसा वह कहता है, वैसा ही होता है, अन्यया नहीं होता।

"हे ब्राह्मण कोई कोई न निमित्त देखकर कहता है, न मनुष्यो, अमनुष्यो अयवा देवताओं का शब्द सुनकर कहता है, न सकल्प-विकल्प करके, विचार करके सकल्प-विकल्प से उत्पन्न शब्द सुनकर कहता है, बिल्क वितर्क-रिहत, विचाररिहत समाधि-प्राप्त के चित्त से चित्त का स्पर्श करके जानता है कि जिस प्रकार इस समय इनके मन का सस्कार चल रहा है, इस के बाद यह महाशय इस प्रकार का सकल्पविकल्प करेगे। वह बहुत भी कहता है, तो भी जैसा वह कहता है, वैसा ही होता है, अन्यथा नहीं होता। ब्राह्मण यह देशना-प्रातिहारों कहलाती है।

<sup>&</sup>quot; ब्राह्मण । अनुशासना-प्रातिहारी किसे कहते हैं ?

"बाह्मन ! कोई कोई एया अनुसामन करना है—एमा संकल्पनिवन्त करो एमा संकल्पनिकल्प मन करो अनमें लेगा विचार करो मन में ऐना विचार मन करो इस संकल्प को छोड़ो इस का मन में बगह देकर विचरो।

> "बाह्यम ! इन अनुमामना प्रातिहारी गहते हैं। "बाह्यम ! इन दोन प्रातिहारिया में तुम कीन मी प्रातिहारी मुन्दरनर

न्त्रायम ! इन तान मानद्गारका भ नुस कान ना मानद्वारा गुन्दर-नर समा भेरननर सगती है ? " "है मोनम ! इन में मे जो यह एक प्रातिहारी है कि काई कोई अनेक

प्रकार की कृषियों का अनुभव करता है व झुठाक तक भी गामिर पहुँक बाता है—है पीतम ! इस प्रतिमारी को बा करता है की अनुभव करता है भो करता है जबी का कर हात्री हैं। इ पीतम ! यह प्रतिमारी हैं कि बोई काई दिनिया सहस कराता हैं इ क्षीतम ! यह भी जो एक प्रतिमारी हैं कि बोई काई दिनिया स्वकार कराता हैं व्यवसाय स्वाप्त करता है का प्रवास करता है कि बोई काई स्वाप्त स्

है बीरम हिन बाजिरमी हो भी का बचना है वही अनुबन बचना है जो बचना है उसी को बह होता है। है बीडम हिन बह बिनारों की बूनों बाज-सदूस ही अपनी है। जीना है बीरम है यह बाजिर बीरिंग में ऐसा अनुसासन बचना है। बन से बेजार हैंदर दिवसों है ने बीरम है कर बीड बीडिंगों में बेंदर से बीटम है बाजिर से बीटम है कर कीडम है।

लगाति । "देगोपन! भारतार्वती तेनोतस! सर्भुतते दिशान नीपन भ जैनी नुसारित नार्वी क्षी ते। तेन आग नीपन ना इस सीना बाल्याच्यो से

बना ननारों है। आर योजन ही बना जरार को न्यादियों का मनुष्य नान है बद्धान तक भी नवारीर बनेंब आन है। आर गीनव ही रिपर्ने

र्शानः दिस्तार गीरा समाणीत्यान में दिना में दिना वा नार्य करने मानत है कि जिस महार इस नमह इस वा महत्त्राचार पन गरा है इसने बाद पर मानाय इस बढ़ार वा नोक्स दिस्ता करते। आद सीमान ही गीना अनुवास्त कार्य है हि गोवा सक्यार्थकरण करा जाता महार्थी दिस्ता मात्र करा। या में गाम विचार कर्या महासीनामा दिस्ता मात्र करा। इस महिना को छोड़ा। इस महास मात्र है। "निश्चय से ब्राह्मण । मैं ने तुझे (अपने गुणो के) समीप लाकर ही बात कही है। लेकिन अब मैं (स्पष्ट रूपसे) व्यास्त्रा करता हूँ। ब्राह्मण । मैं ही अनेक प्रकार की ऋद्वियों का अनुभव करता हूँ ब्रह्मलोक तक भी सशरीर पहुँच जाता हूँ। मैं ही ब्राह्मण । वितर्क-रहित, विचार-रहित समाधि-प्राप्त के चित्त से चित्त का स्पर्श करके जानता हूँ कि जिस प्रकार इस समय इन का मन-सस्कार चल रहा है इस के बाद यह महाशय इस प्रकार का मकल्प-विकल्प करेंगे। हे ब्राह्मण । मैं ही ऐसा अनुशासन करता हूँ कि ऐसा सकल्प-विकल्प करों, ऐसा सकल्प-विकल्प मत करों, मन में ऐसा विचार करों, मन में ऐसा विचार करों, इस सकल्प को छोडों, इसे मन में जगह दो।

"हे गीतम । क्या आप गीतम के अतिरिक्त कोई दूसरा एक भिक्षु भी ऐसा है जो इन तीनो प्रानिहारियो से युक्त हो ?"

"हे ब्राह्मण न केवल एक सौ, न दो सौ, न तीन मी, न चार मौ, न पाँच सौ विल्क इस से भी अधिक ऐसे भिक्ष होगे जो इन प्रातिहारियो से युक्त हो ?"

"हे गीतम<sup>।</sup> इस समय वे भिक्षु कहाँ विहार करते हैं <sup>?</sup> "

"ब्राह्मण<sup>।</sup> इनी भिक्षु-सघ में।"

"मुन्दर गीतम । बहुत सुन्दर गीतम । जैसे कोई उल्टे को मीघा कर दे, ढके को उघाड दे अथवा मार्ग-भ्रष्ट को रास्ता वता दे अथवा अँघेरे में मदाल जला दे जिससे आँख वाले चीजो को देख सके। इसी प्रकार आप गीतम ने नाना भ्रकार से घर्म को प्रकाशित किया है। में भगवान् गीतम, (उनके) धर्म तथा सघ की शरण जाता हूँ। भगवान् (मेरे) शरीर में प्राण रहने तक मुझे अपना शरणागत उपासक जानें।"

## (६१)

"मिक्षुओ, ये तीन, तैयिको के ऐसे मत है जो पण्डितो द्वारा ऊहा-पोह किये जाने पर, पूछे जाने पर, चर्चा किये जाने पर, आचार्य्य-परम्परा के अनुसार जहाँ कही भी जाकर कतते हैं वहाँ अकर्मण्यता पर ही जाकर रुकते हैं। कौन से तीन?

" भि सुओ, कुछ श्रमण-ब्राह्मणों का यह मत है, यह दृष्टि है कि जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दु ख वा अदुख-असुख अनुभव करता है वह सब पूर्व-कर्मों के फल-स्वरूप अनुभव करता है।

भिध्ये । कुछ भनज-बाइएको का सह सत है सह बृध्टि है कि जो कुछ भी कोई बादनी पुत्र दुन या बदुख बपुत्र बदुवर करता है वह सब ईस्वर-निर्माण के कारण बनुभव करता है।

मिथुंबा कुछ समन-बाह्यभौं का यह मठ है यह बृष्टि है कि जो कुछ मी कोई भारमी सुख दुन वा बहुब-असुब अनुभव करता है वह सब विना किमी हेत्के विशासियीकारण के।

भिष्यो वित शमन-बाह्यको ना यह सत है सहद्दि है कि जो कुछ भी कोई जारमी मुल दुक्त वा जदुक्त-अमुख जनुभव करता है वह सब पूर्व कमों के एक स्वक्य अनुभव करता है। उनके पास बाकर में उन से प्रश्न करता हूँ---व्यायुम्मानो ! क्या सचमुच तुम्हारा यह मत है कि जो कुछ भी कोई जादमी सुक्ष दुव्य वा बहुब-असुब अनुभव भरता है वह सब पूर्व-कर्मों के फल-स्वरूप अनुभव करता है ? "मेरे ऐसापूक्त पर वे हाँ उत्तर देते है।

तब उनसे में कहता हूँ—तो आयुष्माता! तुम्हारे मत के अनुसार पूर्व-बन्म के कर्न के ही फर्ड-स्वरूप मादगी प्रामी-हिंखा करने बाल होते हैं पूर्व बारमके कर्म के ही एक-स्वरूप माध्मी चारी करते वाले होते हैं। पूर्व बरम के कर्म के ही फक-स्वरूप मादमी महद्दानारी होते हैं। पूर्व ग्रम्म के क्ष्म के ही फस-स्वरूप जावमी भठ बोस्तरे वाले होते हैं पूर्वजन्तम के कमें के ही फल-स्वरूप आरमी चूगल-सोर होते हैं पूर्व-जन्म के कर्म के ही फल-स्वरूप आदमी कठोर बोकने वाले होते हूं पूर्व जरम के कमें के ही फल-स्वरूप बादमी व्यवं बक्तास करते वाले होते हूं पूर्व-प्रथम के कर्म के ही फ़क्र-स्वरूप मादमी कोमी होते हैं। पूर्व-जन्म के कर्म के ही फ़क्रस्वरूप बादमी जोबी होन्हें हैं तथा पूर्व-जन्म के कर्म के ही फल-स्थरूप बादमी मिच्या-वृष्टि वासे होते हैं। भिनुसी पूर्वक्रय कर्ने की ही सार रूप बहुन कर केने से सह करता योग्य है और यह करना अयोग्य है इस विषय में संकरन नहीं होता प्रयत्न मद्वी होता। जब वह करना योग्य देवौर यह करना अयोग्य है इस विपय में ही यबार्च-मान नहीं होता ही इस प्रकार के मूब-स्मृति बसवत सीयो का अपने आप को मार्मिक थमध कहना भी सहेतुक नही होता।

भिमुत्रो इस प्रकार का गतः इत प्रकार की वृष्टि रखने वाले श्रमक

बाह्यको का मह प्रथम निवह-स्वान होता है :

"भिक्षुओ, जिन श्रमण-ब्राह्मणो का यह मत है, यह दृष्टि है कि जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दु ख या अदु ख-असुख अनुभन करता है वह सब ईश्वरनिर्माण के कारण अनुभन करता है, जन के पास जाकर में जन से प्रश्न करता हूँ
—आयुष्मानो । क्या सचमुच तुम्हारा यह मत है कि जो कुछ भी कोई आदमी
सुख, दु ख ना अदु ख-असुख अनुभन करता है, नह सब ईश्वर-निर्माण के फल-स्वरूप
अनुभन करता है ?

"मेरे ऐसा पूछने पर वे "हौ " उत्तर देते हैं।

"तब उन से मैं कहता हूँ—तो आयुष्मानो । तुम्हारे मत के अनुसार ईश्वर-निर्माण के ही फल-स्वरूप आदमी प्राणी-हिंसा करने वाले होते हैं

"भिक्षुओ, इस प्रकार का मत, इस प्रकार की दृष्टि रखने वाले श्रमण-ब्राह्मणो का यह दूसरा निग्रह-स्थान होता है।

"भिक्षुओ, जिन श्रमण-ब्राह्मणो का यह मत है, यह दृष्टि है कि जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दुःख वा अदुख-असुख अनुभव करता है, वह सब बिना किसी हेतु के, विना किसी कारण के, उनके पास जाकर में उन से प्रश्न करता हूँ—आपुष्मानो विषा सचमुच तुम्हारा यह मत है कि जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दुःख वा अदुख-असुख अनुभव करता है, वह सब विना किसी हेतु के, विना किसी कारण के?

"मेरे ऐसा पूछने पर वे "हाँ" उत्तर देते है।

"तब मैं उन से कहता हूँ—तो आयुष्मानो । तुम्हारे मत के अनुसार विना किसी हेतु के, विना किसी कारण के आदमी प्राणी-हिंसा करने वाले होते हैं

विना किसी हेतु, के, विना किसी कारण के आदमी मिथ्या-दृष्टि वाले होते हैं। भिसुओ, इस अहेतुवाद, इस अकारण-वाद को ही साररूप ग्रहण भिल्ला कुछ समय-नाहार्यों का यह गत है यह वृष्टि है कि भा कुछ भी कोई आदमी सुख बुख वा सबुख बयुख जनुमन करता है वह सब ईस्टर-निर्माण के कारण अनुमन करता है।

"मिल्को हुछ भमन-नाहागों का यह मठ है यह वृष्टि है कि को हुछ भी कोई आपमी सुख दुख ना अदुब-अमुख अनुभव अस्ता है वह सब किना किनी हैस् के किना किनी कारण के।

मिमुबी जिन समन-नाहानी का यह सब है यह वृध्यि है कि वो कुछ भी कोई मावसी पुन दुक्त वा अनुक-समुद्ध बनुभन करता है वह सब पूर्व कमों के एक स्वस्थ अनुमन करता है जनके पात बाकर में बन से प्रस्त करता है— आयुम्मानो । त्या सच्युच तुन्हारस पह सब है कि वो कुछ भी कोई बाहमी सुन्ध दुन्ध वा अनुक-समुद्ध बनुभन करता है वह सब पूर्व-कर्मों के फन-स्वस्म बनुभन करता है?

निश्चना दन प्रदार नागउ दत प्रदार की दृष्टि रचने वाते समन

ब्राह्मचो का यह प्रयम निषह-स्वान होता है।

" मिक्षुओ, जिन श्रमण-ब्राह्मणो का यह मत है, यह दृष्टि है किं जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दु ख या अदु ख-असुख अनुभन करता है वह सब ईश्वर-निर्माण के कारण अनुभन करता है, उन के पास जाकर मैं उन से प्रश्न करता हूँ —आयुष्मानो । क्या सचमुच तुम्हारा यह मत है कि जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दु ख ना अदु ख-असुख अनुभन करता है, नह सब ईश्वर-निर्माण के फल-स्वरूप अनुभन करता है ?

"मेरे ऐसा पूछने पर वे "हाँ " उत्तर देते हैं।

"तब उन से मैं कहता हूँ—तो आयुष्मानो। तुम्हारे मत के अनुसार ईश्वर-निर्माण के ही फल-स्वरूप आदमी प्राणी-हिंसा करने वाले होते है

.. ईश्वर-निर्माण के ही फल-स्वरूप आदमी मिथ्या-दृष्टि वाले होते हैं। भिक्षुओ, ईश्वर-निर्माण को ही साररूप ग्रहण कर लेने से यह करना योग्य है और यह करना अयोग्य है, इस विषय में सकल्प नही होता, प्रयत्न नही होता। जब यह करना योग्य है और यह करना अयोग्य है, इस विषय में ही यथार्थ-ज्ञान नही होता तो इस प्रकार के मूढ़-स्मृति, असयत लोगो का अपने आपको धार्मिक श्रमण कहना सहेतुक नही होता।

"भिक्षुओ, इस प्रकार का मत, इस प्रकार की दृष्टि रखने वाले श्रमण-ब्राह्मणो का यह दूसरा निग्रह-स्यान होता है।

"भिक्षुओ, जिन श्रमण-ब्राह्मणो का यह मत है, यह दृष्टि है कि जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दुख वा अदुख-असुख अनुभव करता है, वह सब विना किसी हेतु के, विना किसी कारण के, उनके पास जाकर में उन से प्रश्न करता हूँ—आपृष्मानो । क्या सचमुच तुम्हारा यह मत है कि जो कुछ भी कोई आदमी सुख, दुख वा अदुख-अमुख अनुभव करता है, वह सब विना किसी हेतु के, विना किसी कारण के ?

"मेरे ऐसा पूछने पर वे "हाँ" उत्तर देते हैं।

"तव में उन से कहता हूँ—तो आयुष्मानो । तुम्हारे मत के अनुसार विना कियी हेतु के, विना किसी कारण के आदमी प्राणी-हिंसा करने वाले होते हैं

विना किसी हेतु, के, विना किसी कारण के आदमी मिथ्या-दृष्टि वाले होते हैं। भिक्षुओ, इस अहेतुवाद, इस अकारण-वाद को ही साररूप ग्रहण सेने से यह करना योग्य है और यह करना बयोग्य है इस विषय में संकर्ष नही होगा प्रयत्न नहीं होगा। वन यह करना योग्य है और यह करना स्योग्य है इस विषय में ही सवार्ष-कान नहीं होगा यो इस प्रकार के मूब-स्पृति असंयत लोगों का अपने बाप को श्रामिक-समन कहना सहेतुक नहीं होगा।

पिसुको इस प्रकार का मत इस प्रकार की दृष्टि एकाने वाके धमक-वाहानों का यह दीसरा निवह-स्थान होता है।

भिष्मा में तीन हींक्सों के ऐते मत है जो परिवर्ती हार कहानी है किमें बाने पर, पूछे बाने पर, क्यों किमें बाने पर, आवार्य-गरम्पत के बनुवार बड़ी कही भी बाकर ठहरते हैं। वहाँ बक्सोंस्थता पर ही आकर ठहरते हैं।

"सिव्हानों मेंने इस वर्ष का उपरेश विचाई को निवहीत नहीं हैं को सस्किष्ट महीई को परिपुद है तथा निवर्जे कोई फिल समन-शाहाम बोध नहीं देखा एक्टे हैं। सिव्हानों मेंने किस समें का उपरेश दिया है को निवहीत नहीं हैं जो स्विक्तर नहीं हैं को परिपुद है तथा जिस में कोई दिल समय-वाहान बोध नहीं दिखा एक्टे हैं?"

मिल्ला मैने को यह उपवेश दिया कि छ बातु है और जो क्यवेश

त्या विश्व में विश्व समय-बाह्मण दोष नहीं दिश्वा तकते हूं वह किन क बातुओं के बारे में कहा? विश्वकों में का धातु हूं—मुम्मी-बातु, वर्ष-धातु, तेष-बातु, बाहाज-बाहु तका विवात-बाहु मिशुकों में प्रभातु हूं—मह धर्म है बिश्वका मेने रूपरेश दिया है को निप्तित तही है जो धरिकट नहीं है जो परिजृत है तथा कियाँ कोई दिश्व समय-बाह्मण दोक नहीं दिया तकते हैं।

- "भिज्ञुको मैंने जो यह ज्यरेख दिया कि ये क स्पर्ध-आयरण है जीर को स्पर्देख तथा जिस में किन जमन-आहम्य योग नहीं दिखा सकते हैं बहु फिन क स्पर्ध-आयतनों के बारेलें कहा । मिनुको से क स्पर्क-आयतन है— जमु-स्पर्धायतन सोन-स्पर्धायतन प्राप्त-स्पर्धायतन क्षाय-स्पर्धायतन मन-स्पर्धायतन । मिनुको मैंने को यह रुपदेख दिया कि से क स्पर्य-जमतन है जोर को ज्यरेख तथा कि यो जिस-समन-माहान बोग नहीं दिखा सकते हैं यह बहु कि स्पर्धायतनों के बारे में कहा।
- ८ निश्चनों में ने यो नह उपयेज दिया नि में नक्षायह मन के निहरण हैं नीर थो उपयेस त्यां निस्त सम्म-बाह्मण योग नहीं दिसा तकके

हैं, यह किन अठारह मन के विहरणों के बारे में कहा ? आंत से रूप देखकर प्रसन्न होने के विषय में विहरण करता है, दौमंनस्य होने के विषय में विहरण करता है, उपैक्षा होने के विषय में विहरण करता है, श्रोत्र में शब्द मुनकर ... ध्राण से गम सूँपकर जिल्हा में रम चपकर फाय से स्पर्श करके ... मन से मन के विषयों का अनुभव कर प्रसन्न होने के विषय में विहरण करता है, दौमंनस्य होने के विषय में विहरण करता है, दौमंनस्य होने के विषय में विहरण करता है। भिसुओ, मैंने जो यह उपदेश दिया कि ये अठारह मन के विहरण है और जो उपदेश ...

तथा जिस में विश श्रमण-ग्राह्मण दोष नही दिखा सकते है, वह इन अठारह मन के विहरणों के ही बारे में कहा।

"भिक्षुआ, में ने जो यह उपदेश दिया कि चार आर्य-मन्य है और जो उनदेश तया जिस में विज-श्रमण-प्राह्मण दोप नहीं दिया सकते, वह किन आर्य-मत्यों के चारे में कहा? मिक्षुओ, छ धातुओं के होने से गर्भ होता है, गर्भ हाने ने नाम-मप, नाम-सप होने से छ आयतन, छ आयतन होने से, स्मग, नया स्पग होने ने वेदना की जिसे अनुभूति होती है उसी के सम्बन्ध में भिक्षुओं मैं दु व की घोषणा करता हूँ, दु प-ममुदय की घोषणा करता हूँ, दु प-निरोध की घोषणा करता हूँ, दु प-निरोध की जोर ले जाने वाली प्रतिपदा (=मार्ग) की घोषणा करता हूँ।

" भिक्षुओं, दुख आर्य-मत्य क्या है ?

"पैदा होना दुख है, बूढा होना दुख है, बीमार पडना दुख है, मरना दुख है, शोक करना दुख है, रीना-पीटना दुख है, पीडित होना दुख है, चिन्तित होना दुख है, परेशान होना दुख है, इच्छा की पूर्ति न होना दुख है, थोडे में कहना हो तो पौच उपादान-स्कन्ध ही दुख हैं। भिक्षुओ, यह दुख आयें-सत्य कहलाता है।

"भिक्षुओ, दुःख-ममुदय आर्य-सत्य वया है ?

"अविद्या के होने में सस्कार, सस्कार के होने से विज्ञान, विज्ञान के होने से नाम-रूप, नाम-रूप के होने से छ आयतन, छ आयतन के होने से स्पर्श, स्पर्श के होने से वेदना, वेदना के होने से तृष्णा, तृष्णा के होने से उपादान, उपादान के होने से भव, भव के होने से जन्म, जन्म के होने से बुढापा, बुढापे के होने से मरना, शोक, रोना-पीटना, दुख, मानमिक-चिन्ता तथा परेशानी होती हैं। अस प्रकार अस सारे दुक-स्क्रमकी उत्पत्ति होती है। भिस्तुको यह दुक-समुदय मार्थ-नग्य कहनाता है।

"धिसूबो इक्त निरोध भाव-सूख क्या है?

सनियांके ही धम्मूर्व निरामये तिरामये संस्कारोका निरोम होता है। संस्कारोक निरोमये विज्ञान-निराम विज्ञानके निरामये नानकप-निरोम नामवप के निरोमये क जायवर्णका निरोम क जायवर्णके निरोमये सम्बंध निरोम स्थावें निरोमये के बनाका निरोम केवाओं निरोमये नुम्कार निरोम सुम्काके निरोमये उपायानका निरोम ज्यासकों निरोमये मध्य-निरोम पक्क निरोमये जन्मका निरोम समके निरोमये क्यापे बोक रोने-नीटने दुक गानाधिक-विकार वचा परेशानीका निरोम होता है। एव मकार दश सारेके सारे कुल्क-कक्ष्मण निरोम होता है। भिनुमो यह हुक-निरोम कार्य-स्थाय कह्यादा है।

भिज्ञानो कुन्त-निरायको जोर से बानेबाका मार्ग बार्य-याद कीनसा है?

"बही बार्य कप्पायिक मार्ग जो कि यो है—सम्बर-दृष्टि सम्बर-पंतरण सम्बर्ग-वाजी सम्बर-कर्माल सम्बर-बाजीविका सम्बर-मात्राम सम्बर-पूर्ण सम्बर-समाति। जिल्लानो वह दुन्द-निरोयको जोर से जानेबाका मार्ग आर्थ-मार्थ कडकारा है।

भिनुत्रों मेने जो यह जपदेश दिया कि कार जामें तस्य हैं और को उपदेश--तका जिल्लमें कि अमल-जाह्मण दोग नहीं दिला उनते नह देग आर्थ अस्पन्ति ही
बारेमें उता।

(43)

भिजुलो ये तीन यय माठा-पुत्र-विश्वीन समाहे जिन की ब्रह्मानी सामान्य सन चर्चा करते हैं। कीनते तीन ?

तिजुनो ऐसा समय नाता है जब महान् निन-वाह होता है। पिनुनो महान् निन-वाह के होने पर जीव भी नाम जाते हैं नियम भी नार जाते हैं और नगर भी जब जाते हैं। पांचके मकलोपर, नियमोंके जनलेपर तथा नगरिके सकलोपर नाता की पूत्रणे मेंट होती हैं। तीर व पूत्र की मांचे मेंट होती हैं। तिस्तुओं वह पहचा माता-पुत्र-निर्माण मात्र हैं निम की नामाने सात्र वह पहचा माता-पुत्र-निर्माण मात्र हैं निम की नामाने सात्र कर चार्च कर वह से होते हैं।

"भिक्षुओ, फिर ऐसा समय भी आता है जब महान् वर्षा होती है। महान् वर्षांके होनेपर भारी वाढ आती है। भारी वाढके आनेपर गाँव भी वह जाते हैं, निगम भी वह जाते हैं तथा नगर भी वह जाते हैं। गाँवके वह जाने पर, निगमोंके बह जानेपर तथा नगरोंके वह जानेपर न माता की पुत्रसे भेंट होती हैं और न पुत्र की-मासे भेंट होती है। भिक्षुओ, यह दूसरा माता-पुत्र-विहीन भय है जिसकी अज्ञानी सामान्य जन चर्चा करते है।

"भिक्षुओ, फिर ऐसा समय भी आता है जब जगलमें रहने वाले चोर-डाकू प्रकुष्त हो जाते हैं। उस समय लोग रथो पर चढकर जनपदसे भाग जाते हैं। भिक्षुओ, जब जगल प्रकुष्त हो जाते हैं और जब लोग रथोपर चढचढकर जनपदोंसे भाग जाते हैं, उस समय न माता की पुत्र से भेंट होती हैं और न पुत्रकी मा से भेंट होती हैं। भिक्षुओ, यह तीसरा माता-पुत्र-विहीन भय हैं, जिसकी अज्ञानी सामान्य जन चर्चा करते हैं।

" भिक्षुओ, ये तीन भय माता-पुत्र-विहीन भय है जिनकी अजानी सामान्य जन चर्चा करते हैं।

"भिक्षुओ, उक्त तीनो भय माता-पुत्र-युक्त भय ही है जिनकी अज्ञानी सामान्य जन माता-पुत्र-बिहीन भय कहकर चर्चा करते हैं। कीनसे तीन ?

"भिक्षुओ, ऐसा समय आता है जब महान् अग्नि-दाह होता है। भिक्षुओ महान् अग्नि-दाहके होने पर गाव भी जल जाते हैं, निगम भी जल जाते हैं और नगर भी जल जाते हैं। गावके जलनेपर, निगमोके जलनेपर तथा नगरोंके जलनेपर भी कभी कभी ऐसा होता है कि माता की पुत्रसे भेंट हो जाती है, पुत्रकी मामे भेंट हो जाती है। भिक्षुओ, यह पहला माता-पुत्र-युक्त भय है जिसकी अज्ञानी मामान्य जन चर्चा करते हैं।

"भिक्षुओ, फिर ऐसा समय भी आता है जब महान् वर्षा होती है। महान वर्यकि होनेपर तथा नगरोंके वह जानेपर भी कभी कभी ऐसा होता है कि माताकी पुत्रमे भेंट हो जाती है, पुत्रकी मासे भेंट हो जाती है। भिक्षुओ, यह दूसरा माता-पुत्र-युक्त भय है जिसकी अज्ञानी सामान्य जन दर्जा करते है।

" भिक्षुओ, फिर ऐसा समय भी आता है जब जगल (में रहने वाले चोर-डाकू) प्रकट हो जाने हैं। जस समय लोग रथोपर चढचढ़कर जनपदसे नाग जाते हैं।

मिन्नुनो जन जेनल प्रकृता हो नाते हैं नौर जन लोग रचोंचर चढ-चढकर जनपरिंछ सार चाते हैं तब भी कभी-कभी ऐसा होता है कि माताको पुनसे मेंट हो नाती है पुनकों मा से मेंट हो जाती हैं। भियमुनो यह सीसरा माता-पुन-मुक्त मय है जिसकी अजानी सामान्य जन चर्चा करते हैं।

"मिसुओ उपन दीन सब माठा-पुत्र-बुक्त भय ही है जिनकी कराती सामान्य जन माठा-पुत्र-विहीन सब कह कर वर्षा करते है।

मिलुको ये तीन माता-पुत्र-विहीन भग है। कीनसे तीन?

मुडापेका सब रोय का सय तथा मृत्युका सम ।

" मिसूनो पुनके नुई होने गर नाता यह नहीं कह तकती कि में बूबी होती हैं पुन दूरे मन दोनों और गांवाके बूबी हो पर पुन यह नहीं कह सकता कि मैं बूबा हैता है पुन पूरे मत होसो।

"भिजुको पुनके रोनो होने पर माता यह नहीं नह सकती कि में रोनो होती हैं तुम रोबी मन होजो और भाताके रोनी होनेपर पुत्र भी यह नहीं कह सकता कि मैं रागी होता हैं तुम रोनिमों मत होजो।

मिणुजो मध्ये हुए पुत्रको माता सह नहीं त्रज्ञ ततती कि में मध्यों हूँ तुम सन मधे और भरती हुभी माताकेको पुत्र भी यह नहीं कह ततता कि में मध्या हूँ तुम सन मधे।

मिशुबो में दौन माता-दुत-विद्वीत सय हैं।

भिज्ञ को इन बीना मार्गानुक-पुक्त क्योंका तथा भिन बीनो नाया-पुक-निर्देश स्थोतर प्रयान करनेकाल अनिकत्तक करनेवाका कार्य है पद है। मिनुको मिन नी सामानुक-प्रयोक्त तथा इन तोनी नाया पुत्र-निर्देश स्थोतर प्रशास करनेवाला अनिकस्य करनेवाला सार्य पद कीनगा है?

वरी आर्थ अव्योकि-मार्थ व्यक्ति है सम्बन्ध-हिन सम्बन्ध-विकास सम्बन्ध-वाजी सम्बन्ध-प्राप्ति तस्यक-आर्थिका तय्यक-सम्बन्धित कथा सम्बन्ध-समाहि । निवृत्त्वी दिस्त दीर्थी समानुब-युक्त प्रवेश्य दश्या जित्र दीर्जी सार्य-पुत्र-विकास करोस्त अहान करतेवाला अतिकस्य करवेवाला सार्व वस वाही है। "

त्तव सक्य करात् जिल्लु सपके नाव जगवान् कीमान (-अनपर) में चारिका वरते हुने जहां कोसानोगा वेतानपुर नामशा बाह्यक-बात वा बहुां बहुवे ह देनागपुर का मृहपितयो ने सुना कि शाक्य-कुल-प्रब्रजित शाक्य-पुत्र श्रमण गीतम वेनागपुर काये हैं। श्रुन भगवान् गौतमका इस प्रकारका यश फैला है। यह भगवान अरहत हैं, सम्यक्-सम्बद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगत हैं लोकोंके ज्ञाता हैं, सर्व श्रेष्ठ हैं, (कुमार्ग-गामी) मनुष्योका दमन करने वाले हैं और देवताओ तथा मनुष्योंके शास्ता है। वे इस सदेव, समार, स-ब्रह्म लोकको तथा श्रमण-ब्राह्मण-युक्त सदेव-मनुष्य जनताको स्त्रय जानकर, साक्षात कर (धर्मको) प्रकाशित करते हैं। वे शादिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याणकारक, अन्तमें कल्याणकारक, अर्थों तथा व्यजनोंसे युक्त, सम्पूर्ण, परिशुद्ध ब्रह्मचर्यको प्रकाशित करते हैं। ऐसे अरहतोका दर्शन कल्याणकारी होता है।

उस समय वेनागपुरके ब्राह्मण, गृहस्य (=वैश्य ) जहाँ भगवान् ये वहाँ पहुँचे। पहुँचेतर उनमेंसे कुछ अभिवादन करके एक ओर बैठ गये, कुछ भगवानको के साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत करके एक ओर बैठ गये, कुछ भगवानको हाय जाडकर एक ओर बैठ गये, कुछ अपना नाम-गोत्र सुनाकर एक ओर बैठ गये, कुछ चुप-चाप रहकर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे हुए वेनागपुरिक - वत्स-गोत्र ब्राह्मणने भगवान् से कहा---

"हे गौतम! आश्चयं है। हे गौतम! अद्भुत है। आप गौतम की अिद्रियां प्रसन्न हें। आपको त्वचा शुद्ध तथा साफ है। हे गौतम! जैसे शरद् ऋतुका बेर शुद्ध तथा साफ होता है, उसी प्रकार आप गौतमकी अिद्रियां प्रसन्न हें और त्वचा शुद्ध तथा साफ होता है, उसी प्रकार आप गौतमकी अिद्रियां प्रसन्न हें और त्वचा शुद्ध तथा साफ होता है, उमी प्रकार आप गौतमकी अिद्रियां प्रमन्न हें और त्वचा शुद्ध तथा साफ होता है, उमी प्रकार आप गौतमकी अिद्रियां प्रमन्न हें और त्वचा शुद्ध तथा साफ है। हे गौतम! जैसे चतुर सुनार द्वारा ठोकपीटकर तैयार किया हुआ जाम्बुनद-स्वर्ण पाण्डु-वर्ण कम्बल पर रखा हुआ चमकता है, उमी प्रकार आप गौतमकी अिद्रियां प्रसन्न है और त्वचा शुद्ध तथा साफ है। हे गौतम! जितने भी अूंचे गयनासन, महान् शयनासन है—जैसे आराम-कुर्सी, पलग, अूनके बालो वाला पलग, चित्रित-ऊनी विछौना, सफैद ऊनी विछौना, मुलायम ऊनी विछौना, एक ओर डोरीयोर ऊनी विछौना, रतन-जिस्त रेशमी विछौना, रेशमी विछौना, पक ओर डोरीयार ऊनी विछौना, रतन-जिस्त रेशमी विछौना, रेशमी विछौना, सर्जिक विश्वोत्ता, हाथी आदिके चित्रति विछौना, अजिन

(मृग) के वर्गकी चटाई, बूपर चन्दोंचे और दोनों बोर काक सक्तियोंबाका कदानी मृग की कासका विधीना—जापको यह सहय ही प्राप्त है आपको सङ्कतासास मिक चाने हैं।"

"बाह्मण! यो में ऊचे धरणासन है महान् धरणासन है—विसे भाराम-कुर्मी कवसी मृगकी बाल ना विक्रीता—ये प्रवितिको दुर्लम है भीर मिस्रे तो दनको स्ववहार्स लागा मनुचित है।

हे बाह्य मार्थ होना मूचि स्वयामत है । सहात स्वयासत है जो मुझे इस समय सहज ही प्राप्य है, मनासास सलाम है। जे तीन कीनसे हैं ?

" दिश्य केंचा रायनासन-महान-स्थानासन वहा केचा स्थानासन-महान

चयनासन जार्म अंचा चयनासन-महान्-धयनासन । हे बाह्यम् ! ये तीन अंभे धमनासन महान् धमनासन है जो मुझे इस समय महत्र ही प्राप्य है। बनावास सुख्य है। हे बाह्यय ! मैं जिस गाँव या निगमके समीप खता हूँ पूर्वाह्व होनपर भीवर पहन पात्र-भीवर ले उसी भीव या नियमर्थे भिलार्व बाला हैं। भिधाटमसे लौटकर, भोजन कर चकने पर उसी गाँवके पाम के जंगलमें विहार करता हैं। वहाँ भी बार या पर्ते होते हैं। सन्हें इस्ट्राकर, उत्तरर पासपी मार कर, घरीरको मीया-कर तथा स्मृति को सामने कर बैठना हूँ । उस समय में काम-मोनोंने रहिन अनुसत-विचारीते रहित नितर्क-पुक्त विचार-पुक्त विवेकन प्रौति तथा पुक्त वाके प्रवय-ध्यानको प्राप्तकर विहार करता हूँ। फिर विवर्ष और विचारिक उपधानन से अन्दरकी प्रमानता और एकावता क्वी द्वितीय ध्यानको प्राप्तकर विहार करता है। फिर प्रीतिने भी विरक्त हो बयेसावान वन विद्वार वरता है। उस समय स्मतिमान सानवान होता है और गधिर ने नुसना अनुभन न रता हैं विमे पश्चित-यन भोभावात हो स्मृतिवात हो जुनपूर्वक रहता बढ़ते हैं उम गुनीय-स्मानको प्राप्त बर विद्वार करता हूँ। किर नुत्र और नुन्त दोनोंके प्रद्वानमें भीमनस्य और दौर्मनस्यके पद्भे ही अन्त हुए रहनेने जनान चनुर्व-स्थाननो प्राप्तत्तर निरार भरता है। जिनमें न बुल होता है और न मुख होती हैं (केवल) उपेशा तबा स्मृतिकी परिसृद्धि।

हेबाहाथ 'इन जनस्वामें जब में चंत्रमण नरता है तो वह मेरा दिया चंत्रपण होता है। हे बाह्मण 'इन जबम्यानें जब में लडा होता हूं तो वह मेरा दिव्य नदा होना होना है। हे बाह्मण 'इन जबस्वामें जब में बैटना हैं तो यह मेरा दिला बैठना होता है। है प्राह्मण । प्रम अयस्थामें ज्या में हैटना है तो यह मेरा दिला लेटना होता है। है प्राह्मण ! यह है यह ऊला शयनागन, महान् शयनागत जो मुख प्रत गमग महज ही प्राप्त है, जनायाम मुलभ है।"

"हे गीतम । आन्तर्य है। हे गीतम । अप्रमुख है। आप गीतमके अनिस्तित आप क्रिके इस प्रयासका दिव्य अन्य भवतात्ता, महान् गयनायन गहज वि प्राप्य होता, अनायान वि गुज्य होगा ।"

"हे गीतम् । चर ग्रहा उत्ता भयनास्ता, महात् भयनासन कीनता है, जो आप निवसने दत्त समार सहज ही प्राप्य है, अनातास ही सुरुष है ?"

'तृ ब्राध्यमां में जिस गात या निगमीत ग्रामि पता हैं, पूर्वीह्न तो नेपर (चीतर) पत्न, पात्र-चीवराते, उपी गाँव या निगमीत भिशायं जाता हैं। निश्नादन से लीटकर, मोजन पर चुक्तिपर उसी गायके पासीत जगारमें विद्वार गाना हैं। यहाँ जो घान या पतो होते हैं, उन्हें अिल्ह्याकर, उनपर पालयी मारार, दारीरको सीधार तथा स्मृतिका सामोगर प्रैठता हैं। उप नगत में एन दिशा, दूसरी दिशा, नीसरी दिशा तथा चीधी दिशाका मैत्री-चित्ती स्पर्य करके वितार गाना हैं। उपर, चीचे, बीचमें, सत्रत्र, सत्र तरत्रो, सब प्रमारी, सारे लोकती विष्टुर, उदार, अप्रमाण, बर्बरी, अत्रोधी, भैती-युक्त चित्ती स्पर्य गरके वितार करता हैं। उस समय में एक दिशा करणा युक्त चित्ती स्पर्य करके वितार करता हैं। उस समय में एक दिशा प्रीता-युक्त चित्ती स्पर्य करके वितार करता हैं। उस समय में एक दिशा उपेक्षा-युक्त चित्ती स्पर्य करके वितार करता हैं। उस समय में एक

"हे प्राह्मण । इस अवस्थामें जब मै चप्रमण करना हूँ तो वह मेरा प्रह्म-चफ्रमण होता है। है ब्राह्मण । इस अवस्थामें जब मै खडा होता हूँ वैठना हूँ लेटना हूँ ता वह मेरा प्रह्म केटना होना है। हे ब्राह्मण। यह है वह ऊचा शयनामन, महान् शयनामन जो मुझे इस समय सहज ही प्राप्य है, अनायास सुल्म है।"

"हे गीतम । आश्चर्य है। हे गीनम। अद्भुत है। आप गीतमके अतिग्क्ति अन्य किमे इस प्रकार का ब्रह्म ऊचा शयनासन, महान् शयनासन सहज ही प्राप्य होगा, अनायास ही मुलभ होगा।"

"हे गीतम । वह आर्य ऊचा घयनामन, महान् घयनामन कौनसा है, जो आप गीतम को इस समय महज ही प्राप्य है, अनायास ही सुलम है?" "हे बाह्यव ! ये जिल योव या निवसके समीप पहला हूँ पूर्वाह्म होने पर (वीचर) पहल पान-पीवर के जारी पांच या नियममें मिल्लावे जाता हैं। मिलाट को लोकर ए पोननकर पुननेपर बती मंत्रिके पानके जनकों विहार करता हूँ। वहाँ भो बास या पतो होने हैं उन्हें हरू दुलाकर, जनपर पानची मारफर, सरीपको सीचा कर तथा स्नृतिको सामने कर बैठना हूँ। जन समय में यह बानता हूँ कि मेरा पाव प्रशिन हो गया है जड़ मुकने बता बया है करे ताड़ जैसा हो गया है जड़ मुकने बता बया है करे ताड़ जैसा हो गया है जड़ मुकने बता बया है करे ताड़ जैसा हो गया है अधावको प्राण हो गया है अधावको प्राण हो गया है अधावका नदी पहीं है मेरा है ये प्रशिन हो या है में मावना नदी पहीं है मेरा हो या है मंत्रावना नदी पहीं हो नया है मंत्रावना नदी पहीं हो स्वाह है मंत्रावना नदी पहीं हो स्वाह है संवाहना नदी पहीं है से साथ है संवाहना नदी पहीं हो स्वाह है संवाहना नदी पहीं हो स्वाह है संवाहना नदी पहीं हो स्वाह स्व

"हे बाहान ! इत अवस्यानें जब में चक्रमण करता होतो वह मेरा आर्व चक्रमण होता है। हे बाहान ! इस जबस्थानें जब में खबा होता हैं वैठता हूँ किटता हूँ तो चह मेरा सार्व केटला हाता है। हे बाहाच ! यह है वह क्रेचा सकतासन महान् यमनामन या मुझे इस समय महत्र ही प्राप्य है अशाबास धुनम है।"

"है नीमम! बाल्यर्स है। है जीवम! बहुनुत है। बाप गीनन के अगिरिक्त अन्य किने जिन प्रकारका बहु उस्ता एवनागन महान् ध्रमायन महत्व मी प्राप्त अगायान ही भुनम होता! नुल्यर गीउम! बहुत पुल्लर भीउन कीन मी उप्टेडों को गीवा कर है को प्रपाद है कमा मार्ट-प्रप्ति । एउना बता है अबबा अपडेटेसें मगाय जला है जिनमें और बाला मी नीवीड़ी हैत महा। इसी प्रवार गीवस ने नाता प्रवारत पर्यंचे प्रवारत किया है। मैं भगाया गीउस (वर्गक) प्रसंत्रत पर्यंचे एवं जाता है। अगाया गीउस प्राप्त पर्यंचे प्रमुख्या है। अगाया गाया प्राप्त प्रमुख्या है। अगाया गाया प्राप्त प्रमुख्या है। अगाया गाया गाया उपाय अगाय अगाय की "

(44)

ऐना मैंने मुना। एक मनव मनवान् (वुड) राजपूर्वे गूध-कट पर्वेतन्तर विकास कारो थे।

पन तसय नरम नामके गरिवानकारों दम मुख-धामन (=वर्ध-धिनन) को छात्रकार करे नाम ही भवतकुता ना। नह प्रामृत् को परिवासी नेती वाली बीतना चा—वेर्न पारच पुनीब भवतारा वर्ष नाम निया। येर्न पारच पुनीब भवतीके बर्वका मानकार हो पने बोता है। उस गमय बहुतमे भिक्षु पूर्याह्ह होनेपर (चीवर) पहन, पात्र-चीवर, ले, राजगृहमे भिक्षाटनके लिये प्रविष्ट हुए।

उन भिक्षुओने राजगृह की परिषद में सरभ परिव्राजक द्वारा बोली जाने-वाली वाणी सुनी-मी शाक्य-पुत्रीय श्रमणोका धर्म जान लिया । मैने शाक्य-पुत्रीय श्रमणोंके धर्मको जानकर ही उने छोडा है।

तव वे भिक्षु राजगृहमें भिक्षाटन करके, लीट चुक्कने पर, भोजनके जनन्तर जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। पाम जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए उन भिक्षुओने भगवानको यह कहा—

"भन्ते । सरभ नामका पित्राजक कुछ ही समय हुआ इस धर्म-विनयको छोडकर गया है। वह राजगृहमें प्रविष्ट होकर ऐसी वाणी वोलता है—मैने शाक्य-पुत्रीय श्रमणो का धर्म जान लिया। मैने शाक्य-पुत्रीय श्रमणो के धर्म को जानकर ही उसे छोडा है। भन्ते भगवान् । यह अच्छा हो यदि आप कृपा करके जहाँ सिष्पिनी (नदी) का तट है जहाँ परिन्नाजकाराम है, वहाँ पधारे।" भगवान्ने चुप रहकर स्वीकार कर लिया।

तय भगवान शामके समय, ध्यानसे उठकर, जर्हा सिप्पिनिका (नदी) का किनारा था, जहाँ परिव्राजकाराम था, जहाँ सरभ परिव्राजक था वहाँ गये। जाकर विछे आसन पर वेठै। वैठकर भगवान्ने सरभ परिव्राजक को यह कहा—

"हे सरभ । क्या तू सचमुच ऐसा कहता है—मंने शाक्य-पुत्रीय श्रमणोका धर्म जान लिया। मंने शाक्य-पूत्रीय श्रमणोंके धर्मको जानकर ही असे छोडा है? ऐसा पूछने पर सरभ परिज्ञाजक चुप हो गया।

दूसरी वार भी भगवान्ने सरभ परिव्राजक को यह कहा—"सरभ। कह। क्या तूने शाक्य पुत्रीय श्रमणों के धर्म की जान लिया ? यदि उसमें कुछ कमी होगी तो मैं कमी पूरी कर दूगा।" यदि तेरी जानकारी पूरी होगी तो मैं समर्थन कर दूँगा। दूसरी वार भी सरभ परिव्राजक चुप हो गया।

तीसरी बार भी भगवान् ने सरभ परिव्राजक को यह कहा—"सरम !
मुझे शाक्य-पुत्रीय श्रमणो का धर्म ज्ञात है। हे सरभ ! तू बता, क्या तूने शाक्यपुत्रीय श्रमणो के धर्म को जान लिया ? यदि उस में कुछ कमी होगी, तो मैं पूरी
कर दूँगा। यदि तेरी जानकारी पूरी होगी तो मैं समर्थन कर दूँगा।"

वस समय राजपृह के बन परिवाजकों ने सरम परिवाजक की वह कहा-

वीतरी बार भी सरम परिवादक पूप ही छहा।

आयुन्मात । जो कुछ तुन समय पीतम के बारे में बहुते हो उसी विषय में समा बीतम तुन्हें तितसम केते हैं। आयुन्मात तरम ! कह क्या तुने शास्त्र-पीतम समझों के धर्म को जान सिया ? यदि उस में कुछ कभी होत्री तो समय पीतन पूरी कर देने। यदि तेरी जानकारी पूरी होती तो क्याना समयेन कर देंग।

एता नहने पर सरम वरिष्ठावन चुन-वाप सहबहाया हुवा वरस्य निरो हुई सुंहतीने नावता हुवा निस्तेव होकर वैंड गया।

तब नवदान ने नरन परिचायक को पूप-पाप सहरहाया हुना नरदन गिरी हुई मूंह नीचे जोचता हुआ निम्लय बैठा रेच उन परिचारको नी कहा---" यदि कोई परवादन मुने यह नई हि अध्यक्ष अमुख होने की बीरमा करने कर भी अनुक क्षिप का जान नहीं है। तो में उस में अच्छी नरह जिस्ह करें तर्क करें बानबीन करें। मेरे प्रास्त अन्तर्भ तरह किये जाने कर तर्क किये जाने पर बानबीत किये जाने बर, इस बात की मुख्याइस नहीं है कि बर इसनीत अध्यवाओं में ने बिनी गर अवन्या को प्राप्त कहा--इक्ती-पूत्र वे बाद करेगा। बाहर की बाद शायका थांच हेर वा अनेशय बस्ट करेना अवता नतन परिवासक की तरह पृथ्यम अबदशया हुआ परस्य विगे हुई शुँह नीचे नीचमा हुआ नि रेज हारार केंद्र जावना । अदि कोई परिहानक नृत वह करे कि धीनायन टाने की भारता काने कर भी। अनक अवक जानक शीम करी हुए है। तो मैं पान में अभी मरश्रीबार करें सब करें बान-गीन करें। बेरेडारा अन्तो भार बिरड़ हिये शाने कर नके किर मान कर काल की किरे मान कर इस बाल की गुण्याच्या नरी है दि मर इन तीन मरावानी में न हिती एक बराबा का बन्त न टा-पूनरी दूसरी बार करेंगा बार्टर की बाद सारामा । कार ईव वर बक्तांच वह कीता बरश बाब में राज्य में नार मुख्या बहराय हुता नारत दिये हुई मेर नीवे मानता हवा निरोध शबर बेंद्र बादला :

याँ। वर्षे परिवादक मत्ता पर पट्टे कि दिन प्रश्ता की पूर्व के लिये बनोरोत्ता दिवा महा है। तह जार बर्गावाण करत बार को वह दूरत के सहस्र मत्त्र की बार नहीं ने बार ---नो मैं पत्र में बन्दों तरर दिवर वर्षा तर्व वर्षा बान बीज़ करूँ। मेरे द्वारा अच्छी तरह जिरह किये जाने पर, तर्क किये जाने पर, बातचीत किये जाने पर, इस वात की गुञ्जाइग नहीं हैं कि वह इन तीन अवस्याओं में ने किमी एक अवस्या को प्राप्त न हो—दूसरी दूसरी वात करेगा, वाहर की वात लागेया, क्रोध, द्वेप वा असतोप प्रकट करेगा, अथवा सरभ परिवाजक की तरह चुप-चाप, गडवडाया हुआ, गरदन गिरी हुई, मुंह नीचे, सोचता हुआ, निस्तेज होकर बैठ जायेगा।

इस प्रकार सिष्पिनिका (नदी) के तट पर स्थित परिव्राजकाराम में भगवान् तीन बार सिंहनाद करके आकाश से चले गये।

भगवान् के चले जाने के थोड़े ही समय बाद वे परिव्राजक सरभ परिव्राजक को वाणी के कोड़े मारने लगे। आयुष्मान् मरम । जैसे कोई वूढा गीदड बड़े जगल में सिंह-नाद करने की वात कहकर गीदड की बोली ही बोले, सियार की बोली ही वोले, इसी प्रकार हे आयुष्मान् मरभ, तूने श्रमण गौतभ की अनुपस्थित में में मिंह-नाद करूँगा, कहकर उपस्थित में केवल गीदड की बोली, सियार की बोली ही बोली हैं। जैसे कोई मुर्गी का चोजा मुर्गे की तरह वाग दूंगा कहकर मुर्गी के चोजे की ही आवाज निकाले, उसी प्रकार हे आयुष्मान् सरभ । तू ने श्रमण गौतम की अनुपरिस्थित में मैं मिह-नाद करूँगा कहकर उपास्थितमें केवल गीदड की बोली, सियार की बोली ही बोली है। आयुष्मान् सरभ । जैसे वृषभ समझता है कि शून्य गो-शाला में उसे जोर से राभना चाहिये, इसी प्रकार आयुष्मान् सरभ । तू भी यह समझता है कि श्रमण गौतम की अनुपस्थित में ही जोर से बोलना चाहिये।

तब उन परिव्राजको ने चारो ओर से सरभ परिव्राजक को वाणी के कोडे लगाये।

(६५)

ऐसा में ने सुना। एक समय भगवान् (बुद्ध) कोशल जनपद में महान् भिक्ष-सघ के साथ चारिका करते हुए जहाँ केश-पुत्र नाम कालामो का निगम था, वहाँ पहुँचे। केश-पुत्रीय कालामो ने सुना कि शाक्य-कुल से प्रव्नजित शाक्यपुत्र श्रमण गौतम केश-पुत्र पधारे हैं। उन भगवान् गौतम (बुद्ध) का इस प्रकार से सु-यश फैला हुआ है—वह भगवान् पूज्य है, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरण से युक्त हैं प्रकाशित करते हैं। ऐसे अरहतो का दर्शन करना अच्छा होता है।

उस समय केप्युकीय कालाम जहाँ मगलान ने बहाँ गये। पान बाकर कुछ मगलान को नमस्तार कर एक और बैठ गये कुछ मगलान के साव दुसम-पैन का बार्तामाप नरफ एक ओर बैठ गये कुछ मगलान को हान बोककर मगस्तार करके एक और बैठ गये हुछ (जरान) नाम-गों मुनाकर एक और बैठ पये हुए बुव बाद एक और बैठ गये। एक बार बैठ केपदुषीय कालामों में मगलान को यह नरा —

"भागे । तुझ समय-बाह्मण केस-पुत आते हैं। व अपने ही मत की प्रकाशित करते हैं अमार करते हैं अमार करते हैं अमार करते हैं ति समार करते हैं ति समार करते हैं ति समार करते हैं। इसरों हैं। समों ! इसर भी दुख अमार-बाह्मण कैस-पुत आते हैं। वे भी करते हैं। मत की मनाशित करते हैं अमार हैं। इसरे में या की निमा करते हैं जमें पत करते हैं जमें पत करते हैं जो पत करते हैं। इसरे में या की निमा करते हैं जमें समार करते हैं जिए कार करते हैं जो पत करते हैं। इसरे में समार करते हैं जो समार करते हैं। इसरे समार करते हैं जो समार करते हैं। इसरे समार करते हैं जो समार करते हैं। इसरे समार करते हैं।

वैदा होना है कि पन समजों में से विगने सब कहा विगने सूठ? "हे कालाया! सक करना ठीक है। नगोर करना ठीक है। सब करने ही वी बगह पर गन्देक बनाम हमा है।

"हे बाबाबो आओ। जुम बिनी बात को केवल हम सिमे मार क्योंनार करों कि यह बात बतुमुत है नेवल दम किसे तत ब्योंनार करों ति यह बात वरण्यातत है कित्त हम सिमें मार व्योदार करों कि यह बात इसी महार करी की के केवल इस सिमें मार क्योंनार करों कि यह इसारे मोर्क-स्था (पिटक) के अनुकत है नेवल इस सिमें मार क्योंनार करों कि यह ताई-मानत है केवल इस सिमें मार बोतार करों कि यह स्थाय (-पारव) सम्मत है केवल इस सिमें मार क्योंनार करों कि आनार समार सुन्दर है नेवल इसक्टिन सार स्थीवार करों ने साह हमारे यह के अनुकत है केवल

हुए। किये मान रहीरार जारी कि जाउने बाले का क्यांन्स के बाव के बेबल इतान्यें जन रहीजार जारी कि कारने बाता स्थान हमारा पुरस्त है। है बाताओं दिसस तुब जान्यातमन के जाने जान ही यह जानी कि से बार्ने अकुसक है से बार्ने महोत

है में बारे कि पूर्ण अस निर्मा है का बारों के अनुसार चरने में मान रोगा है दुख रोगा रे—ना है बानाबों! तुम पर बारी को छोड़ को। "तो है बानाबों! का नानों रो पूरा के बानन वा साम प्रमाप्त

होता है यह उनके दिन ने निये शता है या अग्रिक ने निये ?

'भन्ते! अहिन के लिये।"

"हे कालामों। जा लोभी है, जो लोभ में अभिभूत है, जो असमत है, -हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परस्त्री-गमन भी करता है, घूठ ता है, दूसरों को भी बैगी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घकाल तक उसके अहित है का कारण होता है।"

" नन्ते । ऐमा ही है।"

"तो हे कालामो । वया मानने हो, पुरुष के अन्दर जो द्वेष उत्पन्न वह उनके हित के लिये होता है, वा अहित के लिये ?"

"भन्ते । अहित के लिये।"

"हे पालामों । जो हेपी है, जो हेप से अभिमूत है, जो अगयत है, गी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परस्त्री-गमन भी करता है, सूठ भी बोलता है, दूसरों को भी वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्य-काल तक उस के अहित तथा दुत्र का कारण होता है।"

"भन्ते । " ऐसा ही है।"

"तो हे कालामो पया मानते हो, पुरुष के अन्दर जो मोह उत्पन्न होता है, वह उसके हित के लिये होता है वा अहित के लिये?"

"भन्ते। अहित के लिये।"

"हे कालामों जो मूढ है, जो मोह से अभिमूत है, जो असयत है, वह प्राणी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परस्त्री-गमन भी करता है, झूठ भी बोलता है, दूसरों को भी वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घकाल तक उस के अहित तथा दुःख का कारण होता है?

"भन्ते । ऐसा ही है।"

"तो कालामो। वया मानते हो, ये धर्म कुशल है वा अकुशल?"

"मन्ते! अक्राल है?"

" सदोप है वा निर्दोप ? "

"भन्ते । सदोप है।"

" विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दित है, वा प्रशसित है ? "

"भन्ते । विज्ञ पुरूषो द्वारा निन्दित है।"

परिपूर्ण करने पर, आवरण करने पर अहित के किये बुख के लिये होते हैं अववा नहीं होते ? इस विध्यमें गुम्हें वैसा करता है ? " "मन्ते ! परिपूर्ण करने पर, आवरण करने पर, अहित के किये बुख

"मन्ते ! परिपूर्णकरने पर, बावरणकरने पर, बहित के मिसे दुवा के किसे होते हैं। इस विषय में हमें ऐसा ही कवता है।"

तो है कालामी! यह यो कहा—है कालामी! जाजो! तुम कियों
बात को केनस इस सिमें मत स्वीकार करों कि यह बात अनुमृत है कैनक
इस सिमें मत स्वीकार करों कि यह बात परम्परायत है केनक इस सिमें मत स्वीकार
करों कि यह बात इसी प्रकार कहों गई है नेवस इस सिमें मत स्वीकार करों कि
यह तर्क-सम्प्रक (—पिरक) के अनुकृत है केनक इस सिमें मत स्वीकार करों कि
यह तर्क-सम्प्रत है केनक इस सिमें मत स्वीकार करों कि
यह तर्क-सम्प्रत है केनक इस सिमें मत स्वीकार करों कि
यह तर्क-सम्प्रत है केनक इस सिमें मत स्वीकार करों कि
यह तर्क-सम्प्रत है केनक इस सिमें
मत स्वीकार करों कि यह हमारी मत के नाष्ट्रक है केनक स्वाधियों मत सिमों मत स्वीकार करों कि
कहने वाला समन हमारा पुन्य है। है कालामों। कम तुम आस्प्रतम्बर्ध अपने
आप ही यह सानों कि से बात अनुस्त है में बात सिम्में पत स्वाधिय है स्वाधिय हमारों है
कालामों। युन स्वाधि के अनुसार करने से अदित होता है दुक्त होगा है—चो है
कालामों। युन स्वाधि के अनुसार करने से अदित होता है दुक्त होगा है—चो है
कालामों। युन स्वाधि के अनुसार करने से अदित होता है दुक्त होगा है—चो है
कालामों। युन स्वाधि की कोड हो—सह वो डुक्त कहा नया यह होते सन्वत्व

"है काबायों! जाजों। पुन किवी बाव को केनल इव क्षिये मत स्वीकार नरी कि नहने बाबा समय इसारा पून्य हैं। हे काबायों! बत पुन बासनपुन्य से करने बार ही यह बानों कि ये वार्य कुटक हैं ये बातें निर्देश हैं में बातें जिन-पुनयों बारा प्रवाधित है देन बारों के बहुत करने से हित होता हैं पत्र बोता हैं—सो है कालायों! तुस इन बारों के बनुवार वायरक करों।

सुख होता है—तो हे कालामो ! तुम इन वातो के बनुतार बावरव करो। तो हे कालामो ! क्या मानते ही पूरम के बन्दर थी अलोग

उत्पन्न होता है यह उस के हिठ के भिन्ने होता है या महित के किये ? " "सक्ते ! फित के लिये ।

ं प्रत्य । १६० के श्लम्य । हे कालामो ! यो अलोगी है जो कोम ये अधिनृत नहीं है जो असंबत तहीं है यह प्राणी-इत्यामी नहीं करता योधी भी नहीं करता यरस्त्री-असन भी नहीं करता, झूठ भी नहीं वोलता, दूसरों को भी वैसी प्रेरणा नहीं देता, जो कि रीर्घ काल तक उस के हित तथा सुख का कारण होता है।"

"भन्ते । ऐसा ही है।"

"तो हे कालामो<sup>।</sup> मया मानते हो, पुरुष के अन्दर जो अद्वेप उत्पन्न होता है, वह उस के हित के लिये होता है वा अहित के लिये <sup>?</sup>"

"मन्ते । हित के लिये।"

"हे कालामों। जो अद्वेषी हैं, जो द्वेष से अभिभूत नहीं हैं, जो असयत नहीं हैं, वह प्राणी-हत्या भी नहीं करता, चोरी भी नहीं करता, परस्त्री-गमन भी नहीं करता, झुठ भी नहीं वोलता, दूसरों को भी वैसी प्रेरणा नहीं देता, जो कि दीर्घ-काल तक उम के हित तथा मुख का कारण होता है।"

"मन्ते । ऐसा ही है।"

"तो हे कालामो । क्या मानते हो, पुरुष के अन्दर जो अमोह उत्पन्न होता है, वह उस के हित के लिये उत्पन्न होता है, वा अहित के लिये ?" "भन्ते । हित के लिये।"

"हे कालामो। जो मूढ नहीं हैं, जो मूढ़ता से अभिभूत नहीं हैं, जो असगत नहीं हैं, वह प्राणी-हत्या भी नहीं करता, चोरी भी नहीं करता, परस्त्री-गमन भी वहीं करता, झूठ भी नहीं बोलता, दूसरों को भी वैसी प्रेरणा नहीं देता, जो कि दीर्घ-काल तक उस के हित तथा सुख का कारण होता है।"

"भन्ते<sup>।</sup> ऐसाही है।"

"तो कालामो । क्या मानते हो, ये धर्म कुशल है वा अकुशल ?"

"मन्ते<sup>।</sup> कुशल है।"

" सदोष है वा निर्दोष ? "

"भन्ते । सदोप है।"

" विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दित हैं, वा प्रशसित ? "

"भन्ते । विज्ञ पुरुषो द्वारा प्रशसित है।"

"परिपूर्ण करने पर, आचरण करने पर सुख के लिये होते हैं, अथवा नहीं होते ? इस विषय में तुम्हें कैसा लगता है ?" "भन्ते! परिपूर्ण करने पर, आकारण करने पर, हित के सिन्ने तुम के किसे होते हैं। इस विषय में हमें ऐसा ही जनता है।

"तो दे कलातो! यह जो कहा— हे कालातो! जातो। तुम किमी बात को नेवल इस किमें मत लगिता करों कि यह वात जानुवार है केवल इस किमें मत स्वीकार करों कि यह बात कार्युवार हो केवल इस किमें मत स्वीकार करों कि यह बात स्वीवार करों कि यह सात स्वीकार करों कि यह स्वारे सर्व-स्वार (स्वीकार करों कि यह स्वारे सर्व-स्वार है केवल इस किमें मत स्वीकार करों कि यह स्वार (-दास्त ) समात की का कार प्रकार करों कि यह स्वार पर हमारे पत की जात करी का स्वीकार करों कि वाकार प्रकार करों कि वाकार करों के वाकार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार के वाकार करों कि वाकार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार करों कि वाकार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार करों के वाकार स्वार स्वा

"हे काकामो! को नार्य-नावक! इस प्रकार लोग-पहित होता है फोध-पीत होता है प्रकार पीठ होता है जानकार होता है प्रमित-मान होता है वह एक दिवा इससे दिवा सी सिंध सी में में निवत से स्था करके विहार फेटा है। उसर भीने जीन में सर्वन सकरह से सब प्रकार से सारे के को निपुत करार, नामनाम अवेरी नाजेशी मैनी-मुक्त दिवा संबंध करके निहार करता है। है कालामो! पर इस प्रकार के नवेरी-वित्त नामेशी विश्व नाविक्ट-नित्त सुद-वित्त नामेशी को हमी करीर में बार प्रकार के भारवासन प्राण्ड हो नासे हैं।

"यदि परलोक है यदि गुक्कर-पुन्कर का फल मिलता है तो यह होगा कि सरीर सूटने पर, मरने के बनातर, में नुवर्ति को प्राप्त होस्था में स्वर्ष बोक में पैदा होजेना--यह उसे पहका बाध्वासन प्राप्त हो बाता है। सदि परलोक नहीं है वदि गुहर-पुत्कर वा कब नहीं मिलता है तो में बहुई इस सरीर में बबैरी होकर, अक्रोधी होकर, दुख-रिहत होकर, सुवी होकर विचरण करता हूँ— यह उसे दूसरा आश्वासन प्राप्त हो जाता है। यदि करने से किसी का बुरा होता है, तो मैं किसी का बुरा नहीं सोचता हूँ, जब मैं कोई पाप-कर्म नहीं करता हूँ तो मुझे दुख कैसे स्पर्श करेगा?—यह उसे तीसरा आश्वासन प्राप्त हो जाता है। यदि करने से किसी का बुरा नहीं होता, तो मैं अपने आप को दोनो दृष्टियों से विशुद्ध पाता हूँ—यह उसे चौथा आश्वासन प्राप्त हो जाता है।

"हे कालामो। उम इस प्रकार के अवैरी-चित्त, अकोधी-चित्त, अस-क्लिष्ट-चित्त, गुद्ध-चित्त, आर्य-श्रावक को इसी शरीर में चार प्रकार के आखासन प्राप्त हो जाते है।

"भगवान्। ऐसा ही है। सुगत। ऐसा ही है। भन्ते। इस प्रकारके अवैरी-चित्त, अक्रोधी-चित्त, असिक्लष्ट-चित्त, शुद्ध-चित्त आयं-श्रावक को इसी शरीर में चार प्रकार के आक्ष्वासन प्राप्त हो जाते है। यदि परलोक है, यदि सुकृत-दुष्कृत का फल मिलता है तो यह होगा कि शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर में सुगित को प्राप्त होऊगा, में स्वर्ग-लोक में पैदा होऊगा—यह उसे पहला आक्ष्वासन प्राप्त हो जाता है। यदि परलोक नही है, यदि सुकृत-दुष्कृत का फल नही मिलता है, तो में यहाँ इस शरीर में अवैरी होकर, अक्रोधी होकर, दुख-रिहत होकर, सुखी होकर विचरण करता हूँ—यह उसे दूसरा आक्ष्वासन प्राप्त हो जाता ह। यदि करने से किमी का बुरा होता है, तो में किसी का बुरा नही सोचता हूँ, जब में कोई पाप-कर्म नही करता हूँ तो मुझे दुख कैसे स्पर्श करेगा?—यह उसे तीसरा आक्ष्वासन प्राप्त हो जाता है। यदि करने से किसी का बुरा नही होता, तो में अपने आप को दोनो दृष्टियो से विशुद्ध पाता हूँ—यह उसे चौथा आक्ष्वासन प्राप्त हो जाता है। भन्ते। इस प्रकार के अवैरी-चित्त, अक्षोधी-चित्त, असिक्लप्ट-चित्त, शुद्ध-चित्त आयं-श्रावक को इसी शरीर में चार प्रकारके आक्ष्वासन प्राप्त हो जाते हैं।

"भन्ते ! सुन्दर है यह हम भगवान् की, धर्म की तथा भिक्षु-सघ की शरण ग्रहण करते हैं। भन्ते भगवान् ! आज से प्राण रहने तक आप हमें शरणागत उपासक जानें।"

(55)

ऐसा में ने चुना। एक समय बायुम्मान् शम्बक सावस्ती में विनार माता के पूर्वाराम-मासाद में विदार कर रहे थे।

माठा के पूर्वरागम-माठा व विहार कर रहे थे।

छा समय मियार-माठी छाउन्हें हमा तेम्कृतीय-माठी राह्न वहां बायु-प्यतान्

तमक ये नहीं पहुँची। पहुँचकर बायु-पातृ तमक को सनिवारन कर एक तोर कैंट

गये। एक कोर कैंट हुए मियार-माठी छाउन्हें को आयु-पातृ तनक ने यह कहाहै छाउन्हें! साखो। तुन निधी बात को केनल स्छ तिये यत स्वीकार करों कि

यह बात अतु-पुत है केनल हक तिये यत स्वीकार करों कि यह बात परम्पण्यत्व है कैनक हम किये गत स्वीकार करों कि यह बात हकी प्रकार पट्टी पाई है
कैनल हस किये गत स्वीकार करों कि यह हमादे वर्ष-क्षा-पिटक के किन हम प्रियं

गत स्वीकार करों कि नह त्यास (-याहन) छम्मत है केनल हछ जिये यत

स्वीकार करों कि बाकार-मकार गुन्वर है केनल हछ किये गत स्वीकार करों कि

नह हमारे यत के जन्दून है केनल हछ जिये गत स्वीकार करों कि कहते वाले

साम हमारा गत है। है सामन्द्र। वस तुम आस्वानुमन से कपने नाम

सब्दात तो कि में वाले अनुकृत है केनल हछ जिये गत स्वीकार करों कि करने नाम

सब्दात तो कि में वाले अनुकृत है केनल हछ किये गत स्वीकार करों कि करने नाम

सब्दात तो कि में वाले अनुकृत है केनल हम कर्म से प्रस्तान स्वीकार करों कि करने नाम

सब्दात तो कि में वाले अनुकृत है में सर्ग स्वीकार हमें से बात हम्मत हम्मत हम स्वीकार हम्मत हम्म

है—तो हेसम्बद्धं युगदन वार्तों को छोड दो। "तो सम्बद्धं क्यामानते हो लोगई?

"मन्ते! है।

"सम्बद्ध में कोम को ही जिसम्या करता हूँ। हे लाख्य है जो कोमी है जो कोम-करत है वह प्रामी-इरवा भी करता है कोसी भी करता है पर की-ममन भी करता है तृठ भी बोच्या है दूधरे को भी वेशी प्रेरणा देता है जो कि वीर्षकाम तक उस के जहित तथा दुका का कारण होता है।

हारा निनित है दन कार्यों के बनुवार चलने वे नहित होता है दुस होता

र्णमन्ते । इति। "तो सम्बद्धां क्यासनने हो द्वेप हैं? सन्ते ! है। "माळह । में फोध को ही होप कहता हूँ। हे साळह । जो हेप-युक्त है, जो फोधी है वह प्राणी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परम्त्री-गमन भी करता है, झूठ भी गोलता है, दूसरे को भी वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घ-काल तक उम के अहित तथा दुख का कारण होता है।"

"भन्ते! हो।"

"तो नाळह । वया मानते हो, मोह है ?

"भन्ते। है।"

"नाळह । में अविद्या को ही मोह कहता हूँ। हे माळह । जो मूढ है, जो अविद्या-प्रस्त है, वह प्राणी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परस्त्री-गमन भी करता है, झूठ भी बोलता है, दूसरे को भी वैसी प्रेरणा देता है, जा कि दीर्घ काल तक असके अहित तथा दु क का कारण होता है।"

"भन्ते! हौ।"

" नो साळह<sup>ा</sup> भया मानते हो, ये घर्म कुञल्ट है वा अकुशल <sup>?</sup> " "भन्ते । अकुशल ।"

" सदोप वा निर्दोप?"

"भन्ते! मदाप।"

" विज्ञो द्वारा निन्दित वा विज्ञो द्वारा प्रशसित ?"

"भन्ते । विज्ञो द्वारा निन्दित।"

"परिपूर्ण करने पर, आचरण करने पर, अहित के लिओ, दुख के लिये होते हैं अथवा नहीं होते? इस विषयमें तुम्हे कैसा लगता है?"

"भन्ते । परिपूर्ण करने पर, आचरण करने पर, अहित के लिये, दुख के लिये होते है। इस विषय में हमें ऐसा ही लगता है।"

"तो हे साळह। यह जो कहा—हे माळह। आओ। तुम किमी वात को केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इम लिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इम लिये मत स्वीकार करो कि यह वात परम्परागत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे कि यह बात इमी प्रकार कही गई है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे धमं-ग्रन्थ (=पिटक) के अनुकूल है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इम लिये मत स्वीकार करो कि यह त्याय (-शास्त्र) सम्मत है,

कंवल इस स्मिमे मद स्वीकार करो कि बाकार-अकार मुन्दर है केवळ इस सिमे गत स्वीकार करो कि यह इमारे गठ के अनुकृत हैं केवत इस किये यह स्वीकार करो कि कहते बाते का व्यक्तित्व आकर्षक हैं केवल इस लिये यह स्वीकार करो कि कहते वाका भन्य हमारा पुरुष है। हे साजह ! यव तुम आत्मातमव से अपने

जाप ही यह जान को कि से वार्ते बकुशक है। ये वार्ते सदीप है। से वार्ते विज्ञ-पुरुषों द्वारा निन्तित है इन बार्वों के अनुसार चलने से अहित होना है पूच्य होता है-

तो है साळत ! तम इन बार्टी को कोड़ थो । —वह जो कुछ कहा गया यह इसी सम्बन्ध में कहा बया। "इस प्रकार शास्त्रहैं तुन किनी बात को केरल इस सियों मत स्वीकार करों कि कहने बासा भगन इसाछ पूज्य है । है साझह ! अब

तूम बारमानुनंत से अपने जाप ही यह जान तो कि ये बातें कुधत है। व बातें निर्देश हैं में बार्जे विज्ञ-पुरुषों हारा प्रधीनत हैं इन बार्कों के अनुसार वसने से हित होता है मूल होता है-तो है माझह ! तुम इन बातों के अनुमार जावरच करो।

"तो सम्बद्धः क्या मानने हो अलाघ है?" "मला ≵।"

"नाळह! नै असोम को ही अनुनिष्या कड़ना हैं। हे नाळड़! यो निर्दोगी है जा लीय के बारीकर नहीं है वह र प्रायी-रूपा करना है न बोरी करना स परम्बी-गमन करता में न झूट बोलता है न दूबरे को बैसी प्रेरचा देता है.

जा हि बीर्य-नात तक जमके दिन तबा मुन ना नारम होता है।" भारे । सेमा की है। "

"नो माकर" राजानी यो अक्षेत्र १०

मने । ।

नाबर! में अभोज नो री सहा नत्ना है। नाबर! यो हैच र्राट्टर है। बो बचाबी है बढ़ न बानी हरणा बचना है। न शह बोल्ना है न दुमरे को वैसी बेरणा देश है। यो हि रीचें शत तक बन के दिन तका गुल का

शास्त्र होता है। " बन्दे ! रोगा ही है।

गानाइर! क्या नात्रे हा अवीर ∄?

"भन्ते। है।"

"साळह । में विद्या को ही अमोह कहता हूँ। साळह । जो मूढता-रहित है, जो विद्या-प्राप्त है, वह न प्राणी-हत्या करता है न झूठ वोलता है, न दूसरे को वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घ-काल तक उस के हित तथा सुख का कारण होता है।"

"भन्ते । ऐसा ही है।"

"तो साळह<sup>।</sup> क्या मानते हो, ये धर्म कुशल है वा अकुशल है?"

"भन्ते<sup> ।</sup> कुशल।"

"सदोप वा निर्दोष?"

"भन्ते । निर्दोष।"

" विज्ञ-पुरुषों द्वारा निन्दित वा विज्ञ-पुरुषो द्वारा प्रशसित ? "

"विज्ञ-पुरुषो द्वारा प्रशसित।"

"परिपूर्ण करने पर, आचरण करने पर, हित के लिये, मुख के लिये होते है अयवा न ही होते ? इस विषय में तुम्हे कैसा लगता है ?"

"भन्ते । परिपूर्ण करने पर, आचरण करने पर, हित के लिये, सुख के लिये होते हैं। इम विषय में हमें ऐसा ही लगता है।"

"तो हे साळह । यह जो कहा—हे साळह । आओ। तुम किसी बात को केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह वात अनुश्रुत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह वात परम्परागत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह वात इसी प्रकार कही गई है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह बात हमारे धमें-प्रन्थ (= पिटक) के अनुकूल है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि बात रमार सुन्दर है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि बात समार सुन्दर है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि बात स्वीकार करो कि वह हमारे मत के अनुकूल है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि कहने वाले का व्यक्तित्व आकर्षक है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि कहने वाले श्रमण हमारा पूज्य है। हे साळह । जब तुम आत्मानुभव से अपने आप ही यह जान तो कि ये वातें कुशल है, ये वातें निर्दोष है, ये वातें विजन्दियों इरिए प्रशसित है, इन बातो के अनुसार चलने से हित होता है, सुख

होता है—तो हे साळह ! तुम इन बार्तों के सनुसार बाचरन रूरो-मह वो कुछ कहा गया वह इसी सम्बन्ध में वहा दया।

"हे साळह! जो जार्ज-भावक! इस प्रकार कोम-रहित होता है कोध-पहित होता है मुद्दता-पहित होता है बानकार होता है स्मृतिमान होता है नह एक दिया इसरी दिसा तीसरी दिसा तवा भौनी दिशा को मैत्री-चित्त से स्पर्ध करके विद्वार करता है करवा-वित से मदिता-चित्त से

उपेशा-चित्त से स्पर्ध करके विहार करता है। उत्पर, नीचे भीच में सर्वत सब तरह से सब प्रकार से धारे को कको विपृत्त सवार, बप्रमाग वर्वेंग्रै अकोबी उपैका-वृक्त जिल्ह से स्पर्ध करके विद्वार करता है। यह जानता है यह है यह हीत (-अवस्था) है यह प्रशीत (= भेष्ठ) बवस्था है इस सहा से भेष्ठतर अवस्तार्में वाया वा सकता है। वह वह इस प्रकार जानता है इस प्रकार देवता है तो उस का नित्त कामालनो से यौ निमुक्त हो बाता है भनासनो से यौ निमुक्त हो बाता है अविधासनों से भी विमुक्त हो जाता है विमुक्त होने पर, विमुक्त हो सह जान हो भाता है। यह जान जाता है जन्म (का कारक) सीच हो पमा बहावर्ष वास (का सहैस्य) पूरा हो नया यो करना वा वह किया गया। वह वान जाता है कि अब मही जरूम के सिमे और कुछ कारन नहीं रह गया।

बहुसह कान काना है कि पहले जोग वा वह अकुसल वा। सब वह नहीं रहा है सह कुसल है। पहके देव वा वह अकुराल वा। अब वह नही रहा है अब अबक है। पहले मोह (मुद्रता) वा वह बकुराल वा। अब बह नहीं रहा है यह कुसल है। इस प्रकार यह इसी सरीर में तृष्या-विश्वीत निर्वाच-प्राप्त भान्त नुसी वहाभूत होकर विहार करता है।

निस्त्रो तीन वया-वस्त्यें है। कीन भी तीन?

मिनुनो या तो भूत काल सम्बन्धी बातचीत हो- चूत काल में ऐता हमा—या परिष्य राज सम्बन्धी बात रीत हो—यदिष्य में ऐसा होया—मा बर्तमान नाम सम्बन्धी नातनीत हो---दम समय नर्तमान में ऐसा है।

मिस्त्रों बातचीत में पता कर बाता है कि यह बादमी बार्नाबाप करने सीम्प है वा नहीं है

"भिक्षुओ, यदि कोओ आदमी 'हाँ या नहीं 'में उत्तर दिये जाने वाले प्रश्न का 'हाँ या नहीं 'में उत्तर नहीं देता, विभवत करके उत्तर देने योग्य प्रश्न का विभक्त करके उत्तर नहीं देता, प्रति-प्रश्न पूछ कर उत्तर देने योग्य प्रश्न का प्रति-प्रश्न पूछकर उत्तर नहीं देता, उत्तर न देने योग्य प्रश्न को विना उत्तर दिये ही उठा कर नहीं रख देता, तो भिक्षुओ, ऐसा आदमी वार्तालाप करने योग्य नहीं होता।

"भिक्षुओ, यदि कोई आदमी 'हाँ या नहीं में उत्तर दिये जाने वाले प्रश्न का 'हाँ या नहीं 'में उत्तर देता है, विभक्त करके उत्तर देने योग्य प्रश्न का विभक्त करके उत्तर देने योग्य प्रश्न का विभक्त करके उत्तर देता है, प्रति-प्रश्न पूछ कर उत्तर देने योग्य प्रश्न का प्रति-प्रश्न पूछ कर उत्तर देता है, उत्तर न देने योग्य प्रश्न को विना उत्तर दिये ही उठा कर रख देता है, तो भिक्षुओ, ऐसा आदमी वार्तालाप करने योग्य होता है।

"भिक्षुओ, बातचीत से पता लग जाता है कि यह आदमी वार्तालाप करने योग्य है वा नहीं है  $^{9}$ 

"भिक्षुओ, यदि कोई आदमी प्रश्न पूछने पर किसी एक बात पर स्थिर नहीं रहता, किसी एक प्रश्न या उत्तर पर स्थिर नहीं रहता, किसी एक मत पर स्थिर नहीं रहता, प्रश्न पूछने का उचित स्थान-समय नहीं जानता, तो भिक्षुओ, ऐसा आदमी वार्तालाप करने योग्य नहीं होता।

"धिमक्षुको, यदि कोई आदमी प्रश्न पूछने पर किसी एक बात पर स्थिर रहता है, किसी एक प्रश्न या उत्तर पर स्थिर रहता है, किसी एक मत पर स्थिर रहता है, प्रश्न पूछने का उचित स्थान-समय जानता है, तो भिक्षुको, ऐसा आदमी वार्तालाप करने योग्य होता है।

"भिक्षुओ, वातचीत से पता लग जाता है कि यह आदमी वार्तालाप करने योग्य है वा नहीं  $^{7}$ 

"किसुओ, यदि कोई आदमी प्रथ्न पूछने पर दूसरी-दूसरी वात करता है, वाहरी वात लाता है, कोप, द्वेप वा असतोष प्रकट करता है, तो भिक्षुओ ऐसा आदमी वार्तालाप करने योग्य नहीं होता।

"भिक्षुओ, यदि कोई आदमी प्रश्न पूछने पर दूसरी-दूसरी वात नहीं करता, वाहरी वात नहीं लाता, कोप, द्वेष वा अमतोष प्रकट नहीं करता, तो भिक्षुओ, ऐसा आदमी वार्तालाप करने योग्य होता है।

"क्षिपुनों बात चीत ने पता संग जाता है कि यह बादमी वातनिपर चारने मोग्य है वानहीं ?

"बिसुनो सहि कोई जावनी प्रस्त पूछन पर जहाँ तहाँ है सुन उद्पुत करता है जहाँ तहाँ है जुन उद्पुत नरके प्रस्त को बना देता है ताली बादि बया देता है (बातांसाय में हा नवें) स्वतन की के उड़ता है तो पिसुनो ऐसा बादमी बातांसाय करने मोस्स नहीं होता।

"पियुनो वरि कोर्ड मारनी मल पूछने पर न बही-तहाँ से भून उर्गृत करता है न जही-तहाँ से पूर उर्गृत करके मरन को रवा देता है न तामी मारि करा है न (बालीकार में हो पर ) स्वकृत को के छन्ता है तो मिन्नुनो ऐता भारची बालीकार करने योग्य हाता है।

कितुमी बार चीत में पता सम जाता है कि यह माहसी किस्तास करने सोग्य है वा नहीं?

यां निषदा शल्कारित वितिषिरता त्यांसिशता न्यांसिशता न्य

अनुपादिन्नेन मनसा अपलामो असाहसो अनुसुय्यमानो सम्मदञ्जाय भासति सुभासित अनुमोदेय्य (सुभट्ठे) दुन्भट्ठे नावसादये उपरम्भ न सिक्खेय्य खलितञ्च न गाहये नाभिहरे नाभिमद्दे न वाच पयुत भणे अञ्जाणत्य पसादत्य सत वे होति मतना एतदञ्जाय मेघावी न समुस्सेय्य मतये।

[जो अभिनिवेश के वशीभूत होकर, अभिमान के कारण विरोधीवार्तालाप करते हैं, जो अनार्य-गुण को प्राप्त कर परस्पर छिद्रान्वेपण करते रहते
हैं, जो परस्पर एक दूसरेके अयथार्थ-भाषण, स्खलन, प्रमाद-वश बोले गये शब्दो
तथा एक दूसरे की पराजय को लेकर प्रसन्न होते हैं, ऐसे लोगो के माथ आर्य-जन
बात-बीत न करे। यदि कोई पिण्डत बात करने का उचित समय जानकर धर्म
तथा अर्थ से युक्त, आर्य-चिरत-युक्त बातचीत करना चाहे तो धर्यवान्, अविरोधी
तथा अभिमान शून्य आदमी को चाहिये कि वह दुराग्रह-रिहत हो, दुस्साहस-रिहत हो,
ईर्ण-रिहत हो, शान्तिचत्तं से अच्छी तरह सोच-समझकर बातचीत करे। उमे
चाहिये कि वह दूसरो के शुभ-कथन का अनुमोदन करे और अनुचित बोलने का बुरा
न माने। उलाहना देना न सीखे, स्खलन को लेकर न बैठे, यूँ ही सूत्रादि को उद्धृत
न करे, न वैसां-करके प्रश्न को दबावे, न झूठी बात बोले। सत्पुर्रेषो की
वात-चीत ज्ञान के लिये होती, हैं। तथा, मन में प्रसन्नता पैदा करने के लिये
होती है। आर्य-जन इसी प्रकार वार्तालाप करते हैं, यही आर्य-जनो की मन्त्रणा
है। इस बात को जानकर मेधावी पुष्प को चाहिये कि अभिमान-युक्त होकर
बातचीत न करे।]

(६८)

"भिक्षुको, यदि अन्य तैषिक (दूसरे मतो के) परिव्राजक ऐसा पूछें कि आयुष्मानो ये तीन धर्म हैं। कौन से तीन ? राग, द्वेष और मोह। आयुष्मानो । ये तीन धर्म हैं। आयुष्मानो । इन तीनों धर्मों में किस की क्या विशेषता है ? किस में क्या खास बात है ? किस का क्या विभेद है ? भिक्षुको, दूसरे परिव्राजकों द्वारा इस प्रकार पूछे जाने पर, तुम इस का क्या निराकरण करोगे ?"

मन्ते ! भववा हि सर्म के मूल हैं वनवात ही सर्म के मेठा है भगवात ही सर्म के सरण-क्षात हैं। वन्ते ! अवशा हो सरिवत कवन के अर्थ को नववात ही सक्तासित करे। मनवात से मुतकर सिम्मु सारण करेंगे।

श्री बकाबित करे। पत्रवात् सं मुतकर शिष्ठ भारत करें। "तो भिन्नुको सुतो। अच्छी तरह मत्र में भारत करें। कहता हूँ। भन्ते! अच्छा कह कर बन भिन्नुकों से अपवात को प्रति-वचन दिया। मत्रवात्

ने यह नहा
"विश्वने विश्वन्य तैषिक (न्यूयरे संदो के) परिधानक ऐता पूर्वे कि
बायुष्पानो से तीन वर्त है। कीन वे तीन रिप देग कीर मोह। बायुष्पानो !
सेता वर्त है। बायुष्पानो ! इन तीनी वर्ती में कित की क्या विशेषता है?
कित में क्या बात तात है? कित का क्या विशेष है? मिसूबी दूपरे परि-धानको द्वारा एवं मकार पूर्वे वाने पर नुग इत का इत प्रकार निराकरक करनाधायुष्पानो ! रान में सम्बदीय है किन्तु वस से मुक्ति सहन नहीं देप में महान बोव है किन्तु उस से मुक्ति सहन है मुद्दा में महान दोप है बीर वस से मृतित

मी सहज नहीं। जायुम्मानी ! इस का क्या हेतु हैं क्या कारण है जिस से जनुस्पन्न

एम बराम होता है जराम राम बहुमता को विदुक्ता को प्राप्त होता है? कहना काहिने कि गुन-निर्मित हरका हेतु है कारम है। कुम-निर्मित का मनुस्तित कर से निकार करने से मनुस्तार एम बराम होता है उराम एम बहुक्ता को निपुक्ता को प्राप्त होता है। मानुस्मानों! मह हेतु है यह कारम है निष्य से मनुस्ता का प्राप्त होता है। उराम एम बहुक्ता को सिपुक्ता को प्राप्त

नापुण्याती । इस का क्या हेतु है क्या कारण है जिस से जनुराज हैप जराज होता है समा जराज हेव बहुकता की विपूकता को प्राप्त होता है।

होता है।

कहना बाहित कि प्रतिकृत-बात इसका हेतु है कारण है। प्रतिकृत बात का अनुभित इस से विचार करते से अनुस्त्रत हेन स्वत्या की स्वत्या की विचार करते से अनुस्त्रत हेन स्वत्या की विचार करते से बहुत्यत होना है। आयुक्ता की प्रत्या की प्राप्त होना है। आयुक्ता की प्रत्या की अनुस्त्रत हैन नह कारण है विस्त से अनुस्त्रत हैन स्वत्यत होना है तथा असम होन बहुत्वता की विद्यस्था की प्राप्त होना है। "आयुष्मानो<sup>।</sup> इस का क्या हेतु है, क्या कारण है, जिस से अनुत्पन्न मोह उत्पन्न होता है, तथा उत्पन्न मोह बहुलता को, विपुलता को प्राप्त होता है।

"कहना चाहिये कि अनुचित ढग से विचार करना इस का हेतु है, कारण है। अनुचित ढग से विचार करने से अनुत्पन्न मोह उत्पन्न होता है, उत्पन्न मोह बहुलता तथा विपुलता को प्राप्त होता है। आयुष्मानो । यह हेतु है, यह कारण है, जिस से अनुत्पन्न मोह उत्पन्न होता है तथा उत्पन्न मोह बहुलता को, विपुलता को प्राप्त होता है।

"आयुष्मानो । इस का क्या हेतु है, क्या कारण है जिस से अनुत्पन्न राग उत्पन्न नही होती, तया उत्पन्न राग का प्रहाण होता है ?

"कहना चाहिये कि अशुभ-निमित्त (=असुन्दर-रूप) ही इस का हेतु है, कारण है। अशुभ-निमित्त का उचित ढग से विचार करने से अनुत्पन्न राग उत्पन्न नहीं होता, तथा उत्पन्न राग का प्रहाण होता है। आयुष्मानो । यह हेतु है, यह कारण है जिस से अनुत्पन्न राग उत्पन्न नहीं होता तथा उत्पन्न राग का प्रहाण होता है।

"आयुष्मानी । इस का क्या हेतु है, क्या कारण है जिस से अनुत्पन्न द्वेष उत्पन्न नहीं होता तथा उत्पन्न द्वेष का प्रहाण होता है।

"कहना चाहिये कि चित्त को विमुक्त करने वाली मैत्री-भावना ही इसका हेतु है, कारण है। चित्त को विमुक्त करने वाली मैत्री भावना का उचित ढग से विचार करने से अनुत्पन्न द्वेष उत्पन्न नहीं होता, उत्पन्न द्वेष का प्रहाण होता है। आयुष्मानो । यह हेतु है, यह कारण है जिस से अनुत्पन्न द्वेष उत्पन्न नहीं होता, उत्पन्न द्वेष का प्रहाण होता है।

" आयुष्मानो । इस का क्या हेतु है, क्या कारण है, जिस से अनुत्पन्न मोह उत्पन्न नही होता, उत्पन्न मोह का प्रहाण होता है।

" कहना चाहिये कि उचित ढग से विचार करना ही इस का हेतु है, कारण है। उचित ढग से विचार करने से अनुत्पन्न मोह उत्पन्न नहीं होता, उत्पन्न मोह का 'प्रहाण होता है। आयुष्मानो! यह हेतु है, यह कारण है, जिस से अनुत्पन्न मोह उत्पन्न नहीं होता, उत्पन्न मोह का प्रहाण होता है।

## (53)

"भिष्युमो से तीन अकुशल-मूल है? कीन से तीन? कोम अकुशय-सूस है डोस सकुशल-मूल हैं मोह अकुशल-मूल हैं।

िर्मानी जो सोम है नह भी बहुमत है और लोभी सारमी गरीर से बाजी से मन से जो कुछ भी करता है नह भी बहुमल-मूल है। लोभी बादमी लोभ के करना लोभ के वसीमूल होकर हुएरे को दूरा मनने वाला हुआ देश है मारकर, बीव कर (धन की) हामि करके निम्बा करने (देस से) निवासकर, में बकान् हूँ मुझे कम (का मरीज) चाहिये—एड किये भी—सह भी अपूर्यक है। इस किसे लोभ से लोभ के कारण से लोभ से जरम होकर, लोज के हेलू से लोक पार बहुशक-मर्ग पैरा हो जाते हैं।

विष्युमी को हेय हैं वह भी अपूर्णक है और देवी जारगी पारीर के बाजी है भन से जो कुछ भी करता है वह भी जहुन्यक-मूत है। हेवी जारगी हेव के कारक हेय के बयीमूत होकर, इसरे को बुदा क्याने बाला पुंच देता है मार कर, बोधकर, (धन की) हानि करके नित्य करके, (देख से) निवासकर, में बकबान हूँ मुने बक (का प्रयोग) चाहिये—इस किने भी—यह भी जहुमक है। इस क्षित्रे हेव है हो के कारक से हैव से स्वत्य होकर, हैव के हेतु से जनेक पार अपूर्धकना पैता हो बाते हैं।

पार अकुश्वसन्त परा हा चाउ है।

"१ पिश्वसी को मोह है वह भी अकुश्वसन्त है। मूढ बादगी धरीर है
धानी है मार है ने कुश मी करता है वह भी कुश्यसन्त है। मूढ बादगी मुहता
के कारण मूढता के वर्षीमूठ होकर, दूधरे को बूठ कगते बाका दुख देता है भारकर,
बॉकबर, (बल की) हानि करके निमान करके (देख है) निकाल कर, में
बलवान हूँ मुसे वह पाममांग जीवते—वह मिसे भी — मह मी अकुश्वस है।
हस किसे मूढता है मूढता के कारण है। मुदता है वरता होकर, मूढता के हेतु है
बनोक पार अकुश्वसन्धर्म पैया हो बाहे हैं।

"Y मिश्रुको इस प्रकार का बादमी बकाक-वादी कड्काता है बताय बादी कड्काता है जनने-वादी कड्काता है क्यमं-वादी कड्काता है विधन-वादी कड्काता है। मिजुको इस प्रकार का बादमी बकाक-वादी जो बसप्ट-वादी वी जनने-वादी की कडाने-वादी वी क्रिन्ट-वादी भी क्यो कहलाता है? क्यों यह आदमी दूसरे को बुरा लगने वाला दुख देता है, मार कर, बाँध कर, (धन की) हानि करके, निन्दा करके, (देश से) निकालकर, "मैं वलवान् हूँ, मुझे वलका प्रयोग चाहिये"—इस लिये भी। सच्ची वात कही जाने पर उसे अस्वीकार करता है, स्वीकार नहीं करता, मूठी वात कहीं जाने पर उस के आरोप में मुक्त होने का प्रयास नहीं करता कि यह असत्य है, यह अभूत है। इस लिये इस प्रकारका आदमी 'अकाल-वादी' भी, 'असत्य-वादी' भी, 'अनर्थ-वादी' भी, 'अनर्थ-वादी' भी, 'अविनय-वादी' भी कहलाता है। मिक्षुओ, इस प्रकार का आदमी लोभ से उत्पन्न, पापी अकुशल-धर्मों के वशीमूत होने के कारण इमी शरीर में चिन्ता-युक्त, अशान्ति-युक्त, जलन-युक्त दुख अनुभव करता है। ऐसे आदमी के लिये शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर दुर्गित की ही आधा करनी चाहिये। इसी प्रकार देव से उत्पन्न मोह से उत्पन्न, पापी अकुशल-धर्मों के वशीभूत होने के कारण इमी शरीर में चिन्ता-युक्त, अशान्ति-युक्त, जलन-युक्त दुख अनुभव करता है। ऐसे आदमी के लिये शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर दुर्गित की ही अधा करनी चाहिये। इसी प्रकार देव से उत्पन्न मोह से उत्पन्न, पापी अकुशल-धर्मों के वशीभूत होने के कारण इमी शरीर में चिन्ता-युक्त, अशान्ति-युक्त, जलन-युक्त दुख अनुभव करता है। ऐसे आदमी के लिये शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर दुर्गित की ही आशा करनी चाहिये।

"भिक्षुओ, जैंसे चाहे शाल-वृक्ष हो, चाहे धव-वृक्ष हो, चाहे स्पन्दन-वृक्ष हो, यदि वह मालुवा-लता (= अमर-बेल) से लदा हो, घिरा हो तो उस की हानि ही होती है, विनाश ही होता है, हानि-विनाश ही होता है। भिक्षुओ, इसी प्रकार, ऐसा आदमी लोभ से उत्पन्न, पापी अकुशल धर्मों के वशीभत होने के कारण इसी शरीर में चिन्ता-युक्त, अशान्ति-युक्त, जलन-युक्त दु ख अनुभव करता है। ऐसे आदमी के लिये शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर, दुर्गित की ही आशा करनी चाहिये। इसी प्रकार द्वेष से उत्पन्न मोह से उत्पन्न, पापी अकुशल धर्मों के वशीभूत होने के कारण इसी शरीर में चिन्ता-युक्त, अशान्ति-युक्त, जलन-युक्त दु ख अनुभव करता है। ऐसे आदमी के लिये शरीर छूटने पर, मरने के अनन्तर दुर्गित की ही आशा करनी चाहिये।

<sup>&</sup>quot;भिक्षुओ, ये तीन कुशल-मूल है। कौनसे तीन ? अलोभ कुशल-मूल, है, अद्वेप कुशल-मूल है, अमोह कुशल-मूल है।

<sup>&</sup>quot;भिक्षुओ, जो अलोम है वह भी कुशल है, और अलोभी आदमी शरीरसे, वाणीसे, मनसे जो कुछ भी करता है वह भी कुशल-मूल है। अलोभी आदमी, अलोभके

कारण सोमक बयोमूत न होनेके कारण पूछरेको बुध कानेबांका दुख नहीं बेठा है मार कर, बांध कर, (बनकी) हानि करके नित्या करके (बेक्छे) निकासकर, में बत्वमत् हूँ मुझे वह (बाप्रयोग) चाहिये—इस्तियों थी—यह भी कुशक है। इसकिये जनोपसे बच्चोपके कारण बच्चोपके बुशक होकर, जनोपके हेंगुसै जनेक कुशक्यमां पदा हो जाते हैं।

"भिष्मों वो नहेंग है वह भी कुशन है और नहेंगी भारती बरीरों वाभीने मनमें नो कुछ भी करता है वह भी कुशन है। नहेंगी जावनी नहेंगलें कारण हेगक वर्णमूचन होनेलें कारण पूपरेकों वो बूच मननेवाला कुल नहीं देता है, मारकर, बीधकर, (बनकी) हानिकरके गिल्या करके (वेचये) निकासकर, में बन्दान में कुलका प्रयोग चाहिये — इस्मिन मी— यह भी कुश्चन है। विचित्तन नहोंगी महोंगे कारण नहीं करण होकर, नहेंगके हेनुने बनेक कुशम-धर्म सराज्ञा हो बादे हैं।

" निसुधों को नमोह है नह भी कुछन है और मोह-रहित नावगी छरीर स वालोस मनसे जो कुछ भी करता है नह भी कुछन है। मोह रहित नावगी नमोहके कारण मोहके नवीमूत न होनेके कारण हुउरिको कुछ कानेवाला हुन नही देता है मारकर, वांककर, (वनकी) हानिकरके निज्ञा करके (देपसे) निकाल-कर, में बकतान् हूँ मुने दक्का प्रयोग चाहिये —स्तामिन भी—यह मी कुछन है। इस्तिमने नमोहके बारोद कारण बांगिसे जराण होकर, नमोहके हेतुने मनेक कुछक-प्रमे उसरण हो बाते हैं।

निश्वों इस प्रकारका आदमी काल-वादी बहुकाता है सप्य-वादी कहुकाता है अर्थ-वादी कहुकाता है अर्थ-वादी कहुकाता है तिनम वादी कहुकाता है। मिशुओं इस प्रकारका जारगी काल-वादी भी सरदावी भी कर्षवादी भी सर्थ-वादी भी नियम-वादी भी कर्षो कहुकहता है? क्योशि यह जारभी हुएटेको बुस्त क्यानेदाका दुख नही देता भारत्य त्योकस् (धनकी) हानिकरके नित्या करके (देखते) निकासकर, में बक्तान हूँ मुझे कर (का प्रयोग) चाहिये — इसकिये भी—स्वक्ती बात कही चानेपर स्त्रे स्वीकार करता है करनोकार नहीं करता नृत्ये बात कही बानेपर स्त्र आरोपते मुक्त रोनेका प्रयास करता है कि यह बसरप है यह कनुत है। इसकिये इस प्रकार का आदमी 'काल-वादी 'भी, 'सत्य-वादी 'भी, 'अर्थ-वादी 'भी, 'धर्म-वादी 'भी, 'विनय-वादी 'भी कहलाता है। े े ं

"भिक्षुओ, इस प्रकारके आदमीके लोभज पापी अकुशल धर्म प्रहीण हो गये रहते हैं, जड जाती रही होती है, कटे ताड-वृक्षके समान हो गये रहते हैं, अभावको प्राप्त हो गये रहते हैं, भिवष्यमें पुन न जित्पन्न होने वाले। ऐसा आदमी इसी शरीरमें चिन्ता-मुक्त, अशान्ति-मुक्त, जलन-मुक्त सुख अनुभव करता है। वह इसी शरीरमें निर्वाणको प्राप्त होता है। इस प्रकारके आदमीके द्वेषज मोहज पापी अकुशल-धर्म प्रहीण हो गये रहते हैं भिवष्यमें पुन न उत्पन्न होने वाले। ऐसा आदमी इसी शरीरमें चिन्ता-मुक्त, अशान्ति-मुक्त, जलन-मुक्त सुख अनुभव करता है। वह इमी शरीरमें चिन्ता-मुक्त, अशान्ति-मुक्त, जलन-मुक्त सुख अनुभव करता है। वह इमी शरीरमें निर्वाणको प्राप्त होता है।

" भिक्षुओ, जैसे चाहे शाल-वृक्ष हो, चाहे धव-वृक्ष हो और चाहे स्पन्दन-वृक्ष हो और उसपर तीन मालुवा लतायें चढी हो, वह मालुवा-लतासे घिरा हो। तव एक आदमी कुदाल और टोकरी लिये आये। वह उस मालुवा-लताकी जंड काट दे, जह काटकर खते, खनकर जहोंको निकाल डाले, यहाँ तक कि वीरण-घास भी। बह उस मालुवा लताके टुकडे, टुकडे, करे, टुकडे-टुकडे करके उसे चीर डाले, चीरकर खपिचयां-खपिचयां कर दे, खपिचयां-खपिचयां करके हवा-धूपमें सुखाये, हवा-धूपमें मुखाकर आगसे जलाये, आगसे जलाकर राख कर दे, राख करके या तो तेज-हवामें उडा दे या शीघ्रगामी नदीमें बहा दे। ऐसा होने पर भिक्षुओ वह मालुवा-लता जडमूलसे नहीं रहेगी, कटे ताड-वृक्षकी तरह हो जायेगी, अभाव-प्राप्त हो जायेगी, ः उसकी भावी-उत्पत्तिकी सभावना नहीरहेगी। इस तरह भिक्षुओ । आदमीके लोभज पापी अकुशल-धर्म प्रहीण हो गये रहते हैं, जड जाती रही होती है, कटे ताड वृक्षके समान हो गये रहते है, अभावको प्राप्त हो गये रहते हैं, भविष्यमें पुन न उत्पन्न होने वाले। ऐसा आदमी इसी शरीरमें चिन्ता-मुक्त, अशान्ति-मुक्त, जलन-मुक्त सुख अनुभव करता है। वह इसी शरीरमें निर्वाण को प्राप्त होता है। इस प्रकारके आदमीके द्वेपज मोहज पापी अकुशल-धर्म प्रहीण हो गये रहते है भविष्यमें पुन न उत्पन्न होने वाले। ऐसा आदमी इसी शरीरमें चिन्ता-मुक्त, अशान्ति-मुक्त, जलन-मुक्त सुख अनुभव करता है। वह इसी शरीरमें निर्वाणको प्राप्त होता है।

"भिक्षुओ, ये तीन कुशल-मूल हैं।

(44)

ऐसा मैंने मुना। एक समय भनवान् भावस्तीमें निवारमाक्षके पूर्वाराम प्रासादमें विहार कर रहे थे। उस समन मियारमाता उपीसवके दिन वहाँ मगवान् वे वहाँ गयी। जाकर मगवानको अभिवादन कर एक एक बौर बैठी। एक बोर बैठी भिनारमाता विद्यासाको भगवानुने यह कहा-विद्याले ! आज तु दिन पहते श्री कैसे मार्गा\_?

"मन्ते! बाब मैंने उपीएव (-बरु) रका है।

"विद्याचे ! चपोसव (-वत) तीन प्रकारका होता है ! कौनसे तीन प्रकार का ? योपाळ-ज्योतक निर्धन्त-उपोसक तथा जार्व-ज्योतक।

"विश्वाचे! गोपाल-उपोश्चन भैसे होता है? विश्वाचे! पीसे कोई म्बाना सामको मानिकाँको उनकी नाँमें भीप कर यह सोचे कि बाज इन नाँबोने बमुक बमुक नगह नराई की, बाज इन पौराने अमुक बमुक नगह पानी पिसा । करू से नीने अमक जनक जनक चरेंगी तथा जनक अमक अग्रह पानी पिग्रेंगी। इसी प्रकार विसासे! यहाँ कोई कोई अपोसन-नदी ऐसा सोमदा है -- आन मैंने यह बीर यह जाया तवा यह और वह जोजन किया: कक्त मैं यह और यह जाअंगा तवा सह जीर यह मोजन कक्षेता। वह उत कोध-युक्त चित्तवे दिन पुजार देता है। विवादे ! इस प्रकार योगाळ-अपोसव होता है। विद्याले ! इस प्रकारके योगाल क्योसन (-क्य) का न महान् करू होता है न महान् परिचाम होता है न महान् प्रकास होता है तथा न महान विस्तार होता है।

हे विद्यार ! निर्फल-स्पोधन कैंगे होता है ?

हे विकासे । निर्वत्व नामक समजीकी जाति है, नै अपने मतानुनाहमी को इस प्रकार क्रत सिमाते है——हे पुस्त<sup>।</sup> तू यहाँ है। पूर्व-दिखार्ने सौ बोचन सक विक्रने प्राची है हु चन्हे रखसे मुन्तकर, परिचम-दिवामें सौ बॉबन तक विक्रने प्राची है तु छन्हें बच्चछे मृक्तकर, उत्तर-दिखार्में थी योजनतक विवने प्राणी है त उन्हें बचारे मुक्तकर तथा दक्षियम-दिशामें वितने प्राची है तु उन्हें बच्छते मुक्तकर। इस मकार कुछ प्रानिवीने प्रति बया न्यस्त करते हैं कुछके प्रति बया म्यस्त नहीं करते। के ज्योसक-दिनपर सावकीको इस प्रकार कठ किमाते हैं——हे पुस्त ! तु जा। समी क्रमीको त्यान कर इत प्रकार इत के निर्मे कही किसीका कुछ हैं और पंमेरा करी

कोई कुछ है। किन्तु उसके माता-पिता जानते हैं किंग्यह मेरा पुत्र है और पुत्र भी जानते हैं कि यह हमारा स्वामी है और वह भी जानता है कि ये मेरे पुत्र-स्त्री (परिवार) भी जानते हैं कि यह हमारा स्वामी है और वह भी जानता है कि ये मेरे पुत्र-स्त्री है। उसके दास-नौकर-चाकर भी जानते हैं कि यह हमारा मालिक है और वह भी जानता है कि ये मेरे दास-नौकर-चाकर है। जिस ममय मभी ब्रत लेते हैं, उम ममय ये झूठा ब्रत लेते हैं। में कहता हूँ कि इम प्रकार वे मृणा-वादी होते हैं। उस रात्रिके बीतने पर वह उन (त्यक्त) वस्तुओंको विना किमीके दिये ही उपयोगमें लाते हैं। इस प्रकार वे चोरी करने वाले होते हैं। इस प्रकार हे विशाखें। यह निग्रन्थ-उपोसथ (ब्रत) होता है। विशाखें। इम प्रकारके उपोमथ-ब्रतका न महान् फल होता है, न महान् परिणाम होता है, न महान प्रकाश होता है तथा न महान् विस्तार होता है।

"हे विशासे । आय-उपोसय कैसे होता है भे

"विशासे । मैले-चित्तको क्रमश निर्मेल कियो जाता है ? विशासे । मैले-चित्तको किय प्रकार क्रमश निर्मेल किया जाता है ?

"विशाखें। आयं-श्रावक तयागतका अनुस्मरण करता है—वह भगवान् अहेंत है, मध्यक मम्बुद्ध हैं, विद्या तया आचरणमें युक्त हैं, सुगति-प्राप्त हैं, लोकके जानकार है, सबं-श्रेष्ठ हैं (कुमागं-गामी) पुरुषोका दमन करनेवाले सारयी हैं तया देवताओं और मनुष्योंके शास्ता है। वे भगवान् बुद्ध है। इस प्रकार तथागतका अनुस्मरण करनेवालेका चित्त प्रसन्न होता है, मोद बढता है, जो चित्तके मैल हैं उनका प्रहाण होता है जैसे विशाले। मैला सिर कमशा निर्मल होता है।

" विशाखें । मैंले सिरवालेका सिर फ्रमश कैसे निर्मल होता है ? खली होनेसे, मट्टी होनेसे, पानी होनेसे तथा आदमीका अपना प्रयत्न होनेसे । हे विशाखें । इस प्रकार मैले सिरवालेका सिर फ्रमशें निर्मल होता है।

" विशाखें । मैला चित्त किस प्रकार ऋमश<sup>े</sup> निर्मल होता है ?

"विशासे । आर्य-श्रावक तथागतका अनुस्मरण करता है—वह भगवान् अहंत है वे भगवान् बुद्ध हैं। इस प्रकार तथागतका अनुस्मरण करने वालेका चित्त प्रसन्त होता है, मोद बढता है, जो चित्तके मैल है उनका प्रहाण होता है। विशासे । इसे कहते हैं कि आर्य-श्रावक श्रह्म- उपोसथ-त्रत रखता है, ब्रह्माके साथ रहता है, ब्रह्म' को लेकर उसका चित्त प्रसन्त होता है, मोद बढता है, और जो चित्तके "विधाओं मैठा-चित्र कमसा निर्मेक होता है। विधाले! मैठा-चित्र कमसा कैन निर्मेक होता है?

"विकाले! बार्य-बावक धर्मका बनुस्मरण करता है —यह धर्म मणवान् हारा मानी प्रकार कहा गया है यह धर्म हरू-बोक सम्बन्धी है इस धर्मका शावन सभी (कैसों तमा) कानों में क्या का सकता है यह धर्म निर्माण तक के बानेंगें समझ है तमा प्रभोज बुहिमान् भावनी इस धर्मका सम्याण कर मकता है। इस प्रकार धर्मका बनुस्मरण करनेवाकेका चिता प्रधान होता है मोव बहुता है जो जिताके में क है उनका महाण होता है जैसे विकालों! मैका-बनक कम्यान्ति नों कहोता है।

"विधानों ! मैला-बबन कमयः कैसे निर्मत होता है ? शंकसे कृते। पानीचे तथा माध्यीके प्रथलाते ! चिताकों ! इस प्रशाद मैला-बबन कमयः निर्मत होता है। इसी मकार विधानों ! मैला-चित्त कमयः निर्मत होता है।

विद्याओं ! यैका-चित्त किस प्रकार नमया निर्मेश होता है ?

"विधाले! आर्थ-सावक सर्गका अनुस्थरण करता है---यह सर्ग गणवाण् हारा भनी प्रकार कहा पता है इन सर्गका सकान् कर सकता है। इस प्रकार पर्गका अनुस्थरण कर्नेवालेका चित्र प्रस्ता है। यो बहता है जो चित्रके में सह दे जनका प्रहाण होता है। विधाले! इसे कहते है कि आर्थ-सावक धर्म--प्रोतक-बत रहता है -मिके साव खुता है अर्थको केकर बसला चित्र प्रस्ता होता है भीर वस्ता है और यो चित्रके मैक हे जनका प्रहाण होता है। इस प्रकार विधाले! मैका-चित्रक क्रमण निर्मे कोता है।

विकासे । येठा-विका कमस निर्मत होता है। विधासे । येता विका कमस कैसे निर्मक होता है ?

विश्वाचे। वार्व-धावक तवना अनुसारण करता है—अववान्ता धावक-भंद ग्रुनर सार्वपर करने बाका है जोडे-सार्व पर करने वाका है, सार्व भार्व पर करनेवाका है पदा- त्यांचीन नार्वपर करने वाका है स्वी ओ जात-ध्विनशोकी बाद कॉडिबॉर्ड, में यो बाठ मनाएके मानित होने हे मही घपवान्ता धावक-शव है। सहसंत कावर करने योग्य है। बाठिय्य वरणे योग्य है। गृहतामी करने योग्य है। दान-दक्षिणा देने योग्य है तथा हाथ जोडकर नमस्कार करने योग्य है। यह लोगोंके लिये सर्व-श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र है। इस प्रकार सघका अनुस्मरण करनेवालेका चित्त प्रसन्न होता है, मोद बढता है, जो चित्तके मैल है उनका प्रहाण होता है जैसे विशाखे । मैला-वस्त्र क्रमश निर्मल होता है।

"विशाखें । मैला-वस्त्र क्रमश कैसे निर्मल होता है ? खारी मट्टी तया गोवर वरावर वरावर होनेसे, पानी होनेसे तथा आदमीका प्रयत्न होनेसे । विशाखें ! इस प्रकार मैला-वस्त्र क्रमश निर्मल हाता है । विशाखें । इसी प्रकार मैला-चित्त क्रमश निर्मल होता है ।

" विशाखे । मैला-चित्त क्रमश कैसे निर्मल होता है ?

"विशाखें। आर्य-श्रावक संघका अनुस्मरण करता है—भगवान् का श्रावक संघ सुन्दर मार्ग पर चलने वाला है सर्व श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र है। इस प्रकार संघ का अनुस्मरण करनेवालेका चित्त प्रसन्न होता है, मोद बढता है, जो चित्तके मैल है उनका प्रहाण होता है। इसी प्रकार विशाखें। मैला चित्त ऋमश निर्मल होता है।

"विशाखें। मैला-चित्त क्रमश निर्मेल होता है। विशाखें। मला चित्त क्रमश कैसे निर्मेल होता हैं? विशाखें। आर्य-श्रावक अपने शीलोको स्मरण करता है—अखण्डित, छिद्र-रिहत, विना धव्वेके, पवित्र, शुद्ध, विज्ञ पुरुषो द्वारा प्रशसित, अकलिकत तथा समाधि की ओर ले जाने वाले। इस प्रकार शीलका अनुस्मरण करने वालेका चित्त प्रसन्न होता है, मोद वढता है, जो चित्त के मेल हैं उनका प्रहान होता है जैसे विशाखें। मैला-शीशा क्रमश साफ होता है।

"विशाखें । मैला-शीशा क्रमश कैसे निर्मल होता है ? तेलमे, राखसे, वालोंके गुच्छे और आदमीके प्रयत्नसे। विशाखें । इस प्रकार मैला-शीशा क्रमश साफ होता है। इसी प्रकार विशाखें । मैला-चित्त क्रमश निर्मल होता है।

"विशाखें। मैला-चित्त कमश कैसे निर्मल होता हैं? विशाखें। आयं-श्रावक अपने शीलोका स्मरण करता हैं—अखण्डित, समाधिकी और ले जाने वाले। इस प्रकार शीलका अपुस्मरण करनेवालेका चित्त प्रयन्न होता हैं। प्रहाण होता हैं। विशाखें। इस प्रकार मैला-चित्त क्रमश निर्मल होता हैं।

"विशाखे । मैला-चित्त क्रमशा निर्मेल होता है। विशाखे । मैला-चित्त क्रमश कैमे निर्मेल होता है ? विशाखे । आर्य-श्रावक देवताओका स्मरण करता है—चातुम्महाराजिका बेरवा है वार्वावय देवता है याम बेरवा है तुपित बेरवा है

किम्मान पति बेरवा है। परिमिन्नवरवर्गी बेरवा है बहुकापिक बेरवा है और

हत्ये आर्थ मी देवता है। बित मकारकी मदाये पुरुष ने देवता हव कोकने मरकर

बहुँ जराल हुए है मुखर्म भी उठी प्रकारकी मदाये पुरुष ने देवता हव कोकने मरकर
बहुँ जराल हुए है मुखर्म भी उठी प्रकारको मदा है जित प्रकारक वीकर्ष नुष्य ने
बेरवा हक कोक से मरकर नहीं जराल हुए है मुसर्म थी उठी प्रकारक वीकर्ष ने लिए

प्रकारके पुत (= बाल) से मुकर ने देवता हक कोकने मरकर नहीं उरलाल हुए है
मुसर्म भी उत्ती प्रकारका बात है जिस प्रकारक खायते मुक्त ने देवता हस कोकने

परकर बहुँ उरलाल हुए हैं मुखर्म थी उठी प्रकारका खाय है जिस प्रकारकी प्रकार

मुक्त ने बेरवा हक कोकने मरकर नहीं उरलाल हुए हैं मुसर्म भी उत्ती प्रकारको प्रकार है।

हस प्रकार संपत्ती और उन देवताओं मदा चीक पुत परवा वहा प्रकार महास्त्र कहों वार्य में से सरवा है किस्त प्रकार होता है।

होता है। जैसे विद्यावों ! महिन-पीता करवा होता है।

"विद्यार्थ ! मिनन-मोता कैठे कमतः साक होता है? बंगीओ होनेथे निमक होनेथे नेक होनेने घोंकनी होनेथे धंबाधी होनेथे तथा उटके किये बादमीका प्रधास होनेथे । विद्यार्थ ! इस प्रकार मीनन धोना कनतः साफ होता है। इसी प्रकार विद्यार्थ ! मैसा-विद्या कमसः निर्मक होता वादा है।

" विद्याले ! मैंना चित्र किस प्रकार निर्मक होता है ! विद्याले ! कार्य स्थायक देवताबीना बर्गुस्मरण करता है — चातुम्महाध्यिकता देवता है तानवित्र देवता है इतने बार्ग में देवता हैं — चातुम्महाध्यिकता देवता है तानवित्र देवता है इतने बार्ग में देवता है। निराम प्रकार की ब्याव है विद्या प्रकार की क्षेत्र में पूर्ण में देवता है। व्याव में विद्या प्रकार के देवता है। यह में की उसी प्रकार वहीं उसला हुए हैं मुसर्ने मी उसी प्रकार को प्रकार करने करने कर कर वहीं उसला हुए हैं मुसर्ने मी उसी प्रकार की प्रकार के स्थापक में प्रकार करने की स्थापक स

"विद्याबे! वह मार्थ-मानक नह निवार करना है-ज्यहँक जीवनमर प्राची-दिसा कोच प्राची-हिंछा के निरक्त हो बच्छ-रवायी सरम-रवायी पाय-सीक, बयाबान कमी प्राचियोका हिंक नीर समस्य मनुकम्मा करते विचारते है। में मी आजकी रात और यह दिन प्राणी-हिंसा छोड, प्राणी-हिंसासे विरत हो, दण्ड-त्यागी, शस्त्र-त्यागी, पाप-भीरू, दयावान् होकर सभी प्राणियोका हित और उनपर अनुकम्पा करते हुए विहार करू। इस अशमें भी मैं अहंतीका अनुकरण करनेवाला होऊगा तया मेरा उपोसय (-त्रत) पूरा होगा।

"अर्हत जीवन भर चोरी करना छोड, चोरी करनेसे विरत रह, केवल दिया ही लेने वाले, दियेकी ही आकाक्षा करनेवाले, चोरी न कर, पवित्र जीवन विताते हैं। मैं भी आजकी रात और यह दिन चोरी करना छोड, चोरी करनेसे विरत रह, केवल दिया ही लेनेवाला, दियेकी ही आकाक्षा करनेवाला, चोरी न कर, पवित्र जीवन जिताऊ। इस अशर्में भी मैं अर्हतोका अनुकरण करनेवाला होऊगा तथा मेरा उपोसय (-त्रत) पूरा होगा।

"अहंत जीवन भर अब्रह्मचर्य छोड, ब्रह्मचारी, अनाचार-रहित, मैथुन ग्राम्य-धर्मसे विरत रहते हैं। मैं भी आजकी रात और यह दिन अब्रह्मचर्य छोड, ब्रह्मचारी, अनाचार-रहित, मैथुन ग्राम्य-धर्मसे विरत रहकर विताऊ। इस अशमें भी मैं अहंतोका अनुकरण करनेवाला होऊगा तथा मेरा उपोमथ (-न्नत) पूरा होगा।

"अर्हत जीवनभर मृषा-वाद छोड, मृषावादसे विरत हो, सत्यवादी, विश्वमनीय स्थिर, निर्भर करने योग्य तथा लोकमें झूठ न बोलने वाले होकर रहते हैं। मैं भी आजकी रात और यह दिन मृषा-त्राद छोड, मृषावादसे विरत हो, सत्यवादी, विश्वसनीय, स्थिर, निर्भर करने योग्य तथा लोकमें झूठ न बोलने वाला होकर रहूँ। इम अशमें भी मैं अर्हतोका अनुकरण करने वाला होऊगा तथा मेरा उपोसय (-ब्रत) पूरा होगा।

" अईत जीवन भर सुरा-मेरय-मय आदि प्रमादकारक वस्तुओको छोड, सुरा-मेरय मय आदि प्रमादकारक वस्तुओंमे विरत हो रहते हैं। मैं भी आजकी रात और यह दिन सुरा-मेरय-मय आदि प्रमादकारक वस्तुओंसे विरत हो रहूँ। इस अश में मैं भी अईतोका अनुकरण करनेवाला होऊगा तथा मेरा उपोसय (-श्रत) पूरा होगा।

" अर्हत जीवन भर एकाहारी, रात्रि-मोजन-त्यक्त, विकाल-भोजनमे विरत हो रहते हैं। में भी आज की रात और यह दिन एकाहारी, रात्रि-मोजन-त्यक्त, विकाल-भोजनसे विरत हो विताओं। इस अशर्में भी में अर्हतोका अनुसरण करनेवाला होऊगा तथा मेरा उपीसय (-प्रत) पूरा होगा।

"बहुँच बीदन घर नावने जाने दवाने दवाने देवने माजा-गन्ध-विकेषन धारण-सम्मन बादि यो विकृषित करनेके जामान हे उनसे दिरहा पहते हैं। मैं भी सावकी एत बीर यह दिन नावने गाने बवाने तनाया देवने माजा-मन्ध-विकष्ठन धारण-भावन सादि यो विकृषित करनेके सामान है उनसे दिरहा एक्टर निराध-। इस अंसमें भी मैं सहुँदोंका बनुसर्च करनवामा होज्या तवा येस स्पेसन (-वत) पूर्ण होना।

" बहुँव शीवन भर कंदी वैय्या महान् वैयाओ कोड कंदी वेय्या महान् वैयाओ किरत हो भीवे ववनावनको ही कायमें कावे हूं— व्यापाणीको या चटाईको। में मी बावकी रात और यह दिन कंदी वेय्या महान् वैयाओ कोड कर्यो वेय्या महान् वैयाओ विरत्त हो नीचे ववनावन को ही कायमें कार्य-भारपाईको या चटाईको। वट बंबमें मी में बहुँवोंका बनुवरण करनेवाला होक्सा वचा मेछ ब्योवन (नवत) पुछ होता।

रता नया बार्य-उरोधन क्वा महान् फ्लाडोता है महान् परिचाम बाका दोता है महान् प्रकास काला होता है तथा महान् विस्तार बाका होता है।

"विदावे! इत प्रकार आर्थ-अशेषक होता है। विदासी! इत प्रकार

क्टिने महान् एक बाका होता है कितने महान् परिवास बाका होता है कितने महान् प्रकासवाका होता है तका कितने महान् विस्तार बाका होता है ?

"विद्यार्थ । येते कोई महान् एउट-एत-बहुक महाबनपरोज्ञा ऐस्पर्याधियस्य राज्य करे, येते जयोजा मनबोजा लायोजा कोशकता वरिजयोंका मत्योंका वेदियोचा यंगोंका कुरमोजा पंचालांका मत्यायेचा शिरोतेंका बरमाकोचा अवन्योंचा पंचारोक्षा का मन्योंबचा वह नव्याय स्पोशय वर के शोकहरे हिस्सेके मी परावर नहीं होता। यह किस किसे विद्यार्थ । दिन्द-नुबके मुकाबकेरों मानुगी-राज्य विचारे का कुक मृत्य नहीं।

"विसासे! विद्या समय मुख्योंका प्रचार वर्षे होते हैं वह बाहुम्स हायिक देवतालोका एक एक-दिन होगा है। उस प्रवंते तीस प्रकाश महीगा। यस महीगेसे बाद्य महीगोका वर्ष। उस वर्षेते प्रीक-धी-वर्ष बाहुम्महायिक देव समोकी बाहुकी सीमा। विसासे! हरते किसे स्वान है कि कराधिक हमोल्य (-वन) पाकन करनेवाका स्त्री या पूरत करीर कुरोगर, मरनेते जनकर बाहुम्बहा राजिक देवताओका सहवामी हो जाये। विशाखे । इसी लिये यह कहा गया कि दिव्य-सुखके मुकाबलेमें मानुपी राज्य विचारेका कुछ मूल्य नहीं।

"विशाखें। जितना समय मनुष्योंके पचास वर्ष होते हैं, वह तार्वातस देवताओंका एक रात-दिन होता है। उस रातमें तीस रातोंका महीना। उस महीनेमें वारह महीनोंका वर्ष ! उस वर्षसे हजार दिव्य वर्ष, तार्वातस देवताओं की सायुकी मीमा। विशाखें। इसके लिये स्थान हैं कि अप्टागिक उपोसय-व्रत पालन करने वाला स्त्री या पुरुप गरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर तार्वातस देवताओं का सहवासी हो जाय। विशाखें। इसीलिये यह कहा गया कि दिव्य-मुखके मुकावले में मानुपी राज्य विचारेका कुछ मूल्य नहीं।

"विशासे । जितना समय मनुष्यों के दो सी वर्ष होते हैं, वह याम-देवताओं का एक रात-दिन होता है। उस रातमे तीस रातों का महीना। उस महीने-से वारह महीनों का वर्ष। उस वर्षसे दो हजार दिव्य-वर्ष, तावितिस देवताओं की आयुकी सीमा। विशासे । इसके लिये स्थान है कि अष्टाणिक उपोसय-ब्रत पालन करनें वाली स्त्री या पुष्प शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर याम-देवताओं का सहवामी हो जाय। विशासे । इसीलिये यह कहा गया है कि दिव्य-मुखके मुकावलेमें मानुषी-राज्य विचारेका कुछ मूल्य नहीं।

"विशाखें। जितना समय मनुष्योके चार मौ वर्ष होते हैं, वह तुषित देवताओका एक रात-दिन होता हैं। उस रातसे तीस रातोका महीना। उस महीने-से वारह महीनोका वर्ष। उस वर्षसे चार हजार दिव्य-वर्ष, तुषित-देवताओकी आयुकी सीमा। विशाखें। इसके लिये स्यान हैं कि अष्टागिक उपोसय-ब्रत-पालन करनेवाली स्त्री या पुरुष शरीर छुटनेपर, मरनेके अनन्तर तुषित-देवताओका सहवासी हो जाय। विशाखें। इसी लिये यह कहा गया कि दिव्य-सुखके मुकावलेमें मानुषी राज्य विचारेका कुछ मूल्य नही।

"विशाखें । जितना समय मनुष्योके आठ सौ वर्ष होते हैं वह निम्मान-रित देवताओका एक रात-दिन होता है। उस रातसे तीस रातोका महीना। उस महीनेसे बारह महीनोका वर्ष। उस वर्षसे आठ हजार दिव्य-वर्ष, निम्मान-रित देवताओकी आयुकी सीमा। विशाखें ! इसके लिये स्थान है कि अप्टागिक उपोस्तय-ब्रत-पालन करनेवाली स्त्री या पुरुष हारीर छूटमेनेपर, मरने के अनन्तर पमा कि दिस्य-पुत्रके मुकाबनेंसे मानुधी-राज्य विकारका कुछ मृत्य नहीं।

"दिवाले! वितान समय मनुष्यों के शोधह सी वर्ष होते हैं
वह पर्यतिमात्रक्षवसी देवताओं का एक राव-दिन होता है। वस राव से तीस
रावों का महीता। उस महीते से बारह महीतोंका वर्ष। उस वर्ष से से शोकह हकार
वर्ष पर्यतीमात्रक्षवस्ती देवताओं को बाद की शीमा। विशास ! इस के किये

रानों का महीना । उस महीने से बारह महीनोंका वर्ष । उस वर्ष से सोकह हुबार वर्ष परिनिम्मतनस्वती देवताओं को जायू की सीमा । विश्वाचे ! इस के किने स्वान है कि बर्प्यानिक बनोसन कर-पाकन करने वाजी स्वी या पुरुष सर्पर सुरने पर मरने के जननार, परिनिम्मतनस्वती देवताओं का सहसारी हो जाम । विश्वाचे ! इसी किने यह कहा नमा कि दिस्य-गुल के मुकानके में मानूची-राज्य विचार का मुख मूस्य नहीं ।

पार्च न हाने न चारिस बारिये मुखा न चासे न च मज्जापो छिया अवद्यासम्बर्ध विरमेग्य मेनुता र्रीतं न भक्त्रोस्य विकाससीयनं।। मार्चन प्रारेप्य न च मन्त्रं आ चरे मञ्जे समाय बतबेच सम्बते एउं हि अद्वंधिकमाहुपोसक बुढेन बुक्संतपूर्व पकारितं।। थन्दो च सृरियो च उम्रो सुबरस्तना भोभागय अनुपरिवन्ति नावता तशोतदा ते पन अन्तक्रियनमा नमें प्रधानित किसा विरोचना एनस्मि य विश्वति असरे धर्न नुस सचि नेवृद्धि च भहकं सिगीनुकन्तं सबबापि कञ्चन मं वातक्य हाटकं ति न्रव्यति अदुबन्देनस्य द्वरोस्टबस्स पर्छ पि वे भागमदन्ति सोळॉन

चन्दप्पभा तारगणा च सव्वे तस्मा ही नारी च नरो च मीलवा अट्ठगुपेत उपवस्सुपोमय पुञ्जानि कत्वान सुखुद्रयानि अनिन्दिता सग्गमुपेन्ति ठान

[प्राणी-हिंसा न करे, चोरी न करे, झूठ न वोले, मद्यप न होवे। अन्नह्मचर्य मैंथुन मे विरत रहे। रात्रि को विकाल-भोजन न करे। माला न पहने। सुगन्धि न धारण करे। मञ्च पर या विछी-भूमि पर रहे। वृद्ध ने दुक्ल का अन्त करने वाले इस अष्टाग-उपोसय-त्रत को प्रकाणित किया है। चन्द्रमा तया सूर्य दोनो मुदर्गन है। वे जहाँ तक (मम्भव है, वहाँ तक) प्रकाश फैलाते हैं। वे अन्तरिक्षगामी है। अन्धकार के विध्वमक है। वे आकाश की सभी दिशाओं को आलोकित करते हैं। और यहाँ इस वीच में जो कुछ भी मुक्ता, मणी तथा श्रेष्ठ विल्लीर धन है, स्वणं अथवा काञ्चन, जो जातरूप वा हाटक भी कहलाता है, वह तथा चन्द्रमा का प्रकाश और सभी तारागण अष्टाग-उपोसय-त्रत पालन करने वाले के सोलहवे हिस्से के भी वरावर नहीं होते। इस लिये जो सदाचारी नारी और नर है वे अष्टाग उपोसथ (न्त्रत) का पालन कर, तथा सुख-दायक पुण्य-कर्म कर, आनिन्दित रह, स्वर्ग-स्थान को प्राप्त होते हैं।]

(७१)

## श्रावस्ती-कथा।

उम समय} छन्न परिक्राजक जहाँ आयुष्मान आनन्द था, वहाँ पहुँचा । पहुँच कर, आयुष्मान आनन्द के साथ कुशल-क्षेम की वात-चीत करके एक ओर बैठ गया। एक और बैठे हुए छन्न परिन्नाजक ने आयुष्मान आनन्द को यह कहा—

"आनन्द । आप लोग भी राग के प्रहाण की बात करते हैं, द्वेष मोह के प्रहाण की बात करते हैं।"

"हाँ आयुष्मान । हम राग के प्रहाण की वात करते हैं, द्वेष मोह के प्रहाण की वात करते हैं।"

"आयुष्मान । आप राग में क्या दोव देखकर राग के प्रहाण की वात करते हैं, देव में क्या दोव मोह में क्या दोव देखकर मोह के प्रहाण कीवात करते हैं?"

"आयुम्पान! जो एग से जरूपन्त हैं जो एन के बसीमूत है बहु जाने हु ज की भी बात सोचता है पराये दुख की भी बात सोचता है दोनों के हुख की भी बात सोचता है वह चैतसिक-पुत्त दौर्मनस्य का बनुभद करता है। एक का नास होने पर न वह सपने हु ज की बात सोचता है न पराये हुख की बात सोचता है न होनों के हु ज की बात सोचता है वह चैतसिक-पुत्त दौर्मनस्य का सनुभव नहीं करता है।

"बायुष्पान! जो यन से नयुष्पान है जो रान के वसीमृत है वह स्पीर से दुष्पाने करता है भागों में दुष्कर्न करता है मन से दुष्कर्न करता है। राग का लाध होने पर न वह संधीर से दुष्कर्म करता है न वानी से दुष्कर्म करता है और न मन से दुष्कर्म करता है।

आपुष्पात ! यो एग से अपुष्त है यो एम से वसीमूत है वह पवार्थ आत्मार्थ भी गही पहचातवा है सवार्थ एएमें भी नहीं पहचातवा है सवार्थ उमसार्थ भी नहीं पहचातवा है। एक कर नाय होने पर वह यवार्थ आस्तार्थ भी पहचातवा है। सवार्थ परार्थ भी पहचातवा है। सवार्थ उमसार्थ भी पहचातवा है।

"बायुम्मान! यो एग है यह सम्याबना देने नाका है पत्रू-पहिल कर देने पाका है अझानी बना देने वाला है प्रदाका नाल कर देने वाला है हानि पहुँचाने पाका है निर्दाल-सार्गका सामक है।

पहुंचान वाळा हं । नवाच-माग का वाथक है। ज्ञासम्मान ! जो हेस से दुष्ट हैं वह

सायुम्मात । जो मोह से मूह है मोह के बसीमूट है वह जरते दुस की भी बाद पराये दुस से मोह के बसीमूट है वह जरते दुस पैतिकित दुस सेनेतर का बनुभव करता है। मोह का मास हो जाने पर त वह करते दुस की बाद धोपता है न पराये दुस न को तो के दुस की बाद सोचना है यह पैतिकिन्दुस सीनेतर का अनुभव नहीं करता।

नात तावा है वह परावक्ष कुष्ण सामान के मानून के स्थामित है वह एपीर से पुलर्म करता है वाली के दुल्कमें करता है मन से पुल्कमें करता है। मोह का माण होने पर, न बहु परिर से पुलर्म करता है न वाली संदुल्कमें करता है और न मन ने दुल्कमें करता है।

बायुष्मान । यो मोह सेनुष्ट है जो मोह के नतीमूठ है वह सवार्व आरमार्व मी नहीं पहचानना है सवार्व परार्व भी नहीं पहचानठा है सवार्य उन्नयार्व भी नहीं पहचानता है। मोह का नाश होने पर वह यथार्य आत्मार्य भी पहचानता है, यथार्य परार्थ भी पहचानता है, यथार्थ उमयार्थ भी पहचानता है।

"आयुष्मान । जो मोह है वह अन्धा बना देने वाला है, चक्षु-रिहत कर देने वाला है, अज्ञानी बना देने वाला है, प्रज्ञा का नाश कर देने वाला है, हानि पहुँचाने वाला है, निर्वाण-मार्ग का बाधक है।

"आयुष्मान् । हम राग का यह वुरा-परिणाम देखकर राग के प्रहाण की वात करते हैं, द्वेप का यह वुरा परिणाम देखकर द्वेप के प्रहाण की वात करते हैं, तथा मोह का यह बुरा परिणाम देखकर मोह के प्रहाण की वात करते हैं।"

",आयुष्मान । क्या इस राग, द्वेप तथा मोह के प्रहाण का पथ है, मार्ग है?"

"आयुष्मान । इस राग, द्वेष तथा मोह के प्रहाण का पथ है, मार्ग है।"
"आयुष्मान । इस राग, द्वेष तथा मोह के प्रहाण के लिये कौन सा
पथ है, कौन सा मार्ग है?"

"यही आर्य-अष्टागिक मार्ग है, जो कि है मभ्यक् दृष्टि सम्यक् समाधि। आयुष्मान्। इस राग, द्वेप तथा मोह के प्रहाण के लिये यह पथ है, यह मार्ग है।"

"आयुष्मान । इस राग, द्वेप तथा मोह के प्रहाण का यह श्रेष्ठ-पथ है, श्रेष्ठ-मार्ग है। आनन्द । यह अप्रमादी बने रहने के लिये पर्य्याप्त है।"

(७२)

एक समय आयुष्मान आनन्द कोशाम्बो के घोषिताराम में विहार कर रहे थे।

उस यमय आजीवक सम्प्रदाय का एक गृहस्य-शिष्य जहाँ आयुष्मान आनन्द थे, वहाँ आया। पास जाकर आयुष्मान आनन्द को प्रणाम कर एक ओर वैठा। एक ओर वैठ उस आजीवक गृहस्य-शिष्य ने आयुष्मान आनन्द को यह कहा—

"भन्ते आनन्द । ससार में किन का धर्म सु-आख्यात (भली प्रकार कहा गया) है । ससार में कौन ठीक मार्ग पर चलते हैं ? ससार में कौन सुगति-प्राप्त है ? "

"तो गृहपति । मैं तुझ से ही पूछता हूँ, जैसा तुझे रुगे वैसा कहना। हो हे गृहपित । तू क्या मानता है  $^{2}$  जो राग के प्रहाण का उपदेश देते हैं,

होप के प्रहाल का जपकेस वेते हैं तथा मोह के प्रहाल का उपकेत केते हैं उनका प्रमें भक्षी प्रकार कहा गया है वा नहीं ? तुसे कैंद्रा कवता है ?

"भारते ! यो राग के प्रहान के किसे बर्गोपरेय हेते हैं द्विय के प्रहाय के किसे बर्गोपरेय हेते हैं उनका धर्म भारती प्रकार कहा गया है—हर विषय में मुझे ऐसा हाता है।"

है पृह्पित ! क्या मानते हो जो रान के प्रहान में कमे है को हेव के प्रहान में करो है जो मोह के प्रहान में क्ये है स्थार में वे ठीक मार्च पर वक पहुँ है वानहीं ? इस विषय में पूम्हें कैसा अवता है ? "

भन्ते ! यो पान के प्रहाल में बने ई नो द्वेप के प्रहान में बने इ बो मोड़ के प्रहान में कने हैं संखार में वे ठीक मार्नपर चक खो है। इस विषय में मुझे पैसा होता है।

"है गृहपति! बया मानते हो बिनका राग प्रहीस हो यया है जब से जारा रहा है कटे दाब के समान हो गया है जमाव-मारत हो पदा है पविस्व में पुनस्त्यित को कोई समावता नहीं रही है जिसका होव प्रहीस हो समावता है

र्धमायना नहीं रही है जिनका मोह महीज हो नमा है जब से जाता रहा है करें ताइ के समान हो नमा है जमान प्रत्य हो गमा है अभियम में पुनक्तिक की कोई समानता नहीं रही है वे लंबार में जुगति-मान्य है वा नहीं? इस विषयमें सारे कैसा जमाता है?

मनते ! जिमका राग महीन हो गया है जब से जाता रहा है कटे ताब के जमान हो गया है जमान-मान्य हो नया है पश्चिम में पुनस्तित की डोई संमादना नहीं रही है जिसका देग महीन हो जमा है स्वादित नहीं रही है जिसका मोद महीन हो गया है जब से जाता रहा है कटे तान के तमान हो नया है जमान-मान्य हो गया है मिनक में पुनस्तित की कोई समानना मही: रही है से संसाद में पूर्वति मानते हैं। इस विकास में मूमे ऐसा होता है।"

सन तृद्दी सह नह एहा है—ननते! जो एस के प्रहास के किस सर्मोतकेड देते हैं देव के सीद के प्रहान ने निस्ते बर्मोपरेक देते हैं जन कर सर्व प्रकी प्रकार नदा सवा है। जब तृद्दी नह नह एहा है—नतते! बो एस के प्रहाद में जने हैं जो हेप के जो मीद के प्रहान में कमे हैं उसार में क ठीक मार्ग पर चल रहे हैं। अब तू ही यह कह रहा है, भन्ते । जिनका राग प्रहीण हो गया है, जड से जाता रहा है, कटे ताड के ममान हो गया है, अभाव-प्राप्त हो गया है, भविष्य में पुनरुत्पत्ति की कोई मभावना नहीं रही है, जिन का द्वेप प्रहीण . . . . जिनका मोह प्रहीण हो गया है, जड से जाता रहा है, कटे ताड के समान हो गया है, अभाव-प्राप्त हो गया है, भविष्य में पुनरुत्पत्ति की कोई समावना नहीं रही है, वे लोक में सुगति-प्राप्त है।"

" मन्ते । आश्वय्यं है। भन्ते । अद्भुत है। अपने मत को अूपर भी नहीं उठाया है और दूसरे के मत को नीचे भी नहीं गिराया है। उचित धर्म-देशना मात्र हुई है। बात कह दी गई। अपने-आप को बीच में नहीं छाया गया।"

"भन्ते आनन्द । आप लोग राग के प्रहाण के लिये धर्मोपदेश देते हैं, देव के मोह के प्रहाण के लिये धर्मोपदेश देते हैं, (इस लिये) भन्ते । आप लोगो का धर्म 'मली प्रकार कहा गया' हैं। भन्ते । आनन्द । आप लोग रागके प्रहाण में प्रयत्त-शील है, देव के मोह के प्रहाण में प्रयत्त-शील हैं, आप लोग ससार में ठीक मार्ग पर चल रहे हैं। भन्ते । आनन्द । आप लोगो का राग प्रहीण हैं, जड से जाता रहा हैं, कटे ताड के समान हो गया हैं, अभाव-प्राप्त हो गया हैं, मिवष्य में पुनक्त्पात्ति की कोई समावना नहीं रही हैं, आप लोगो का खेव आप लोगो का मोह प्रहीण हैं, जड से जाता रहा हैं, कटे ताड के समान हो गया हैं, कटे ताड के समान हो गया हैं, अभाव-प्राप्त हो गया हैं, जड से जाता रहा हैं, कटे ताड के समान हो गया हैं, कटे ताड के समान हो गया हैं, क्या लोगो का सोह प्रहीण हैं, जड से जाता रहा हैं, कटे ताड के समान हो गया हैं, अभाव-प्राप्त हो गया हैं, भविष्य में पुक्तत्पत्ति की कोई समावना नहीं रही हैं, (इस लिये) आप लोग सुगतिप्राप्त है।

"सुन्दर भन्ते । बहुत सुन्दर मन्ते । जैसे भन्ते । कोई उलटे को सीधा कर दे, ढके को उघाड दे, मार्ग-मण्ट को रास्ता बता दे अथवा अधेरे में मशाल जला दे जिस से आँख वाले चीजो को देख सके । इसी प्रकार आयं आनन्द ने नाना प्रकार से धर्म को प्रकाशित किया है । भन्ते आनन्द । यह मैं भगवान् (उनके) धर्म तथा भिक्षु-सघ की शरण जाता हूँ। आर्य आनन्द । आज से शरीर में प्राण रहने तक मुझे शरणागत उपासक समझें।"

(६७)

एक समय भगवान् शाक्य जनपद् में, किपलवस्तु के निग्रोधाराम में विहार करते थे। उस समय भगवान रोग से मुक्त हुए थे, रोग से मुक्त हुए थोडा ही समय हुआ। या। तब महानाम कास्य जहाँ भयकान वे वहाँ पहुँका। पात जाकर भयकान को प्रमास कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए महानास तास्य में भगवान को बढ़ कहा—

"भन्ते ! मैं बानता हूँ कि ममवानु ने वीवेकाल से यह उपवेश दिया है कि एकाप-भिक्त को हो जान होता है वस्थिर-भिक्त को गहीं । चन्ते क्या समावि पहले होती है और तब जान होता है वसवा जान पहले होता है और तब समावि होती हैं?

उस समय बायुम्मान भानत्व के मन में बह हुआ---प्रथशन रोप से मुक्त हुए हैं परवान् को रोग से मुक्त हुए बोहा ही समय हुआ है। यह महानाम सावन परवान् से विति-स्पोर मक्त पुरू पहा है। वर्षों न में महानाम सावन को एक बोर से वाकर वर्षों परेस हैं? तब बायुम्मान बानत्व महानाम सावन को सहि से परवकर एक बोर के गरे बोर महानाम सावन से यह हो के

"महानाम! प्रमानात् में धेश्व-कील का भी जपदेश किया है अर्थक्ष श्रीक का भी उपदेश किया है, चैश्व-प्रमाधि का भी उपदेश किया है अर्थक्ष-प्रमाधि का भी उपदेश किया है धैश्व-प्रमाका भी उपदेश किया है अर्थेश प्रमाका भी उपदेश किया है।

"महानाम! श<del>ीव शीक-न</del>या **१**?

"है महानाम! भिन्नु धीलनान होता है प्राविमोक्स विका पदों के निवर्भों का सम्मक पालन करने शाला (पृ १६१)। महानाम! यह धीलन्दीक कहनाता है।

महानाम! चैत्र-समाधि क्या है?

महानाम ! मिस् काम शोजों ते पुणक हो चतुर्व-स्थान प्राप्त करवा है। महानाम ! यह वैद्य-समाधी कहकाती है।"

महानाम ! सैझ-सहा क्या 🛊 ?

महानाभ ! मिसु यह दुख है, इसे बमार्च क्य से जानता है ... यह दुख निरोज की नौर ले बाने वाला मार्च है इसे यबार्च रूप से बानता है। महानाम ! वह सैक्ष-बड़ा हैं। पर प्रकार महानाम ! वह बार्य-यावक सील-तम्मच तथाप्ति सम्मत तबा प्रवासम्मत होकर बासवों का संय कर चुकने के जनतर सनासव रिचत-विमुक्ति को, प्रज्ञाविमुक्ति को इसी शरीर में, स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। इस प्रकार महानाम। भगवान् ने शैक्ष-शील का भी उपदेश दिया है, अशैक्ष-शील का भी उपदेश दिया है, शैक्ष-समाधि का भी उपदेश दिया है, अशैक्ष-समाधि का भी उपदेश दिया है, शैक्ष-प्रज्ञा का भी उपदेश दिया है, अशैक्ष-प्रज्ञा का भी उपदेश दिया है।"

## (४४)

एक समय आयुष्मान आनन्द वैशाली में, महावान में, कूटागार शाला में विहार करते थे। उस समय अभय लिच्छवी तथा पण्डित कुमारक लिच्छवी जहाँ आयुष्मान आनन्द थे वहाँ पहुँचे। पहुँच कर आयुष्मान आनन्द को अभिवादन कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे लिच्छवी ने आयुष्मान आनन्द को यह कहा—

"भन्ते । ज्ञाति-पुत्र निर्मन्य का कहना है कि वे सर्वज्ञ है, सर्वदर्शी है, उन्हें असीम ज्ञान-दर्शन प्राप्त है। उन का कहना है—मुझे चलते समय, खंडे रहने पर, सोते समय, जागते रहने पर, सतत, लगातार ज्ञान-दर्शन उपस्थित रहता है। उन का कहना है कि तपस्या से पुराने-कर्मों का नाश हो जाता है और कर्मों के न करने से नये कर्मों का घात हो जाता है। इस प्रकार कर्म का क्षय होने से दुःख का क्षय, दुःख का क्षय होने से वेदना का क्षय, वेदना का क्षय होने से सारे दुःख की निर्जरा होगी। इस प्रकार इस सादृष्टिक निर्जरा-विशुद्धि से (दुःख का) अतिक्रमण होता है। भन्ते। भगवान इस विषयमें वया कहते हैं?

"अभय । उन भगवान्, ज्ञानी, दर्शी, अर्हत, सम्यक्-सम्बुद्ध के द्वारा तीन निर्जरा-विशुद्धियाँ सम्यक् प्रकार कही गई है, शोक तथा रोने पीटने के अतिक्रमण के लिये, दुख-दौर्मनस्य के नाश के लिये, ज्ञान की प्राप्ति के लिये और निर्वाण को साक्षात करने के लिये। कौन सी तीन?

"हे अभय । भिक्षु सदाचारी होता है, प्रातिमोक्ष शिक्षा-पदों के नियमों का सम्यक् पालन करने वाला । वह नया कर्म नहीं करता है और पुराने-कर्म (के फल) को भोग करके समाप्त कर देता है। यह सादृष्टिक निर्जरा है, अकालिका (देश और काल की सीमाओं से परे) है, इसके बारे में कह सकते हैं कि आओ और स्वय परीक्षा कर लो, यह निर्वाण की ओर ले जाने वाली हैं, इसे प्रत्येक विज्ञ आदमी साक्षात कर सकता है। "हे अवय! इस प्रकार वह गीस-सम्पन्न निधु राम मोगॅले दूर हो

चनुर्य-स्थान को प्राप्त कर विहार करता है! वह नया वर्षे नहीं करता है बोर पुराने वर्षे (के कत) का भोग करके समास्त कर देगा है। यह साहित्यक निर्वेग्ध हैं, ककानिया (देश बोर वान की नीमाओं से परे) दग के बारे में वह सपने हैं कि बाबो बोर स्वयं परीक्षा कर को यह निर्वाण की नोर के याने वाली है को प्राप्त किस बारगी साधान कर करता है।

"है अवय! इस प्रकार वह पील-गण्या पितृ आसमों वा सब कर सनासब विस-वियुक्ति प्रकानवियुक्ति को हमी स्परीर में स्वयं जाननर, साम्राजकर, प्राचकर विहार करना है। वह नया-वर्ष नती करना है और दुस्ते वर्ष (के कन) को मीन करके समाज कर देना है। यह माहिस्क निर्मय है जहां कि जोर वान वी सीमाओं में परे) इसके बारे में कह सबने हैं कि जाओं और स्वयं परिमा कर तो यह निर्वाण की आर के जारे वाती है हमें प्राचक कारनी नामाज कर नकना है।

"अवय! वर कारान् जानी वार्ती अहंत नम्मार-नानुव के बाप में तीन निरंग्य-विम्युवित नम्मक करार पारी पाहें हैं धोन तथा रोते-नीहने के माँग अन्य के निवे दुन्य पोर्वनस्य के नाथ के नियो जान को ज्ञानिन के निये मोर निर्मत का सामार करने के निवे।

"ऐना कहने घर परियम पुषारक तिम्छवी ने सबय तिम्छनी को यह कहा—

तीस्य बजर ! परा तू सायुष्णात बातत्व के मुत्रावित को मुत्रावित पद पर अनुमोरत नदी करता ? "

नीम्प ! नरा में नातृष्मान बानगर के नुवारित को नुवारित पढ़े कर अनुवीरत नहीं वर्णरा। जो आयुग्नार बानल के नुवारित को नुवारित रहे अनुवीरत न वरें, उस वा निर भी दिर सा क्षता है।"

(22)

उन नमर माहुम्मान मानार मही मनशानु थे नहीं रहे। बात नामर मरराणु को नमामार नर एक जोर नैटे। एक जोर नैटे बागुम्मान जातन की मरराणु ने नह नहीं.— "आनन्द! जिसे अनुकम्पा करने योग्य समझो और जो सुनने योग्य मार्ने—चाहे वे मित्र हो, चाहे सुहृद हो, चाहे रिस्तेदार हो, चाहे रक्त-सम्बन्धी हो—उन्हे आनन्द! तीन स्थानो पर लाना चाहिये, रागना चाहिये, प्रतिष्ठित करना चाहिये। किन तीन स्थानो पर?

"वद्ध के प्रति अचल श्रद्धा पर लाना चाहिये, रखना चाहिये, प्रति-फ्रित करना चाहिये-चे भगवान् अहंत है, सम्यक् सम्युद्ध है, विद्या तथा आचरण से युक्त है, सुगति-प्राप्त है, लोक के जानकर है, सर्वश्रेष्ठ है, (कुमार्ग-गामी) पुरुषों का दमन करने वाले सारधी है तथा देवताओं और मनुष्यों के शास्ता है। भगवान युद्ध है। धर्म के प्रति अचल श्रद्धा पर लाना चाहिये, रखना चाहिये, प्रतिष्ठित करना चाहिये-पह धर्म भगवान् द्वारा भली प्रकार कहा गया है, मह धर्म इह-लोक-सम्बन्धी है, इस धर्म का पालन सभी देशो तथा कालो में किया जा नकता ह, यह धर्म निर्वाण तक ले जाने में ममर्थ है तया प्रत्येक बुद्धिमान थादमी इस धर्म का साक्षात कर सकता है। सघ के प्रति अचल श्रद्धा पर लाना चाहिये---भगवान् का श्रावक-मघ सुन्दर मार्ग पर चलने वाला है, मीघे मार्ग पर चलने वाला है, न्यायमार्ग पर चलने बाला है तथा समीचीन मार्ग पर चलने माला है। यही जो आर्यव्यक्तियों की चार जोडियाँ है, ये जो आठ प्रकार के ष्यक्ति है, यही भगवान् का श्रावकसघ है। यह सघ आदर करने योग्य है, बातिय्य करने योग्य है, पहुनाई करने योग्य है, दान-दक्षिणा देने योग्य है तया हाय जोडकर नमस्कार करने योग्य है। यह लोगो के लिये सर्व-श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र है।

"आनन्द । पृथ्वी-धातु, जल-धातु, तेज-धातु तथा वायु-धातुका 'अन्ययात्व' हो सकता है, किन्तु बृद्धमें अचल श्रद्धा रखने वाले आर्य-श्रावकका नही। इस विषयमें 'अन्ययात्व' का अभिप्राय यह है। आनन्द । बुद्धमें अचल श्रद्धा रखने वाला आर्य-श्रावक नरकमें पैदा होगा, पशु-योनिमे पैदा होगा वा प्रेत-योनिमें पैदा होगा—इसकी सम्भावना नहीं है।

"आनन्द । पृथ्वी-धातु, जल-धातु, तेज-धातु तथा वायु-धातुको 'अन्य-थात्व' हो सकता है, किन्तु धर्ममें सघमें अचल श्रद्धा रखने वाले आर्य-श्रावक का नहीं। इस विषयमें 'अन्यथात्व' का अभिप्राय यह है। आनन्द। सघमें वजक अदा रसने वाका वार्य-सावक गरकमें पैदा होगा, पस्योनिमें पैदा होगा वा प्रेय-योनिमें पैदा होगा—वसकी सम्मादना नहीं हैं। "बानवरी विसे बनुकस्मा करने घोग्य समझी बौर वो सुनने योग्य

"बारून | बिसे बनुकरण करने घोष्प धमको बौर को मुतने घोष्प मार्ने—बाढ़े के मित्र हो बाढ़े प्रहुद हों बाढ़े रिस्तेदार हो बाढ़े रस्त-सम्बन्धी हो--चन्हे जानव | तीन स्वातीपर काना बाहिने रखना बाहिये प्रतिस्थित करना बाहिये।

#### (\*4)

चस समय काबुम्मात बातन्त्र वहीं भगवान् ये वहीं पहुँचे। यस बान्य-यमवान्त्रों विभावान्त्र कर एक बार वैठे। एक बोर वैठे बायुम्मात आतन्त्रते यगवान्को सह कहा---

"मन्ते! मन भन कहाचाता है। नस होनेसे भन होता है?"

"ज्ञानस्य ! यदि काम-धातुके (कर्मका)-विपाक न हो तो क्या नाम-सव विचार्क रेगा ?

"मन्द्रे! नही।

भता नहा। इस्तिमे जानम्य ! कर्मशेष हैं विकास वीज हैं पूज्या वर्क है जविधा⊱ नीवरण को प्रापियोका पूज्या-स्पोजन को प्रापियोक्त काम (≔दीन) कानुर्से विकास-क्षाप्त का इस प्रकार पविष्यमें पूत्रवैस्य होता हैं। इस प्रकार मानन्य । सब क्षेत्रा हैं।

वातन्त्र । वदि कर-धातु (के कर्मका) विपातः न हो दो न्या कप-भव दिखाई देगा?

"मन्दें। नदी।

" स्पृष्टिन बागल ! कर्म खेत्र है तिहान बीज है पूप्ता कर है अविधा-नीवरण बासे प्रापियोंका तृष्टा- एयोजर वाडे प्रापियोका कर्म (अम्प्या ) प्रमुखें विहान-क्वारतका। इस प्रकार घषिम्ममें पूत्रवंग होता है। इस प्रकार मानव ! पन होता है।

"श्रामण्डा विदिशस्य बातु(के कर्नका) निपान न हो सो स्थाः करूप-सन दिखाई देगा?

मन्त्रे। मही।

"इसिटिये आनन्द । कर्म क्षेत्र है, विज्ञान बीज है, तृष्णा जन्द है, अविधान नीवरण बाले प्राणियोका, तृष्णा नयोजन बारे प्राणियोका अरूप (=धेष्ठ) धातुमें विज्ञापन-स्थापनका। इस प्रकार भविष्यमें पुनजन्म होता है। इस प्रकार आनन्द। भव होता है।"

### (७७)

उन मगय आयुष्मान आनन्द जहां भगवान थे वहा पहुँचे। पान जाकर भगवानको अभिवादन कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे आयुष्मान आनन्दने भगवान्को यह कहा—

् " मन्ते ! 'मव ', 'भव ' कहा जाता है । वया होनेसे भव होता है ? "

" आतन्द । यदि काम-धातु (के कर्मका) विपाक न हो तो क्या काम-नव दिखाई देगा ?"

"भन्ते। नही।"

"इसिलये आनन्द । कर्म क्षेत्र है, विज्ञान वीज है, तृष्णा जल है, अविद्यानीवरण वाले प्राणियोकी, तृष्णा-सयोजनवाले प्राणियोकी काम (= हीन) धातुमें चेतनाकी स्थापनाका, कामना (= पत्थना) की स्थापनाका। इस प्रकार भविष्यमें पुनर्जन्म होता है। इस प्रकार आनन्द। भव होता है।

" आनन्द । यदि रूप-धातु (के कर्म का) विपाक न हो तो क्या रूप-भव दिखाई देगा?"

"भन्ते। नही।"

"इमिलिये आनन्द । कर्म क्षेत्र है, विज्ञान वीज है, तृष्णा जल है, अविद्यानीवरण वाले प्राणियोकी, तृष्णा-सयोजनवाले प्राणियोकी रूप (= मध्यम) धातुमें चेतनाकी स्थापनाका, कामना (= पत्थना) की स्थापनाका। इस प्रकार मिवप्यमें पुनर्जन्म होता है। इस प्रकार आनन्द । भव होता है।

" आनन्द ! यदि अरूप-धातु (के कर्मका) विपाक न हो तो क्या अरूप-धातु दिखाई देगा ?

"मन्ते। नही।"

" इसिलये आनन्द । कर्म क्षेत्र है, विज्ञान बीज है, तृष्णा जल है, अविद्यानीवरण वाले प्राणियोंकी, तृष्णा-सयोजन वाले प्राणियोकी अरूप (= श्रेष्ठ) धातुमें

चैतनाकी स्वापना कामना (=पत्वना) की स्वापना। इस प्रकार मिवन्यमें पुनर्जन्म होता है। इस प्रकार जानन्द! भव होता है।

(৬८)

निवात-क्या पूर्वोक्त प्रकार ही एक जोर बैठे हुए आयुष्मास आतन्यको मनवान्ने इस प्रकार कहा—

"आश्रय! क्या समी सील-बत वाला जीवन समी बहावर्य-श्रीवतः सभी स्परस्वात-सार सफक होता है?

"मन्ते! सर्वीतर्में यह ऐसा नहीं हैं।"

"तो बानन्य! विमन्त करके कहो।"

" जाते ! निय सील-वय मांचे जीवन निय बहावयं मीवन निय उपस्थान-सारके जनुसार रहनेते जकुपल-वर्ष वहते है तथा कुपल-वर्ष महीण होते है वह धील-सनवाला सीवन वह बहायं-जीवन वह उपस्थान-सार निष्मक है। निय शील-स्रत मांचे बीवन निय स्वप्रयं-जीवन निय उपस्थान-सारके जनुसार रहनेते अकुपल-संभाने महीय हैने वह कुपल-वर्ष वहते हैं वह सील-वय वाका बीवन वह बहाययं जीवन वह उपस्थान-सार एक्टक होता है।"

भावुष्मान भानन्दने यह कहा । चास्ता सन्तुष्ट हुए ।

चन समय मानुष्मान मानन्त्र यह जान कि खास्ता मेरे उत्तरने सन्तुष्ट है प्रयमानको नमस्कार कर उठकर चने नमे।

मप्यानका नमस्कार कर उठकर वस वका

त्रव मनवानने मानुष्पान जानन्तरे भन्ने जानेके कोग्री केर वाद मिनुनोको कृतामा— मिनुनो<sup>†</sup> जानन्त जैस है तो भी प्रता में इसकी करावधी करते वासा मुक्त नहीं।

(94)

चय समय आयुष्मान जानन्य नहीं भयवान ने नहीं नने। पान साकर भयवानको नमस्कार कर एक नोर बैठे। एक नोर बैठे आयुष्मान जानन्यने अयवान को यह नहां—

मन्ते ! ये तीन प्रकारकी गुगियावाँ हैं विनकी सुनन्य बायुके अनुकृत ही आनी हैं बायुके प्रतिकृत नहीं। कीन सी तीन प्रकारकी ? प्रावा-सुगन्य तार (बी)

भागी है बायुके प्रविकृत नहीं। कौन सी ठीन प्रचारकी ? साका-मुगळा तार (बी) नुगळ तथा पुग्प-मुक्त्मा। मन्ते ! ये ठीन प्रचारको गुगनिवर्ग है जिनको सुगक शासुके अनुकूल ही जाती है, वायुके प्रतिकूल नही। भन्ते। क्या कोई ऐसी मुगन्धि है जिस की सुगन्ध वायुके अनुकूल भी जाती हो, प्रतिकूल भी जाती हो, अनुकूल-प्रतिकूल भी जाती हो?"

"आनन्द । ऐसी सुगन्धि हैं, जिम की सुगन्ध वायुके अनुकूल भी जाती हैं, प्रतिकूल भी जाती है, अनुकूल-प्रतिकूल भी जाती हैं।"

"भन्ते । वह कौनमी सुगनिव है जिसकी सुगन्ध वायुके अनुकूल भी जाती है, प्रतिकूल भी जानी है, अनुकूल-प्रतिकूल भी जाती है ?"

" आनन्द । जिस गाँव या निगममें स्त्री या पुरुष बुद्धकी शरण गये होते हैं, धर्मकी शरण गये होते है, सघकी शरण गये होते है, प्राणी-हिंसासे विरत होते हैं, चोरीसे विरत होते है, काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत होते है, झूठ बोलनेसे विरत होते है, सुरा-मेरय-मद्य आदि प्रमादके कारणोंसे विरत होते है, कल्याण-धर्मी सदाचारी होते हैं, मात्सर्य रूपी मल-रहित चित्त से घरमें रहते है-मुक्त-त्यागी, खुला-हाथ, परित्यागी, याचकोके दाता तथा दानशील। उस गाँवका श्रमण-ब्राह्मण चारो दिशाओमें गुणानुवाद करते है- अमुक गाँवमें या अमुक निगममें स्त्री या पुरूप बुद्धकी शरण गये होते हैं, धर्मकी शरण गये होते है, सघकी शरण गये होतेहैं, प्राणी-हिंसासे विरत होते है, चोरीसे विरत होते है, काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत होते हैं, झूठ वोलनेसे विरत होते हैं, सुरा-मेरय-मद्य आदि प्रमाद के कारणोंने विरत होते हैं, कल्याण-धर्मी, सदा-चारी होते हैं, मात्सर्य रूपी मल रहित चित्तसे धरमें रहते हैं--मुक्त-त्यागी, खुला-हाथ, परित्यागी, याचकोंके दाता तथा दान-शील, देवता तथा यक्ष आदि भी उस गाँव या निगमका गुणानुवाद करते है-अमुक गाँव या निगममें स्त्री या तथा दान-शील। आनन्द<sup>।</sup> यह ऐसी सुगन्धि पुरुष वृद्ध की शरण गये है है, जिसकी सुगन्ध वायुके अनुकूल भी जाती है, प्रतिकूल भी जाती है, अनुकूल-प्रतिकृल भी जाती है।

> न पुष्फगन्द्यो पटिवातमेति न चन्द्रन तगरमिल्लका वा सतच गन्द्यो पटिवातमेति सव्वा दिसा मण्पुरिसो पवाति

[कुम्मदी गुलबा नायुके विदेव नहीं वाती न वस्त्रकी न तबरकी मीर म मस्त्रिकाकी। छलुद्योकी सुमन्त्र वायुके विक्व भी जाती है। छलुद्रय (की सुनन्त्र) छमी विधानीमें नाती है।]

(८ ) उस समय आयुम्मान जानन्द बहा भवतान ये वहाँ पहुँचे । पहुँचकर भगवानको

विभिनादन कर एक और देंठे। एक और देंठे बायुप्पान जानन्दने भगवानको सह कहा— "भन्ते! भगवानके मुँदसे सुना है भगवान के मुँदसे प्रहम किया है कि

है सालका विश्वी (बुद्ध) का अधिम नामना भावक बहु-अक्से दिवत होकर धाहमी-कोक लायुको प्रतिक पूर्वित करता है। पर्यो । प्रत्यान बहेत है समक् धम्बद्ध है। भगवान नहीं तक पूर्वित करता है।

आनल्दो बहुमावक है और धनापतोका वस तो सप्रमाण है।"

बूसरी बार भी बायुष्मान जानन्तने भगवानको यह कहा---

"सन्ते ! सामान्के मुँहते गुता है सममान्के मूँहते प्रहम किया है कि है सानन्य ! गिल्ली (कृष्ठ) का अभिन्तु नामका सामक वहा-मोक्सों स्थित होकर साहसी-मोक-सानुको स्थार मुस्तित करता है। सन्ते ! सन्दान् बहुत है सम्बन्ध सम्बद्ध है। सामान्य कृष्ठी तक सुनित कर सन्ते हैं।?

। मगवान् कहाँ तक भूषित कर सक्ष्ये हैं।" "आनन्द! वह शावक है और तवागतीका वक तो वप्रशान हैं।"

तीसरी बार भी आवृष्पान जानत्वने भगवानको यह कहा---वत्वे । भगवानके मुँहसे सुना है भनवानके मुँहसे श्रद्धम किया है कि

क्षण्यै । स्वयानके मुंहरे पुना है धनवान्ते मुंहरे प्रमु किया है कि है बातन्त्र । विक्षों (बुद्ध ) का व्यक्तिम् नामका सामक बहु-कोक्यों स्वित होकर वाह्यों-कोक-सामुको स्वरते सुवित करता है। क्ष्यों । सगवान् बहुत है, सम्बक्त सम्बद्ध है। स्वयान् कही कह सुवित कर सकते हैं ?

ज्ञानन्य 'सुनाहँ दुने कि एक शहली चूजनिका कोक-शहु है ? भगदान् 'दसीका समय है मुदत 'दमी वा समय है। साप कहे ।

भगवान्। इस्राका समय इं मुक्तः इमा का समय है। साथ कहै। आपसे मुनकर मिसू बहुग करेंगे।

तो नामन्द<sup>ा</sup> नुन । मण्डी क्युक्ते मनमें रख। ऋहता हूँ ।

স্পী: ৰজ্ঞা কই সাৰু-মাদ সাণ-কণী গ্ৰহণ হিলে। গ্ৰহণ নি হ'ব বিজ্ঞান

आनन्द । जहाँ तक चन्द्रमा और सूर्यका प्रकाश फैला है, वहाँ तक सहस्रघा लोक है। उस प्रकारके सहस्र चन्द्रमा होनेसे, सहस्र सूर्य होनेसे, सहस्र उत्तर-कुरु प्वंतराज होनेसे, सहस्र जम्बुद्धीप होनेसे, सहस्र अपरगोयान होनेसे, सहस्र उत्तर-कुरु होनेसे, सहस्र पूर्व-विदेह होनेसे, चार हजार महाममुद्र होनेसे, चार हजार महाराजा-गण होनेसे, सहस्र चातुम्महाराजिका (देवता) होनेसे, सहस्र तार्वातस (देवता) होनेसे, सहस्र याम (देवता) होनेसे, सहस्र तुस्ति (देवता) होनेसे, सहस्र प्रामानरित (देवता) होनेसे, सहस्र परिनिम्मतवसवर्ती देवता होनेसे, सहस्र ब्रह्मलोक (देवता) होनेसे, आनन्द । यह सहस्री चूळिनका लोक-वातु कहलाती है। आनन्द । जितना वडा क्षेत्र सहस्री चूळिनका लोक-वातु कहलाती है। आनन्द । जितना वडा क्षेत्र सहस्री मिन्झिमका लोक-धातु कहलाती है। आनन्द । जितना वडा क्षेत्र हि-सहस्री मिन्झिमका लोक-धातु कहलाती है। आनन्द । यित तथागत आकाक्षा करे तो त्रिसहस्री महासहस्री लोक-धातु कहलाती है। आनन्द ! यित तथागत आकाक्षा करे तो त्रिसहस्री महासहस्री लोक-धातुको स्वरसे सूचित कर सकते है अथवा और भी जहाँ तक आकाक्षा करे।"

"भन्ते । भगवान् त्रिसहस्त्री-महासहस्त्री-लोक-घातुको अथवा जहाँ तक आकाक्षा करे----उस सारे प्रदेशको स्थरसे कैसे सूचित करेगे ?

"आनन्द । तथागत त्रिसहस्री-महासहस्री लोक-धातुको अपने प्रकाशसे प्रकाशित कर सकते हैं और जब वे प्राणी उस आलोकको पहचान ले तो तथागत घोषणा कर सकते हैं, शब्दो द्वारा अनुशासन कर सकते हैं। इस प्रकार आनन्द तथागत आकाक्षा करे तो त्रिसहस्री महासहस्री लोक-धातु को स्वरमे सूचित कर सकते हैं अथवा और भी जहाँ तक आकाक्षा करे।"

" ऐसा कहनेपर आयुष्मान उदायीने आयुष्मान आनन्दको यह कहा— आनन्द<sup>1</sup> तुझे इससे क्या लाभ यदि शास्ता इस प्रकार ऋद्विमान हो अथवा ऐसे प्रतापी हो ? "

ऐसा कहनेपर भगवान्ने आयुष्मान उदायीको यह कहा—" उदायी। ऐसा मत कहो। उदायी। ऐसा मत कहो। उदायी। यदि आनन्द बिना वीतरागी हुए शरीर छोडे तो वह इसी चित्तकी प्रसन्नताके कारण देवलोकमें सात वार देव-राज्य करे अथवा इसी जम्बुद्वीप में महाराजा वने। लेकिन उदायी। आनन्द इसी शरीरमें परिनिर्वाणको प्राप्त होगा।" (61)

"मिन्नुको ने तीन वानको समन-वर्षम्य है। कीनसे तीन? सेव्हार खीतका पानन करना सेव्हार-पिन्नुकी विद्या बहुन करना तथा सेव्हार-प्रताको विद्याका बहुद करना। पिन्नुको ने तीन समनके मन-कर्डम्य है। इविक्ये पिन्नुको ऐसा सीवता चाहिये—सेव्हार-पीन पाननके निमे हागा विद्या प्रयास होगा सेव्हार-पिन्नु-पिन्नाके निमे हगारा तीन प्रयास होगा सेव्हार-पिन्नाके निमे हमारा तीन प्रयान होगा। पिन्नुको हमी प्रकार सीवना चाहिये।

"मेरे पितृको कोई यहा बैक्कि समूहके पीछे पीछे हैं के—" हम सी हैं।
इस भी हैं। उसका न वैसा पर होना है बैदा बैक्किंश न वैसी बाजब होती हैं
जैनी बैक्किंश न वैसे पीच होते हैं जैसे बैक्किंश न वैसे कोई कोई पितृ
पद्मार के पीछे पीछे बकता एता है— में भी मिलु हैं, में भी मिलु हैं।
जिन्नायके पीछे पीछे बकता एता है— में भी मिलु हैं, में भी मिलु हैं।
जिन्नायके पीछे पीछे बकता एता है— में भी मिलु हैं, में भी मिलु हैं।
जिन्नायके पीछ पीछे बकता एता है — में भी मिलु हैं।
जिन्नायके पर पेप्टराप्तीकर पायनके किमें वैद्या प्रमास होता है जैसा बन्य
विज्ञानका, न थेप्टराप्तीक पित्रोक किमें वैद्या प्रमास होता है जैसा बन्य
विज्ञानका, न थेप्टराप्तीक पित्रोक किमें वैद्या प्रमास होता है जैसा बन्य
विज्ञानका, न थेप्टराप्तीक पित्रोक किमें वैद्या प्रमास होता है जैसा बन्य
विज्ञानका, न थेप्टराप्तीक प्रमास किमें वैद्या प्रमास होता है जैसा बन्य
विज्ञानका साम होता है जैसा बन्य
विज्ञानका साम होता है जैसा बन्य

"इनसिये यही पितृयों यही गीवता चाहिये—पेकतर-योक पाननके किये हमार तीह प्रसान हामा शेप्तर-पित-पिसाके निमे हमारा तीह प्रसान होगा भेडनर प्रसा-विकाले निये हमारा तीह प्रयान होगा। पिमृतो हमी प्रकार मीतना चाहिय।

(८२)

"भिश्वो इरक-मुहाकडे जिये ये तीन पूर्व-इस्य है। कीनमे तीन? विश्वो इरक-मृगांत सावकानीने गरारो अच्छी तरह जोनकर निर्देगे ठीक करना है नावकानीने गंतको अस्पी तरह जोनकर निर्देश ठीक करके नवस्पर वीत बीना है नवस्पर बीज बीकर वानी देना की है धोहना जी है। निश्वो इक्स-मृग्यकी निर्देश तीन पूर्व-इस्य है।

"इसी प्रकार किस्कृति सीत भिष्मु-पूर्व-कृत्व है। कीतने सीत ?

"श्रेप्ठतर शीलका ग्रहण, श्रेप्ठतर चित्त-शिक्षाका ग्रहण, श्रेप्ठतर प्रज्ञा-शिक्षाका ग्रहण। भिक्षुओ, ये तीन भिक्षुके पूव-कृत्य है। इसलिये भिक्षुओ, यह सीखना चाहिये —श्रेप्ठतर शील पालनके लिये हमारा तीग्र प्रयास होगा, श्रेप्ठतर-चित्त-शिक्षाके लिये हमारा तीग्र प्रयास होगा, श्रेप्ठतर-प्रज्ञा-शिक्षाके लिये हमारा तीग्र प्रयास होगा। भिक्षुओ, इमी प्रकार सीखना चाहिये।"

# (८३)

ऐसा मैने सुना। एक समय भगवान् वैशालीमें, महावनमें, कूटागार-शालामें विहार करते थे। उस समय एक विज्ज-पुत्र मिक्षु जहां भगवान् थे वहाँ पहुँचा . . एक ओर वैठे उस विज्जि-पुत्र भिक्षुने भगवान् को यह कहा—

"भन्ते । यह डेढ सौ शिक्षा-पद प्रत्येक आधे- महीने पर पाठ किये जाते हैं। ये अधिक है। भन्ते । मैं इतने शिक्षा-पद नहीं पालन कर सकता।"

" मिक्षु <sup>1</sup> क्या तू तीन शिक्षा-पदोका पालन कर सकेगा—शील-सम्बन्धी शिक्षा-पद, चित्त-सम्बन्धी शिक्षा-पद, प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षा-पद <sup>?</sup> "

" मन्ते । मैं इन तीन शिक्षा-पदोको—शील सम्बन्धी शिक्षा-पदको, चित्त सम्बन्धी शिक्षा-पदको और प्रज्ञा सम्बन्धी शिक्षा-पदको पालन कर सकूँगा।"

"इसिलये तू भिक्षु तीन शिक्षा-पदोको ग्रहण कर—शील सम्बन्धी शिक्षा-पदको, चित्त सम्बन्धी शिक्षा-पदको तथा प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षा पदको। हे भिक्षु ! क्योंकि तू शील-सम्बन्धी शिक्षा-पदका भी पालन करेगा, चित्त-सम्बन्धी शिक्षा-पदका भी पालन करेगा, तथा प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षा-पदका भी पालन करेगा, इस लिये तेरे रागका भी प्रहाण हो जायेगा, द्वेषका भी प्रहाण हो जायेगा, मोहका भी प्रहाण हो जायेगा। इस प्रकार राग, द्वेष तथा मोहका प्रहाण हो जानेके कारण जो अकुशल-धर्म है उससे तू बचेगा और जो पाप-कर्म है उसे न करेगा।"

तव उस भिक्षुने आगे चलकर शील सम्बन्धी शिक्षाका भी अम्यास किया, चित्त सम्बन्धी शिक्षा का भी अम्यास किया, प्रज्ञा सम्बन्धी शिक्षाका भी अम्यास किया। उसके शील, चित्त तथा प्रज्ञा सम्बन्धी शिक्षाओं के अम्यास करनेसे उसके राग, द्वेष तथा मोहका प्रहाण हो गया। राग, द्वेष तथा मोहका प्रहाण हो जानेके कारण वह अकुशल-धर्म से बचा रहा तथा उसने पाप-कर्म नहीं किया।

(X)

उस समय एक शिक्षुणही भगवान वे नहीं पहुँचा। एक कोर नैठा अन्नानहीं भिक्ष मगवानसे यह नोसा----

"मन्ते! चीत पीत कहते हैं। क्या होने से सेस होता है!"

"भिज्, सीवता है इसलिये धैस कहवाता है। । :

" नया सीवात है ? सील सम्बन्धी विशासहण करता है। विशासम्बन्धी विशासहण करता है। राजा प्रशासमध्ये। सिशासहण करता है। इसी किये वह मिल्लु क्षेत्र, कहलाता है।"

सेबस्स सिन्धमानस्य अनुमन्मानुसारिमो

समस्य सम्बन्धानस्य अनुसम्मानुसारमा सम्मान्यसम्बन्धाः सन्तरस

वयास्य पद्म बाव एका बन्द्राः बनवरा वदो बन्द्रादिशवस्य बाव ने होति वादिनो

बङ्ग्या मे बिमुत्तीति धवर्सयोजनस्वये

[को पिकापी है जो बैस है को खुबमार्पपर नकते वाका है बुने पहले (दुःच) बय के (मार्च के) विववने जान होता है उनके बाद प्रवाकी प्राप्त होती है, तब तस स्पर-नित्तको प्रवा हारा निम्मितका जान होता है वह बानता है कि संयोजनोका सम हो गया और अब मुझे अनम-निम्मित प्राप्त हो नहें।]

(८५)

(\*\*) भिज्ञानों यह नो बेड़ की 'निमिन' चित्रापत हूं यह प्रति जाने महीने पाठ किये बाठे हैं स्थिते वाल्प-हिट चाहने सांके कुल-पुत्र चीवाटे हैं। विज्ञानों से सती तीत विज्ञानोंके नजर्वत मा बारो हैं। कोतारी तीत?

धीर-सम्बन्धी विक्ता विक-सम्बन्धी विक्ता प्रज्ञा-सम्बन्धी विक्रा । भिक्तको वैदीन विकार्जे है नितके अन्तर्गेद से समी आ बादे हैं ।

भिजुनी ने तीन सिखानें है जिनके अन्तर्गेत से सभी था कादे हैं। "सिखानें भिन्न सीखोचा शासन काने नाका होता है व

भीनजुनी पिशु बीकोका पासन करने नाका होता है धनाधि तथा प्रवाका तो सदानक। नह सो कोटेनड़े रोग है जन्हें स्टाता भी है उनते मुख्य होता भी है। वह किस किसे? में भे ऐता हो उसना बदानकर नहीं कहा है। को बादिनहरूपन्यीक धिशान्यद है जो भेट जीनकर बनुकृत विशास है उनके विवसमें वह स्विट-बील होता है सिक्ट-बीक नह पिशान्यरोको धनक पहल करता है। तीन धंबोननीका ब्राम हो बानेपर घोतायम होता है पतन-मुख्य नोधि-बादित निविदत । "मिधुओ, भिधु शीलोका पालन करनेवाला होता है, नमाधि तया प्रजाका भी ययावल। वह तो छोडे-बछ दोप है उन्हें करता भी है, उनसे मुगत होता भी है। यह किम लिये? मैने ऐसा हा सकता असम्भव नहीं कहा है। जो आदि- यहाचय्यक विधा-पद है, जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूठ विधा-पद है, उनके विषयमें वह स्थिरगील होता है, स्थित-पील, वह विधा-पदोको सम्यक् ग्रहण करता है। तीन सर्वोजनोका धय हो जानेपर राग, देप तथा माहके कम हो जानेपर वह सरुदागामी होता है, एक ही बार और इस लोकनें आकर दु सका धय करता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु घीलोका पालन करने वाला होता है, समाधि तया प्रज्ञाका भी यया-वल। वह जो छोटे बटे दीप हैं उन्हें करता भी हैं, उनने मुक्त होता भी हैं। यह किस लिये के मैने ऐसा हो सकना असम्भव नहीं कहा है। जो आदि-प्रह्मचर्यंक शिक्षापद हैं, जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल शिक्षा-पद हैं, उनके विषयमें वह स्थिर शील होता हैं, स्थित-शील, वह शिक्षा-पदोको सम्यक् ग्रहण करता है। वह निम्न-स्तर-के पाँच सयोजनोका क्षय कर ब्रह्मलोकमें ही उत्पन्न होनेवाला होता है, वहींसे निर्वाण को प्राप्त होने वाला, वह उस लोकमे लौटने वाला नहीं होता।

"भिक्षुओं, भिन्नु शीलोका पालन करनेवाला होता है, ममाधि तया प्रज्ञाका भी यया-चल। वह जो छोटे-चडे दोप है उन्हें करता भी है, उनसे मुक्त होता भी है। यह किम लिये ? मैने ऐसा हो सकना असम्भव नहीं कहा है। जो आदि ब्रह्मचर्यंक शिक्षापद है, जो श्रेष्ठ-जीवनके अनुकूल शिक्षा-पद है, उनके विषयमें वह स्थिर-शील होता है, स्थित-शील, वह शिक्षा-पदोको सम्यक् ग्रहण करता है। वह आस्रयोका क्षय करके, अनास्त्रव-चित्तकी विमुक्तिको, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वय जानकर, साक्षातकर, प्राप्त कर विहार करता है।

"भिक्षुओ, अपूर्ण रूपसे (सीमित क्षेत्रमें) पालन करनेवाला अपूर्ण रूपसे पालन करता है, सम्पूर्ण रूपसे पालन करतेवाला सम्पूर्ण रूपसे पालन करता है, लेकिन किसी भी रूपमें शीलोका पालन न्यर्थ नहीं ही होता।"

(८६)

"यह जो डेढ़ सौ 'अधिक' शिक्षापद हैं, यह प्रति आधे-महीने पाठ किये जाते हैं, जिन्हें आत्म-हित चाहने वाले कुल-पुत्र सीखते हैं। भिक्षुओ, ये सभी तीन शिक्षाओंके अन्तर्गत आ जाते हैं। कौन सी तीन? " धोल-सम्बन्धी सिक्षा चित्रा चित्रा सिक्त स्वान्ध्यन्थी शिक्षा । मिलुबो ये तीन सिक्तार्थे हुँ जिनके अन्तर्यंत ये सभी आ वाने हैं।

" भित्रुको भित्रु बीकोंका पासन करनेवामा होता है समाधि तथा
प्रमाका भी सवा-का । यह को बोटे-नहे दोर है छन् करता भी है, उनसे मुक्त
होता भी है। यह किए मिस्नी? मैंने ऐसा हो सकना सस्मयन नहीं कहा है। जो
सारि-हहाव्यमंत्र शिका-यह है को सेस्ट जीवनके बनुकू शिका-यह है उनके विवसमें
बह क्विर-सीत होता है कित-सीक वह भिका-योको सम्मय पहन करता है। वह
सीत संसीवनोंका स्वय करके जीवकों सिक सारा बहा कम्म प्रहुक करतेवामा होता है
सारा बनम तक देव-मीति वा मनुष्य-मीतिनों कम्म प्रहुप करके दुक्का नाथ करता है।
बह सीत स्वीवनोंका स्वय करके कोवकोंक होता है वर्वाद दो सा सीत कम्म प्रहुप करके दुक्का नाय करता है। यह सीन स्वीवनोंका स्वय करके एकबीती होता है
स्वात् एक ही वार मनुष्य-वेह भारत क्वावन स्वय करता है। तीन स्वयोवनोंका
स्वाद हो जानेपर पर से हर तथा मोहके कमा हो जानेपर वह सक्वायामी होता है
एक ही बार बीर एस कोकनें जाकर हुकका सर करता है।

सिद्दानी भिन्नु चीकिंका पाकन करनेवाला होता है चलायि तथा प्रश्नाका भी प्रश्नानक। यह जो कोटे-नवे दाय है उन्हें करका भी है जनते मुक्त होता भी है। यह किए किये? मेने ऐसा हो सकना नग्नमन नही कहा है। यो ज्ञादि-वहुम्बर्गक विशास है को भेट कीकन के मत्यूक्त विकास है उनके विषयमें यह सिन्द-तीक होता है स्किट-नीम वह विज्ञा-प्रोको सम्बन्ध करके करणा है। यह वह निन्द-तरके भीच कोरम्माधि-संधीनतीका जब करके उपने-मांगे होता है प्रशन्ती जोर न वालेवाका। यह निन्द-तरके भीच जोरम्माधी-प्रयोजनोका दास करके तसक्तानिका सम्बन्ध करके उनक्ष्य-पिनिकान करके उपने जोरम्माधी-स्वाप्तिकार सम्बन्ध करके उनक्ष्य-पिनिकान स्वाप्त होता है वह निम्त-तरके भीच कोरमाधीन स्वाप्तिकारीका सम्बन्ध करके उनक्ष्य-पिनिकान्याप्त होता है वह निम्त-स्वारके पीच कोरमाधीन संबन्ध करके उनक्ष्य-पिनिकान्याप्त होता है वह निम्त-

भ मिसूबों मिसू बीफोका पासन करनेवाला होता है, उपानि उचा प्रतस्त्रा ती प्रचानक। वह वो कोट-मोटे बीच है जहें करणा भी हैं। कारी पुन्त होता भी है। वह बिच फिसे ? मेरे ऐसा हो उक्ता नाउमत कही कहा है। वो बारि-बहुम्बति प्रिक्षा-वह हैं को मेर्ड-बीरनके वनुकृत पिशा-वह है उनके विवसमें वह स्थित-बीक होता है, स्थित-शील, वह शिक्षापदोंको सम्यक् गहण करता है। वह आस्रवोका क्षय करके, अनास्रव चित्त-विमुक्तिको, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है।

"भिक्षुओ, अपूर्ण रूपसे (=सीमित क्षेत्रमें)पालन करनेवाला अपूर्ण रूपसे रे पालन करता है, सम्पूर्ण रूपसे पालन करनेवाला सम्पूर्ण रूपसे पालन करता है, लेकिन किसी भी रूपमें शीलो का पालन व्यर्थ नहीं होता।

### (८७)

"यह जो डेढ़ सौ 'अधिक' शिक्षापद है, यह प्रति आधे महीने पाठ किये जाते हैं, जिन्हें आत्म-हित चाहनेवाले कुल-पुत्र सीखते हैं। भिक्षुओ, ये सभी तीन शिक्षाओं के अन्तर्गत आ जाते हैं। कौन सी तीन ?

"शील-सम्बन्धी शिक्षा, चित्त-सम्बन्धी शिक्षा, प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षा। मिसुओ, ये तीन शिक्षायें है, जिनके अन्तर्गत ये सभी आ जाते हैं।

"भिक्षुओ, भिक्षु शीलोका पालन करनेवाला होता है, समाधि तथा प्रक्षाका भी यथा-वल। वह जो छोटे-वडे दोष हैं उन्हें करता भी हैं उनसे मुक्त भी होता हैं। यह किस लिये? में ने ऐसा हो सकना असम्भव नही कहा है। जो आदि ब्रह्मचर्य्यक शिक्षा-पद हैं, जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल शिक्षापद हैं उनके विषयमें वह, स्थिर-शील होता है, स्थित-शील। वह शिक्षा पदोको सम्यक् ग्रहण करता है। वह आस्रवोका क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्तिको, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इमी शरीरमें स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्तकर विहार करता है।

"अथवा यदि अर्हत्व प्राप्त न हो तो वह अनागामी निम्न-स्तरके पाँच ओरम्भागीय सयोजनोका क्षय करके बीचमें ही परिनिर्वाणको प्राप्त होने वाला होता है। यदि वैसा भी न हो तो वह निम्न-स्तरके पाँच ओरम्भागीय सयोजनोका क्षय करके उपहत्य-परिनिर्वाण प्राप्त होता हैं असस्कार-परिनिर्वाण प्राप्त होता है

सस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। वह निम्न-स्तरके पाँच ओरम्भागीय सयोजनोका क्षय करके सूर्घ्य-गामी होता है, पतनकी ओर न जानेवाला। यदि वैसा भी न हो तो तीन सयोजनोका क्षय हो जाने पर, राग, द्वेष तथा मोहके कम हो जाने पर वह सक्तवागामी होता है, एक ही बार और लिस लोकमें आकर दुःखका क्षय करता है। यदि वैसा भी न हो तो तीन सयोजनोका क्षय

हो भाने पर वह 'एक-बीनी' होता है भर्वात् एक डी बार मनव्य-देह बारव कर कुण्यका नाम्य करता है। यदि वैद्या भी न हो दो दीनों संबोबनोंका सब हो भाने पर वह कोडकोल होता है अर्थात दो या तीन कम्प्रवहत करके कु वका नास करता है। यदि वैसा भी न हो तो तीनों संयोजनोंका सब हो जाने पर वह अधिक-से-अधिक सात बार जन्म धहन करनेवाला होता है सात चन्म तक देव-योति वा मनुष्य-योतिमें अन्म प्रहुम करके दुःखका नास करते

वाला होता है। भिज्ञो अपूर्व स्पते (= सीमीठ क्षेत्रमें) पालन करनेवाका अपूर्व रूपते पासन करता है सम्पूर्व रूपसे पासन करनेवाला सम्पूर्व रूपसे पासन करता है छेकिन किसी भी कपर्ने भीकोंका पाकन व्यर्व नहीं ही होता।"

> (22) "पिश्रवो वेतीन सिसार्वे है। कौन सी तीन ?

<sup>9</sup> सील सम्बन्धी शिक्षा वित्तं सम्बन्धी शिक्षा तना प्रता सम्बन्धी शिक्षा।

"विद्यानो चील-सम्बन्धी विकास्याई"? "पिश्रको निभूतदाचारी होता है सम्पन्न प्रहम करता है।

विकासी बद्धारै श्रीत-सम्बन्धी विका।

मिस्रको विच-सम्बन्धी किसा क्या है?

जिसको जिल्लान-मोर्गेषे दूर हो **चतुर्व-स्थान प्राप्त कर** विद्वार करता है। भिसनो यह ई विश्त-सम्बन्धी विद्याः

<sup>अ</sup> मिल्लो प्रज्ञा-सम्बद्धी विशास्या है?

"भिज्ञा निकृषहुत्त है इसे यवार्वकम से जानता है ब्यानिरोध की मोर के भाने वाला मार्ग हैं इते नवार्व-रूप से भानता है। धिसुओ बह है प्रज्ञा-सम्बन्धी विका।

"पिस्रको ये धीनौँ विकार्ये है।"

(43)

"जिलाओं ये तीन विद्यार्थे हैं। कौन सी तीन रै

चीत-सम्बन्धी-विद्याः वित्त-सम्बन्धी विद्या दवा प्रश्ना-सम्बन्धीः विद्या ।

भिश्रजो शील-सम्बन्धी शिक्ता स्था है?

" भिक्षुओ, भिक्षु सदाचारी होता है . सम्यक् ग्रहण करता है। भिक्षुओं, यह है शील-सम्बन्धी शिक्षा।

"भिक्षुओ, चित्त-सम्बन्धी शिक्षा क्या है ?

"भिक्षुओ, भिक्षु काम-भोगो से दूर हो चतुर्थ-ध्यान प्राप्त करं विहार करता है। भिक्षुओ, यह है चित्त-सम्बन्धी शिक्षा।

"भिक्षुओ, प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षा क्या है ?

"भिक्षुओ, भिक्षु आस्रवो का क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्ति को, प्रज्ञा की विमुक्ति को, इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, यह है प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षा। भिक्षुओ, ये तीन शिक्षायें है।"

अधिसील अधिचित्त च अधिपञ्ज च विरियवा थामवा धितिमा झायी सतो गुत्तिन्द्रियो चरे यथा पुरे तथा पच्छा यथा पच्छा तथा पुरे यथा अधो तथा उद्ध यथा उद्ध तथा अधो यया दिवा तथा रिंत यथा रिंत तथा दिवा अभिभूच्य दिसा सब्बा अप्पमाणसमाधिना त बाहु सेख पटिपद अथो ससुद्धचारण त आहु लोके सम्बुद्ध धीर पटिपदन्तगुं विञ्जाणस निरोधेन तण्ह्क्खयविम्तिनो पज्जोतस्सेव निन्वान विमोखो होति चेतसो।

[जो प्रयत्न-शील है, जो सामर्थ्यवान है, जो धृतिमान है, जो ध्यान करने वाला है, जो स्मृतिमान है, जो सयमी है, उसे चाहिये कि वह शील-सम्बन्धी, चित्त-सम्बन्धी तथा प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षाओं के अनुसार आचरण करे। जैसे पहले (तीनो शिक्षाओं का पालन करता है) वैसे ही वाद (में करे), जैसे बाद में वैसे ही पहले, उसी प्रकार जैसे (शरीर के) निचले हिस्से के प्रति (प्रतिकूल भावनी रखता है) वैसी ही कपर के हिस्से के प्रति प्रतिकूल भावना रखे, जैसी कपर के हिस्से के प्रति (प्रतिकूल भावनी रखता है), वैसी ही निचले हिस्से के प्रति। जैसे दिन में तीनो प्रकार की शिक्षाओं के अनुसार चलता है, वैसे ही रात में, जैसे रात में वैसे ही दिन में चले। इस प्रकार असीम समाधि द्वारा जो सभी दिशाओं को ढक

देता है वही क्षेप्र-मार्ग है। जो भोक में सम्पन्न प्रकार पूढावारी है जगी को मानुक कहते हैं जबी को बीर कहते हैं जबी को मार्ग के क्ला तक बाते वाका कहते हैं। विवान का निरोब होन पर पृथ्वा के सम्पन्नक प्राप्त मृक्ति वासे कहे, प्रदीप के निर्वाप की तथ्य दिया का मोख प्राप्त होता है।]

(1)

एक समय महान् मिसू सम के साम मनवान् कोसक (-जनपद) में चारिका करते करते वहाँ कोसभी का पञ्चा नाम का निगम वा बहाँ पहुँकी पुढ़ी भगवान् पञ्चाम में विहार करते के पञ्चाम नाम के कोसको के निगम में।

बस समय कारप्यभीन नामक मिस्नु पहुमा में एता बा: बही प्रपत्तन् विकानस्युक्त प्राप्तिक कवा से मिस्नुको का सिक्तम करते वे उन्हें प्रीरित करते ने उन्हें तक्ताहित करते ने उन्हें हॉबत करते ने। उत समय बन भववान् विज्ञानस्यमुक्त धानिक कवा से मिन्नुको का सिराम कर रहे ने उन्हें प्रीरित कर रहे ने उन्हें उत्साहित कर रहे ने उन्हें हॉवत कर रहे में उत समय कारप्यन्तीय मिन् के मन में मबान्ति हुई, असन्तीय हुवां—बहु समय बना-बनाकर मीडी-मीडी बारों कर रहा है।

तन प्रवान् पहुना में बना-पनि विद्यार कर जियर धनपृद्ध है उसर चारिका के किये तिकक पड़े। कमन चारिका करते हुने नहीं रावनृद्ध वहीं पहुने। नहीं मतनान रावगृह में मुख-सूद पर्वत पर विद्यार करते ने।

ता प्रवान के बके बाते के बोडों देर बाद काल्यय-नोत मिलु के मन में बीइस्त हुना परचारात हुना—यह मेरे जानाम की ही बाद हूँ बाम की नहीं है, यह मेरा हुक्ति हो हैं पुलाम माहें हैं भी मत्त्राम के दिखा-सब्दुल्त बार्तिक-क्या के मिलुनों को हिस्स करते समय कर्ने मेरीय करते समय करने हात्राक्षित करते तथा बन्ते हुन्ति करते तम मेरे मन में बचानि हुई, बस्तान हुना—यह समय बना-नाकर मोठी-मीठी बारों कर प्या है। क्यो न में बही प्रयान हैं बही बार्त और बाकर प्रावान के समने बपना बस्त्राम बस्ताम के सम में स्वीदा करते

श्वन कास्यप्रनोत्र भिन्नु घवनायन को क्येट, पात-बीवर के बहुई सवगृह है बहुई पहुँचा। क्रमक नहीं स्थान्ह, नहीं पृथ्य-कृट पर्वत बहुई धवहान से वहीं पहुँचा। पहुँच कर, अभिवादन कर एक ओर वैठा। एक ओर वैठे काश्यप-गोत्र भिक्षु ने भगवान् से यह कहा---

"भन्ते। भगवान् एक समय पद्भुधा में विहार कर रहे थे, पद्भुधा नाम के कोशलो के निगम में। वहाँ भगवान् ने शिक्षा-पद-युक्त धार्मिक कथा से भिक्षुओ का शिक्षण किया, उन्हें प्रेरित किया, उन्हें उत्साहित किया तथा उन्हें हर्षित किया। उस समय जब भगवान् शिक्षा-पद-युक्त धार्मिक कथा से भिक्षुओ का शिक्षण कर रहे थे, उन्हे प्रेरित कर रहे थे, उन्हें उत्साहित कर रहे थे, उन्हे हर्षित कर रहे थे, उस समय मेरे मन में अशान्ति हुई, असन्तोष हुआ- यह श्रमण बना-बना कर मीडी-मीठी वार्ते कर रहा है। तब भगवान् पद्भ्वा में यथारुचि विहार करके जहाँ राजगृह है वहाँ चारिका के लिये निकल पडे। भन्ते । भगवान् के चले आने के थोड़ी ही देर वाद मेरे मन में कौकृत्य हुआ, पश्चाताप हुआ---यह मेरे अलाम की ही बात है, लाभ की नही है, यह मेरा दुर्लाभ ही है, मुलाभ नही है जो भगवान् के शिक्षा-पद-युक्त धार्मिक कया से मिक्षुओ का शिक्षण करते समय, उन्हें प्रेरित करते समय, उन्हे उत्माहित करते समय, उन्हें हिंपत करते समय मेरे मन में अशान्ति हुई, असन्तोष हुआ--यह श्रमण बना बना कर मीठी-मीठी वार्ते कर रहा है। न में जहाँ भगवान् है वहाँ जाऊ, और भगवान् के पास अपराध को अपराध के रूप में स्वीकार कह<sup>ें?</sup> भन्ते । गलती हो गई जैसे मूर्ख से हो, जैसे मूढ़ से हो, जैसे अकुशल-कर्ता से हो, जो भगवान् के शिक्षा-पद-युक्त धार्मिक कथा से भिक्षुओ का शिक्षण करते समय, उन्हें प्रेरित करते समय, उन्हें उत्साहित करते समय, उन्हें हर्षित करते समय मेरे मन में अशान्ति हुई, असन्तोप हुआ-यह श्रमण बना बना कर मीठो-मीठी वात कर रहा है। भन्ते। भगवान् मेरे अपराध की अपराध के रूप में स्वीकार करे ताकि में भविष्य में सयत रह सकूं।"

"निञ्चय से काश्यप तूने गलती की, जैसे मूर्ख से हो, जैसे मूढ से हो, जैमे अकुशल-कर्ता मे हो, जो मेरे शिक्षा-पद-पुक्त धार्मिक कथा से भिक्षुओं का शिक्षण करते समय, उन्हें प्रेरित करते समय, उन्हें उत्साहित करते समय, उन्हें हिंबत करते समय तेरे मन में अशान्ति हुई, तेरे मन में असन्तोष हुआ—यह श्रमण बना बना कर मीठी-मीठी बात कर रहा है। क्यों कि काश्यप तू गलती को गलती जानकर उसे यथोचित रूप से स्वीकार कर रहा है, हम तेरी इस भूल को स्वीकार करते हैं। काश्यप!

नाम-दिश्य के बनुसार इस से उप्तित ही होती है जा अपने अपराध का अपराध के क्यायें स्वीकार करता है और महिम्म में संयत रहता है।

"है कास्पण ! चाहें कोई फिल्नू स्विवर हो केविल वर्ध कह विज्ञा-कामी नहीं विकार गहरू करने की प्रशास करने वाका नहीं जो पूर्वर विध्या-कामी निज्ञू हों जनहें चिता की बोर नहीं जाकरित करना को जो दूसरे विध्या-कामी की को जिलत समय पर बचार्य सम्बंध तारी करना कास्पर! इस प्रकार के स्विवर मिल्लू की में भी प्रसंस्त नहीं करना। यह किन्न किमें ? सास्प्र स्य की प्रसंस्त करने हैं सोच इसरे मिल्लू उस संगति कर मनते हैं। जो बस की संगत करने में तार का मनुकरण करने। जो बस का मनुकरण करने बहु उस के सिमें चित्र काम सक्कार महिल्लू करने। सो बस का मनुकरण करने बहु उस के सिमें चित्र काम सक्कार महिल्लू करने। सार सम्बन्ध का सम्वाप्त में स्व प्रकार के सिम्ल की प्रसंसा गढ़ी करना।

हे कास्त्रय ! याहे कोई मिश्रु बीय की बायु का हो, याहे कोई मिश्रु मात्र हो बेकिन नार्य यह बिसा-कामी नही विकास बहु करने की प्रमंत्र अपने वाद वाद करने की प्रमंत्र अपने वाद वाद करने की प्रमंत्र अपने वाद वाद करने की हुए दे विकास कामी मिश्रु हों उन्हें विकास की कोर आकर्षित नहीं करता हो थी दूसरे विकास-कामी मिश्रु हों उनकी जनित करता हो काम्यर ! इस प्रकार के नवे मिश्रु की भी नै प्रवता नहीं करता । यह किश्रु मिश्रु खारता इस की प्रदेश करती है थी कह इसरे मिश्रु खारता इस की प्रदेश करता है थी कह इसरे मिश्रु खारता इस की व्यवस्था करता हो थी वाद कर वाद करता है। भी उन की प्रमंत्र करने वे उस का अनुकरण करेंगे । थी उन की प्रमंत्र करने वे उस का अनुकरण करेंगे। थी उन का स्वकृत्य करेंगे। यह उस की हारण होता। इस किश्रे का स्वकृत के सामन हो स्वा की स्वा प्रमा का सामन हो करता।

द्विकारवर्ग । याहे कोर्द मिश्रु स्वितर हो लेकिन यदि वह धिका कामी हो धिका बहुत करने की प्रधंसा करने वाला हो यो दूतरे क-विशा वाली मिल हो जब्दे धिका की बोर आकरित करता हो वो दूतरे दिका-नानी बिल्नु हों उनकी उत्तिन समय पर स्वार्थ स्वत्वी प्रमंशा करता हो वास्पर ! इन प्रवार के स्वतिर मिल्नु को भे प्रथमा करता हैं। यह किस निले? धारता इस वो प्रधान करते हैं सोच हुएरे मिल्नु उस की स्वति वर स्वति हैं। यो उस की कर्मत वरेले वे बज का अनुकरक होने। यो उस वा अनुवरण वरेले वह बन के निले सिर वास सकता है। पुक्क के किसे होगा। इस नियं वास्पर! में इस प्रवार के निले वी प्रधान वरता हूं। "हे काज्यव । चाह कोई मिक्षु 'बीच की आयु' का हो चाहे कोई मिक्षु 'नया' हो, लेकिन यदि वह दिक्षा-कामी हो, जिला ग्रहण करने की प्रश्मा करने वाला हो, जो दूसरे अजिक्षा-कामी मिक्षु हो उन्हें जिला की ओर आकर्षित करता हो, जो दूसरे जिला-कामी भिक्षु हो उन की उचित समय पर यथायं गच्ची प्रश्मा करना हो, काश्यप । इस प्रकार के नये मिक्षु की में प्रश्मा करता हाँ। यह किम लिये ? 'शास्ता इस की प्रशसा करते हैं' सोच दूसरे मिक्षु उस की भगति कर सकते हैं। जो उस की सगति करेंगे वे उस का अनुकरण करेंगे। जो उसका अनुकरण करेंगे वह उन के लिये चिर काल तक हित सुख के लिये होगा। इस लिये काज्यव । में इस प्रकार के भिक्षु की प्रशसा करना हैं।"

### (9?)

"भिद्मुओ, कृषक-गृहपति के लिये ये तीन अनिवार्य कर्तव्य है। कौन से तीन?

"भिधुओ, कृपक-गृहस्य शीघ्र-शीघ्र खेत में हल जोत कर उस की मट्टी ठीक करता है, शीघ्र-शोघ्र खेत में हल जोत कर मट्टी ठीक करके बीजो को बोता है, तया शीघ्र-शीघ्र बीजो को बोकर शीघ्र-शीघ्र पानी देता भी है, बन्द भी करना है। मिक्षुओ, ये तीन कृपक-गृहस्य के अनिवार्य कर्तव्य है।

"भिक्षुओ, उस कृपक-गृहस्य के पास ऐसा कोई ऋदि-वल या प्रताप नही है, जिस से वह यह कर सके कि आज ही यह धान उग जायें, कल दाने पड जायें और परसो पक जायें। भिक्षुओ, समय आता है जब उस कृपक-गृहस्य के वे धान उगते भी है, उन में दाने पडते भी है और वे पकते भी ह।

"इसी प्रकार मिक्षुओ, ये तीन मिक्ष के अविलम्य करने योग्य अनिवार्य कर्तव्य है। कौन से तीन ?

"शील-सम्बन्धी शिक्षा का ग्रहण, चित्त-सम्बन्धी शिक्षा का ग्रहण, तथा प्रज्ञा-सम्बन्धी शिक्षा का ग्रहण।

" मिक्षुओ, ये तीन भिक्षु के अविलम्ब करने योग्य अनिवार्य कर्तव्य है।

" मिक्षुओ, उस मिक्षु का ऐसा कोई ऋद्धि-वल या प्रताप नही होता जिस से वह कह सके कि आज ही उपादान-रहित हो मेरा चित्त आस्रव-विमुक्त हो जाये, कल हो जाय अथवा परमो हो जाये। लेकिन भिक्षुओ। समय आता है जब शील, विशं त्या प्रमा सम्बन्धी शिक्षाओं के अनुसार आवरण करते करते उपाधान-रहित हो विश्व आसव-विश्वनत हा आता है।

इस मिसे विसुत्रों सह सीतना चाहिये—धेरठतर ग्रीक पासन के निसे हमारा ठीन प्रयास होगा थेरठतर चित्त-सिक्का के क्रिये हमारा ठीन प्रयास होगा भेरठतर प्रजा-सिक्का के निसे हमारा ठीन प्रयास होगा। मिस्तुजो इती प्रकार शोतना चाहिये।

(९२)

पिछ्नारे, जन्म-मठो के परिवादक तीन प्रकार के एकान्तो (=प्रविदेको) की बात करते हैं। कीन से तीन प्रकार के? "वीदर सम्बन्धी एकान्त्र पिछपात (=पोदन) सम्बन्धी एकान्त्र तथा

" শীৰৰ ধনৰাখী ত্ৰাত (বিষয়াত (= দীৰৰ) ক্ৰান্থ চুৰাত ধৰা ধননাধৰ ক্ৰমণাৰী ত্ৰাতঃ

"मिसूनो जन्मनर्थों के परिवासकों का जीवर सन्तन्धी एकान्य इस प्रकार है—से सन के कपने भी सारण करते हैं सन-सिभित कपने भी पहनते हैं जिल्लाम ( कपनो भी पहनते हैं जिल्लाम करते हैं सिभित (सुन के से सिभित (सुन की सहनते हैं सिभित (सुन की सहनते हैं सिभित (सुन की बात की पहिनो है सिभित (सुन की बात की पहिनो से सुन बरण भी पहनते हैं क्षम ना बना बरण भी पहनते हैं काम (=भाक) के बहन भी पहनते हैं एक के सामो का बना करनक भी पहनते हैं एक के सामो का बना करनक भी पहनते हैं एक के सामो का बना करनक भी पहनते हैं है को से साम करनक भी पहनते हैं एक के सामो है। मिसूनो बन्द पत्री के परिवासने का जीवर सामस्त्री एकान्य इस प्रवास है। मिसूनो बन्द पत्री के परिवासने का जीवर सामस्त्री एकान्य इस प्रवास है।

निम्नों सन्य मठों के परिवासकों का पिष्णात (= प्रोसन) छानाभी एकान्त इस प्रकार है— से घार कारों वाके भी होते हैं। स्थासक बारों वाके भी होते हैं नीवार (-धान) के बारों वाल भी होते हैं बसुक (-धान) के बारों बाके भी होते हैं हट (-धान) के बारों बाते भी होते हैं टूटे धान (= क्यों) के बारों बाते भी होते हैं, माण्य कारों वाके भी होते हैं बकी बारों बाते भी होते हैं तिनके बारों बाते में होते हैं भीवर बारों बाते भी होते हैं अंधन के पेड़ों हो गिरे सकों को बातर ही खुरों बाके भी होते हैं। "भिक्षुओ, अन्य मतो के परिक्राजको का शयनासन सम्बन्धी 'एकान्त' इस प्रकार है—आरण्य-वास, वृक्ष के तले रहना, श्मशान में रहना, जगल में रहना, खुले आकाश के नीचे रहना, पराल की ढेरी पर रहना, तथा भूस के घर में रहना।

" भिक्षुओ, अन्य मतो के परिव्राजक इन तीन प्रकार के एकान्तों (=प्रविवेको) की बात करते हैं।

"भिक्षुओ, इस बुद्ध-शासन ( = धर्म-विनय ) में भिक्षु के ये तीन "एकान्त" है। कौन मे तीन ?

"भिक्षुओ, मिक्षु शीलवान् होता है, उस की दुश्शीलता का प्रहाण हो गया रहता है, उस से वह 'पृथक' हो जाता है, वह सम्यक् दृष्टि होता है, उस की मिथ्या-दृष्टि का प्रहाण हो गया रहता है, उस से वह 'पृथक' हो जाता है, वह सीणास्रव होता है, उस के आस्रवो का प्रहाण हो गया रहता है, वह उन से 'पृथक' हो जाता है। भिक्षुओ, क्योंकि भिक्षु शीलवान् होता है, उस की दुश्शीलता का प्रहाण हो गया रहता है, उस से वह 'पृथक' हो जाता है, वह सम्यक्-दृष्टि होता है, उस की मिथ्या-दृष्टि का प्रहाण हो गया रहता है, उस से वह 'पृथक' हो जाता है, वह सीणास्रव होता है, उस के आस्रवो का प्रहाण हो गया रहता है, वह उन से 'पृथक' हो जाता है, वह सीणास्रव होता है, उस के आस्रवो का प्रहाण हो गया रहता है, वह उन से 'पृथक' हो जाता है, सार-प्राप्त कहलाता है, शुद्ध कहलाता है, सार में प्रतिष्ठित कहलाता है।

"भिसुओ, जैसे किमी कृपक-गृहस्य का धान का खेत तैयार हो। कृपक-गृहस्य उसे जल्दी-जल्दी कटवाये, जल्दी-जल्दी कटवाकर उसे जल्दी-जल्दी इकट्ठा कराये, जल्दी-जल्दी इकट्ठा कराये, जल्दी-जल्दी उठवाये, जल्दी-जल्दी उठवाये, जल्दी-जल्दी उठवाकर उस का ढेर लगवाये, जल्दी-जल्दी उस का ढेर लगवाकर जल्दी-जल्दी मरदन कराये, जल्दी पराल पृथक कराये, जल्दी जल्दी पराल पृथक कराये, जल्दी जल्दी पराल पृथक कराकर जल्दी जल्दी भूमा पृथक कराकर जल्दी जल्दी को छाज से उडवाये, जल्दी-जल्दी छाज से उडवाकर जल्दी जल्दी इकट्ठा करवाये, जल्दी-जल्दी कुटवाये, जल्दी-जल्दी इकट्ठा करवाकर जल्दी जल्दी कुटवाये, जल्दी-जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी जल्दी कुटवाये, जल्दी-जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी कुटवाये, जल्दी-जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी कुटवाये, जल्दी-जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी कुटवाकर जल्दी जल्दी कुटवाकर कुपक-गृहस्य के वे धान अग्र-प्राप्त होगे, सारवान् होगे, शुद्ध होगे तथा सार में प्रतिष्ठित होगे। इसी प्रकार भिक्षुओं। क्योंकि भिक्षु शीलवान् होता है, उस की दुश्शीलता

का प्रदाण हो पमा पहला है। उस से बहु पुकक हो बाला है वह सम्प्रक-पृष्टि होता है उस की निष्या-पृष्टि का महाग हो पमा पहला है उस से बहु पुषक हो बाला है यह बीणाभव होता है उसके बासकों का प्रदाण हो कवा पहला है वह उस से पुषक हो बाला है——दशकिये वह अप प्रत्य कहमाला है सार प्राप्य कहमाला है पुत्र कहमाला है तथा सार में प्रतिष्टित कहमाला है।

"पिसुको येते एक्यू क्यू में वह माकाय बारतो वे निर्मक हो बाता है वह समय माकाय में अपर उठवा हुना मूर्य सारे माकाय के मैंबेरे को हुर करके वमकाय है तर देवा प्रकाशित होता है वही कार पिछलो का बार्य सारक को एक्य प्रिकृत सार ही होता है वही कार पिछलो का बार्य सारक को एक्य प्रकाश है वह सार के उत्तराक ने उत्तराक के सार बार ही तीन संयोजनो का नाय हो जाता है—सरकाय-वृद्धि का निर्मिक्ता का तथा सीम-वत परामास का। इस के बाद मिला उता स्वापाद दो अपने से पहुंचे है। यह यह काम मीमी से पुषक हो मुक्कन्यारों से पुषक को प्रकाश-यान को प्राप्त कर विहार करता है जिस में वितर्क पहुंचे है विचार पहुंचे हैं। यह यह है वो एकान्य-माय के प्रयाप कर विहार करता है जिस में वितर्क पहुंचे हैं। विचार पहुंचे हैं। विश्व में प्रकाश नाय से पहुंचे की प्रकाश नाय के स्वाप्त की से पुष्ट सार है। विश्व में से संव्याप्त कर का पुरा हम को में सारामन हो।

सिक्षुको परिषक् के ये दौन प्रकार है। कौन से दीन है बह-परिषक् क्याप-परिषक्, समग्र-परिषक्। सिक्षुको अग्र-परिषक् किसे कहते हैं?

भिज्ञानों जिस परिवर्ष में स्विधर मिझ त बाहुनिक ( क्विटि-परिपर्दी ) होते हैं त स्विद्यक होते हैं न पत्रतोत्त्रमूक होते हैं तथा सान्ति-मान में पूर्वपासी होते हैं अप्राप्त की प्रार्टित के स्विधे प्रस्ता-बीक होते हैं अर्दाधात का अध्ययत करने के किसे प्रस्ता-बीक होते हैं अस्थासात्त्रक का साधात करने के स्विधे प्रस्ता-बीक होते हैं। यन के अनुवासी जन का अनुकत्त करते जहें। वे भी न बाहुनिक होते हैं न पिनिक होते हैं न पत्रतोत्त्रमुख होते हैं तथा पालि-मावर्ष पूर्व-पासी होते हैं अप्रस्त की प्रार्टित के किसे प्रसत्त-बीक होते हैं अन्तिमत को अधिकत करने के किसे यत्न-शील होते हैं, असाक्षातकृत को साक्षात करने के लिये प्रयत्न-शील होते हैं।

"भिक्षुओ, ऐसी परिषद् अग्र-परिषद् कहलाती हैं।

"भिक्षुओ, व्यग्र-परिपद् किसे कहते हैं ?

भिक्षुओ, जिस परिषद् में भिक्षु झगडा करते हो, कलह करते हो, विवाद करते हो, परस्पर एक दूसरे को मुख रूपी शक्ति (= आयुध) से वीधते फिरते हो—भिक्षुओ, ऐसी परिषद् व्यग्र-परिषद् कहलाती हैं।

"भिक्षुओ, समग्र-परिषद् किमे कहते हैं ?

"भिक्षुओ, जिस परिपद् में भिक्षु समग्र-भाव से रहते हो, प्रसन्नता-पूर्वक रहते हो, विवाद न करते हो, दूध-पानी की तरह रहते हों, परस्पर एक दूसरे को प्रेम की दृष्टि मे देखते हुए रहते हो—भिक्षुओ, ऐसी परिषद् समग्र-परिपद् कहलाती हैं।

"भिक्षुओ, जिस समय भिक्षु समग्र-भाव से रहते हैं, प्रसन्नता-पूर्वक रहते हैं, विवाद नहीं करते हैं, दूध-पानी की तरह रहते हैं, परस्पर एक दूसरे को प्रेम की दृष्टि से देखते हुए रहते हैं, उस समय भिक्षुओ, भिक्षु बहुत पुण्यार्जन करते हैं, उस समय भिक्षुओ, भिक्षु बहुत पुण्यार्जन करते हैं, उस समय भिक्षुओ । भिक्षु बह्म-विहार करते हैं, जो कि उनका यह मुदिता-चित्त-विमुक्ति के साथ रहना है। मुदित के मन में प्रीति पैदा होती है, प्रीति-युक्त का शरीर शान्त होता है, शान्त-शरीर से सुख होता है, सुखी का चित्त एकाग्र होता है।

"जैसे भिक्षुओं ऊपर पहाड पर भारी वर्षा होने से वह पानी नीचे की ओर बहता हुआ पर्वत की कन्दरायें, दरारे आदि भर देता है, पर्वत की कन्दरायें, दरारे आदि भर कर छोटे छोटे गढ़े भर देता है, छोटे-छोटे गढ़े भर कर वहे वहे गढ़े भर देता है, छोटे-छोटे गढ़े भर कर वहे वहे गढ़े भर कर वही वही निदयां भर देता है, छोटी छोटी निदयां भर कर वही वही निदयां भर देता है, वही वही निदयां भर कर महा-समुद्र को भर देता है। इसी प्रकार भिक्षुओं, जिस समय भिक्षु समग्र-भाव से रहते हैं, प्रसन्नता-पूर्वक रहते हैं, विवाद नहीं करते हैं, दूध-पानी की तरह रहते हैं, परस्पर एक दूसरे को प्रेम की दृष्टि से देखते हुए रहते हैं, उस समय भिक्षुओं, भिक्षु बहुत पुण्यार्जन करते हैं।

विमुन्ति के साथ रहना है। मुस्ति के मन में प्रीठि पैवा होती है प्रीठि-मुन्त का सरीर सान्त होता है सान्त सरीर से सुब होता है सुबी का चित्त एकाय होता है।

भिन्नुको से तीन प्रकार की परिषद् होती है।"

(**4**Y)

" मिश्रुमों तीत संगों से मुक्त सेष्ठ वोड़ा राजा के सोग्य होता है राजा का भोम्य होता है राजा का बंग ही गिना जाता है। कीन से तीन अंतो से मुक्त ।

शिक्षाचे राजा का जात है। तथा ना का के प्राप्त करिया है जरूपुका होता है तिक गांत-पुका होता है। सिर्जुली हर तीन नेपी से पूक्त प्रेफ को हा राजा के सोग्य होता है राजा का भोम्य होता है राजा का जेन ही जिना बाता है। "हरी प्रकार निस्तुली तीन जेनी से पुक्त निस्तुल आहर करने भोम्य होता है जातिक करने भोग्य होता है दान जीक का तुम्य-सीन होता है। कीन सरकार करने भोग्य होता है तजा कोक का तुम्य-सीन होता है। कीन से तीन आगी से ?

भिज्ञुको पिज्ञुनर्वछे युक्त द्दोता है वस से युक्त होता है तया पित से वक्त होता है।

" शिक्को शिस्तु वर्ण-कान कैसे होता है ?

"भिन्नुको जिल्लु चीलनात् होता है। प्रातिमोत्त के नियमों के नतुमार संस्त पुरे बाला समायत्म को गोजर-सूमि में ही विचारने बाला असन्त कोटे दोव को करने में भी पय मानने बाला यह विचालों को सम्बन्ध प्रवार प्रहृब करता है। मिनानो कम प्रकार पिता वर्ष-तात होता है।

भिनुबो भिनुबस-नाग **कै**ने **इंग्ला है**?

भिष्को भिन्न अनुसन वर्गे ना प्रहान करने के किये हुएल अमें की प्राप्ति के किसे प्रयानकार पहला है। यह कुषक-धर्मों के बाँत सामध्यंवार पहला है बुध-गणकारी पहला है करे का जुना नहीं निरासे पहला है। इस प्रकार मिसूबी भिन्न बकतार होता है।

मिशुको मिश्रु यशि-बात कैमे हाता है?

भिभूको भिन्नुसङ्घन है इसे स्वार्यकम से जानता है सङ्दुल सनुदय है इसे स्वार्यकम से जानता है नड्युल निरोध की सोर के जाने बाला मार्ग है इसे ययार्थ रूप उसे जानना है—इस प्रकार मिक्षुओ, निक्षु गृति-बान होता है।

"भिक्षुओ, इन तीन वातो ने युक्त निक्षु आदर करने योग्य होता है, नातिच्य करने योग्य होता है, (दान दक्षिणा) देने योग्य होता है, छोक का पुण्य-क्षेत्र होता है।"

(९५)

" निक्षुओ, तीन अगो ने युक्त श्रेष्ठ घोडा राजा के योग्य होता है, राजा का भाग्य होता है, राजा का अग ही गिना जाता है। कीन से तीन अगो ने युक्त?

"भिक्षुओ, राजा का श्रेष्ठ घोडा वर्ण-युक्त होता है, वरु-युक्त होता है, तेज गित-युक्त होता है। भिक्षुओ, इन तीन अगो से युक्त श्रेष्ठ घोडा राजा के योग्य होता है, राजा का भोग्य होता है, राजा का अग ही गिना जाता है।

"इसी प्रकार भिक्षुओं तीन अगोंने युक्त भिक्षु आदर करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दान-दिक्षणा देने योग्य होता है, हाथ जोडकर नमस्कार करने याग्य होता है तथा लोक का पुण्य-क्षेत्र होता है। कीनमें तीन अगों से ?

" मिक्षुओ, भिक्षु वणसे युक्त होता है, चलमे युक्त होता है तथा गतिसे युक्त होता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु वर्णवान् कैसे होता है ?

"मिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है। प्रति-मोक्षके नियमोंके अनुसार सयत रहनेवाला, सदाचरणकी ही गोचर-मूमिमें विचरने वाला, अत्यन्त छोटे दोषको करनेमें भी भय मानने वाला, वह शिक्षाओको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु वर्णवान् होता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु वलवान् कैसे होता है ?

"भिज्ञुओ, भिक्षु अजुशल धर्मोका प्रहाण करनेके लिये, कुशल-धर्मोकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नवान् रहता है। वह कुशल-धर्मोके प्रति सामर्थ्यवान् रहता है, दृढ-पराक्रमी रहता है, कंधेका जुआ नहीं गिराये रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु वलवान् होता है।

" भिक्षुबो, भिक्षु गतिवान कैसे होता है ?

"मिसूनो मिसू इसरके पानों भोरम्मायीय संयोजनॉक्त्रांनय करके परलोक्त्रें ही बराम होनेवाला होता है वहींसे निवृत्त हानेवाला अस लोक्से मही नहीं लौटने वाला। " मिसूनो इस प्रकार मिस् पविचान होता है। इस प्रकार निजुनो तीन

" सिंद्द्रनी इस प्रकार भिद्यु परिवान होता है। इस प्रकार निक्रुको वें अंगोंचे मुक्त सिंद्द्र कारर करने योग्य होता है पुष्प-जेव होता है।

(९६) विस्तानी तील संबोधे सका सेका

विसुती तीन अंगोधे बुक्त सेट्ट होड़ा सवाके सोम्स होता है. सवाका भोग्य होता है. सवाका वस ही निना जाता है। कौनसे तीन जागींधे सुक्त ?

भिश्वको पानको भेष्य मोश वर्ण-पुन्त होता है वरू-पुन्त होता है तेन पति-पुन्त होता है। भिश्वको इन तीन नेनींछे पुन्त भेष्ठ मोश पानके मोग्न होता है, पानका मोग्न होता है पानका नंग ही गिना साता है।

इसी प्रकार भिक्षमों सीन सर्वोते मुक्त मिक्षु जावर करने योध्य होता है पुष्प क्षेत्र होता है: कौनसे सीन ?

हु पुत्र्य क्षत्र हाता हुः काल्य तानाः भिक्तको निक्तू वर्णते मुक्त होता है वक्सी मुक्त होता है तथा पतिसे सकत होता है।

्यू. भिन्न बो भिन्न, वर्णवान, कैसे होता 🕻 ?

सिसूनो निम्नु बीक्यान् होता है। प्राप्तिगोकके नियमोके अनुसार संयत स्तृतेवाला विधानोको सन्यक प्रकार प्रहम करता है। विसूनो हह प्रकार सिन्नु वर्गवान् होता है।

" पिश्वो पिदा बक्कान कैरेडोटा है।?

मिनुनो मिलू जकुनल बमोंका प्रहास करनेके सिन्ने कंक्षेका जुना सर्वी किराने रहता है। जिस्ती इस प्रकार मिलू बक्तनान होता है।

'भिसुबो निस्वति-वान्कैते होता है ?

भिश्वनी विश्व बासबोंचा संग्र करके बनासव विश्व-विश्वनिताको प्रसा-विश्ववित्य को इसी सपीरमें स्वत बातकर सामातकर, प्राप्त कर, विहार करता है। भिश्वची प्रित्य स्व प्रकार मध्यवान् होता है।

विभुत्रो इन दीन वर्गीत युक्त भिक्षु बावर करने योध्य होता है

क्षोकका पूष्पन्धेक होता है।

(९७)

"मिथुओ, नया भी छालका वस्त्र दुवंणं होता है, खुरदरा होता है, कम मूल्यका होता है। कुछ समय काममें लाया हुआ भी छालका वस्त्र दुवंणं होता है, खुरदरा होता है, कम मूल्यका होता है। पुराना भी छालका वस्त्र दुवंणं होता है, खुरदरा होता है, कम मूल्यका होता है। पुराना भी छालका वस्त्र दुवंणं होता है, खुरदरा होता है, कम मूल्यका होता है,। भिक्षुओ, छालके पुराने वस्त्रको या तो हाण्डी पोछने के काममें लाते हैं या कूडेके ढेरपर फेक देते हैं।

"इसी प्रकार भिसुओ, यदि नया भिक्षु भी दुष्शील होता है, पापी होता है, तो मैं यह उसका दुवंणं होना ही कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह छालका वस्त्र दुवंणं होता है, वैसे ही मैं इस व्यक्तिको कहता हूँ।

"जो उसके साथ रहते हैं, उसकी मगित करते हैं, उसके आश्रयमें रहते हैं तया उसका अनुकरण करते हैं, उनके लिये दीर्घकाल तक यह अहित, दु.खका का कारण होता है, तो मैं यह उसका खुरदरा होना कहता हूँ। भिक्षुओ, जैमे वह छालका कपडा खुरदरा होता है। वैसा ही मैं इस व्यक्तिकों कहता हूँ।

"यह जिन दाताओं के चीवर-पिण्डपात-शयनासन-नलान-प्रत्यय (दवाई आदि) ग्रहण करता है, उनके लिये यह न महान् फल देने वाला होता है न महान् परिणाम-कारी। यह में उसका अल्प-मूल्यवान् होना कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह छालका कपडा कम मूल्यका होता है, वैसा हो में इस व्यक्तिको कहता हूँ।

"भिक्षुको, यदि कोई मव्यम-आयुका भिक्षु भी यदि कोई स्थवीर भी दुःशील होता है, पापी होता है, तो मैं यह उसका दुवंणं होना ही कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह छालका वस्त्र दुवंणं होता है वैसा ही मैं इस व्यक्तिको कहता हूँ।

"जो उसके साथ रहते हैं, उसकी सगित करते हैं, उसके आश्रयमें रहते हैं, तथा उसका अनुकरण करते हैं, उनके लिये दीर्घकाल तक यह अहित, दु खका कारण होता है, तो में यह उसका खुरदरा होना कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह छालका कपड़ा खुरदरा होता है वैसा ही में इस व्यक्तिको कहता हूँ।

" यह जिन (दाताओंके) चीवर-पिण्डपात (भोजन)-शयनासन तथा ग्लान-प्रत्यय (दवाई आदि) ग्रहण करता है, उनके लिये यह न महान् फल देनेवाला होता है,न महान् परिणामकारी। यह मैं उसका अल्प मूल्यवान् होना कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह छालका कपडा कम मूल्यका होता है, वैसा ही मैं इस व्यक्तिको कहता हूँ। "मिसूबो जिसू इसरके पोचों बोरम्मानीय संयोजनोक्स्त्रिय करके परकोकर्ने ही बराम होनेवामा होता है नहीते निवृत्त होनेवाका उस लोकसे सही नहीं सीटने नाच्या "मिलूबो इस प्रकार निवृत्त सितान होता है। इस प्रकार निस्तुत्रों तीन

ानसून। ३७ तकर राजसूनातवात झता है। ३७ तकर राजसून वर्जित मुक्त मिसू बावर करने मोम्ब होता है।

(१६) "सिकको तील क्योंने सक्त क्षेत्रः क्रीका

" मिनुवो तीन वर्गासे सक्त सेष्ठ जोड़ा राजाके सोस्य होता है राजाका भोस्य होता है राजाका बग ही दिना बाता है । कीनसे तीन वर्षीये बुक्त ?

मिश्रुमी राजाका भोळ बोड़ा वर्ष-मुक्त होता है वक-मुक्त होता है तेज वित-पुक्त होता है। मिश्रुमी इस तीन वर्गींत मुक्त भोळ बोड़ा राजाके योच्य होता है, राजाका मोष्ट होता है राजाका बंग ही विका बाता है।

"इसी प्रकार मिनुओ सीन वनींसे मुक्त निज्ञु कावर करने योग्य होता हुँ पुष्प क्षेत्र हाता है। कीनसे तीन?

ह पुत्र्यक्षण हताहै। जनवंदानः मिल्लो मिश्रुवर्णये बुक्त होताहै वजनवे मुक्त होताहै तथा पतिष्ठे सक्त होताहै।

्राप्ता क्रम "मिश्रमी मिल्यमनान् कैसे होता है रै

"सिनुनो चित्र पोचनान् होता है। प्राप्तिसोलके निपमोक्ते बनुसार संयव पहुनेपाला विकासीको सम्बन्ध प्रकार पहुन करता है। निसुनो इत प्रकार मित्र पर्वतान होता है।

" पिलुमी मिक् बलवान् कैवेहोता है।?

भिक्षा निभ्य समुद्रक वर्गोका प्रहाण करनेके लिये कंग्रेका युवा करी विरावे रहता है। सिमानो दश नकार निश्च वक-नान होता है।

र्भिनुमो निक्तृनिक-वान् कैसे होता है **?** 

मिनुनो भिन्नु सामनीका सम करके बनाजक विश्व-विमुक्तिको प्रता विमुक्ति को देशी करोरने स्पर्व नागकर सामातकर, प्राप्त कर, विहार करता है। विभुनो भिन्नु इस प्रकार गठिवानु होता है।

"सिंधुनो इन तीन वर्गित युक्त किंधु बाहर करने योग्य होता है

कोकमा पुष्पन्तीम होता है।

तो में यह उसका चिकना होना कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे यह काशीका वस्त्र चिकना होता है, वैसा ही में उस व्यक्तिको कहता हूँ।

"यह जिन (दाताओंके) चीवर-पिण्डपात-शयनासन ग्लान-प्रत्यय (दवाई आदि) ग्रहण करता है उनके लिये यह महान् फल देने वाला होता है, महान् परिणाम-कारी। यह मै उसका बहुमूल्यवान् होना कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह काशीका वस्त्र बहुमूल्यवान् होता है, वैसा ही मै इस व्यक्तिको कहता हूँ।

"भिक्षुओ, यदि इस प्रकारका स्थवीर भिक्षु सघके वीचमें कुछ वोलता है तो उस समय भिक्षु कहते हैं—आयुष्मानो । चुप रहो। स्थवीर भिक्षु धर्म तथा विनय कह रहा है। उसका वह वचन उसी प्रकार ब्यानसे सुना जाता है जैसे काशीका वस्त्र सुन्दर पेटीमें रखा जाता है। इसिलये भिक्षुओ, यह सीखना चाहिये कि काशीके वस्त्रके समान होगे, छालके वस्त्रके समान नही। भिक्षुओ, ऐसा ही सीखना चाहिये।"

### (९९)

"भिक्षुओ, यदि कोई ऐसा कहता हो कि जैसा जैसा भी यह आदमी कर्म करता है उसे वह नव भोगना ही होता है—तो ऐसा होनेपर तो श्रेंब्ठजीवन व्यतीत करना असम्भव हो जाता है, तथा दु खका सम्यक् अन्त करनेकी गुजायश नहीं रहती। (लेकिन) भिक्षुओ, यदि कोई ऐसा कहे कि जिस प्रकारका भोग्य (वेदनीय)-कर्म वह करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है, तो ऐसा होनेपर तो श्रेंब्ठ जीवन व्यतीत करना सम्भव हो जाता है, तथा दु खका सम्यक् अन्त करनेकी गुजायश रहती है।

"भिक्षुको, कोई कोई आदमी यदि कोई अल्प-मात्र भी पाप-कर्म करता है तो वह उसे नरकर्में ही ले जाता है। लेकिन भिक्षुओ, कोई कोई आदमी यदि वैसा ही अल्प-मात्र पाप-कर्म करता है तो उसका फल वह इसी शरीरमें भोग लेता है, बहुत क्या (आगेके लिये) अणु-मात्र भी नहीं बच रहता।

" भिक्षुओ, किस प्रकारके आदमीका किया हुआ अल्प-मात्र भी पाप-कर्म उसे नरकर्मे ले जाता है  $^{\circ}$ 

" भिक्षुओ, कोई कोई आदमी अनम्यस्त-शरीर, अनम्यस्त-शील, अनम्यस्त-चित्त तथा अनम्यस्त-प्रज्ञा होता है। वह सीमित होता है, एक प्रकारसे विना शरीरके "पिल्लामां यदि ऐमा स्पत्तीर मिन् भी संबक्ते बीच बैठकर मूँह कोठमां है, तो पित्तु तमे क्ट्री हैं—नुस्तार मुख्ये अवस्थित के बीक्तरेते क्या काम ! तुम भी समस्रते हो कि तुम्बर्ग पान कुछ कोज मोम्म है। वह कुपित होकर, अमन्तुष्ट होकर सूनि ऐसी बात किलावता है जिससे मंप स्त्री प्रसार केंक्र देना है सीचे मुख्ये देरे पर सालका वपहा।

( )

"निज्ञों वामीका नवा वस्त्र भी मुन्दर होना है विकना होना है बहुतूम्स होना है। कुछ नमय वानमें नाबा हुना भी कामीका बस्त्र मुख्दर होना है विवना होना है बहुतूम्स होना है। पुराना भी कामीका बस्त्र मुख्दर होना है विवना होना है बहुतूम्स होना है। भिर्मुको! वागीके पुराने वस्त्रमें भी बा तो रनन मरेटे जाने हैं वा तके मुलीक्य पैसीने एको है।

द्वी प्रराट किल को । यदि नया सिशु सीतवान् कृत्यान-समी हो ना सह द्वारत गोन्तर्य है। निसुता जैसे वह वागीवा गुल्यर वस्त्र वैगा ही में इन स्परित्र भी शहरा हैं।

"ओ उसके मान रहते हैं जाकी नगरि नरते हैं जनके आध्यमें कहते हैं तथा जारता अनुकरण नरते हैं जाके निस्ते पीचरात्रक यह हिन गुपरा पारम होता है ता में यह जापना विकास कहता हैं। निस्त्रों चेत यह कामीका बाक विकास होता है नेता ही में यह व्यक्तिको बदला हैं।

प्यद् जिन (रामानीक) चौचर-विकासन-सम्बन्धन न्यान प्रथम (रवाई सारि) यहन चरना है उनके निर्मे यह नहान कन देवेशना हाता है नाम परिमान नहीं। यह में उनका बहुनुष्यमाहाता बहुना है। विश्वासी और यह कामीका बरन बहुनुष्यमाह होता है चैना ही भे इस न्यानिक बहुना है।

ा विश्वासाः, स्वीर कोई सम्बन्ध सामुत्ता विश्व थी स्वीर कोई स्थीतर विश्व में ग्रीनगातः, पत्त्वाय ग्रमी होता है तो यह जनका गीनवर्षे हैं। विश्व स्वा सैने सह पार्योच्या नुस्तर बच्च नैया ही में क्य व्यक्तिको सहता है।

न्त्री पाके गांव गर्डे हैं चनकी गर्डात हरते हैं उनके नाथपूर्ण गर्दे हैं तथा प्रवचा बरकाण वर्डे हैं उनके निये देखियान तर वह दिन मुलदा कारण होता है तो में यह उसका चिकना होना कहता हूं। भिक्षुओ, जैसे यह काशीका वस्त्र चिकना होता है, वैमा ही में उस व्यक्तिको कहता हूँ।

"यह जिन (दाताओंके) चीवर-पिण्डपात-रायनासन ग्लान-प्रत्यय (दवाई स्नादि) ग्रहण करता है उनके लिये यह महान् फल देने वाला होता है, महान् परिणाम-कारी। यह मैं उसका बहुमूल्यवान् होना कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह काशीका वस्त्र बहुमूल्यवान् होता है, वैसा ही मैं इस व्यक्तिको कहता हूँ।

" मिक्षुओ, यदि इस प्रकारका स्थवीर भिक्षु सघके वीचमें बुछ वोलता है तो उस समय भिक्षु कहते है—आयुष्मानो । चुप रहो । स्थवीर भिक्षु धर्म तथा विनय कह रहा है। उसका वह वचन उसी प्रकार ध्यानसे सुना जाता है जैसे काशीका वस्त्र सुन्दर पेटीमें रखा जाता है। इसिलये भिक्षुओ, यह सीचना चाहिये कि कादीके वस्त्रके समान होगे, छालके वस्त्रके समान नही। भिक्षुओ, ऐसा ही सीखना चाहिये।"

## (९९)

" निक्षुओ, यदि कोई ऐसा कहता हो कि जैसा जैसा भी यह आदमी कर्म करता है उसे वह सब भोगना ही होता है—नो ऐसा होनेपर तो श्रेष्ठजीवन व्यतीत करना असम्भव हो जाता है, तथा दु स्वका सम्यक् अन्त करनेकी गुजायश नही रहती। (लेकिन) भिक्षुओ, यदि काई ऐसा कहे कि जिस प्रकारका भोग्य (वेदनीय)-कर्म वह करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है, तो ऐसा होनेपर तो श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करना सम्भव हो जाता है, तथा दु खका सम्यक् अन्त करनेकी गुजायश रहती है।

"भिक्षुत्रो, कोई कोई आदमी यदि कोई अल्प-मात्र भी पाप-कर्म करता है तो वह उसे नरकर्में ही ले जाता है। लेकिन भिक्षुत्रो, कोई कोई आदमी यदि वैसा ही अल्प-मात्र पाप-कर्म करता है तो उसका फल वह इसी शरीरमें भोग लेता है, बहुत क्या (आगेके लिये) अणु-मात्र भी नहीं वच रहता।

" भिक्षुओ, किम प्रकारके आदमीका किया हुआ अल्प-मात्र भी पाप-कर्म उसे नरकमें छे जाता है  $^{7}$ 

" भिक्षुओ, कोई कोई बादमी अनम्यस्त-शरीर, अनम्यस्त-शील, अनम्यस्त-चित्त तथा अनम्यस्त-प्रज्ञा होता है। वह सीमित होता है, एक प्रकारसे विना शरीरके होता है बोडे (पाप) से भी दु का भोनने बाला। भिल्लाओं इस प्रकारके आदमीका किया हुना बस्प-मात्र भी पाप-कर्म उसे मरकर्में से बाता है। मिक्सको किस प्रकारके बादमी हारा किया नमा बैता ही बक्य-मात्र पाप

कर्म इसी सरीरमें फल देता है (अबके जन्मके क्रिये) बहुत क्या बचमात्र भी नहीं वर्ष रहता ? मिश्रुको कोई कोई बादमी अस्पस्त-चरीर, अस्पस्त-चील अस्पस्त-चित्त

तथा अस्मास्त-प्रज्ञ होता है। यह असीमित होता है महान् होता है तथा जनत सक-विहारी होता है। फिल्मी इत प्रकार का भावनी वदि वैसा ही अस्प-मात्र पाप-कर्म करता है तो उसका फल वह इसी छरीरमें भोग केता है वहत क्या (आवेके किये) वर्ष-मात्र भी नहीं वर्ष रहेता।

"विश्वजो जैसे कोई बादमी नमकका एक दकका छोटे पानीके क्सोरेमें आहे: तो मिक्स निया मानते हो त्या एस कोट पानीके कसोरेमें नमकका बढ हकता बाकतेषे ससका पानी अपेन नमकीन नहीं हो बानेशा ?

मन्ते! हा।

भड़ किस किसे ?

वन्ते ! पानीके क्रशोरेमें बोहाता पानी है। वह निमकका दकता ज्ञानतेसे अपेय नमकीन हो ही बायेगा।

पिक्षको चैठे कोई नावमी नमकका एक टकड़ा भंदा मदीमें छेके। तो भिक्षको क्या मानते हो। क्या उस कमकके टुकडेसे उस पना नवीका पानी बपेय समझीत हो बायेगा?

मन्ते! नहीं ही।

बद्ध किस किये ?

भन्ते ! वना नदीमें सहात् वक-शक्ति है। वह तमकके टुकड़ेसे अपेस नमसीन नहीं होगी।

"भिभूनो कोई कोई बादमी यदि कोई बल्य-मात्र नौ पाए-कर्न करता है तो वह उसे नरकमें ही के बाता है। केकिन मिसूबी कोई कोई बादमी मदि वैसा ही अस्य-मात्र पापकर्म करता है तो असका फल वह इसी सरीरमें मौत केता है। बहुत क्या (बागेके किये) बजु-भाव भी नहीं दच रहता।

"भिक्षुओ, किम प्रकारके आदमीका किया हुआ अल्प-मार्ट भी पाप-कर्म उसे नरकर्में ले जाता है ?

"भिक्षुओ, कोई कोई आदमी अनम्यस्त-शरीर थोडे (पाप) से भी दुख भोगने वाला। भिक्षुओ, इस प्रकारके आदमी द्वारा किया हुआ अल्प-मात्र भी पाप-कर्म उसे नरकमें ले जाता है।

"भिक्षुओ, किस प्रकारके आदमी द्वारा किया गया वैसा ही अल्प-मात्र पाप-कर्म इसी शरीरमें फल देता है ? अगले जन्मके लिये बहुत क्या अणुमात्र भी नहीं बच रहता। भिक्षुओ, कोई कोई आदमी अम्यस्त-शरीर . अनन्त सुख विहारी होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारके आदमी द्वारा किया गया वैसा ही अल्प-मात्र पाप-कर्म इसी शरीरमें फल देता है। अगले जन्मके लिये, बहुत क्या अणुमात्र भी नहीं बच रहता।

"भिक्षुओ, कोई कोई आदमी आधे-कार्पापण (के ऋण लेने) से भी वैंध नाता है, कार्पापणसे भी वैंध जाता है तथा सौ कार्पापणोंसे भी वैंध जाता है। भिक्षुओ, कोई कोई आदमी आधे कार्पापण (के ऋण लेने) से भी नहीं वैंधता, कार्यापणसे भी नहीं वैंधता तथा सौ कार्पापणसे भी नहीं वैंधता।

"भिक्षुओ, कैसा आदमी आधे कार्पापणसे भी वैंध जाता है, कार्पापणसे भी वैंध जाता है तथा सो कार्पापणोंसे भी वैंध जाता है ?भिक्षुओ, एक आदमी दिरद्ध होता है, अल्प-सामर्थ्य वाला होता है, अल्प-भोगोवाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका आदमी आधे कार्पापणसे भी वैंध जाता है, कार्पापणसे भी बैंध जाता है, सौ कार्पापणसे भी वध जाता है।

"भिक्षुओ, कैसा आदमी आधे कार्पापणसे भी नहीं वैधता, कार्पापणसे भी नहीं बैंधता, सौ कार्पापणसे भी नहीं वैधता ? भिक्षुओ एक आदमी धनवान होता है, यहाधनवान होता है, वहुत-भोगो वाला। भिक्षुओ, इस प्रकारका आदमी आधे कार्पा-पणसे भी नहीं वधता, कार्पापणसे भी नहीं वधता, सौ कार्षापणसे भी नहीं वधता।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, एक आदमी यदि कोई अल्प-मात्र भी पाप-कर्म करता है तो वह उसे नरकमें ही ले जाता है। लेकिन भिक्षुओ, कोई कोई आदमी यदि वैसा ही अल्प-मात्र पापकर्म करता है तो उसका फल वह इसी शरीरमें भोग लेता है, बहुत क्या (आगेके लिये) अणु-मात्र भी नहीं वच रहता। "मिसूजो किस प्रकारके बादमीका किया हुवा बम्य-मात्र मी पाप-तर्म उसे नरकमें के बाता है?

"भिस्तुनो यदि कोई सारमी नगन्यस्ट-स्टीट बोड़े (पाप) हे पी
दुःच मोननेवाका। विस्तुनो इस प्रकारके नारमी हास किया हुना न्नस्य-मात्र भी
पाप-कर्म बसे गरकर्म के बाता है। मिजूनो किस प्रवारके नारमी हास किया गया
वैदा ही नक्ष-मात्र पाप-कर्म स्ती सरीस एक देश हैं। नवके बनाके किने
बहुत क्या नब्य-मात्र मीत कर सहस । मिजूनो कोई सो सामी नग्नस्य सरीस
नवक्ष पुच-विदास है। मिजूनो कोई सो स्ती नग्नस्य हास
क्रिक्त वार्ष हो नक्ष-मात्र पाप-कर्म स्ती सरीस क्रिक्त क्रिक्

बहुत बया जनु-मांच जी नहीं बच पहता । "बैधे भिज्ञजों कोई मेर मारनेदाला वा मेर-वातप क्याई हो। बह चोधेछे भेड़ के बानेवाले कियी जादमीको भीट भी सकता है जोद भी सरका है जोर भार भी बाल सकता है जबवा पवापरासदण्य दे सदता है किन्तु चौधिसे मेड़ के बाने बाके ही किसी हसरे जादमीकों न सो बहु भीट ही सपता है न बीस ही सदता है प मार

बाध ही एकता है मीर न बवारपाध बच्च वे तकता है। "निवासी पेड क्पाकर केनावेशके किए करहे भारमीको पेड मारने बाधा वा सेड-बावक क्याई पैट थी एकता है बीध भी मकता है मार भी बाक एकता है अबका प्यापपाध बच्च भी दे सकता है।

भवना मनापराम बन्द भी दे सकता है ?

'मिस्न मो, एक बादमी विध्व होता है जल्पसम्म होता है अल्प-भोगोंबाका होता है। ऐसे पेड़ पुणकर के वानेबामाने नादमीको मेड मारनेबाका ना पेड़-बातक कर्मार पीट भी सरवार ने बांब भी सरवाड़े नार भी बाक सरवा है जसवा मनापराम बरु भी दे करता है।

निलुसो जैव चुएकर से बागेनामे कित तरहरे आरथीको मेड़ सारले माना ना मेड-सारक नताईन गीट हो सकता है न बोब ही सफ्ता ई न जार ही बान गरता है जनवा न सवारराज दण्ड दे सरता है ?

" विश्व कोई मारबी बनी होती है महामुख्यात होता है महानु कोश-बाता हाता है जब होता है जबारा महामान्य होता है। जिस्को हम प्रवास्त्र भेड़ चुजरुर के बारेबामे आदमीको सेट चुजरेबाका वा सेट-मात्रक नगाई न पीट हो जाता है न बॉप ही महता है बीर न(बान के)बार बात महना है बच्चा न बपारस्थ दण्ड दे सकता है। विल्क, वह हाथ जोडकर उसे कहता है—मालिक । या तो मेरी भेड दे दो या भेडका मूल्य दे दो ?

"इसी प्रकार भिक्षुओ, एक आदमी यदि कोई अल्प-मात्र भी पाप-कर्म करता है तो वह उसे नरकमें ही ले जाता है। लेकिन भिक्षुओ कोई आदमी यदि वैसा ही अल्प-मात्र पाप-कर्म करता है तो उसका फल वह इसी शरीरमें भोग लेता है, बहुत क्या, आगेके लिये अणुमात्र भी नहीं बचता।

"भिक्षुओ, किस प्रकारके आदमीका किया हुआ अल्प-मात्र भी पाप-कर्म उने नरकर्में ले जाता ह<sup>7</sup>

"भिक्षुओ, यदि कोई आदमी अनम्यस्त शरीर थोडे (पाप) से भी दुःस भोगनेवाला। भिक्षुओ, इस प्रकारके आदमी द्वारा किया हुआ अल्प-मान्न भी पाप-कर्म उसे नरकमें ले जाता है। भिक्षुओ, किस प्रकारके आदमी द्वारा किया गया वैमा ही अल्प-मान्न पाप-कर्म इसी शरीरमें फल देता है। (अगले जन्मके लिये) बहुत क्या, अणुमात्र भी नहीं बच रहता?

"भिक्षुओ, कोई कोई आदमी अम्यस्त-शरीर अनन्त सुख-विहारी होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारके आदमी द्वारा किया गया वैसा ही अल्प-मात्र पाप-कर्म भी इसी शरीरमें फल देता है। (अगले जन्मके लिये) बहुत क्या अणु-मात्र भी नहीं बच रहता।

"मिक्षुओ, यदि कोई ऐसा कहता हो कि जैसा जैसा भी यह आदमी कर्म करता है उसे वह सब भोगना ही होता है—तो ऐसा होनेपर तो श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत करना असम्भव हो जाता है (तया) दु सका सम्यक् अन्त करनेकी गुँजायश नही रहती। (लेकिन) भिक्षुओ, यदि कोई ऐसा कहे कि जिस प्रकारका भोग्य (= वेदनीय) कर्म वह करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है, तो ऐसा होने पर तो श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत करना सम्भव हो जाता है तथा दु सका सम्यक् अन्त करनेकी गुँजायश रहती है।"

(200)

"भिक्षुओ, स्वणं पर वहें बडे घव्ये होते हैं, मिट्टीके, वालूके। उन्हें मिट्टी घोनेवाला वा मिट्टी घोने वाले का शागिदं द्रोणीमें ढालकर धोता है, अच्छी तरह घोता है, मलकर घोता है ताकि उस मैलका प्रहाण हो जाय, वह दूर हो जाय। स्वर्णके सामान्य धव्ये होते हैं हरूमी मिट्टीके मोटे बातके। सर्वे मिट्टी धोनेवाला वा मिट्टी घोने वाले का सामिर्व घोला है वच्छी तरह घोला है सम्बर घोला है ताकि उस मैकका प्रहाण हो बास वह हुए हो वास।

"स्वर्षके सूरण अन्ये होते हैं मुक्त बानुके अन्ये काले अन्ये। उन्हें निर्दरी भोतेबाला ना निर्दरी और वाले का धार्मित होता है जन्मी तरह होता है सम्बन्ध भोता है ताकि वस मैकका प्रहान हो नाम नह दूर हो बाम।

"तह स्वयं-कन ही येन पह बाते हैं। तब मुतार या मुतारका धारियें यत सोतेको मृत्य (= दुख्यों) में शासकर त्यावा है सच्छी तपह त्यावा है निन्तु वाफ नहीं करवा है। यह स्वर्ण व्या हुबा होवा है सच्छी तपह त्या हुता होवा है निन्दु साथ नहीं होता पावमें शासा हुबा नहीं होवा न यह कोमक होवा है न कमनीय होता है न प्रमास्यर होवा है यह कामनें कानेयर हुट बावा है।

"पिल्ला उपाय नाता है जब कहा मुनार जनवा नुपारका साधियं वर्ड सोनेको उपाय है अच्छी तथा तथाता है जीर साफ भी करता है। वह तोना तथाता हुआ होता है अच्छी तथा तथाता हुआ होता है साथ होना है पावनों साका हुआ होता है। वह कोमस होता है अमरीय होता है और अभावत होता है। वह काममें नानेपर दृश्या नहीं। जो जो यहना बनाना जाहता है—जह करती हो चाहे कुथक हो जाहे करता है जाना हो—वह उसते वना सकता है।

भी हु प्रकार । नात् भाग हा भाग हा-स्वाह २००० वना ०४०। हा।

"हसी प्रकार निक्तों से पेरवर-वित्तती प्राधिम ने तो तुए पिस्के बड़े
वहें बाने एके हैं—सार्विटिक टुप्टरच वाचीके टुप्टरच मतके टुप्टरच। जानी
परिवर्त वित्तु क्यों कोहता है त्यावता है धनका प्रवास करता है। वह चनका कोय
करते किसे चनका नाथ करते किसे प्रवास करता है।

"विज्ञुनो भेष्टवर-विज्ञानी प्राप्तिमें करो हुए विश्वके परिव पर लागान्य बन्ने सुद्धे हे—जाम-विज्ञ व्यायस-विज्ञ विद्विता-विज्ञ । जानी परिवृत्त विज्ञु वर्ष्ण् कोहरा है स्पान्ता है जनना प्रहान करता है। यह वनना लोग नालेके किये सनमा नाम करनेके किये प्रमुख करता है।

"पिनुसो भेग्ठर-विश्वको माध्यमें समे हुए त्रियुक्ते वरित्र पर मूहम-सभ्ये पूर्व है—नाति ( व्यपीति) -वान्त्रभी विश्वके वनपर-सम्प्रमी विश्वके सनवता सम्बन्धी विश्वके सनवता सम्बन्धी विश्वके। सानी विश्वक भिन्नु उन्हें छोड़ता है स्वापता है उनका स्राप्त

करता है। वह उनका लोप करनेके लिये, उनका नाश करनेके लिये प्रयत्न करता है।

" उससे बागे इधर्म-वितर्क ही शेप रहते हैं। उस समय जो समाधि होती है, वह न शान्त होती है, न प्रणीत होती है, न शरीरकी शान्तिके परिणाम-स्वरूप लब्ध होती है, न एकाग्रता युक्त होती है। वह सस्कारोको जैमे-तैसे रोककर प्राप्त की हुई होती है।

" मिक्षुओ, समय आता है जब वह चित्त अपनेमें ही स्थिर होता है, बैठ जाता है, एकाग्र हो जाता है, समाधि-प्राप्त हो जाता है। उस समय जो समाधि होती है वह शान्त होती है, प्रणीत होती है, शारीरिक-शान्तिके फलस्वरूप लब्ध होती है। वह सस्कारोको जैसे-तैसे रोक कर प्राप्त की हुई नही होती। वह अभिज्ञाके द्वारा साक्षात करने योग्य जिस-जिस धर्म=कियाकी ओर मनको झुकाता है, उसे-उसे ही प्राप्त कर लेता है—हर आयतनको।

"यदि वह यह इच्छा करे कि मैं अनेक प्रकारकी ऋदियों का अनुभव करूँ— एक होकर भी अनेक हो जाऊ, अनेक होकर भी एक हो जाऊ, प्रकट हो जाऊ, छिप जाऊ दीवारके पार, प्राकारके पार, प्रवंतके पार उन्हें छूता हुआ चला जाऊ, जैंमे आकाशमें, पृथ्वी पर भी उतराना—हूवना करू जैंसे पानीमें, पानीके भी ऊपर-ऊपर चलूं जैंसे पृथ्वीपर, आकाशमें भी पालथी मारकर जाऊ जैसे कोई पक्षी हो, इस प्रकारके ऋदि-मान, इस प्रकारके महा-प्रतापी चन्द्र-सूर्यको भी हाथ से छू लूं तथा ब्रह्मलोक तक भी सशरीर पहुँच जाऊ—तो वह उसे-उसे ही प्राप्त कर लेता है—हर आयतनको।

"यदि वह इच्छा करे कि मैं अमानृप, विशुद्ध, दिथ्य-श्रोत-धातुसे दोनों प्रकारके शब्द सुर्नूं—दिव्य भी तथा मानृपी भी, दूरके भी, समीपके भी—नो वह उसे-उसे ही प्राप्त कर लेता हैं—हर आयतन को।

"यदि वह इच्छा करे—में दूसरे सत्वोंके दूसरे प्राणियोंके चित्तको अपने चित्तसे जान लूं—मराग-चित्तको सराग-चित्त जान लूं, राग-रहित चित्तको राग-रिहत चित्त को होप-रिहत चित्तको होप-रिहत चित्त जान लूं, सहेप-चित्तको सहेप-चित्त जान लूं, बूप-रिहत चित्तको होप-रिहत चित्त जान लूं, स-मोह चित्तको समोह चित्त जान लूं, मूढता-रिहत चित्तको मूढता-रिहत चित्त जान लूं, स्थिर-चित्तको स्थिर-चित्त जान लूं, चचल-चित्तको चचल-चित्त जान लूं, महापरिमाण (= महद्गत) चित्तको महापरिमाण-चित्त जान लूं, अ-महापरि-

" स्वर्णके सामान्य प्रज्ञे होते हैं हह की मिट्टीके मोटे बानके। सन्हें मिट्टी सोनेबाना वा मिट्टी प्रोने बाने का सागिर्व सोता हैं बच्छी सन्द्र पोता हैं समकर पीता है ताफि कस मैकना प्रहान हो बाग वह दूर हो बाग।

"स्वर्षके सूक्त धक्के होते हैं सूक्त बालके धक्के वाले धक्के। उन्हें मिस्टी धोनेबाला ना मिस्टी धोने वाले का शानिर्द क्षेता है अच्छी तरह कोता है सक्कर धोता है ताकि उस मेक्का प्रहास हो बास वह हुए हो जास।

"तब समर्ग-मप ही धेय पर् माते हैं। तब मुनार या जुनारका पापिर वच पोतेको मून (= कुठाबी) में सामकर व्यावा है मच्छी तपर वपावा है मिन्तु माफ मही बदता है। यह समर्थ वपा हमा होता है मच्छी तपर वपा हमा होता है रिन्यु धांच नहीं होता पाममें मामा हमा नहीं होता गय के कोमा होता है न कमनीय होता है न प्रमासर होता है वह माममें मानेपर टूट माता है।

"शिक्षुओ समय माता है जब नह सुनार समया सुनारका साविर्य पछ सोनेको तपाता है, सम्बी तपड़ तपाता है मौर साक भी करता है। यह माना तपाया हुआ होता है अबकी तपड़ तपाया हुआ होता है साक होना है पावमें बाभा हुआ होता है। यह सोनक होता है अपनीय होता है और प्रभास्य होता है। यह साममें सावेपर हुट्या नहीं। यो भा महता मनाता भाइता है—चाह कर्मती हो बाहे क्रूबक हो नाहे करता हो याहे माला हो—चह स्तते बनाए करता है।

नाइ कुथ्यत है। नाइ नरूर हो नाइ नामा इस्थ्यत उठवर बना प्रकरा है।

"इसी प्रकार निवासी सेन्द्रन्तिक प्राप्ति प्राप्ति में समे हुए सिशुके बहे
वहें बच्चे एके हैं—सारीरिक पुरुष्य बात्रीके पुरुष्य मनके पुरुष्य। सारी परिवारिक कुम्बें कोइता है स्वापता है, उनका प्रहान करता है। वह दनका लोग करते किये उनका नाम करते किये प्रसुष्ट करता है।

"भिजुनों सेय्टर-चित्तमें प्राप्तिमें कने हुए भिजुने चरित पर शामान्य मन्ने रहते हुं---काम-सिवकं स्वापार-सिवकं विदित्ता-सिवकं। आणी परिवत पित्तु कन्हें कोहता है स्वापता है जनका प्रदाय करता है। वह उनका सोच करनेके क्रिये उनका साथ करनेके क्रिये प्रयक्त करता है।

" मिशुओ मोध्यर-विकास प्राप्तिमं को हुए मिशुके वरित वर कुश्म-धाने रहते हैं---वार्ति ( = पॉकि) -कम्बन्धी विकास वनपद-क्षमानी विकास अनवस्त्र सम्बन्धी विकास । सानी पविश्व विद्यु वर्षों कोहता है त्यावता है वनका प्रशास "भिक्षुओ, श्रेष्ठतर चित्तकी साधनामें लगे हुए भिक्षुको समय-समय पर तीन वातोको मनमें जगह देनी चाहिये—समय-समय पर समाघ्रि-निमित्तको मनमें जगह दे, समय-समय पर प्रयत्न (=प्रग्रह)-निमित्तको मनमें जगह देनी चाहिये तथा समय-समय पर उपेक्षा-निमित्तको मनमें जगह देनी चाहिये।

"भिक्षुओ, यदि श्रेष्ठतर-चित्तकी साधनामें लगा हुआ भिक्षु समाधि-निमित्त ही समाधि-निमित्तको मनमें जगह देता है तो इसकी सम्भावना है कि वह चित्त आलस्यकी ओर झुक जाये। भिक्षुओ, यदि श्रेष्ठतर-चित्तकी साधनामें लगा हुआ भिक्षु प्रयत्न (प्रग्रह)-निमित्त ही प्रयत्न-निमित्तको मनमें जगह देता है तो इसकी सम्भावना है कि वह चित्त उद्धतपनकी ओर झुक जाय। भिक्षुओ यदि श्रेष्ठतर चित्तको साधनामें लगा हुआ भिक्षु उपेक्षा-निमित्त ही उपेक्षा-निमित्तको मनमें जगह देता है तो इसको सम्भावना है कि वह चित्त आस्रवोके क्षय के लिये सम्यक् प्रयास न करे। क्योंकि भिक्षुओ, श्रेष्ठतर-चित्तकी साधनामें लगा हुआ भिक्षु समय-समयपर ममाधि-निमित्तको मनमें जगह देता है, समय-समयपर प्रयत्न-निमित्तको मनमें जगह देना है, समय-समयपर उपेक्षा-निमित्तको मनमें जगह देता है, इसलिये वह चित्त कोमल हो जाता है, कमनीय हो जाता है, प्रमास्वर हो जाता है तथा टूटता नही है। वह आस्रवोका क्षय करतेके लिये सम्यक् प्रकारसे प्रयत्नशील होता है।

"भिक्षुओ, जैसे सुनार या सुनारका शागिर्द अँगीठी तैयार करता है, अँगीठी तैयार करते कँगीठीको लीपता है, अँगीठी को लीपकर सण्डासीसे स्वणं लेकर उसे अँगीठीमें रखता है। तब वह बीच-बीचमें उसे तपाता है, बीच-बीचमें उसपर पानीके छीटें देता है, बीच-बीचमें वह उपेक्षा करता है। भिक्षुओ, यदि वह सुनार या सुनारका शागिर्द उस स्वणंको एक दम तपाता ही रहे तो निञ्चयसे वह स्वणं जल जायेगा। भिक्षुओ, यदि वह मुनार या सुनारका शागिर्द उस सोनेपर निरन्तर पानीके छीटे ही डालता रहे तो वह स्वणं बुझ जायेगा। भिक्षुओ, यदि वह सुनार या सुनारका शागिर्द उस स्वणंकी एकदम उपेक्षा करे तो इसकी सम्भावना है कि वह स्वणं ठीकसे वने हो नही। क्योंकि भिक्षुओ, सुनार या सुनारका शागिर्द उस स्वणंको समय-समय पर तपाता है, समय-समय पर उसे पानीसे ठण्डा करता है, समय-समय पर उससे उपेक्षा करता है, इस लिये वह स्वणं कोमल तथा कमनीय होता है, प्रभास्वर होता है। वह ट्रांत नहीं है। वह काममें लाये जानेके योग्य होता है। उससे जो जो गहना

माम को स-महापरिमान बान मूँ। मन्यतर वित्तको स-यतर वित्त बान मूँ। सर्व देय्य-देवतको मर्व-बोध-वित्त बान मूँ एकाध-वित्तको एकाध-वित्त बान मूँ एकाधा-रिहेत वित्तको एकाध्या रिहेत वित्त बान मूँ। मिमुन्त-विश्वको विश्वका-वित्त बान मूँ सविभून्त-वित्तको सविष्कन-वित्त बान मूँ—तो नह उसे-उसे ही प्राप्त कर सेवा है— हर-हर सायतन मो।

यदि वह इच्छा करे--में अनेह प्रकारके पूर्व-स्पॉका याद वह एक जग्म दो जन्म ठीन जन्म चार जग्म औ जम्म हवार जग्म काल बग्म अनेक एवर्च-क्रम अनेक विवर्ध-क्रम में अमुक ज्याह वा यह मेरा गाम वा अह गोम या मह शाना वा इस मुक्त-दु प्रका अनुमव क्रिया हानी बायुक्त औरित रहा वहींसे भ्युत होकर अमुक ज्याह जराम हुना यहां भी मेरा जह नाम वा यह गोम वा यह वर्ष वा यह बाता वा इस मुक्त-क्रम अनुमव किया हतनी बायुक्त औरित रहा वहांसे पूर्व-होकर मही जरान हुना इस प्रकार आकार-महित बहेन्स-साहित अनेक क्रमारके पूर्व-वसोका स्थापन कर--चे वह च्ये-चे ही प्रायत कर केता है-कुर हर आयतनको। स्थि वह इच्छा करे--में अमानुगी विक्य विमृत्व चस्ते मरते-अराम

"मिर यह सम्मा करे-आसबोका सन कर सनासन विश्व-विमृत्ति 
प्रमानितृत्तिको इती धारी स्ते वानकर सामान कर तिहार करेयो यह स्ते-स्ते ही प्रान्त कर सेवा है--हर-बुर सायतनकी ।

"भिक्षुओ, श्रेष्ठतर चित्तकी साधनामें लगे हुए भिक्षुको समय-समय पर तीन वातोको मनमें जगह देनी चाहिये—समय-समय पर समाधि-निमित्तको मनमें जगह दे, समय-समय पर प्रयत्न (=प्रग्रह)-निमित्तको मनमें जगह देनी चाहिये तथा समय-समय पर उपेक्षा-निमित्तको मनमें जगह देनी चाहिये।

"भिक्षुओ, यदि श्रेष्ठतर-चित्तको साघनामें लगा हुआ भिक्षु समाधिनिमित्त ही समाधि-निमित्तको मनमें जगह देता है तो इसकी सम्भावना है कि
वह चित्त आलस्यकी ओर झुक जाये। भिक्षुओ, यदि श्रेष्ठतर-चित्तकी साघनामें
लगा हुआ भिक्षु प्रयत्न (प्रग्रह)-निमित्त ही प्रयत्न-निमित्तको मनमें जगह देता है तो
इसकी सम्भावना है कि वह चित्त उद्धतपनकी ओर झुक जाय। भिक्षुओ यदि श्रेष्ठतर
चित्तको साघनामें लगा हुआ भिक्षु उपेक्षा-निमित्त ही उपेक्षा-निमित्तको मनमें जगह
देता है तो इसकी सम्भावना है कि वह चित्त आस्रवोके क्षय के लिये सम्यक् प्रयास
न करे। क्योंकि भिक्षुओ, श्रेष्ठतर-चित्तकी साघनामें लगा हुआ भिक्षु समय-समयपर
ममाधि-निमित्तको मनमें जगह देता है, ममय-समयपर प्रयत्न-निमित्तको मनमें जगह
देता है, समय-समयपर उपेक्षा-निमित्तको मनमें जगह देता है, इसलिये वह चित्त कोमल
हो जाता है, कमनीय हो जाता है, प्रभास्वर हो जाता है तथा टूटता नही है। वह
आस्रवोका क्षय करनेके लिये सम्यक् प्रकारसे प्रयत्नशील होता है।

"भिक्षुओ, जैसे सुनार या सुनारका शागिर्द अँगीठी तैयार करता है, अँगीठी तैयार करके अँगीठीको लीपता है, अँगीठी को लीपकर सण्डासीसे स्वणं लेकर उसे अँगीठीमें रखता है। तब वह वीच-बीचमें उसे तपाता है, बीच-बीचमें उसपर पानीके छीटें देता है, बीच-बीचमें वह उपेक्षा करता है। भिक्षुओ, यदि वह सुनार या मुनारका शागिर्द उस स्वणंको एक दम तपाता ही रहे तो निश्चयसे वह स्वणं जल जायेगा। भिक्षुओ, यदि वह मुनार या सुनारका शागिर्द उस सोनेपर निरन्तर पानीके छीटे ही डालता रहे तो वह स्वणं बुझ जायेगा। भिक्षुओ, यदि वह सुनार या सुनारका शागिर्द उस स्वणंकी एकदम उपेक्षा करे तो इसकी सम्भावना है कि वह स्वणं ठीकसे वने ही नही। क्योंकि भिक्षुओ, सुनार या सुनारका शागिर्द उस स्वणंकी समय-समय पर तपाता है, समय-समय पर उसे पानीसे ठण्डा करता है, समय-समय पर उससे उपेक्षा करता है, इस लिये वह स्वणं कोमल तथा कमनीय होता है, प्रभास्वर होता है। वह दूटता नहीं है। वह काममें लाये जानेक योग्य होता है। उससे जो जो गहना

बनाना हो जाहे कर्यनी हो जाहे दुग्डल हो जाहे पच्छा हो जाहे स्वर्ध-माला हो-बह मबके लिये योग्य होता है।

"इसी प्रकार भिश्वनी सेप्ट-चित्तकी साधनामें क्षेत्र हुए विश्वको समय-समयपर तीन बार्डोको मनमें जगह देनी चाहिये-समय-समयपर नमाधि-निमित्तको मनमें जगह है समय-नमयपर प्रचह-निमित्नको मनमें अबह है समय-ममयपर उपेक्षा -निभित्तको मनमें जयह है । मिश्र, यदि भेष्ठतर-वित्तको साधनामें क्या हवा मिस् शमाधि-निमित्त ही समाधि निमित्तको मनमें असह देता है तो इसकी सम्भावना है कि क्षत्र भित्त भातस्यकी और तुक जाय । निध्नत्री यदि सेय्ठटर-चित्तकी माजनार्ने लता हुआ भिष्टु प्रवह-निमित्र ही प्रवह-निमित्त को मनमें अगह देता है ता इसकी राज्यादमा है कि वह जिल्ल उद्भव-नगकी मोर मुच बाय। मिशुओ यदि भेष्ठवर जिल्ली राधनामें क्या हुआ भिधु ज्येशा-निमित्त ही ज्येशा-निमित्तको मनमें जयह देता है ठो इसकी सम्भावना है कि वह विश्व बालबंकि शत के किये सम्यक प्रयाम न करें। क्योंकि विदाओं अेटरार वित्तकी साबनामें क्या हुआ विस् सनव-नगमपर समाबि-निमित्तको मतमें अवह देता है। समय-नगमपर प्रमह-निभित्तको मनमें जनह देता है। समय-सम्बर्ध क्येजा-निमिशको मनमें जगह देता है इसकिने वह चित्त कोनक हो नाठा है कमनीय हो जाता है प्रजारवर हो जाता है तथा दृटता नहीं है। यह आजवींका सम करनके शिवे सामक प्रवत्त-तील दोता है: वह मिसवाके द्वारा धानात करने योग्न जिस-बित धर्म (¤क्रिमा) की जोर मनको भुकाता है उमे∹वसे ही प्राप्त कर सेता डै–जर श्रादतन की।

वह सदि इच्छा करे—कि मैं जरेक मकारकी व्यक्तिका अनुभव करूं।
(१ ९६६) वहनिज्ञ विश्वको वानना पाहिसे बासकोका बाव कर (१ ९६४) शासात कर, मान्त कर विहार कर्य-पाहिस हो प्राप्त कर केटा है— हर बायकन को।

(† †)

विश्वनो बोबि-मारियों पूर्व जब में धन्युक नहीं वा जब में बोबिधान जा तक तेरे समर्में यह विज्ञाता पैवा हुर्दै — लोकमें 'मध्या' नवा होता है? लोकमें बुध-परिसाम जबा होता हैं? लोकमें मुक्ति (लिसिधान) ज्या है? "तव जिल्लाने मेरे समर्में यह हुमा—लोकमें जो किसी भी मस्यक्ते फल-स्वक्य मुख वा सीमनस्य पैदा होता है यही लोकमें 'मजा'है, लोकमें जो अनित्यता है, जो दुख है, जो विकृति है, यही लोकमें 'वुरा-परिणाम'है, लोकमें जो छन्द-रागको विनीत बना लेन है, जो छन्द-रागका प्रहाण है यही लोकमें मुक्ति (≂िनस्सरण) है।

"भिक्षुत्रों मेंने जब तक इस लोकके 'मजे' को यथार्थ रूपसे 'मजा करके यथार्थ रूपसे नहीं जाना 'बुरे परिणाम'को 'बुरा परिणाम' करके यथार्थ रूपसे नहीं जाना 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूपसे नहीं जाना, तब तक मैं भिक्षुओं इस स-देव स-मार स-ब्रह्म लोकमें — जहाँ श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जह देव-मनुष्य रहते हैं — यह नहीं कहा कि मुझे सर्वश्रेष्ठ सम्बोधि प्राप्त हो गई। क्योि भिक्षुओं अब मैंने लोकके 'स्वाद' (मजे) को 'स्वाद' करके यथार्थ रूपसे जान लिय बुरे-परिणामको बुरा-परिणाम करके यथार्थ रूपमें जान लिया, निस्सरणको निस्सर करके यथार्थ रूपसे जान लिया, इसलिये भिक्षुओं मेंने इस स-देव स-मार, स-ब्रह लोकमें — जहाँ श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जहाँ देव-मनुष्य रहते हैं — यह कहा ि मुझे सर्वश्रेष्ठ सम्बोधि प्राप्त हो गई, मुझे 'ज्ञान' हो गया, मुझे 'दृष्टि' उत्पन्त ह गई — मेरी चित्त-विमुक्ति अचल हैं, मेरा यह अन्तिम जन्म हैं, मेरा अब पुनर्भव नहीं हैं

" भिक्षुओ, मैंने लोकमें 'स्वाद' की खोज की, लोकमें जो 'स्वाद' है उं जाना और लोकमें जितना 'स्वाद' है उस सबको भी प्रज्ञासे भली प्रकार जाना भिक्षुओ, मैंने लोकमें 'बुरे-परिणाम' की खोज की। लोकमें जो 'बुरा-परिणाम है उसे जाना और लोकमें जितना 'बुरा-परिणाम' है उस सबको भी प्रज्ञासे भल प्रकार जाना। भिक्षुओ, मैंने लोकमें 'निस्मरण'की खोज की। लोकमें जो 'निस्सरण है उस सबको भी प्रज्ञासे भली प्रकार जाना।

"मिक्षुओ, मैने जब तक इस लोकके 'मजे 'को 'मजा' करके यथार्थ-रूप
नहीं जाना , बूरे-परिणाम' को 'बूरा परिणाम' करके यथार्थ रूपसे नहीं जान
निस्सरण (मुक्ति) को निस्सरण करके यथार्थरूपमे नहीं जाना, तबतक मैने मिक्षुव
इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोकमें—जहाँ श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जहाँ देव-मनुष
रहते हैं—यह नहीं कहा कि मुझे सर्व-श्रेष्ठ वोधि प्राप्त हो गई। क्योकि मैने मिक्षुव
अब लोकके 'स्वाद' को 'स्वाद' करके यथार्थ रूपमे जान लिया, 'बुरे-परिणाम' व
'वुरा-परिणाम' करके यथार्थ-रूपमे जान लिया, 'निस्सरण' को 'निस्सरण' कर
यथार्थ रूपसे जान लिया, इस लिये मिक्षुओं मैने इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोककों-

बनाना हो। बाहे कर्मनी हो। बाहे दुरबक्ष हो। बाहे बच्छा हो। बाहे स्वर्ग-माका हो---वह मबके क्रिये योग्य होता है।

"इसी प्रकार भिक्षुको येष्ट-चित्तकी साधनामें करे हुए भिक्षुको समय-धमयपर तीन बार्तोको मनमें अगह देनी चाहिये—धमय-समयपर भमाधि-निमित्तको मनमें अगृह दे समय-ममयपर प्रवह-निमित्तको मनमें अगृह दे समय-ममयपर जेपेसी -निमित्तको मनमें बगह है। भिक्ष, महि बेय्ठतर-चित्तकी साधनामें सवा हुया मिल् ममाप्रि-निमित्त ही समाधि-निमित्तको मनमें बगह देवा है वो इसकी सम्भावना है कि यह चित्त आकस्यको और सुरु जान । भिजुला यदि सेय्ट्यर-चित्तकी साजनार्ने कगा हुना भिन्नू प्रवह-निभिन्न ही प्रवह-निभिन्त को मनमें चयह देता है ता इसकी सम्मानना है कि वह चित्त उपवत-मनकी बोर सक बाय । पिछको यदि मेप्टतर-चित्तकी सामनामें बमा इजा मिश ज्येता-निमित्त ही उपेशा-निमित्तको मनमें जयह देश है थे। इसकी सन्भावना है कि वह जिल जासबैकि क्षय के सिमे सम्मक प्रवास न करे। क्योंकि विस्रज्ञो सैप्टतर-वित्तकी सावनामें क्या हवा पिस्न समय-समवपर समावि-निमित्तको बनमें बबह देता है समय-समयपर प्रवह-निमित्तको मनमें बयह देता है समय-समयपर क्पेजा-निमित्तको मनमें बनह देता है इसकिये वह वित्त कीमक हो बाता है कमनीय हो बाता है प्रवास्तर हो जाता है तका दृटता नहीं है। वह आसबीका अन करते के किने सम्यक त्रमल-बील होता है। । वह निम्हाके हाए सामाद करने मोग्न जिस-बित वर्ग (=किया) की बोर मनको सुकाता है जमे-जसे ही प्राप्त कर खेता है-हर बावतन की ।

बहुनदि इच्छा करें — कि में जनेक प्रकारकी क्षतियोंका अनुसद करूं।
(तृ २६६) वृत्तिक विश्वको बातना चाहिये आसकोरा अन्य कर (पृ २६४) श्रासाल कर, प्राप्त कर विहार करूं — उने बसे ही प्राप्त कर केशा है — हर आंत्रज को।
(११)

मिनुनो बोधि प्राप्तिने पूर्व क्या में सम्बुट नहीं या वय में बोधिनतत्त्व वा तय गेरे मनमें यह विद्यासा वैद्या हूँ— "बोकमें 'मन्त्र' तथा होता है ? बोकमें युप-परिचान क्या होना है ? बोकमें मुक्ति (=निस्तरव) क्या है ? " तय जिल्लाने वैरे ननमें यह हुवा—कोनमें यो निमी वी प्रस्थके क्रम-स्वरूप मुख्या तीननस्य पैरा करता हूँ, उन्ही ब्राह्मणो की 'ब्राह्मणो 'में गिनती करता हूँ, वे आयुष्मान [ इसी शरीर में 'श्रामण्य 'वा 'ब्राह्मण्य 'को साक्षात कर विहार करेंगे।

# (१०३)

"भिक्षुओ, यह जो 'गाना' है, यह आर्य-विनय के अनुसार 'रोना' ही है। भिक्षुओ, यह जो नाचना है, यह आर्य-विनय के अनुसार 'पागल-पन' ही है। भिक्षुओ, यह जो देर तक दाँत निकाल कर हँसना है, यह आर्य-विनय के अनुसार बचपन ही है। इस लिये भिक्षुओ, यह जो गाना है, यह सेतु (का) घात-मात्र ही है, यह जो नाचना है, यह सेतु (का) घात-मात्र ही है। धर्मानन्दी सन्त पुरुषों का मुस्कराना ही पर्याप्त है।"

# (808)

"भिक्षुओ, इन तीन वातों से तृष्ति नहीं होती। कौन सी तीन वातों से ?
"भिक्षुओ, सोने से तृष्ति नहीं होती, भिक्षुओ, सुरा-मेरय के पीने से
तृष्ति नहीं होती, भिक्षुओ, मैथुन से तृष्ति नहीं होती। भिक्षुओ, इन तीन
वातों का सेवन करने से तृष्ति नहीं होती।"

#### (१०५)

उस समय अनाथ-पिण्डिक गृहपित जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचा। पहुँच कर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर वैंठ गया। एक ओर बैंठे अनाथ-पिण्डिक गृहपित को भगवान् ने यह कहा----

"गृहपति । चित्त अरिक्षत रहने ने शारीरिक-कर्म भी अरिक्षत रहते हैं, वाणी के कम भी अरिक्षत रहते हैं, मन के कर्म भी अरिक्षत रहते हैं। जिसके शरीर, वाणी तथा मन के कर्म अरिक्षत रहते हैं, उस के शरीर, वाणी, मन के कर्म भी 'चूते' हैं। जिस के शरीर, वाणी तथा मन के कर्म 'चूते' हैं, उस के शरीर, वाणी तथा मन के कर्म भी 'सड़े' होते हैं। जिस के शरीर, वाणी तथा मन के कर्म 'सड़ें होते हैं, उस का मरना अच्छी तरह नहीं होता, उस की काल-क्रिया अच्छी तरह नहीं होती।

"गृहपति । जैसे यदि कूटागार (शिखर वाला घर) अच्छी तरह से छाया न हो, तो शिखर भी अरक्षित रहता है, कडियाँ भी अरक्षित रहती है तथा दीवार भी अरक्षित रहती है। इसी प्रकार शिखर भी चूता है, कडियाँ भी चूती

वहां धनन-नामुन रहते ई तवा वहां देव-मनुष्य रहते ई---यह कहा कि मुने वर्ष भेटा सम्बोधि प्राप्त हो नई, मुझे जाना हो गया मुझे 'बृद्धि' क्लाप्त हो नई--मेरी चिता-विमृत्तित जवक है मेरा यह मौताम जन्म हैं मेरा अब पुतर्मेव नहीं है।

निस्त्रों यदि लोकने 'मन्त्र' न हो तो ये प्राची संसारने बातनत न हो स्पोक्ति निज्ञों लोकने मन्त्र है इतिको प्राची लोकने बातनत हारे हैं। निज्ञाने, 'मित्र लोकने सुरा-परिवाद न हो तो ये प्राची संसारत दिस्सत न हो लोकों मित्र लोकने सुरा-परिवाद है इस्ति में प्राची लोकने सुरा-परिवाद है इस्ति में प्राची लोकने निर्वाद स्वीद निस्तर होते हैं। निज्ञाने परिवाद ने निस्तर में प्राची को स्वीद निस्तर होते हैं। विज्ञाने सिन्दान सुरा स्वीद निस्तर होते हैं।

"शिक्षा चल तक प्राची संवारके स्वाद करके प्रवाद करके स्वाद करके स्वाद करके प्रवाद करके प्र

'। मत जो जो समय वा शहान कोक के 'जार' को 'स्वार' करके कोक के मुरे-मरियाम को बुए-मरियाम करके बोक के निरुद्ध को निरुद्ध करके प्यार्थ-कर के नही जातते जिल्ला के में उन समनों की समयों में निरुद्धी करता है न उन शहामों की शहानों में निरुद्धी करता हूँ जोर न के आमुम्मान इसी घरौर में मानम्य वा शहाम्य को नाशात कर विद्या करते हैं।

भिसतों यो समन या बाह्यन लोक के स्वाद को स्वाद करके कोड़ के बुरेशरियाम को बुराशरियाम काले लोक के शिस्छान को विस्छ-रन करके यमार्थ कर से बात लेने भिज्ञानों से उन्हीं सनकों की समनों में विनडी नहीं होता, कडियाँ भी खराव नहीं होती, दीवार भी खराव नहीं होती, इसी प्रकार गृहपति । चित्त के खराव न होने पर, शरीर, वाणी तथा मन के कर्म भी खराब नहीं होते। जिसके शरीर, वाणी तथा मन के कर्म खराब नहीं होते उसका मरना भी अच्छा होता है, उस की काल-किया भी अच्छी होती हैं।

(१०७)

"भिक्षुओ कमीं की उत्पत्ति के तीन हेतु (= निदान ) हैं। कौन से तीन  $^{7}$ 

"लोभ कमों की उत्पत्ति का हेतु है, द्वेष कमों की उत्पत्ति का हेतु है तथा मोह कमों की उत्पत्ति का हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में लोभ है, जो लोभ से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु लोभ है, जिस की उत्पत्ति लोभ से हुई है वह अकुशल कर्म है, वह सदोष कर्म है, उस कर्म का फल दु सहै, उस कर्म से कर्म का समुदय होता है, उस कर्म से कर्म का निरोध नहीं होता। भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में देष हैं जिस के मूल में मोह है, जो मोह से उत्पन्न हुआ है, जिस का हेतु मोह है, जिस की उत्पत्ति मोह से हुई है वह अकुशल कर्म है, वह सदोष-कर्म है, उस कर्म का फल दु सहै, उस कर्म से कर्म का समृदय होता है, उस कर्म से कर्म का निरोध नहीं होता।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु है।"

(१०८)

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु (≃निदान ) है। कौन से तीन ?

"अलोभ कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है, अद्वेष कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है, अमोह कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कमं के मूल में अलोभ है, जो अलोभ से उत्पन्न हुआ है, जिस का हेतु अलोभ है, जिस की उत्पत्ति अलोभ से हुई है वह कुशल कमं है, वह निर्दोष कमं है, उस कमं का फल सुख है, उस कमं से कमं का निरोध होता है, उस कमं से कमं का समुदय नहीं होता। भिक्षुओ, जिस कमं के मूल में अद्वेप है जिस कमं के मूल में अमोह है, जो अमोह से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु अमोह है, जिस की उत्पत्ति अमोह से हुई है, वह कुशल-कमं है, वह निर्दोप-कमं है, उस कमं का फल

है शैकार भी भूती है। इसी प्रकार फिलर भी सब बाता है कहियाँ भी सब बाती है, शैकार भी सब बाती है। इसी प्रकार मृह्मति । वित्त के करमित रहने पर सरीरिक-कर्न भी अस्तित रहता है काल-किया अच्छी तरह नहीं होती।

गृहसर्ता ! फिल एसेन एहने से धारी फिल्क में भी एसित एहते हैं। बाजी के कर्म भी एसित एहते हैं मन के कर्म भी एसित एहते हैं। निज के सरीए, बाजी तका मन के कर्म एसित एहते हैं उस के सरीए, बाजी तका मन के कर्म पूरे मही। किस के धारीए, बाजी तका कर्म के कर्म गुरे उस के धारीए, बाजी तका मन के कर्म खुरे मही। बात मन के कर्म खुरें नहीं। बित के धारीए, बाजी तका मन के कर्म खुरें मही उस का मरामा कच्छी तरह होता है उसकी काल-क्षिमां भी बच्छी तरह होती है।

नृत्पति । येथे यदि नृत्यार (चिवार-गृह) सम्मी ताह से काम हो तो धिकर मी पुरमित रहता है कहियों भी मुर्गित रहती है तवा धीनार भी पुरमित रहती हैं। इसी प्रकार धिकर भी नहीं चुन कहियों भी नहीं चुनी सीवार भी नहीं चुनी। इसी प्रकार धिकर भी नहीं चुन कहियों भी नहीं चुनी सीवार भी नहीं चुनी। इसी प्रकार धिकर भी नहीं चहना कहियों भी नहीं चुनी सीवार भी नहीं चुनी। इसी प्रकार पृह्मति ! क्लि के मुर्गित रहते पर सारीरिक-कर्म भी पुरमित रहते हैं काक-स्थार भी मन्त्री तरह होती हैं।

(१६)

एक और बैठे जनाव पिषिक मृद्यि को सरवान में बहु कहा --- मृद्यि [
'वित्त के कराव हो वार्त पर सरीर, वासी तथा सन के कमें भी कराव हो वार्त है।
'वित्त के कराव हो वार्त पर सरीर, वासी तथा मन के कमें बारव हो वार्त है उठका मरना भी अच्छा नही
होता उठ को काल-दिया भी अच्छी नहीं होती।

व्हाता । उस मा मान्यभा मा मान्य मुद्दारा । "मृद्दारि । वैसे यदि कृटागार (सिवार-मृद्द) की छत ठीक म हो हो रिवार की यो व्ययमें हैं चहुतोरोंकी मी क्यमी है, बीबार की थी करानी हैं इसी प्रकार मृद्दारि । विसार्व करान होने पर चर्चेट, नाभी तथा मान के कर्म क्यार होते हैं। जिसके बारीर मानी तथा मान के कर्म क्याय हो बाते हैं, धरुका मरना भी कच्छा मही होता चरुकी कार्य-दिवा भी मच्छी गही होनी।

पृह्मीत ! जित के लग्ज न होने पर छछेर, वासी तथा मन के नर्जे भी क्षण्य नहीं होते उठ ना मरना भी बच्छा होता है छनकी काळ-विधा भी कच्छी होती है। जैते नृह्मित ! जूरागार की छठ ठीक हो तो छिपर भी वरण नहीं होता, कडियाँ भी खराब नहीं होती, दीवार भी खराब नहीं होती, इसी प्रकार गृहपति । चित्त के खराब न होने पर, शरीर, वाणी तथा मन के कर्म भी खराब नहीं होते। जिसके शरीर, वाणी तथा मन के कर्म खराब नहीं होते उसका मरना भी अच्छा होता है, उस की काल-फिया भी अच्छी होती है।

# (१०७)

"भिक्षुओ । कमों की उत्पत्ति के तीन हेतु (= निदान ) है। कौन से तीन ?

"लोम कमों की उत्पत्ति का हेतु है, द्वेष कमों की उत्पत्ति का हेतु है तथा मोह कमों की उत्पत्ति का हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कमें के मूल में लोभ है, जो लोभ से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु लोभ है, जिस की उत्पत्ति लोभ से हुई है वह अकुशल कमें है, वह सदोव कमें है, उस कमें का फल दुख है, उस कमें से कमें का समुदय होता है, उस कमें से कमें का निरोध नहीं होता। भिक्षुओ, जिस कमें के मूल में द्वेष है जिस के मूल में मोह है, जो मोह से उत्पन्न हुआ है, जिस का हेतु मोह है, जिस की उत्पत्ति मोह से हुई है वह अकुशल कमें है, वह सदोव-कमें है, उस कमें का फल दुख है, उस कमें से कमें का समुदय होता है, उस कमें से कमें का निरोध नहीं होता।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं।"

(१०८)

"मिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु (≔िनदान ) है। कौन से त्तीन ?

"अलोभ कमों की उत्पत्ति का हेतु है, अद्वेष कमों की उत्पत्ति का हेतु है, अमोह कमों की उत्पत्ति का हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में अलोभ है, जो अलोभ से उत्पन्न हुआ है, जिस का हेतु अलोभ है, जिस की उत्पत्ति अलोभ से हुई है वह कुशल कर्म है, वह निर्दोष कर्म है, उस कर्म का फल सुख है, उस कर्म से कर्म का निरोध होता है, उम कर्म से कर्म का समुदय नहीं होता। भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में अद्देप हैं जिस कर्म के मूल में अमोह है, जो अमोह से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु अमोह है, जिस की उत्पत्ति अमोह से हुई है, वह कुशल-कर्म है, वह निर्दोप-कर्म है, उस कर्म का फल

मुक्त हैं उस कर्म से कर्मका निरोध होता है उस कर्म से कर्मका समुद्रम नहीं होता है मिश्रुमों । कर्मों की उत्पत्ति के में तीन हेतु हैं।"

(1.5)

ि भिस्त्रों ! कर्मों की जरपत्ति के ये तीन हेतु हैं। कौन से तीन ? 'पिक्ष्णों भूत कास के छच-राय-स्थानीय विषयों को सेकर छन्द (≔ इच्छां)

प्रशास होता है सिमूनों ! मनिष्यत् के छन्त-राव-कानीय विषयों को सेकर छन्द उत्पन्न होता है शिक्षुओं वर्तमान के छन्द राय-कानीय विषयों को लेकर

क्य उत्तर होता है। इन्य उत्तर होता है। प्रिमुखों! मृत-काड के इन्य शंग-स्थानीय विपर्धों को लेकर इन्य

में बितर्क देवा होने हैं जिल में विचार वैद्या होने हैं। उन से इन्स को उत्पत्ति होनी है। इन्स ( = इन्स) उत्पत्त होने पर स्पवित उन विचयों से संप्रता हो बाता है। मिस्सों । इवे ही में संशायत कहता हैं। मही विद्या की आधिता है। इनी प्रवार है। होती प्रवार होता है। प्रवार होता है। प्रवार होता है। प्रवार के इन्दर-प्रवर स्वार्ण होता है। "पिताबों । प्रवस्ता उत्पत्त के इन्दर-प्रवर्ण होता है। "पिताबों । प्रवस्ता उत्पत्त के इन्दर-प्रवर-प्रवर्णनात्वातीय विषयों को लेक्द

भीते जलम होता है? भूत काल के कन्य-राम-स्थानीय विदयों को केकर मिश्र

क्रम की उत्पन्न होता है? पविष्यत् काल के क्रम्य-पाव-स्वानीय विषयों को लेकर चित्त में चित्र की बाहित है विचार पैवा होते हैं। उन ने क्रम्य की उत्पन्ति होती हैं क्रम्य उत्पन्न होने गर प्यत्तिक उन विकारों के संयुक्त हो चाता है। चित्रुकों है हो वर्ष प्रदेश हों। यही चित्र को सामित्र हैं। हशी प्रकार चित्रुकों है। प्रतिपन्नत काल के क्रम्य-पान-बातीय विवयों को लेकर क्रम्य तथा होता है।

सितृसी! दर्गमात के अन्य-पाय-स्थातीय विषयों को लेकर अन्य स्वेद उसल होता है? पविष्यत् शास के अन्य-पाय-स्थातीय विषयों को लेकर चित्त में वितर्क पैवा होते हैं निवार पैवा होते हैं। उन से अन्य को कर्मात होती हैं। अन्य उसला होते पर सर्मित कर नियागे से स्युक्त हो बाता हैं। सिशुसी? हमे ही में सर्वायत कहता हैं। यही चित्त की सास्तित हैं। हमी प्रकार निख्यों वर्तमात के अन्य-पाय-सानीय विषयों को लेकर अन्य उसम होता है। मिसुसी! इसों दी सर्माति के ये तीत के हमें

#### (११०)

- "भिक्षुओं । कमों की उत्पत्ति (?) के ये तीन हतु है। कौन से तीन?
- "भिधुओं, भूत-काल के छन्द-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छन्द उत्पन्न नहीं होता, निलुओं । भविष्यत् के छन्द-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छन्द उत्पन्न नहीं होता, भिक्षुओं । वर्तमान के छन्द-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छन्द उत्पन्न नहीं होता।
- "भिक्षुओ, मूत काल के छन्द-राग-स्यानीय विषयों को लेकर छन्द कैसे उत्पन्न नहीं हाता ?
- "भिक्षुओ, वह भूत काल के छन्द-राग-स्थानीय विषयों पा भावी फल जानता है, भावी फल जानकर उन में पृथक होता है, पृथक हाकर, चित्त से हटाकर, प्रज्ञा से बीध कर देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भूत-काल के छन्द-राग-स्थानीय विषयों को ठेकर छन्द उत्पन्न नहीं होता।
- "भिक्षुओं, भविष्यत् काल के छन्द-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छन्द कैसे उत्पन्न नहीं होता?
- "भिक्षुओ, वह भविष्यन् काल के छन्द-राग-स्यानीय विषयो का भावी फल जानता है, भावी फल जानकर उन से पृथक होता है, पृथक होकर, चित्त से हटा कर, प्रज्ञा से बीध कर देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भविष्यत् काल के छन्द-राग-स्यानीय विषयो को लेकर छन्द उत्पन्न नहीं होता।
- "मिक्षुओ, वर्तमान के छन्द-राग-स्थानीय विषयो को लेकर छन्द कैसे उत्पन्न नहीं होता ?
- "भिक्षुओ, वह वर्तमान काल के छन्द-राग-स्थानीय विषयों का भावी फल जानता है, भावी फल जानकर उन से पृथक होता है, पृथक होकर, चित्त से हटाकर, प्रज्ञा से वीध कर देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ । वर्तमान के छन्द राग-स्थानीय विषयों को लेकर छन्द उत्पन्न नहीं होता।
  - " भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु है।

(१११)

"भिक्षुओ, इन तीन पाप-धर्मों को न छोडने वाले तीन जन अपाय-गामी है, नरक-गामी है। कौन से तीन? " जो बहायमाँ-पतिब होकर सबहायारी होता है जो परिपूत बहायमाँ का सामरण करने बाल पुत बहायारी पर मृत्य होत कमाता है तथा विश्वका ऐसा मत होना है या ऐसी दृष्टि (कियार) होती हैं काल मोनों में बोज नहीं है वह काम मोनों में निर्माणकीय पहता है। जिल्लामें कर तीन पाप-बमों को न कोडने साने तीन जन समाय-गानी है नरफ-मानी है।

(११२)

"भिज्ञों संसर में इन तौन का प्रादुर्भीय दुर्लय है। किन तीनना?

भिग्नी मंगर में तमायत महेत समक तम्ब ना प्राहुमीन पुर्तन है। संसार में तमायत हाण जगरिए धर्म के अपनेष्ण का प्राहुमीन पुर्तन है। संसार में तका कर-वेदी का प्राहमीन दुर्तन है।

"भिनुतो संसार में इन दौन का प्राप्तमीन दुर्तन है।"

(111)

"भिभूता संतार में तीन प्रकार के लोग है। कीव से तीन प्रवार के हैं "श्रामानी से सारे जा नकने वोग्य कठिनाई ते नाये जा तकने योग्य

त त्रापे जा तकन योग्य । निक्तमी, कामानी के नाया जा सकने वाका आदमी कैना होता है ?

ानकुमा, जासाता संत्राचा नारा नारा नारा करा करा इता है।

"विसूत्री एक आरमी होता है उडत नारी चरक सुधर, जनवत भाषी नह जजारी जनसहित सामानीचल जनसभी। विद्याली ऐसा आरमी

भागानीमें मापा का सन्यनेवासा कावमी वरसाता है।

बिर्मुभी कंत्रिनाई ने नापा जा नपन बाला आपमी पेता होना है ?

"भिश्वती एक बारमी होता है बनुत्रम अमानी अवस्त अमूनर, संदर वारी बनुद्र वारी समाहित अवस्तन-विक्त नंत्रमी। विद्युवी ऐसा अपनी बहिनाई ने बाला जा नहने वाला बादमी होता है।

भिध्या न मारे का नरने दाना आदमी कैना होता है ?

किनुसा जर निश्च सहैत होना है धीनायन होता है। निनुसी, ऐसा बाहसी न नारा ना नकने याना साहनी होता है। निशुसी सनाह में से तीन बहार के नाम है। (888)

"भिक्षुओं, मसार में तीन तरह के लोग है? कौन में तीन तरह के?

"भिक्षुओं, एक आदमी सत्र रूप-सज्ञाओं को पार कर, प्रतिघ-सज्ञाओं को अस्त बर, नानत्व सज्ञा को मन से निकाल, 'आकाश अनत हैं' करके आकाशा-नन्त्यायतन को प्राप्त हो विहरता हैं। वह उस का आनन्द लेता हैं, उसे चाहता है और उस से तृप्त होता है। उस घ्यान में स्थित रहकर, उसी में लगा रहकर, उसी में प्राप्त विहार करने रहकर, उस घ्यानावस्था को प्राप्त वह जब काल करता है, तो वह आकाशानन्त्यायतन के देवताओं के साथ उत्पन्न होता है। भिक्षुओं, आकाशा-नन्त्यायतन के देवताओं की वीस हजार कल्प आयु होती है। सामान्य पृथक-जन आयु भर रहकर जब तक उन देवताओं की आयु हैं उसे विताकर नरक को भी जा सकता है, पशुयोनि में भी उत्पन्न हो नकता है, प्रेत-योनि में भी उत्पन्न हो मकता है। लेकिन जो भगवान् का श्रावक हैं वह वहाँ आयु भर रहकर, जितनी उन देवताओं की आयु होती है, उतनी विताकर उमी (अक्प) शरीर से परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता है। भिक्षुओं, यह विशेषता है, यह खास वात है, यह भेद हैं जानी

आयं श्रावक का तया अजानी पृथक जन का जो कि यह गति, उत्पत्ति के बारे में।

"फिर भिक्षुओ, एक आदमी सव तरह से आकाशानन्त्यायतन' को पार कर 'विज्ञान अनत हैं 'करके 'विज्ञानान्त्यायतन' को प्राप्त हो विहरता हैं। वह उसका आनन्द लेता है, उमे चाहता है और उस से तृप्त होता हैं। उस ध्यान में स्थित रहकर, उसी में लगा रहकर, उसी में प्राय विहार करते रहकर, उस ध्याना-वस्था को प्राप्त वह जब काल करता है तो वह विज्ञानानन्त्यायतन के देवताओं के साथ उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, विज्ञानानन्त्यायतन के देवताओं की चालीस हजार कर्प की आयु होती हैं। सामान्य पृथक जन आयु भर रहकर, जब तक उन देवताओं की आयु हैं उसे विताकर नरक को भी जा सकता है, पशु-योनि में भी उत्पन्न हो सकता हैं, प्रेत-योनि में भी उत्पन्न हो सकता हैं। लेकिन जो भगवान् का श्रावक हैं वह वहाँ आयु भर रहकर जितनी उन देवताओं की आयु होती हैं उतनी विताकर उसी (अरूप) शरीर से परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता हैं। भिक्षुओ, यह विशेषता हैं, यह खास वात हैं, यह भेद हैं, ज्ञानी आर्य श्रावक का तथा अज्ञानी पृथक-जन का, जो कि यह गित उत्पत्ति के वारे में।

फिर भिजनो एक नारमी सद तरह से दिज्ञानानन्यायतन को पारकर कुछ नही है करके <sup>रे</sup> अफिल्चनल्यायदन को प्राप्त कर विद्वार करता है। बहु उस का भावन्द केटा है। उस बाहता है और उस से तुप्त होता है। उस स्वान में स्थित एड कर, उसी में क्षत्रा धड़कर, उसी में प्रायः बिधार करते धड़कर, उस स्यानावस्या को प्राप्त वह बब काल करता है। तो वह अकिन्वनस्यायतन के देवताओं के साथ उत्पन्न होता है। भिस्तुओं अफिल्यनत्यायतन के देवताओं की साठ हजार करन की भागू होती हैं। सामान्य पुषक जन बायू भर रहकर, जब तक उन रेवताओं की बाय है उसे बिसाकर नरक को भी जा सबसा है पसु-मौति में भी उलाम हो सकता है। लेकिन जो मगवान का सावज है यह यहाँ आस घर एडकर जितनी धन देवतामों की मामु होती है उतनी विताकर उसी ( सक्य-) बरीर से परिनिर्वाच को प्राप्त हो बाता है। भिल्लों यह विधेवता है यह सास-बात है यह भेर है जानी बार्य-मावक का तवा बजानी पूपक-जन का जो कि यह गति जेलाति के बारे में ।

"भिन्न को संसार में ये तीन प्रकार के लोग है।

( \* \* 4 ) "भिक्रको वे सीन विपत्तियाँ हैं। कीन नी सीन ?

"योल-विपत्ति विश्त-विपत्ति वृष्टि-विपत्ति।

"पिश्वो शील-विपत्ति किमे वहते हैं ?

"मिल्ला एक बादमी प्रामी-हिमा करता है कोरी करता है काम मोग सम्बन्धी निष्याचार करता है। मूठ बोलता है। चुपती लाता है। बठीर बोलता है क्य बंबालता है। मिश्रको इसे शील-विपत्ति बहुते है।

"भिग्रजी जिल-विपत्ति विके बद्दी है ?

"वितुनो, एक भारती नौती होता है अभेडी होता है। विसुनी इमे चित-विचित्त रही है।

"पिनाबी दिप्ट-बियति विने बडने हे?

विज्ञ थे. एक बारमी मिप्ता-दृष्टि होता है जली बतिबाता--बाव (शाक्षण) नहीं बद (राक्षण) नहीं बाहुनि (नाक्षण) नहीं नुस्त-नुप्तण वची वा कल नहीं बह लोक नहीं करलोक नहीं बाता नहीं दिना नहीं क्यून

होकर उत्पन्न होने वाले प्राणी नही, ससार में कोई समार्ग-गामी, सुपथ-गामी श्रमण-ब्राह्मण नही जो इस लोक तया पर-लोक को स्वय जानकर साक्षात कर उस की वात करते हो। भिक्षुओ, यह दृष्टि-विपत्ति कहलाती हैं।

"भिक्षुओ, शील-विपत्ति के कारण प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर, अपाय, दुर्गति, पतन, नरक को प्राप्त होते हैं, अयवा चित्त-विपत्ति के कारण प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर अपाय, दुर्गति, पतन, नरक को प्राप्त होते हैं अथवा दृष्टि-विपत्ति के कारण प्राणी, शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर अपाय, दुर्गति, पतन, नरक को प्राप्त होते हैं। भिक्षुओ, ये तोन विपत्तियाँ है।

"भिज्ञुओ, ये तीन सम्पत्तियाँ है ? कौन सी तीन?

"शील-सम्पत्ति, चित्त-सम्पत्ति तथा दृष्टि-सम्पत्ति ।

" मिक्षुओ, शील-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षुओ, एक आदमी प्राणातिपात से विरत होता है, चोरी से विरत होता है, काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचार से विरत होता है, झूठ बोलने से विरत होता है, चुगली खाने से विरत होता है, कठोर बोलने से विरत रहता है तथा व्यर्थ बोलने से विरत रहता है। भिक्षुओ, इसे शील-सम्पत्ति कहते है।

"भिक्षुओ, चित्त-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षु एक आदमी अलोभी होता है, अक्रोघी होता है। भिक्षुओ, इसे चित्त-सम्पत्ति कहते है।

"भिक्षुओं। दृष्टि-सम्पत्ति किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ। एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है, सीधी-समझ वाला—दान का (फल) है, यज्ञ का (फल) है, आहुति (का फल) है, सुकृत-दुष्कृत कर्मों का फल-विपाक है, यह लोक है, परलोक है, माता है, पिता है, च्युत होकर उत्पन्न होने वाले प्राणी है, लोक में समार्ग-गामी, सुपथ-गामी, श्रमण-बाह्मण हैं जो इस लोक तथा पर लोक को स्वय जानकर साक्षात कर उन की बात करते हैं। भिक्षुओ! इसे दृष्टि-सम्पत्ति कहते है।

" मिज्ञुओ, शोल-सम्पत्ति के फलस्बरूप प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर, सुगति को प्राप्त होते हैं, स्वर्ग-लोक में जन्म ग्रहण करते है वा भिक्षुओ

फिर मिजुओ एक बादमी सब तरह से विज्ञानान स्वायतन को पारकर क्रम मडी है करके अफिन्चमनसायतन को प्राप्त कर विद्वार करता है। बहु उस का बानन्द केता हूँ उसे बाहता है और उस से तुप्त होता है। उस म्यान में स्वित चह कर, उसी में क्या खुकर, उसी में प्राम विद्वार करते खुकर, इस व्यानावस्था को प्राप्त बह बब काल करता है। तो वह अफिन्यनन्त्यायतन के देवताओं के साब सराब होता है। विश्व वो विक्रम्यतन्त्यायतन के देवताओं की साठ हवार करप की आमु होती हैं। सामान्य पृथक जन आमु मर चहुकर, अब तक उन देवताओं की बाय है उसे विताकर नरक की भी वासकता है पसू-योगि में भी उलाब हो मुक्ता है। सेकिन को भगवान का भावक है वह दहाँ बागु घर एहकर जितनी जन देवताओं की बामू होती है उतनी विताकर जसी ( बरूप-) सरीर से परिनिर्वास को प्राप्त हो भाषा है। मिल्रुको यह विशेषता है यह सास-बात है यह मेर है जाती बार्य-मायक का तथा बजानी प्रयक्त का जो कि यह पति अरपति के बारे में ।

मिल्लो संसारमें ये तीन प्रकार के लीन है।

(224)

भिज्ञो ये तीन विपविभी हैं। कीन सी दीन रे

धीक-विपत्ति वित्त-विपत्ति वृष्टि विपत्ति ।

भिभवो बीच-विपत्ति निसे भडते हैं ?

भिमुनी एक बादमी प्राणी-हिंसा करता है चोरी करता है काम-बोच सम्बन्धी मिष्पाचार करता है। सठ बोलवा है। चनकी बाता है। नदोर बोलता है। व्यर्थ बोक्ता है। पिशुओं इसे ग्रीक-विपत्ति कहते हैं।

"मिसूबो, चित्त-विपत्ति किसे कहते हैं ?

निज्ञो एक नावमी कोमी होता है कोबी होता है। जिस्सी इसे चित्त-विपत्ति कहते हैं।

"पिसूबो इप्टि-विपत्ति किस कारो है?

विस्तवो एक बादमी मिष्या-दृष्टि होता 🕻 असी महिदासा—दान (काकल) नहीं यस (काकल) नहीं बाहुति (काकल) नहीं सुदृत-पुत्रुत कर्मी राजन नहीं बह बोक नहीं परकोक नहीं नाता नहीं पिता नहीं क्यात

होकर उत्पन्न होने वाले प्राणी नही, ससार में कोई ममार्ग-गामी, सुपथ-गामी श्रमण-ब्राह्मण नही जो इस लोक तथा पर-लोक को स्वय जानकर साक्षात कर उस की वात् करते हो। भिक्षुओ, यह दृष्टि-विपत्ति कहलाती हैं।

"मिक्षुओ, शील-विपत्ति के कारण प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर, अपाय, दुर्गति, पतन, नरक को प्राप्त होते हैं, अथवा चित्त-विपत्ति के कारण प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर अपाय, दुर्गति, पतन, नरक को प्राप्त होते हैं अथवा दृष्टि-विपत्ति के कारण प्राणी, शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर अपाय, दुर्गति, पतन, नरक को प्राप्त होते हैं। भिक्षुओ, ये तोन विपत्तियाँ हैं।

"भिक्षुओ, ये तोन सम्पत्तियाँ हैं? कौन सी तीन?

"शील-सम्पत्ति, चित्त-सम्पत्ति तथा दृष्टि-सम्पत्ति ।

"भिक्षुओ, शील-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षुओ, एक आदमी प्राणातिपात से विरत होता है, चोरी से विरत होता है, काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचार से विरत होता है, क्षूठ वोलने से विरत होता है, चुगली खाने से विरत होता है, कठोर बोलने से विरत रहता है तथा व्यर्थ बोलने से विरत रहता है। भिक्षुओ, इसे शील-सम्पत्ति कहते हैं।

" मिक्षुओ, चित्त-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षु एक आदमी जलोभी होता है, अक्रोधी होता है। भिक्षुओ, इसे चित्त-सम्पत्ति कहते है।

"भिक्षुओ । दृष्टि-सम्पत्ति किसे कहते हैं ?

"भिक्षुओं। एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है, सीधी-समझ वाला—दान का (फल) है, यज्ञ का (फल) है, आहुति (का फल) है, सुकृत-दुष्कृत कर्मों का फल-विपाक है, यह लोक है, परलोक है, माता है, पिता है, च्युत होकर उत्पन्न होने वाले प्राणी है, लोक में समार्ग-गामी, सुपथ-गामी, श्रमण-बाह्मण है जो इस लोक तथा पर लोक को स्वय जानकर साक्षात कर उन की बात करते हैं। भिक्षुओं! इसे दृष्टि-सम्पत्ति कहते हैं।

" भिन्नु ओ, शोल-सम्पत्ति के फलस्वरूप प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर, सुगति को प्राप्त होते हैं, स्वर्ग-लोक में जन्म ग्रहण करते हैं वा भिक्षुओ वित्त-सम्पत्ति के हेतु प्राची सरीर सूटने पर, मध्ने के बनन्तर मुगति को प्राप्त होते हैं स्वर्य-कोक में जन्म बहन करते हैं बचना मिसूबो दृष्टि-सम्पत्ति के हेतु प्राणी सरीर सूटने पर मध्ने के बनन्तर सुगति को प्राप्त होते हैं स्वर्य-कोक में बन्म प्रहच करते हैं।

"भिक्षुको येतीन सम्पत्तियाँ है।

(११६) भिन्नको तीन विपक्तियों हैं। कौन सी तीक?

"शौक-विपत्ति वित-विपत्ति वृष्टि-विपत्ति (पूर्वानुसार)

"मितुनो बेरी क्यार केंद्री हुई थेक मिन बही-बही मी विक्री है ठीक ही विक्री है इसी प्रकार मित्रूमी शील-वित्तिक के नात्म प्राणी अस्म प्रकृत करते हैं जनना चित्त-विपत्ति के कारण आस्म प्रकृत करता है अस्या चुटि-विपत्ति के कारण अस्म प्रकृत करते हैं। जिल्लूमी से शील विपत्तिना है।

"पिश्वको वे तीन सम्पत्तियाँ है? कौन भी तीन ?

"शोब-सम्पत्ति वित-शमति वृष्टि-सम्पत्तिः

"पितृसी जैसे अनर वेंत्री हुई थेक जीव नहीं नहीं मी पिक्षी हैं क्रीक ही निक्की हैं इती प्रकार मिन्नुसी कीन-सम्मीत के पारण प्रामी जन्म बहुप करते हैं अपका विशा-सम्मीत के पारण प्रामी अन्य बहुप करते हैं अपका दृष्टि-सम्मीत के कारण प्रामी वाल प्रहम करते हैं। सिन्नुसी से तीन सम्मीता हैं।

(224)

"विद्युन्। ये तीन विपत्तियाँ है। श्रीन नी तीन?

" वर्भान्य-विपत्ति आजीव-विपत्ति वृध्टि-विपत्ति ।

"निभूतो कर्नाना-विकति निमे नहते हैं?

"मिलुबो एक बारमी प्राची-हिंगा करता है व्यर्व बालगा है।

निर्मुडी यह नजीन्त-वित्रति नहसाती है। निरम्जी जाजीव-विर्मात विभे नहते है?

विकृती एक बारमी विष्यान्त्रीची होता है विष्या-बातीविका ने जीविका चलता है। विष्योत, हमें बातीव-विष्योत करने हैं। "भिक्षुओ, दृष्टि-विपत्ति किसे कहते हैं ?

"भिक्षुओ, एक आदमी मिथ्या-दृष्टि वाला, विपरीत-मित वाला होता है— दान का (फल) नहीं हैं, यज का (फल) नहीं हैं जो इस लोक तथा पर-लोक को स्वय जानकर, साक्षात कर उन की बात करते हैं। भिक्षुओं इसे दृष्टि-विपत्ति कहते हैं। भिक्षुओ, ये तीन विपत्तियों हैं?

" भिक्षुओ, ये तीन सम्पत्तियाँ है। कीन नी तीन?

" गर्मान्त-सम्पत्ति, आजीव-मम्पत्ति, दृष्टि-नम्पत्ति।

"भिक्षुओ, कर्मान्त-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा में विरत रहता हैं व्ययं वोलने से विरत रहता है। मिक्षुओ, इमे कर्मान्त-मम्पत्ति कहते हैं।

"मिधुओ, आजीव-सम्पत्ति क्या है ?

"मिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-जीवी होता है, वह सम्यक् आजीविका से जीविका चलाता है। मिक्षुओ, इने आजीव-सम्पत्ति कहते है।

"भिक्षुओ, दृष्टि-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षुओ, एक आदमी मम्यक्-दृष्टि होता है अविपरीत-दर्शी
—दान का (फल) है, यज्ञ का (फल) है जो इस लोक तथा परलोक को स्वय जानकर साक्षात कर उन की वात करते हैं। भिक्षुओ, इसे दृष्टि-सम्पत्ति कहते हैं। भिक्षुओ, ये तीन सम्पत्तियां है।"

## (११८)

"भिक्षुको, ये तीन शुचि-भाव है। कौन से तीन?

" शरीर की शुचिता, वाणी की शुचिता, मन की शुचिता।

"भिक्षुओ, शरीर की शुचिता किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, आदमी प्राणी-हिंसा से विरत रहता है, चोरी से विरत रहता है। कामभोग सम्बधी मिथ्या-चारसे विरत रहता है। भिक्षुओ, यह शरीर की शुचिता है। "भिक्षुओ, वाणी की शुचिता क्या है?

"भिक्षुओ, आदमी झूठ वोलने मे विरत रहता है चुगली खाने से विरता रहता है, कठोर वोलने से विरत रहता है तथा व्यर्थ वोलने से विरत रहता है। भिक्षुओ, इसे वाणी की शुचिता कहते है।

वित-सम्पत्ति के हेत प्रामी घरीर स्टरने पर, भरने के बनन्तर सगति को प्राप्त होते हैं स्वर्ग-कोक में बरम बहन करते हैं अववा मिशुओ दृष्टि-सम्पत्ति के हेतु प्राची सरीर घटने पर मरने के मनन्तर मुगति को प्राप्त डोते हैं स्वर्ध-सौक में कम्म घड़न करते हैं।

मिस्त्रो येतीन सम्पत्तियाँ दे।

(225)

ਸਿਲਕੀ ਰੀਨ ਵਿਧਰਿਸੀ ਵੈ। ਝੀਜ ਦੀ ਰੀਨ? "सौक-विपत्ति वित्त-विपत्ति इप्टि-विपत्ति (पूर्वानुसार)

भिसूचो जीसे क्रपर फेंकी हुई सेट्ड समि वडी-वडी भी पिटती है ठीक ही गिरती है इसी प्रकार भिजूबो सीक-विपत्ति के कारण प्राणी जन्म प्रदूष करते हैं अवना विश्व-निपत्ति के कारण वस्म प्रदूष करते है अवना इप्टि-विपत्ति के कारण जन्म बहुग करते हैं। जिल्लूजों ने तीन विपत्ति वी है।

"पिसूबो में तीन सम्पत्तियाँ हैं ? कौन सी तीन ?

**"बील-सम्पत्ति वित्त-सम्पत्ति वध्ट-सम्पत्ति।** "पिश्वो अंधे क्यर फेंटी हुई बैय्ठ मणि नहीं नहीं भी निस्ती हैं ठीक ही विरती है। इसी प्रकार मिनुजी सीच-सम्पत्ति के फारण प्रायी। जन्म प्रदेश करते हैं अवदा वित्त-सम्पत्ति के कोरव प्राची अन्म ब्रेडल करते हैं क्षवदा इन्टि-तम्मति के कारन प्रानी वस्म प्रदूत करते हैं। जिस्स्तो से वीन सम्पत्तियाँ है।

( ? ? ... )

"मिनुनो ये तीन निपत्तियों है। अन्ति सी तौन रै कमान्य-विपत्ति जाजीव-विपत्ति वृद्धि-विपत्ति।

पिश्रमो कर्मान्त-विषयि क्रिसे क्रहते हैं ? "पिस्रजी एक जादनी प्राची-दिशा करता है व्यर्व क्षेत्रता है।

भिन्नो नह क्याँन्ट-विपत्ति कहताती है।

" गिसनो वानीय-विपत्ति किसे पहले हैं ?

विकासी एक मारमी मिच्या-जीनी होता है मिच्या-बाबीविका से भौषिका चकता है। जिसको इसे बाबीब-दिपति रहते हैं।

"भिक्षुओ, दृष्टि-विपत्ति किमे कहते हैं ?

" भिक्षुओ, एक आदमी मिथ्या-दृष्टि वाला, विपरीत-मति वाला होता है— दान का (फल) नहीं है, यज का (फल) नहीं है जो इस लोक तथा पर-लोक को स्वय जानकर, साक्षात कर उन की बात फरते हैं। मिधुओं! इसे दृष्टि-विपत्ति कहते हैं। भिधुओ, ये तीन विपत्तियाँ हैं?

" भिक्षुओ, ये तीन सम्पत्तियाँ ह । कीन सी तीन <sup>?</sup>

" वर्मान्त-सम्पत्ति, आजीव-सम्पत्ति, दुप्टि-सम्पत्ति।

"मिधुओं, कर्मान्त-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा में विरत रहता है व्ययं बोलने मे विरत रहता है। भिक्षुओं, इमे कर्मान्त-मम्पत्ति कहते है।

"भिक्षओ, आजीव-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षो, एक आदमी सम्यक्-जीवी होता है, वह सम्यक् आजीविका से जीविका चलाता है। भिधुको, इसे ब्राजीव-सम्पत्ति कहते है।

"भिक्षओ, दिप्ट-सम्पत्ति क्या है ?

"भिक्षुओ, एक आदमी मम्यक्-दृष्टि होता है अविपरीत-दर्शी —दान का (फल) है, यज्ञ का (फल) है जो इस लोक तथा परलोक को स्वय जानकर साक्षात कर उन की बात करते है। भिक्षुओ, इसे दुब्टि-सम्पत्ति कहते हैं। भिक्षुओ, ये तीन सम्पत्तियां है।"

#### (११८)

"भिक्षुओ, ये तीन शूचि-भाव है। कौन से तीन?

" शरीर की शुचिता, वाणी की शुचिता, मन की शुचिता।

" भिक्षुओ, शरीर की शुचिता किसे कहते है ?

" भिक्षुओ, आदमी प्राणी-हिंसा से विरत रहता है, चोरी से विरत रहता है । काममोग सम्बधी मिथ्या-चारसे विरत रहता है। भिक्षुओ, यह शरीर की शुचिता है।

"भिक्षुओ, वाणी की शुचिता क्या है ?

"भिक्षुओ, आदमी झूठ वोलने से विरत रहता हैं चुगली खाने से विरता रहता है, कठोर बोलने से विरत रहता है तथा व्यर्थ वोलने से विरत रहता है। भिक्षुओ, इसे वाणी की शुचिता कहते है।

"मिसमा नयकी सुचिताक्याहै?

"तिसूत्रो नादगी तिस्पीर्य होता है अन्द्रेगी होता है तथा सम्पन्-वृष्टि वासा होता है। भिस्तुको यह मन की सुचिता है। मिस्तुको से तीन सुचि भाव है।"

(225)

" भिक्षत्रों में तीन सुचि-भाव है। कीन से तीन?

" सरीर की भूषिता वाजी की सूचिता मन की सूचिता।

भिक्षुत्रो मरीर की सुणिताक्याई ?

मिलुनो भिन्नु प्राची-हिंसा से विष्टा होता है चौरी से विष्टा होता है नहस्त्रपर्यों से विष्टा हाता है। मिसुनो यह सरीप की सुचिता है।

"तिस्त्रो नानीनी चुनितान्याई?

"भिष्मुको भिन्नु सूठ से किएन होगा है भूगनी जाने से किएन होगा है कठार सामन में किएठ होगा है तथा स्पर्व मोलने से किएत होगा है। मिसूबो नह मानी को गुणिया है।

"किंधुनो मन की नुविताक्याहै?

"तिसूत्रों विक्ष जरने भीतर कायुक्ता (ज्वासम्बन्धः) के विक्षमान होनेपर कायुक्ता है जानता है। जनमें वायुक्ता नहीं होने पर कायुक्ता नहीं है " जानता है। कायुक्ता अंदर्शित केती होनी है—वह जानता है। अरास कायुक्ता को नाम कैम होना है—यह जानता है। मण्ड हुई वायुक्ता किर कैसे नहीं उलाम होनी है—यह जानता है।

भारते भीतर कोष (= कासार) विकासत होतेगर भोष है" जानता है। अंध्य नहीं प्रोते नर भोष नहीं है —जानता है। बीधवी बलाति की होती है-बह जानता है। उत्पन्न कीशवा कैन नाय होता है—बह जानता है। नष्ट हुआ भोष किर बैंगे नहीं बताय होता है—बह जानता है।

सार्थ भीतर सामाय (सम्पान-मुद्द) दिवसता होनेतर "सामस्य है सामार है। उसमें सामय महो होने पर "सामस्य नहीं है नामप्र हो। सामस्य ही समित में होते हन्मह नामरा है। उस्पेस सामस्य में ने मान होता है—यहसामता है। मध्य हुआ सामस्य मैंथे दिवस्त हो। उसमें हमार है—सह सामग्र है। "अपने भीतर उद्धतपन पष्टताया ( क्षीद्धत्य-क्षीकृत्य ) विद्यमान रहने पर "उद्धतपन तथा पष्टतावा है " जानता है। उद्धतपन तथा पष्टतावा नहीं होनेपर अद्धतपन तथा पष्टतावा नहीं है "—जानता है। उद्धतपन तथा पष्टतावेकी उत्पत्ति कैमें होती है —यह जानता है। उत्पन्न उद्धतपन तथा पष्टतावेका कैमें नाश होता है—यह जानता है। नष्ट हुआ उद्धतपन तथा पष्टतावा फिर कैमें नहीं उत्पन्न होता है—यह जानता है।

"अपने भीतर मगय (विचिकित्सा) विद्यमान रहनेपर "मगय है" जानता है। भीतर सगय नहीं रहनेपर "मगय नहीं है" जानता है। सगयकी उत्पत्ति कैमें होती है—यह जानता है। उत्पन्न मगय कैसे नष्ट होता है—यह जानता है। नप्ट मशय फिर कैमें नहीं उत्पन्न होता है—यह जानता है। भिक्षुओ, यह मनकी शृचिता है। भिक्षुओ, ये तीन शृचि-भाव है।

कायसुर्वि वाचामुर्वि चेतोमुर्वि अनामव सुर्वि मोचेय्यसम्पन्न आहु निन्हात-पापक ॥

[जिसका काय (-कर्म) पवित्र है, वाणी पियत्र है तथा मन पियत्र है ऐसे पिवत्र श्रुचि-भाव-सम्पन्न अनास्त्रवको पापसे स्वच्छ हुआ मानते है।]

(१२०

"भिक्षुओ 'मौन' तीन प्रकारका होता है। कौनमा तीन प्रकारका ? शरीरका मौन, वाणीका मौन, मनका मौन। भिक्षुओ, शरीरका 'मौन' कैसा होता है ?

"भिक्षुओ, भिक्षु प्राणी-हिंमासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचार से विरत होता है। भिक्षुओ, यह शरीरका 'मौन' कहलाता है।

"भिशुओ, वाणीका मौन कैमा होता है ?

ृ " मिसुओ, भिक्षु झूठसे विरत होता है, चुगली खानेसे विरत होता है, कठीर बोलनेसे विरत होता है, ज्यर्थ बोलनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, यह वाणीका 'मीन' कहलाता है।

भिक्षुयो, मनका 'मीन ' कैसा होता है ?

१ ' अन्नह्मचर्यसे विरत होना चाहिये 'पाठ अधिक उचित होता।

मिल्बो मिस् बासबौंदा श्रयकर, बतालव विश्व-विमृत्ति प्रज्ञाकी विमृत्तिको इसी सरीरमें अपने बार बानकर साक्षातकर, प्राप्तकर विहार करता है।

"मिधुमो यह भनका मौल कहस्ताता है। मिझुको येतीन मौन "है। कायमूर्ति बाजामूनि जेठोमूनि अनासूर्व

मृति मोनेय्यसम्बन्धं आहु सम्बन्धदायितं

िवसका सरीर मौन है जिसकी बाबी मौन है जिसका बित्त मौन है-ऐसे मौन-यक्त सर्व-स्वागी भागाभव बनको मृति शहते हैं।]

(१२१)

एक समय मगवान कुथीना समें बक्तिहरूच मामके बन-सन्दर्भे निहार करते ने ।

बड़ौ भगवान् ने भिजुओंको सम्बोधित दिया---

" विश्वना !

भइन्तु । "कहकर उन निश्चोंने भगवानुको प्रति-वचन दिया। भनवानु ने पद्ध कहा---

"पिसको कोई एक पिस किसी एक याँव वा निवमके आध्य में एकर विहार करता है। कोई गृहस्य वा पृहस्य-पुत्र आकर उसे अगले विनके जीवनके किये निमनित करता है। इच्छा करनेवासा निज् उसे स्वीकार कर मैता है। उस रातके बीत जानेपर, पूर्वान्ह समय होने पर, (चीवर) पहन पात्रचीवर के वह वहाँ उस मुहस्ब वा गृहस्य-पुत्रका पर वा वहाँ पहुँचाः चाकर विश्वे वासन पर वैद्याः वह गृहपति वा महपति-पूत्र उस फिल्को बहिया साता | बहिया मोबन अपने हायसे परीसता है। उसके मनमें होता है---बच्छा है यह गृहपति वा नृहपति-पूत्र विवास साना बहिया भोजन मझे अपने हापते परोसता है। उसके मनमें यह भी होता है--स्या अध्या हो नदि सह मृह्पति या गृहपति-पुत्र भविष्य में भी वृदिया जाना वृद्धिया भोजन सुझे अपने द्वाब से परीगे । उस मोजनमें आसकत होकर, मुख्ति होकर, बधमें होकर कादिनन (=वरा परिचाम) न वेकता हवा निरश्तरण-बन्ना-विहीन हो वह उसे प्रहण करता है। उन्ने मनमें काम-बिटर्क भी उठते हैं स्मापाय-बिटर्क भी उठते है तथा बिहिना वितर्क भी उठने हैं। जिसको इस प्रकारके पिताको दिये पर्य दानका मैं भारान-फस नडी अक्टता। यह किस किसे ? पिस्ता वह विस् प्रभावी रहकर निहार करता है।

"जिल्लाको कोई एक जिल किसी एक पाँच वा निवसके जानव रहकर विहार करता है। कोई गडस्य या गडस्य-पुत्र आकर सने अवसे दिनके तोवनके लिये

निमित्रत करता है। इच्छा करनेवाला भिक्षु उसे स्वीकार कर लेता है। उस रातके बीत जानेपर, पूर्वान्ह समय होनेपर, (चीवर) पहन, पात्र-चीवर ले वह जहाँ उस गृहस्य वा गृहस्य-पुत्रका घर या वहाँ पहुँचा। जाकर विछे आसनपर वैठा। वह गृहपित वा गृहपित-पुत्र उस भिक्षुको विद्या खाना, विद्या भोजन अपने हायसे परोसता है। उसके मनमें यह नहीं होता—अच्छा है यह गृहपित वा गृहपित-पुत्र विद्या-खाना, विद्या-भोजन मुझे अपने हायसे परोसता है। उसके मनमें यह भी नहीं होता है—क्या अच्छा हो यदि यह गृहपित वा गृहपित-पुत्र भविष्यमें भी विद्या-खाना, विद्या भोजन मुझे अपने हायसे परोसता है। उसके मनमें यह भी नहीं होता है—क्या अच्छा हो यदि यह गृहपित वा गृहपित-पुत्र भविष्यमें भी विद्या-खाना, विद्या भोजन मुझे अपने हायसे परोसे। उस भोजनमे आसक्त न हो, अमूछित रहकर, वशी-भूत न हो, आदिनव देखता हुआ, निस्सरण-प्रज्ञा-युक्त हो वह उमे ग्रहण करता है। उसके मनमें निष्क्रमण-वितर्क उठते है, अक्रोध मम्बन्धी वितर्क उठते है, अविद्या सम्बन्धी वितर्क उठते है, अविद्या सम्बन्धी वितर्क उठते है। भिक्षुओ, इस प्रकारके भिक्षुको दिये गये दान का 'महान्-फल' कहता हूँ। यह किस लिये ? भिक्षुओ, भिक्षु अप्रमादी रह विहार करता है। (१२२)

"भिक्षुओ, जिस दिशामें भिक्षु आपसमें झगडते हैं, कलह करते हैं, विवाद करते हैं, परस्पर एक दूसरेको मुँह रूपी शक्ति (=आयुध) से बीधते हुए विचरते हैं, भिक्षुओ, उस दिशामें जानेकी तो बात क्या, उस दिशाकी ओर घ्यान देनेसे भी मुझे सुख नहीं होता। उनके बारेमें मेरे मनमें यह निश्चय हो जाता है कि उन आयुष्मानोने नीन बातोको छोड दिया होगा और दूसरी तीन बातोको ही मनमें बहुत रखते होगे।

"किन तीन वातो (=धर्मों) को छोड दिया होगा ? नैष्क्रम्य-वितर्क, अव्या-पाद-वितर्क, अविहिंसा-वितर्क। इन तीन वातोको छोड दिया होगा ?

" किन तीन बातोको ही मनमें बहुत रखते होगे।

"काम-वितर्क, व्यापाद-वितर्क, विहिमा-वितर्क। इन तीन वातोको ही मनमें बहुत रखते होगे।

"भिक्षुओ, जिस दिशामें भिक्षु आपसमें झगडते है, कलह करते है, विवाद करते है, परस्पर एक दूसरे को मुंह रूपी शक्ति (=आयुध) से बीधते हुए विचरते है, भिक्षुओ, उस दिशामें जानेकी तो बात क्या, उस दिशाकी ओर घ्यान देनेसे भी मुझे सुख नही होता। उनके बारेमें मेरे मनमें यह निश्चय हो जाता है कि उन आयुष्मानोने तीन बातोको छोड दिया होगा और (दूसरी) तीन बातोंको ही मनमें बहुत रखते होगे।

"भियुको बिछ दियामें भिन्नु समा मानके प्रमृष्टित प्रतक्षे प्रस्थार निवाद ल करते हुए, हुब-पानी बने हुए, यक दूधरेको प्रेमकी वृष्टिये देखते हुए विकटते हैं सिसुबर्फ, यह दिखाओं और स्थान देनेकों हो बात ही क्या उस दिखाओं और वार्तेनें भी मुसे 'युक्त मिक्काई । उनके बारेमें मेरे ननमें ही निवस्य हो बाता है किवन बायुव्यानों में तीन नार्वोकों कोड़ दिया होना और (बृक्टी) तीन वारोकों हो नवसे बहुत रखते होंसे।

किन ठीन बार्तोको कोड़ दिया होगा <sup>?</sup> काम-वितको स्थापाद-वितको विहिसा-वितको। इन ठीन बारोको छोड

दिया होना ।

"किन तीन बाठोंको मनमें बहुत एकते होंके? नैध्कम्य-विवर्क मनमें बहुत एकते होंके? विक्रमों जिस विधानें मिलू समय-मावसे नुका निकता है। समके बारेनें एकते होते।

(121)

एक समय नवनात् वैसालोके गोठमक वैलामें विद्यार करते थे। वहाँ जनवानमें मिसलोको सम्बोधित किया—"मिसलो!"

" मदल ! " कहरूर भिक्षनों ने चनवानको प्रति-वचन दिना। भगवानुने

मह कहा—
"रिज्यूनों में बातकर धर्मका करवेश करता हूँ विता वाले गृही जिल्यूनों
में गिवान (=देंदु)-शर्दित धर्मोच्य धरवेश करता हूँ विता वाले गृही जिल्यूनों में
मार्गित्वारी पहित धर्मोच्य धरवेश करता हूँ विता मिवानके गृही जिल्यूनों
हर्में ना उपवेश करता हूँ विता वाले कही व्यव में गिराम-गृहिए बर्मच्य अरवेश करता
हूँ विता त्रिवानके गृही जब में शांतिहारीके शांत धर्मच्य करवेश करता हूँ विता मार्गित-हारीके गृही तो मेरे धरवेशके मनुष्यार बायरण होता है चाल्य में अनुष्यारन मार्गा ही जाता चाहिये। जिल्लो दुवारी स्तुरिक्त किले पुन्हारे बंदोचके किले दुवारों अस्ताव्यात (क्ली प्रकार कहा त्या) है (जनका) चेल बुप्तारे मार्गी है। चरवानुने

यह सहा। ततुष्य हुए उन भिमुजोने भनवान्के भाषमञ्ज अभिनंदन क्रिया। इत 'स्थास्था' के नहे जाने तुष्य साहसी-चोक-बाद क्रीप उठी।

# (१२४)

एक समय भगवान कोशल जनपदमें चारिका करते हुए जहाँ कपिलवस्तु हैं वहाँ पहुँचे। महानाम शाक्यने सुना कि भगवान् कपिलवस्तुमें विहार कर रहे हैं। तब महानाम शाक्य जहाँ भगवान् थे वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़े महानाम शाक्यको भगवानने यह कहा—

"महानाम । कपिलवस्तु जा। ऐसा निवास-स्थान खोज , जर्हा हम आज एक रात रहे।"

"भन्ते । अच्छा।" कहकर महानाम शाक्यने भगवान्को प्रतिवचन दिया और किपलवस्तुमें प्रवेश कर सारी किपलवस्तु घूम डाली। उसे किपल वस्तुमें कोई ऐसा निवास-स्थान नही दिखाई दिया जहाँ भगवान् एक रात रह सके। तब महानाम शाक्य जहाँ भगवान थे वहाँ गया। पाम जाकर उसने भगवानसे कहा—

"भन्ते । कपिलवस्तुमें वैसा निवास-स्थान नही है जहाँ भगवान् आज एक रात रहे। भन्ते । यह भरण्डु कालाम है भगवान्का पुराना सह-पाठी । आज रात भगवान् उसके आश्रममें रहे।"

"महानाम । जा। शयनामन विद्या।"

"भन्ते । अच्छा" कह, महानाम शाक्य भगवान् की बात मुन, जहाँ भरण्डुकालामका आश्रम था वहाँ गया। जाकर शयनासन तैयार कर, पैर धोनेके लिये पानी रखकर, जहाँ भगवान थे वहाँ गया। जाकर भगवानसे बोला—

"भन्ते । शयनासन विछा है। पैर धोनेके लिये पानी रखा है। अब भन्ते । भगवान जो इस समय करना हो करें।"

तव भगवान् जहाँ भरण्डुकालामका आश्रम था वहाँ गये। पहुँचकर विक्षे आसनपर वैठे। वैठकर पाँव धोये। उस समय महानाम शाक्यके मनम यह विचार आया—

" आज भगवानका सत्सग करनेका समय नही हैं। भगवान् थके हैं। कल में भगवान्की सेवा में आऊँगा।" वह भगवान्को प्रणामकर, प्रदक्षिणा करके चला गया।

तव महानाम शाक्य उस रात्रिके बीतनेपर भगवान्के पास गया। पास जाकर भगवान्को अभिवादनकर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे महानाम शाक्यको भगवान्ने यह कहा—

"महानाम ! इस संसारमें तीन प्रकारके सास्ता है । बीलसे तीन प्रकारके ? महानाम ! एक शास्ता कामनावाँके बाविकमणका प्रजापन करते है स्पना नही बेदनाओंका नहीं महानाम ! एक दूसरे धारता कायनाओंके अधिकमनका मबापन करते हैं क्यके बारिकमनका प्रवापन करते हैं बेदनाओंका नहीं सहानाम ! एक लीचरे वास्ता कामनावाँके वितक्तमणका प्रकारन करते हैं। क्याके वितकसम्बद्धा प्रजापन करते है और वेदनाबोंके विविध्यनका भी प्रजापन करते हैं। सहानाम ! ·संसारमें ये तीन प्रकारके बास्ता है। महानाम ! इन तीन प्रकारके सास्ताबोंकी एक

ही निष्ठा है वा भिन्न विश्व निष्ठा है ?" ऐसा बहते पर भरण्ड कालामने महानाम धान्यको यह बहा---महानाम ! कहा कि एक ही निष्ठा है।"

ऐसा कद्वतेपर भववान ने महानाम धाक्यको कहा---

महाताम ! एड जरेक।

इस से बार भी बरण्डु काळामने महानाम सास्यको यह कहा--" महानाम ! कह एक: "इमधै बार भी भगवानने महानाम भारतको कहा---"महानाम । कह अनेक। तीसरी बार भी घरण्डु काळामने यहानाम खाव्यको क्हां- महानाम ! कड एक। तीसरी बार भी मगबानने महानाम ग्रान्यको कहा-"महानाम ! कड अनेक।

त्र भर्व्य भारतमे मनमें यह हजा--

" प्रतापी महानाम बाक्वके शामने समन बौतमने मेरा तीन बार बच्चन कर दिया। मेरे किये नच्छा है कि मैं कपिकवस्त से निकल भागें।

तव भरण्यु कालाम कपिल-भरतुमे चला गया । कपिल-बस्तु से जो गया सौ पथा। फिरलीटकर नहीं आरमा।

(१२५)

एक समय भगवान भावस्तीलैं बनाय-पिन्डिक्के आराममें विहार करते थे। उत समय हत्वक नैवपूत उस प्रकासमान रातिमें सारे के सारे केत्वनको प्रकाशसे प्रकाधित कर बढ़ों भगवान ने नहीं गया। पास जाकर प्रधवानके सामने खड़ा हो क्या? सोच अपर-तीचे होता वा किन्तु चड़ा नहीं यह सकता था। जैसे या मा तेलको महि थानुपर बाना जाये दो बहु नीचे चना आदा है करार नहीं रहता। उसी प्रकार हत्वक

देव-पुत्र 'भगवानके सामने खडा होऊगा 'सोच ऊपर-नीचे होता था, किन्तु खडा नहीं रह सकता था।

उस समय भगवानने हत्यक देव-पुत्रको यह कहा— "हत्यक । तू शानदार रूप वना" "भन्ते । अच्छा " कह हत्यक देव-पुत्र भगवानकी वात सुन शानदार रूप वनाकर भगवानको प्रणामकर एक ओर खडा हुआ। एक ओर खडे हुए हत्यक-देवपुत्रको भगवानने यह कहा—

" हत्यक । मनुष्य रहते समय जो-जो वातें होती थी, वे इस समय भी प्रवितत होती है ? "

"भन्ते भगवान् । जो वार्ते पहले मनुष्य रहते समय होती थी, वे धर्म अव भी प्रवित्तत होते हैं और जो वार्ते पहले मनुष्य रहते नहीं होती थी, वे भी अव प्रवित्तत होती है। जैसे भन्ते मगवान् इस ममय भिक्षुओसे, भिक्षुणियोंसे, उपासकोंसे, उपासिकाओसे, राजाओंसे, राजमहामारणोंसे, तैर्थिकोंसे, तैर्थिक-श्रावकोंने, उसी प्रकार भन्ते में भी देव-पुत्रोंसे धिरा रहा हूँ। भन्ते। 'हत्थक देव पुत्रसे धर्म मुनेंगे' सोच दूर दूरसे आते है।

"भन्ते । में तीन बातोंमे अतृप्त रहकर, असतुष्ट रहकर ही मर गया । किन तीन बातोंमे ? मन्ते । में भगवानके दर्शनसे अतृप्त रहकर ही काल कर गया । सद्धमं सुननेके सम्बन्धमें भी में अतृप्त रहकर ही काल कर गया । भन्ते । में सघकी सेवा करनेके विषयमें भी अतृप्त रहकर ही काल कर गया ।

"भन्ते । मैं इन तीन बातोंके विषयमें अतृप्त रहकर, असतुष्ट रहकर ही काल कर गया।

नार् भगवतो दस्सनस्स तित्ति अज्झ कुदाचन सघस्स उपट्ठानस्स सद्धम्मसवनस्स च अधिसीले सिक्लमानो सद्धम्मसवने रतो तिण्ण धम्मान अतित्तो हत्यको अविह गतो।

। [मैं कभी भगवान्के दर्शनसे तृप्त नही हुआ, सघकी सेवा करने तथा सद्धर्में सुननेसे तृप्त नही हुआ। श्रेष्ठतर-शीलको सीखता हुआ, सद्धर्म सुननेमें रत रहकर मैं हत्यक तीनो विषयोमें अतृप्त रहकर अविह (लोकको) गया।

#### (१२६)

एक समय भववान् वारामसीके आदिपाठन मृगवायमें विद्वार करते थे। तक मनवान् पूर्वाक् समय (वीवर) पहन कर तवा पावन्तीवर केवर वारामसीमें पिखाटनके सिये निक्कें। वो-योव-पिक्कस स्वानपर मिसाटन करते समय भयवान्ने एक पिन्को देवा वो(स्वान् ) सुबसे सात्री वा वो (स्वान्-) मुक्ते बाहर वा वो मुद्र-सृति वा वो बक्षानी या वो सस्माहित वा वो सान्त-वित्त वात्रमा वो असंगठ-दिन्नय था। वस पिन्को देककर प्यावान्ने यह कहा--

िमसु । तू सपने जापका जूठा-सब्ग हुवान कता। मिस्र । यह वस्तुम्पन है कि तू वपने जापको जूठा-सब्ग हुवा बनाये उसमें हुर्यन्त निकले और इस पर मस्त्रियों न वैठें न स्थारोमें।

मयबान्का यह उपवेश सुना तो उस मिल्लुके मनमें सबेब पैदा हुया। वर्ष भववानने वार्यावरीमें मिसाटन कर, बोबनके बनन्दर, मिल्लाटनसे लौट वृक्ते पर मिल्लुवॉको बार्मिक किया---

भिल्नो। में ने पूर्वान्ह समय (बीबर) पहन पाव-बीबर व के बाध-बसीनें मिसाइनके किये प्रवेश किया। मिसूनो। में ने गो-पोव पिकसनें पिकाइनके किये पूमरे समय एक निक्को देशा वो (ब्यान-) पुषसे हीन वा वा (ब्यान) मुख्ये बाहर वा बो मूब-स्मृति वा जो बजानी वा वो बम्मादित का बो आगत-विकत वा जो कसंस्व-वृद्धिय जा। उस मिसू को देवकर में ने कहा-

"सिश्चं पूसरते बारको मूळ सङ्ग्रह्मा न नगा। सिश्चं यह बत्तस्मव है कि तूबरते बारको मूळ सङ्ग्रहमा नगमे उसमें दुर्गन्य तिकले बोर स्थापर सस्वियों न नैकेंन मन्दर्यों।"

> प्रिज्ञुको मेर इस उपनेशसे उस प्रिज्ञुके मनमें सकेग पैदा हो गया। सेना कडनेपर एक पिसने भयवानसे नहा--

धन्ते! भूठन किसे कहते हैं? घड़ींव किसे कहते हैं? मनिवासी किसे कहते हैं?"

"सिन्नुको । कोम चुक्त है, कोम सबीव है पापी बहुबक-विवर्ध मस्त्रिया है । मह बहन्मव है कि सिन्धु बगने बापको जुटा बनाये सबसेट दुर्वन्य न निकृते और सब पर मस्त्रियों व वेट न सम्बद्धमें । लगुत्त चक्त्य मोर्तास्म इन्द्रियेसु अनवुत मिक्त्यकानुपतिस्मन्ति नकापा रागिनिस्मता कटु वियकतो भिक्खु आमगन्धे अवस्सुतो आरका होति निच्चाना विपातम्मेव भागवा गामे वा यदि वा रञ्जे वा अलद्वा सम्मत्तनो परेति वालो दुम्मेधो मिक्खकानि पुरक्खतो ये च मीलेन मम्पन्ना पञ्जायूपनमे रना उपमन्ता मुख मेन्ति नासियत्वान मिक्खका

[जब चक्षु तया श्रोत इन्द्रिया अरिक्षत रहती है, जब इन्द्रिया असयत रहती है तब सराग मकल्प रूपी मिन्खर्यों मण्डराती है। जब भिक्षु 'जूठा ' हो जाता है, जब सडाँद पैदा होती है तो वह निर्वाणमे दूर हो जाता है और विनाशका ही हिस्सेदार होता है। जो मूर्ख होता है, जो दुर्वृद्धि होता है, वह सम्यक्तवको दिना प्राप्त किये, मिन्खयोंसे घरा हुआ, गाव या अरण्यमें विचरता रहता है। जो सदाचारी है, जो प्रज्ञावान है वे मिन्खयोंका नाश कर शान्त हो सुखपूर्वक रहते है।]

## (१२७)

उस समय आयुष्मान अनुरुद्ध जहाँ भगवान थे वहाँ गये। पाम जाकर भगवानको अभिवादन कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे आयुष्मान अनुरुद्धने भगवान से यह कहा----

"भन्ते । में अमानुपी, विशुद्ध, दिव्य-चक्षुसे देखता हूँ कि स्त्रियां शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर अधिकाशमें दुर्गतिको प्राप्त होती है, नरकमें उत्पन्न होती है। भन्ते । किन-किन धमोंसे युक्त होनेपर स्त्रियां शरीर छूटनेपर मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होती है, नरकमें जन्म ग्रहण करती है ? "

"अनुरुद्ध। तीन धर्मोसे युक्त होने पर स्त्री शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होती है, नरकमें उत्पन्न होती है। कौनसे तीन ?

"अनुरुद्ध । स्त्री पूर्वान्हमें मात्सर्य रूपी मल-युक्त चित्तसे घरमें निवास करती है, मच्यान्हमें ईर्पारूपी मल-युक्त चित्तसे घरमें निवास करती है, शामके समय काम-राग रूपी मल-युक्त चित्तसे घरमें निवास करती हैं। अनुरुद्ध । इन तीन वार्तोसे युक्त होनेपर स्त्री घरीर सूटनेपर मरनेके जनन्तर, दुर्पतिको प्राप्त होती है नरकर्में अग्न पहन करती है। "

(174)

उस समय आसुम्मान जनुषद वहाँ आयुम्मान सारिपुत्र वे वहाँ पहुँच। पास जाकर आयुम्मान सारिपुत्रके साव कुशक-दोत्रकी बातचीत की। कुशक-योगकी बातचीत तमान्त कर बायुम्मान अनुषद एक और बैठे। एक ओर बैठे आयुम्मान अनुष्यते आयुम्मान् सारिपुत्रको कहा—

छारिपुत्र ! में बतानूपी विज्युत्व विज्य जन्नुष्टे छहनो लोकीको देवका हैं। भेरा बालस्व-रहित प्रयत्न बारम्भ है। अपरिवट-स्पृति-मुख्ता विद्यान है। साल्य-सरीर उपरेवता रहित है। छताहित-जिल्ल एकाव है। केकिन तब भी मेरा चित्र उपास्त रहित होकर बालवीचे विमुक्त नहीं होता।"

"बाकुमात । बनुष्का । ठेर मनमें वो यह होता है कि में बनानूनी विद्युत विका चनुने तहसो कोजोंको वेचता हूँ—मह तेए मान है। बाकुमान बनुष्का । ठेरे मनमें को यह होता है कि मेरा साकस्य-रहित प्रयत्न बारण्य है, उपस्थित स्मृति मृद्रुता मेरे हैं कि मेरा साकस्य-रहित प्रयत्न बारण्य है, उपस्थित स्मृति मृद्रुता है । वान्यव्याप उपस्थान निवृद्धा । ठेरे मनमें वो यह होता है कि मेरा विचा जगावान रिवृद्ध । वान्यव्यापन वानुष्का । वान्यव्यापन वाय्यव्यापन वाय्यव्यापन वाय्यव्यापन वाय्यव्यापन वाय्यव्यापन वाय्

तर बाने चकर बायुष्णाम बनुष्यने इन तीनों बातोची कोडकर, इन तीनों बमींको मनसे मिकालकर, चिछको बनुष-बायुको बोर बन्धूब किया। तब (उन बमींखे) हट बानेसे अन्नमानी होकर प्रकल करनेसे जालबान होकर विद्यार करनेसे आयुष्पाम बनुष्यने बॉक्य-कालमें ही जिनके किये कुन-पुत्र वारका लायकर बे-बर हो बाते हैं यस बहुप्यके-प्रम धर्मभेन्ड (वह) को हासे धर्मरेसे स्वयं बानकर, सालाठ कर, मारत कर विहार किया। चन्होने बाने सीया कि जम्म (का बारब) सीच हो मया बहुप्यके-पास पूर्ण हो गया करणीय समारत हो नया और बहुकि किये कुछ योग नहीं रहा। बालुम्मान बनुक्य एक वहींत हुए।

## (१२९)

- " मिक्षुओ, ये तीन छिपे-छिपे रहते हैं, खुले नही । कौन तीन ?
- "भिक्षुओ, स्त्रियाँ छिपी-छिपी (ढकी-ढकी) रहती है, खुली नहीं; भिक्षुओ, बाह्मणोंके मन्त्र छिपे-छिपे (ढके-ढके) रहते हैं, खुले नहीं, भिक्षुओ, मिथ्या-मत छिपे छिपे (ढके-ढके) रहते हैं, खुले नहीं।
  - "भिक्षुओ, ये तीन खुले चमकते है, ढके नही। कौन तीन ?
  - "भिक्षुओ, चन्द्र-मण्डल खुला चमकता है, छिपा नही, भिक्षुओ, सूर्यमण्डल खुला चमकता है, छिपा नही, इसी प्रकार तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म खुला चमकता है, छिपा नही।
    - " भिक्षुओ, ये तीन खुले चमकते हैं, ढके नही।" (१३०)
    - "भिक्षुओ, संमारमें तीन तरहके आदमी हैं। कौनसी तीन तरहके ?
      "पत्यर पर खिंची रेखाके समान आदमी, पृथ्वीपर खिंची रेखाके समान आदमी, पानीपर खिंची रेखाके समान आदमी।
    - "भिक्षुओ, पत्यर पर खिची रेखाके समान आदमी कैसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी प्राय फोधित होता है। उसका वह क्रोध दीर्घकाल तक रहता है। जैसे भिक्षुओ, पानीपर खिची रेखा शीघ्र नहीं मिटती, न हवासे न पानीसे, चिरस्थायी होती है, इसी प्रकार भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी प्राय कोधित होता है। उसका वह क्रोध दीर्घकाल तक रहता है। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति 'पत्यर पर खिची रेखा समान आदमी' कहलाता है।
      - "भिक्षुओ, पृथ्वी पर खिंची रेखाके समान आदमी कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राय कोघित होता है। उसका वह कोघ दीर्घकाल तक नहीं रहता। जैसे भिक्षुओ, पानीपर खिंची रेखा शीघ्र मिट जाती है, हवा से वा पानीसे, चिरस्यायी नहीं होती। इसी प्रकार भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी प्राय कोघित होता है। उसका कोघ दीर्घकालतक नहीं रहता। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति 'पृथ्वी पर खिंची रेखा समान आदमी' कहलाता है।
        - "भिक्षुओ, पानीपर खिची रेखाके समान आदमी कैसा होता है ? भिक्षुओ, कोई कोई आदमी ऐसा होता है कि यदि कडूवा भी बोला जाय, कठोर भी बोला जाय,

सप्रिय में बोका नाथ दो मी नह सुना ही एहता है मिला ही पहला है प्रदान हो पहला है। विश्व प्रकार निस्तुनो मानीभर विश्वो देवा बीज दिलीन हो नाली है, विरस्तानी नहीं होती, इसी प्रकार निस्तुनो नोहें कोई सारमी ऐना होता है विशे परि स्कूमा नी सोला नाय कठीर भी नह सुना ही प्रकार केंद्र मी नोह नाय कठीर भी नह सुना ही पहला है। मिला ही पहला है प्रसन्त ही पहला है। मिलुको ऐसा व्यक्ति पानी पर विश्वो देवा करिला सामित सामित करी पर विश्वों देवा स्वाप्त करी पर विश्वों देवा करिला सामित सा

"भिभूबो संसारमें वे तील इरक्को कोप है।

(१११)

" पिस्तुओं तीन अंगोसे मुक्त योजा सवाके योग्य होता है सवाका मोग्य होता है सवाका अंग ही कहकाता है। कौनसे तीन अंगोसे ?

" भिन्नुकों को ऐया भोश होता है वह दूर तक तीर फेंकने बाला होता है बार-नेथी होता है तका वहें (तकतोंके) समूकते भीशनेवामा होता है। मित्रुकों इस तीन वस्तिय मुख्य भोधा रावाके योग्य होता है। रावाका भोग्य होता है। रावाका बंग ही कहमाता है।

"इसी प्रकार किसूबी बीत बंबीसे युक्त मिलु बादरकीय होता है

कोपींक किसे सर्वभेष्ठ पुष्पन्तेष होता है। कौनसे सीन संपीत ? पिकासो ऐसा पिका कर गिराने साला होता है समसेकी होता है समा

भिश्वनो ऐसा पिश्व दूर गिराने नाला होता है समनेत्री होता है तथ। वड़े समुद्रको वीधने वाला।

"पिश्वमो निखुदूर विराने नाका क्षेत्रे होता है?

'भिश्वानों वह भिन्नु विश्वानों का है-नाहे पुत्र कानका हो जाहे नर्गमानका भाहे मिनिय्याका भाहे वपने सम्बद्धका हो समया बाहरता चाहे स्मृत हो सम्बन्ध प्रस्म भाहे मृत्य हो समया सका चाहे हुए हो समया तसीय हत शारे स्पन्ने प्रसान कर है प्रसान होती प्रकार देखाता है कि 'यह में सेंच न यह में हूं सीर न यह सेंच सारमा है।"

"पिश्वामों यह पितृ विवती भी देवता है—जाहे गुरु-काल की हो। जाहे वर्तमात की जाहे मिरम्बाद की जाहे कपने जन्मर की हो, जनका बाहर की जाहे स्वाम हो अवना पूर्म जाहे पूरी हो जनका मनी। जाहे हुर हो अवना समीर इस सारी देवता को नवार्ष कपने मनाते हसी मकार देवता है कि "यह न मेरा है न यह में होर न यह केस जाता है। " भिक्षुओ, वह भिक्षु जितनी भी सजा है — चाहे भूतकालकी हो, चाहे वर्तमानकी, चाहे भिवप्यत्की, चाहे अपने अन्दरकी हो, अपना बाहरकी, चाहे स्यूल हो अथना सूक्ष्म, चाहे त्रुरी हो अथना भली, चाहे दूर हो अथना गमीप, इस मारी सज्ञाको यथार्य रूपसे प्रजामे इमी प्रकार देखता है कि "यह न मेरा है, न यह मैं हूँ और न यह मेरा आत्मा है।"

"भिक्षुओ, वह भिक्षु जितने भी सस्कार है—चाहे भूत-काल के हो, चाहे वर्तमान के, चाहे भिवण्यत् के, चाहे अपने अन्दर के हो, अथना वाहर के, चाहे स्यूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे तुरे हो अथवा भले, चाहे दूर हो अथवा समीप, इन सारे सम्कारो को यथार्थ रूप मे प्रज्ञा ने इसी प्रकार देखता है कि "यह न मेरा है, न यह में हूँ और न यह मेरा आत्मा है।"

"भिसुओ, वह भिक्षु जितना भी विज्ञान है—चाहे भूत काल का हो, चाहे वर्तमान का, चाहे भविष्यत् का, चाहे अपने अन्दर का हो, अधवा बाहर का, चाहे स्यूल हो अयवा मूक्ष्म, चाहे बुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप, इस सारे विज्ञान को ययार्थरूप से प्रज्ञा से इसी प्रकार देखता है कि "यह न मेरा है, न यह मैं हूँ और न यह मेरा आत्मा है।" इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु दूर फेंकने वाला होता है।"

"भिक्षुओ, भिक्षु क्षण-वेधी कैसे होता है ?

"भिक्षुओ, भिक्षु यह दुख है इसे यथार्थ रूप मे जानता है यह दुख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है, इसे यथार्थ रूप से जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु क्षण-वेधी होता है।"

"भिक्षुओ, भिक्षु किय प्रकार बड़े समूह का वीघने वाला होता है?

"भिक्षुओ, भिक्षु महान-अविद्या-स्कन्ध को चीर डालता है। भिक्षुओ दन तीन अगो से युक्त भिक्षु आदरणीय होता है लोगो के लिये सर्व-श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र होता है।"

### (१३२)

"भिक्षुओ, तीन तरह की परिषद् होती है। कौन सी तीन तरह की ?
"दुर्विनीत और प्रश्नोत्तर (द्वारा भी) अविनीत , प्रश्नोत्तर द्वारा विनीत और सुविनीत , आशय द्वारा विनीत।

" भिक्षुओ, यह तीन तरह की परिषद् है।

**ब**देखो (२१, ५/६)

#### (111)

"भिज्ञुओं तीन अंतों से युक्त मित्र की संगति करनी चाहिसे। कौन से तीन अंतो से ?

"मिश्रुओं जो मित्र कठिनाई से दी जा सकते योग्य दरतु देता हैं कठिनाई से किया था सकते वाका कार्य्य करता है कठिनाई ने सहूब की वा सकते वाली बात सहुत करता है। मिश्रुओं इन सीन बगो से यून्त मित्र की संगठि करती चालि।

### (23Y)

भिष्मनो माहे प्यान्य बरास ही माहे प्रयागत वरस्थ न हो यह सर्व स्थिति यह सर्व-नियम मूँही प्रदेश है—सभी संस्कार मित्य है। इस नियम को प्रयागत बाग बाते हैं सान प्राप्त कर केते हैं बातकर, मान प्राप्त करके नहीं है प्रयास केते हैं प्रमाणित करते हैं स्थापित करते हैं उत्ताहते हैं स्थानमा करते हैं प्रयास स्थाते हैं कि सभी संस्कार मित्य है।

"निष्युको चाहे यमागठ बराज हो चाहे तथागठ बराज न हो यह धर्म-स्विति यह बर्म-तिमम मूं ही रहता है—त्यमी एस्कार कुछ है। इत तिमम को तथाना बान बाते हैं जाने मान्त कर केते हैं बानकर, जान मान्य करके वक्ते हैं बावेच केते हैं प्रजापित करों हैं स्थापित करते हैं बावेच हैं ध्याच्या करते हैं मुख्य करते हैं कि सभी एस्कार कुछ है।

पिनुको चाहे छवायत जलात हों नाहे तथायत बलात न हों वह धर्म स्मिति यह धर्म-मियम मूँ ही पहला है—क्यों कर्म ( = तरहत बर्म)-अधरहत बर्म) अमारम हैं। इस मियम को त्यानत मात बाते हैं जात धरत कर सेते हैं बातकर-बात प्राप्त करके कहते हैं जरेखें के हैं प्रकारित करते हैं उचाहते हैं त्यास्वा करते हैं स्टच्च करते हैं कि धर्मी वर्म अमारम हैं।

#### (१३५)

पिनुसी मिलने भी नामी है जमें बतन है उनमें बानकि बना पम्मक तिहुट कहकता है। विभूती। बानों से बना कमक कम में ठका परणी में बतम दुर्गत दुर्गत कमिय-पर्य बाना होता है। इसी मका सिनुसी निर्मी भी समस-सत है कममें अक्सती-पत निकटनार कहा जाता है। विजुती टि मूर्ख मक्तली का यह वाद है, यह मत है—'न कर्म है, न किया है, न पराकम है।'

"भिक्षुओ, भूत-काल में जितने भी अहंत सम्यक्-सम्बुद्ध हुए है, वे सभी भगवान् कर्म-वादी थे, क्रिया-वादी थे, पराक्रम-वादी थे। भिक्षुओ, मूर्ख मक्खली उनका भी खण्डन करता है—'न कर्म है, न क्रिया है, न पराक्रम है।'

"भिक्षुओ, भविष्य में भी जो अर्हत, सम्यक् सम्बुद्ध होगे, वे सभी भगवान् कर्म-वादी, क्रिया-वादी तथा पराक्रम-वादी होगे। भिक्षुओ, मूर्ख मक्त्वली उनका भी खण्डन करता है—'न कर्म है, न क्रिया है, न पराक्रम है।'

"भिक्षुओ, मैं भी इस समय अईत सम्यक् सम्बुद्ध हूँ। मैं भी कर्म-वादी हूँ, फ्रिया-वादी हूँ, पराक्रम-वादी हूँ। भिक्षुओ, मूर्ख मक्खली मेरा भी खण्डन करता है—'न कर्म है, न क्रिया है, न पराक्रम है।'

"भिक्षुओ, जैसे नदी के मुँह पर जाल बाँघा जाये, बहुत सी मछिलयों के अहित के लिये, दुख के लिये, दुर्भाग्य के लिये तथा विनाश के लिये। इसी प्रकार भिक्षुओ, मूर्ख मक्खली लोक में पैदा हुआ है, मानो लोक में आदिमियों का जाल पैदा हुआ है, बहुत प्राणियों के अहित के लिये, दु ख के लिये, दुर्भाग्य के लिये तथा विनाश के लिये।"

## (१३६)

"भिक्षुओ, सम्पत्तियाँ तीन है। कौन सी तीन?

"श्रद्धा-सम्पत्ति, शील-सम्पत्ति, प्रज्ञा-सम्पत्ति । भिक्षुक्षो, ये तीन सम्पत्तियौ है ।"

"भिक्षुओ, ये तीन वृद्धियाँ है। कौन सी तीन ?

"श्रद्धा-वृद्धि, शील-वृद्धि तया प्रज्ञा-वृद्धि । भिक्षुओ, ये तीन वृद्धियाँ है ।" (१३७)

"भिक्षुओ, तीन अध्व-कुमार ( = बछेरो) का उपदेश देता हूँ, तीन मनुष्य- कुमारों का। यह सुनो, अच्छी तरह मन में करो, कहता हूँ। "भन्ते! अच्छा" कहकर उन भिक्षुओ ने भगवान् को प्रति-बचन दिया। भगवान् ने यह कहा—

<sup>&</sup>quot; भिक्षुओ, तीन प्रकारके वछेरे कौन से होते हैं ?

"भिज्ञो एक अरव-कुमार यति-युक्त होता है किन्तुन वर्ष-युक्त होता है भौर न चढ़ने योग्य । मिश्चुको एक करव-कुमार गति-मुक्त होता है वर्ण-मुक्त होता है किन्तु बढ़ने-बौग्य नहीं होता । पिशुओं एक सम्ब-कुमार गति-युक्त होता है वर्ण-पुरुत होता है और चडने-बोग्य। भिज्ञूजो में ठीन प्रकार के बछेरे हारते है ?

भिभूती तीन प्रकार के मनुष्य-कुमार कीन से होते हैं?

"भिक्षका एक मन्ष्य-कुमार ( = तरुम ) पति-यक्त होता है किन्तु न कम मुक्त होता है और न कडने मान्य। भिन्नुका एक तक्य मति-मुक्त होता है वर्ष-पुक्त होता है किन्तु चढ़ने योग्य नहीं प्रोठा है। भिव्यूको एक तकन यति-पुक्त होता है वर्ष-वक्त होता है और चढ़ने योध्य भी होता है ।

"भिज्ञो भनुष्य-कुमार ( = तन्य ) कैसे यति-सूक्त हाता है किन्तु न वर्ज-युक्त और न वदने-योष्य ?

भिज्ञो मिल् (⊐उरम) यह दृत्त है इसे मबार्व रूप में जानता है

यह कुच निरोध की बोर के बाने वाका मार्य है इसे बवार्व रूप से भागता है। बढ़ उस में 'नर्ति' दोना कहता हैं। बर्म और विनव के बारे में प्रस्त पूछे जाने पर कठरा बाता है जल र नहीं देगा। यह बत में वर्णकान होना कहता हैं। वह बीवर-पिकापाठ-स्थानासन-स्तान-प्रत्यय-सैवज्य साथि बीजी को प्राप्त करने बाका नहीं होता। वह उस में अबने मोम्म न होना कहता हैं।

भिस्तको मनस्य-कृमार (=त्रक्व) चेसे वनि-वक्त होता है वर्ण-

मुक्त क्रीता है फिल्मू जबने योग्य नहीं होता?

मिध्यूनो भिस् (≔तदम) यह दून है इसे समार्वक्य से जानता है मह दुःच निरोत की और में जाने वाका मार्न है इसे नवार्य क्य से बानता है। यह एस में वित होना कहता हैं। अर्थ और वितय के बारे में अस्त पूर्ण वाने पर क्तराक्षा नही है। उत्तर देता है। यह उत्त में वर्ण का होना कहता हूँ। यह भीवर पिन्द्रपात-समनामन-स्तानप्रत्पव भैयन्य बादि चौजो को पाने वाका नहीं होता। यह उस में चतने बोध्य न होना वहता हैं।

प्रिथमा सर्व्य-कृमार (≈तदन) कैते वित मुक्त होता है

वर्ज-मुक्त होना है और चढने वोग्य भी होता है?

"मिक्षुओ, भिधु (=तरुण) यह दुख है इसे यथार्थ रूप से जानता है
यह दुख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है इसे यथार्थ रूप से जानता
है। यह उस में 'गित' होना कहता हूँ। धर्म और विनय के वारे में प्रश्न पूछे
जाने पर कतराता नही, उत्तर देता है। यह उस में वर्ण का होना कहता हूँ। चीवरपिण्डपात-शयनासन-ग्लानप्रत्यय-भैपज्य आदि चीजो का पाने वाला होता है। यह उस
में 'चढने योग्य' होना कहता हूँ। भिक्षुओ, इस प्रकार मनुष्य-कुमार (=तरुण)
गित-युक्त होता है, वर्ण-युक्त होता है और चढने योग्य भी होता है। भिक्षुओ,
ये तीन प्रकार के मनुष्य-कुमार (=तरुण) है।"

(१३८)

"भिक्षुओ, तीन प्रकार के श्रेष्ठ-अश्वो का उपदेश करता हूँ, तीन प्रकार के श्रेष्ठ-पुरुपोका। वह सुनो, अच्छी तरह मन में धारण करो, कहूँगा।

"अच्छा भन्ते" कहकर उन भिक्षुओ ने भगवान् को प्रति-वचन दिया। भगवान् ने यह कहा---

"भिक्षुओ<sup>।</sup> तीन प्रकार के श्रेष्ठ-अश्व कौन से हैं ?

"मिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-अश्व 'गित 'युक्त होता है, न 'वर्ण 'युक्त और न 'चढने योग्य '। मिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-अश्व गित-युक्त होता है, वर्ण-युक्त होता है, किन्तु न चढने-योग्य। भिक्षुओ। एक श्रेष्ठ-अश्व गित-युक्त होता है, वर्ण-युक्त होता है और 'चढ़ने-योग्य 'होता है।

"भिक्षुओ<sup>।</sup> तीन प्रकार के श्रेष्ठ-पुरुष कौन मे होते हैं?

"भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष 'गित' युक्त होता है, न 'वर्ण' युक्त और न चढने योग्य। भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष गित-युक्त होता है, वर्ण-युक्त होता है किन्तु न चढने-योग्य। भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष गित-युक्त होता है, वर्ण-युक्त होता है और 'चढने-योग्य' होता है।

"भिक्षुओ, किस प्रकार श्रेष्ठ पुरुष 'गति 'युक्त होता है, किन्तु न 'वर्ण' युक्त होता है और न चढ़ने-योग्य।

"भिक्षुओ, भिक्षु पाँच निम्न-स्तर के सयोजनो का क्षय करके न जन्म छेने वाला होता है, वही परिनिर्वृह्त होने वाला—उस लोक से न लौटने वाला। यह उस में 'गित' होना कहता हूँ। धर्म और विनय के बारे में प्रकृत पूछे जाने पर करायता है उत्तर मही देता। यह जेस में कर्न कान होना कहता हूँ। यह भौकर-पिक पान-सम्बन्धन-समानप्रत्यस-मैपस्थ सादि भीओं का पाने वाला महीं होता। यह उसका चत्रमें योग्य न होना कहता हूँ। पिस्कों इन प्रकार सेट्ट पूर्व गाँउ पुनन होता है किन्दुन वर्ष युक्त ई बीर न चढ़ने योग्य।

"मिलुमो भेट पुरस (= मिनु) दिन प्रकार यति युक्त होता है वर्ण-युक्त होता है फिन्तु वहने सौस्य नहीं।

"पिरुषों मिल नियन्तर के पीय संवीवनों का क्षय पर बस्य न लेने बाका हाता है, वही परिनिर्द को होने बाका उठ कोक से न कीटने बाका। यह उदा में पति का होना कहता है। धर्म बीर निजन के बारे में प्रस्त पूछने पर करायता नहीं है उत्तर देशा है। यह उन में वर्ग ना होना कहता है। वह चौबर दौनों को पाने बाका नहीं होता। यह उठ वा चढने-सोम्म न होना कहता हैं। इछ प्रकार मिलुमा सेच्च पुक्रम गति मुक्त होता है वर्ष-मुक्त होता है किन्तु चढ़ने-सोम्म नहीं।

" विभूगों भेष्ठ पुरुष किस प्रकार वित सूक्त होता है वर्णसक्त होता है और वक्तों सोस्प हाता है।

मिलुको जिस् गिम्म-स्तर के गोच न लौकने वाला। यह उस में गोठ ना होना रहता हूँ। धर्म बीर निजय के बारे में मस्त पूछने पर कताराता नहीं उतार देशा हैं। सह उन में वर्ण का लोना करता हूँ। यह वीपर

भौजो कापाने याका होता है। यह छप का वहने बोस्य होता महता हैं। मिल्लो से सीन सेस्ट-पुरुष हैं।"

(245)

"मिलुबो तीन भेरठ-बस्बों का क्यदेश करता हूँ बीर तीन अपठ-पुरवीं का। नह कुनो। अच्छी तरह मन में झारण करी। क्यता हूँ।

मिश्रुको तीन थेप्ड-अस्य कैस होते हैं ?

मिनुनो एक मेरु करन मति युक्त है न नर्प-पुक्त होता है मति पुक्त होता है वर्ज-पुक्त होता है वहने नोम्प होता है। मिनुनो ने तीन भेरु-करव है।

"विद्यासे य तीन भेष्ट-भारव है।

"भिक्षुओ, तीन श्रेप्ठ-पुरुष कैसे होते हैं ?

"भिक्षुबी, एक श्रेष्ठ-पुरुप गति-युक्त होता है, वर्ण-युक्त होता है और चढने योग्य होता है।

"भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ पुरुष कैसे गित युक्त होता है, वर्ण युक्त होता है और 'चढने योग्य' होता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु आस्रवो का क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्ति प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी शरीर में स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विचरता है। भिक्षुओ, यह उस में 'गिति' का होना कहता हूँ। धर्म और विनय के बारे में पूछने पर कतराता नही है, उत्तर देता है, यह उस में 'वर्ण' का होना कहता हूँ। वह चीवर-पिण्डपात-शयनासन ग्लान प्रत्यय-भैपज्य आदि चीजो का पाने वाला होता है। यह उस का 'चढने योग्य' होना कहता हूँ। इस प्रकार भिक्षुओ। श्रेष्ठ-पुरुष गित-युक्त होता है, वर्ण-युक्त होता है और चढने योग्य होता है।

" भिक्षुओ, ये तीन श्रेष्ठ पुरुष है।"

## (१४०)

एक समय भगवान् राजगृह के मोर-निवाप नाम के परिव्राजकाराम में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने भिक्षुओ को आमन्त्रित किया——
"भिक्षुओ।"

"भदन्त " कहकर उन भिक्षुओ ने भगवान् को प्रति-वचन दिया। भगवान् ने यह कहा----

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त भिक्षु पूर्ण (=अत्यन्त) निष्ठावान् होता है, पूर्ण योग-क्षेमी होता है, पूर्ण ब्रह्मचारी होता है, पूर्ण-उद्देश्य होता है तथा देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। कौन से तीन धर्मों से युक्त ?

" अशैक्ष शील-स्कन्ध से युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्ध से युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कन्ध से युक्त होता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त भिक्षु, पूर्ण (=अत्यन्त) निष्ठावान् होता है, पूर्ण योग-क्षेमी होता है, पूर्ण ब्रह्मचारी होता है, पूर्ण-उद्देश्य होता है तथा देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

"भिक्षुओ, तीन धैमों से युक्त भिक्षु पूर्ण निष्ठावान देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। कौन से तीन धर्मों से ? ऋबि प्राणिहारी से मुक्त केशना-प्राणिहारी से मुक्त काहासन-प्राणि-हारी से मुक्ता। पितृकों इन तीन बचों से मुक्त किल् पूर्ण निष्कारण होता है, में मोप-पीनी होता है पूर्व बहुत्वारी होता है पूर्व-बहेस्स होता है तथा देव-मनुष्की में भेष्ठ होता है। "भिजुकों तीन बचों से सुकत सिख् पूर्ण निष्कारण केव

मनुष्यों में भेष्ठ होना है। भौन छे तीत ?

सन्यक-पृष्टि से सन्यक जात से और सन्यक विमुक्ति है। भिशुजी इत क्यों में युक्त भिशु पूर्ण तिष्ठाकात वैज-सनुष्यों में कोष्ठ होता है।

(\$.8.5)

भिक्षुनो तोन धर्मी ते बुक्त प्रामी ऐसा होता है जैते काकर नरकर्में काक दिया नया हो। कौन से तीन वर्मी से ?

"अञ्चलक काय-कर्म से अनुस्तक माणी के कर्म से अनुस्तक नातिसक-कर्म से । प्रिशुकी इन बीन बर्मी से मुक्त प्राची ऐता होंदा है जैसे काकर नरक में बाल दिया यहा हो।

निस्ता तीन समीं से दक्त प्राणी ऐसा होता है जैने साकर स्वर्ग में

वया हो।

बार्क दिया पया हो। कौन से तीन बमी हैं ?

कुश्चन कार-कर्म से कुश्चन बाजी के कर्न से कुश्चन मानसिक-नर्म से।

भिज्ञों इन तीन समी से यून्त मानी ऐसा होता है वैसे लाकर स्वर्ण में डान दिया

(१४२)

त्रित्यों ठीन बर्नी से मुक्त प्राची ऐसा होता है जैसे काकर नरक में बाल दिया पत्रा हो : कीन से तीन वर्मी से ? सदोन काव-कर्मसे संस्थान दावी के कर्मसे स्वाधिक नर्मसे से !

पिश्वाको इन तीन बर्मों से मुक्त प्राची ऐसा होता है वैसे साकर नरक में शक्त दिया पत्रा हो।

यवा हो।

जिल्लामें तीन वर्षों से युक्त मानी ऐसा होता है वैसे बाकर स्वर्ग में बाक विश्वा यदा हो। कीन से तीन कर्मों से ? निवॉल काय-कर्म से निवॉल वाणी के कर्म से

-दिया यथा हो । कीन से दीन बर्मी दें निर्दोच कास-कर्म दे निर्दोच काली के कर्म दें निर्दोच मानसिक कर्म दें । भिक्षको देन कर्मी से युक्त काल दिया बंदा हो ।

## (883)

"भिक्षुओ, तीन धर्मों मे युक्त विषम काय-कर्म मे, विषम वाणी के कर्म से, विषम मानसिक कर्म में। भिक्षुओ, इन धर्मों से युक्त नरक में लाकर डाल दिया गया हो।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त अ-विषम काय-कर्म से, अविषम वाणी के कर्म मे, अ-विषम मानसिक कर्म से।

> "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त स्वर्ग में डाल दिया गया हो।" (१४४)

" अपवित्र काय-कर्म से, अपवित्र वाणी के कर्म से, अपवित्र मानसिक कर्म से ।

" पवित्र फाय-कर्म से, पवित्र वाणी के कर्म से, पवित्र मानसिक कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया हो।"

## (१४५)

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त मूर्ख, अपण्डित, अमत्पुरुप अपने आप को आधात पहुँचाता है, विज्ञो की दृष्टि में छोटे-बडे दोप करने वाला होता है और वहुत अपुण्य पैदा करता है। कौन से तीन धर्मों से युक्त?

"अकुशल-काय-कर्म से, अकुशल वाणी के कर्म से, अकुशल मानसिक कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुक्ष अपने आप को आधात पहुँचाता है, विज्ञों की दृष्टि में छोटे-बडे दोप करने वाला होता है और बहुत अपुष्प पैदा करता है।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त बुद्धिमान्, पण्डित, सत्पुरुष अपने आपको आघात नहीं पहुँचाता, विज्ञों की दृष्टि में छोटे बढे दोपों का न करने वाला होता हैं और बहुत पुण्य पैदा करता हैं। कौन से तीन धर्मों से युक्त ?

" कुशल कार्य-कर्में से, कुशल वाणी के कर्म से, कुशल मानिसक कर्म से (१४६)

" सदोष काय-कर्म से, सदोष वाणी के कर्म से, सदोप मानसिक कर्म से

अद्भित्रातिहारी से मुक्त देसना-प्रातिहारी से वृक्त अनुसासन-प्राति-हारी से युक्त । भिलाओं इन तीन धर्मों से युक्त मिझा पूर्व निष्ठावान होता है, र्ण गोम-रोमी होता है। पूर्ण ब्रह्मचारी होता है। पूर्ण-उद्देश्म होता है तथा देश-मनप्यों में भेठ होता है।

भिज्ञो तीन धर्मों से युक्त मिशु पूर्णनिष्ठादान मनुष्यों में भेष्ठ होता है। कौन ने तीन रै "सम्मक-दृष्टि से सम्मक-कान से और सम्मक विमुक्ति से। भिज्ञी इन बर्मों से मुक्त भिक्ष, पूर्व निष्ठाबान - देव-मनुष्मों में श्रेष्ठ होता है।

रेव

( **१**¥१)

मिल्लो तौन बर्मों से युक्त प्राची ऐसा होता है जैसे लाइर नररू में बाच दिया पवा हो । कीन सै दीन धर्मों से ? जक्त काय-कर्म से जक्त क बाबी के कर्म से अक्स अ मानतिक-कर्म से। विश्वनो इन तीन बर्मों से यक्त प्राची ऐसा होता है औसे काकर नरक में

कारु दिया क्या हो। "मिसनो तीन बर्मों से सकत प्राची ऐसा होता है औसे साकर स्वर्ण में बाल दिया बया हो। कौत से तीन अमों से है

"कुल काय-कमें से कुशल वाजी के कमें से कुलल मानशिक-कर्म से। भिश्वनो इन तीन बर्मों से मुक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे साकर त्वर्य में डाक रिमा वया हो।

(147)

मिन्नो तीन बनौ से मुन्त प्राची ऐसा होता है मैसे छाकर नरक में बाक दिया नया हो। इनैन से तीन बर्मों ने ?

सदोव काय-कर्म से तदीय वाची के कर्म से तदीय नामसिक-कर्म से।

निम्मो इत तीत बर्मों ते नुक्त प्रामी ऐना होता है वैसे लाकर नरक में बाब दिया नपा हो । मिनुनी तीन बर्मों से नुक्त प्राची ऐसा होता है जैसे बाकर स्वर्ग में शब

रिया प्या हो। कीन से तीन बर्मों से रै निर्दोव कार-कर्म से निर्दोव वानी के कर्म से निर्दोप मानशिक कर्म से । निस्नो इन बर्मों से यस्त अति दिया नमा हो ।

## (१४३)

"भिक्षुओं, तीन धर्मों से युक्त विषम काय-कर्म से, विषम वाणी के कर्म से, विषम मानसिक कर्म में। भिक्षुओं, इन धर्मों से युक्त नरक में लाकर डाल दिया गया हो।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त अ-विषम काय-कर्म ने, अविषम वाणी के कर्म ने, अ-विषम मानसिक कर्म से।

> "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त स्वगं में डाल दिया गया हो।" (१४४)

" अपवित्र काय-कर्म से, अपवित्र वाणी के कर्म मे, अपवित्र मानसिक कर्म से ।

" पवित्र काय-कर्म से, पवित्र वाणी के कर्म से, पवित्र मानसिक कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों में युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वगं में डाल दिया गया हो।"

# (१४५)

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपने आप को आधात पहुँचाता है, विज्ञों की दृष्टि में छोटे-बडे दोष करने वाला होता है और बहुत अपुष्प पैदा करता है। कीन से तीन धर्मों से युक्त ?

"अकुशल-काय-कर्म से, अकुशल वाणी के कर्म से, अकुशल मानसिक कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्युक्ष अपने आप को आधात पहुँचाता है, विज्ञो की दृष्टि में छोटे-बडे दोष करने वाला होता है और बहुत अपुष्प पैदा करता है।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त बुद्धिमान्, पण्डित, सत्पुरुप अपने आपको आघात नहीं पहुँचाता, निज्ञों की दृष्टि में छोटे बढे दोषों का न करने वाला होता है और बहुत पुण्य पैदा करता है। कौन से तीन धर्मों से युक्त ?

" कुशल कार्य-कर्में से, कुशल वाणी के कर्म से, कुशल मानसिक कर्में से (१४६)

" सदोष काय-कर्म से, सदोष वाणी के कर्म से, सदोष मानसिक कर्म से

निर्दोप काय-कर्ज से निर्दोध बाबी के कर्ज से निर्दोध भावसिक कर्म से

(tve)

विषम काय-कर्म से विषम बाजी के कर्म से विषम मानतिक "कर्मसे

अविषय काय-कर्मसे अविषय बाजी के कर्मसे अविषय मानसिक कमें से

(2X5)

अपनित्र काम-कर्म से अपनित्र वालों के कर्म से अपनित्र मानसिक कर्स से

पवित्र काय-कर्म से पवित्र बाजी के कर्म से पवित्र मानसिक कर्म से । भिक्षुणी इन तीम बर्मों से युक्त बुखिमान पश्चित सायुक्त बपने की आबात नहीं पहुँचाता। विक्र पुच्यों की दृष्टि में कोटे-मोरे दोय करने वाका नहीं होता और बहुत पूच्य पैदा करता है।

(tyt)

भिस्त्रा ये दौन नन्दनाहै। कौन सी दौन रै काय-क्या नामी की बन्दना मन की बन्दना। जिल्ली ! ये तीन नन्दना है।

( १५ )

भिमानो जो प्राची पूर्वान्त्र के समय वारीए से सदावरण करते हैं, बाजी से सवाचारण करते हैं मन से सवाचरण करते हैं भिज्ञुको जब प्रानियों का बहु सपूर्वाला है। जिसमों को प्रामी मध्याला में बारीर से सदावरण करते हैं सन् छे सदावरण अधी है भिजुनो जन प्राणियों का बहु सुमध्यान्त्र है। भिज्ञनो को प्राची बाम के समय करीर से सवाचरण करते हैं यन से सवाचरण करते है विश्वको उन प्रानियों का बहु शु-सायान्ह है।

धुनक्ततः भूमंत्रचं सूष्पदातः सुददिउनं स्थानी सुमहत्ती न नविद्धं बद्धानारित प्रविश्वनं कायकरमं भागा भागं प्रवास्त्रय पदिक्खण मनोकम्म पिनधीयो पदिक्खणा पदिक्खणानि कत्वान लभतत्थे पदिक्खणे ते अत्यलद्धा सुखिता विरूळहा बुद्धसासने आरोगा सुखिता होथ सह सब्बेहि ज्ञातिभि

"[वही ) सुनक्षत्र है, सुमगल है, सुप्रभात है, सु-उत्थान है, सु-क्षण है, सु-मुहूर्त है, ब्रह्मचारियों के साथ सु-यज्ञ है। (शुभ) काय-कर्म ही प्रदक्षिणा है, वाणी का कर्म ही प्रदक्षिणा है, मानसिक-कर्म प्रदक्षिणा है, प्रणिधान प्रदक्षिणा है। प्रदक्षिणा करने से यहाँ प्रदक्षिण (उन्नति) की प्राप्ति होती है। उन अर्थों को प्राप्त करके सभी सम्बन्धियों के साथ बुद्ध-शासन में वस्तु-बहुल हो, निरोग हो, सुखी हो।

## (१५१)

"भिक्षुओ, तीन मार्ग है। कौन से तीन ? "किशिल ( – समालन) मार्ग करोर ( – किल्लाम) मार्ग

"शिथिल ( = अगाळह) मार्ग , कठोर ( = निज्झाम)-मार्ग, मघ्यम मार्ग । " मिक्षुओ, शिथिल-मार्ग कौन सा है ?

"भिक्षुओ, किसी किसी का ऐसा मत होता है, ऐसी दृष्टि होती है— काम-भोगो में दोष नही है। वह काम-भोगो में जा पडता है। भिक्षुओ, यह शिथिल-मार्ग कहलाता है।

"भिक्षुओ, कठोर (=निज्झाम) मार्ग कौन सा है  $^{1}$ 

"भिक्षुलो, कोई कोई नग्न होता है, शिष्टाचार-शून्य, हाथ चाटने वाला, भदन्त आयें 'कहने पर न आने वाला, 'भदन्त खडे रहे 'कहने पर खडा न रहने वाला, लाया हुआ न खाने वाला, उद्देश्य से बनाया हुआ न खाने वाला और निमन्त्रण भी न स्वीकार करने वाला होता है। वह न घडे में से दिया हुआ लेता है, न कखल में से दिया हुआ लेता है, न किवाड की ओट से दिया हुआ लेता है, न मेढे के बीच में आ जाने से दिया हुआ, न दण्ड के बीच में पड जाने से लेता है, न मूसल के बीच में आ जाने से लेता है। वह दो जने खाते हो, उन में से एक के उठकर देने पर नहीं लेता है, न गिंभणी का दिया लेता है, न वच्चे को दूध पिलाती हुई का दिया लेता है, न पुरुष के पास गई हुई का दिया लेता है, न सग्रह किये हुए अन्न में से पकाया हुआ लेता है, न जहाँ कुत्ता खडा हो वहाँ से लेता है, न जहाँ मिक्खयाँ उडती हो वहाँ से सेवा है। वह न मध्ये भावा है न साम आवा है। न मुख्य पीठा है न मेस्य पीठा है न भावस का पानी पीठा है। वह सा तो एक ही वर से लेकर लाने शाला होता है वा एक ही कीर लाने वाका दो वर्षों से लेकर आने वाला होता है ग दो ही कीर लाने वाला साठ वर्षों से लेकर आने वाला होता है सा साठ कीर लाने वाला। वह एक ही छोटी-सेट से भी गुवास करने वाला होता है स

चात छोटी फोटों से भी बुजास करने वाला होता है। वह दिन में एक बार भी बाने वाला होता है दो दिन में एक बार भी बाने वाला होता है

बात दिन में एक नार भी चाने वाका डोता है इस प्रकार वह पत्रह दिन में एक बार चाकर भी रहता है। वह साक चाने बाका भी होता है स्वामाक (१) चाने बाका भी होता है भीबार (भाग) खाने बाका भी होता है बदुक्त (भान) आरोगे शका भी होता है। हर (शक) जाने ग्रांका भी होता है। कवाब भात जाने बाका भी होता है। आचाम जाने बाका भी होता है। बकी जाने बाका भी होता है विनके (बास) साने वासा भी होता है योगर साने वासा भी होता है वांबल के पेड़ों से पिरे फल-मक को काने वाला भी होता है। यह सन के कपड़े भी बारण करता है सन-मिमित कपड़े भी बारण करता है सब-भरत (कफ्न) भी पहनता है। फेंके हुए करन भी पहनता है। बुझ-विशेष की आस के क्यारे भी पहनता है। स्राजन (-मृत्र) की खारू भी पहनता है अजिन (-मृत्र) की चमड़ी से बनी परिटयो से बना बस्त भी पहनता है। कुस का बना बस्त भी पहनता है। बाक (बाक) का बर्व भी पहनता है फलक (काल) का बर्च भी पहनता है, केवों से बना कम्बक भी पहलता है। पुँछ के बाबों का बना कम्बल भी पहलता है। उत्सू के पर्धे का बना बस्य भी पहलता है। यह केव-बाढी का सु बन करने बाबा भी डोता है। यह बैठने बा त्याय कर निरन्तर सन्। ही रहने वाला भी होता है। वह उक्क बैठ कर प्रवल करने वाला भी होता है वह करेंगे की सैन्या पर सोने वाका भी होता है। प्रातः सब्यान्त साय-कित में तीन बार पानी में बाने वाका होता है। इस तरह वह नाना प्रकार से सरीर को कप्ट पीड़ा पहुँचाता हुआ निहार करता है। मिसूबो यह कठोर-मार्ग कड्साता है।

भिक्तको सच्यम-सार्यकौन धाईी

भित्रुको मियु सरीर के प्रति बायकत रहकर विवरता है। वह प्रयत्न-ग्रीत मान-मुक्त स्मृति-मान हो लोक में वो लोक मेर वीर्यनस्य है वर्ध हटाकर विहरता है, वेदनाओं के प्रति . . चित्त के प्रति धर्मों के प्रति जागरूक रहकर विचरता है। वह प्रयत्न-शील, ज्ञान-युक्त, स्मृतिमान हो लोक में जो लोभ और दौर्मनस्य है उसे हटाकर विहरता है। भिक्षुओ, यह मध्यम-मार्ग कहलाता है। भिक्षुओ, ये तीन मार्ग है।"

(१५२)

"भिक्षुओ, तीन मार्ग है। कौन मे तीन ?

" शिथिल (=अगाळह मार्ग), कठोर ( =िनज्झाम ) मार्ग, मध्यम-मार्ग।

"मिक्षुओ, शिथिल-मार्ग कौन सा है ? (पृ० ३०३) भिक्षुओ, यह शिथिल मार्ग कहलाता है।

"भिक्षुओ, कठिन मार्ग कीन सा है ?

" (पृ० ३०३) भिक्षुओ, इसे कठिन मार्ग कहते हैं।

" मिक्षुओ, मध्यम-मार्ग क्या है ?

"भिक्षुओ, भिक्षु अनुत्पन्न पापी अकुशल-धर्मी को उत्पन्न न होने देने के लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मन को काव्में रखता है, उत्पन्न पापी अकुशल-धर्मों का प्रहाण करने के लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है जोर लगाता है, मन को कावू में रखता है, अनुत्पन्न कुशल धर्मो को उत्पन्न करने के लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मन को कावू में रखता है, अनुत्पन्न कुशल धर्मी को उत्पन्न करने के लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मन को कावू में रखता है, उत्पन्न कुल धर्मों की स्थिति के लिये, लोप न होने देने के लिये, अधिकाधिक वढानेके लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मन को कावू में रखता छन्द-प्रयत्त-सस्कार युक्त ऋद्धि-पथ का अभ्यास करता है, वीर्यं-समाघि, चित्त-समाघि, वीमसा-समाधि और प्रधान ( ≈प्रयत्न ) तथा सस्कार से युक्त ऋद्धि-पथ का अभ्यास करता है श्रद्धा-इन्द्रिय का अभ्यास करता है, वीर्य्य इन्द्रिय का अभ्यास करता है, स्मृति-इन्द्रिय का अभ्यास करता है, समाधि इन्द्रिय का अम्यास करता है, प्रज्ञा इन्द्रिय का अभ्यास करता है का अभ्यास करता है, वीर्य्य-बल का अभ्यास करता है, स्मृति-बल का अभ्यास करता है समाधि-वल का अभ्यास करता है, प्रज्ञा-वल का अभ्यास करता है, स्मृति सम्बोधि- अंग का बस्मात करता है धर्म-विचय (=विचार) सम्बोधि-अंग का बस्मात करता है वीय सम्बोधी-अंगका अस्मात करता है प्रीति सम्बोधि-अंगका अस्मात करता है प्रमाक्षि (सालि) सम्बोधि अंगका कस्मात करता है समाधि सम्बोधि-अंगका कस्मात करता है उनेसा सम्बोधि-अंगकी भावना करता है सम्बक्ध-बृद्धिका बस्मात करता है सम्बक्ध संकरका बस्मात करता है सम्बक्ध नाजीका बस्मात करता है सम्बक्ध-कर्मान्तका अस्मात करता है सम्बक्ध नाजीकित का अस्मात करता है सम्बक्ध सम्बद्ध करता है स्वा सम्बद्ध समाधि का अस्मात करता है। मिशुकी यह सम्बद्ध-आर्थ कहकाता है। सिशुकी वे तील मार्थ है। "

#### (१५१)

"मिसूनो तीन समेंने पुन्त प्रापी ऐसा होता है जैसे नाकर नरकमें बान दिया गया हो। कीनने तीन? क्यों प्राणी हिसा करता है बूसरेको प्राणी हिसाकी कोर कपीरता है जोर प्राणी हिसाका समर्थन करता है। पिसूनो तीन समेंने पुन्त आपी देशा होता है जीर साथी हिसाका समर्थन करता है।

"तिभुवा तीन धर्मीने मुक्त प्राणी ऐसा होता है चैसे काकर स्वयंमें डाक दिया यया हो । कीनने तीन ?

"स्वय प्राची-हिमाचे विरक्ष रहुता है दूसरेको प्राची-हिसाको ओर महीँ क्रमीटला और प्राची-हिमाको ममर्थन नहीं करता "

- (१५४) "स्वयं चोरी करता है, दुगरेको चोरीको बोर बसीटता है बीर बोरीका तसबेन करता है और बरी प्रमीदना है बीर चोरीका समयेन नहीं करता है."
- (१५५)

  " ... स्वयं काम भीत सम्मन्ती मिष्याचार गरने वाहा होता है शुरीको बाज भाव सम्बन्धी मिष्याचारको बाद पमीटता है बीर काम भीत सम्बन्धी निष्या

बारहा ममर्वत बरता है " हाव बाग्रजीय मम्बन्धी विष्याबारम बिरत होता है हुगरेबी बाम बाग सम्बन्धी विष्याबारमी और नी बगीरमा है और बाग्रजीय सम्बन्धी विष्या

नार सं बिरत प्रतास समर्थन न र न राजा र

## (१५६)

" स्वय झूठ वोलता है, दूसरेको झूठ वोलनेकी ओर घसीटता है और झूठ वोलनेका समर्थन करता है स्वय झूठ वोलनेके विरत रहता है, दूसरेको झूठ वोलनेकी ओर नहीं घसीटता है और झूठ वोलनेके विरत हो रहनेका समर्थन करता है. .... "

## (१५७)

" स्वय चुगली खाता है, दूसरेको चुगली खानेकी ओर घमीटता है और चुगली खानेका समर्थन करता है स्वय चुगली खानेसे विरत रहता है, दूसरेको चुगली खानेकी ओर नही घसीटता और चुगली खानेसे विरत रहनेका समर्थन करता है "

# (१५८)

" स्वय कठोर वोलता है, दूसरे को कठोर वोलने की ओर घसीटता है और कठोर वोलने का समर्थन करता है "स्वय कठोर वोलने से विरत रहता है, दूसरे को कठोर वोलने की ओर नहीं घसीटता है और कठोर वोलने से विरत रहने का समर्थन करता है "

### (१५९)

- " स्वय्व्यर्थ वोलनेवाला होता है, दूसरे को व्यर्थ वोलने की ओर घसीटता है और व्यर्थ वोलने का समर्थन करता है "
- " स्वय व्यर्थ बोलने से विरत रहता है, दूसरे को व्यर्थ बोलने की ओर नहीं घसीटता है और व्यर्थ बोलने से विरत रहने का समर्थन करता है..."

## (१६०)

- " स्वय लोभी होता है, दूसरे को लोभ की ओर घसीटता है और लोभ का समर्थन करता है "
- " स्वय लोभ से विरत रहता है, दूसरे को लोभ की ओर नहीं घसीटता है और लोभ से विरत रहने का समर्थन करता है "

### (१६१)

''. स्वय कोघी होता है, दूसरे को कोघ की ओर घसीटता है और कोघ का समर्थन करता है। ." "स्वयं कोज से दिरण पहता है दूधरे को कोध की ओर नहीं वडीडता है और कोध से विरत पहने का ममर्वन करता है।

(१६२)

म्बर्य विषया पृष्टि होता है दूसरे को मिन्या-पृष्टि की बोर बसीटठा है और मिन्या-पृष्टि का समर्थन करता है

" स्वयं मियमा-कृष्टि से विरत रहता है दूसरे को मियमा-कृष्टि की बोर नहीं वर्गीटना है बौर मियमा-कृष्टि से विरत रहने का समर्पन करता है "

(\*\*\*)

"भिनुषा रागकी पहचान के नियेदन तीन बर्मी की मादना (=मञ्चात) नरमा चाहिये।

शिन दोन वर्गे का ?

" शुन्धता-ममात्रि का अनिभित्त-समाप्ति का तथा अनिमिद्दन-समाप्ति का ।

पश्चित्राच्यात्रात्र का कार्यान्यान्यकात्र का यथा समायाङ्ग्यायाम् का प्राप्ताः पश्चित्राह्याः स्थय की वृद्धान के लिये इन शीन सर्वी नी माधनाः (⊐शस्याम)

करनी चाहिये।

"निरानो राज के सन के निन्ने वरियन के निन्ने प्रहास के निमे स्पर

के लिये वैद्याय के लिये निरोध के लिये त्याय के लिये तथा प्रतिनिमन के लिये तीन प्रमी की नारना करनी चाहिये।

"मिएसो इय के मीर के कोब के बरनाह के झाल के बहान के पूर्व ने मान्यादे के मात्रा के पाउना के बहान के मारण्य के मात्र ने महिमान के मार के हवा मनार के साथ के निजे जरिवाद के निजे बहान के निजे स्थाय के निजे वैद्याद के निजे दियाद के निजे त्याद के निजे हवा स्तिनितन के निज सीत सर्वों दी भारता (वश्यान) करना चारिते।"

अनुवानने बहु कत्ताः उन जिलुकोने संपुष्ट होक्ट अनुवान के प्राप्त का अजिनस्त विद्याः।

बहना हुनरा नदा तीनछ नियत नदाना